"मेरे पीछे आओ" समूह आइसब्रेकर: "मेरे पीछे आओ" शब्द सुनते ही आपके दिमाग में कौन सी तस्वीर आती है? परिचय: यीशु का शिष्य बनना वही प्रक्रिया है जिससे बच्चा अपने माता-पिता का अनुसरण करना सीखता है। पहला तीन शब्द जो एक बच्चा आमतौर पर सीखता है: माँ, पिताजी और नहीं। मम्मी और डैडी शब्द उन लोगों की पहचान करते हैं जिनसे बच्चा जुड़ा है। माता-पिता द्वारा "नहीं" शब्द का उपयोग उनके अधिकार को स्थापित करता है और बच्चे को एक आदेश जारी करता है जिसके लिए उसकी आज्ञाकारिता की आवश्यकता होती है। इस शब्द के प्रयोग से ही बालक का प्रशिक्षण प्रारंभ होता है। पहला सबक जो उसे सीखना चाहिए वह है आज्ञाकारिता। एक व्यक्ति के "नए जन्म" के बाद, वह पहले दो शब्द सीखता है, आमतौर पर चर्च और भगवान। वे उन लोगों की पहचान करने में उसकी सहायता करते हैं जिनके साथ उसने बंधुआ किया है। अगले शब्द उन्हें सिखाए जाने चाहिए "मेरे पीछे आओ"। यीशु अपने शिष्यों को उनके प्रशिक्षण की शुरुआत में यह आदेश जारी करता है। वे वचन उसके अधिकार को स्थापित करते हैं और एक आदेश जारी करते हैं जिसके लिए उनकी आज्ञाकारिता की आवश्यकता होती है। और एक बच्चे की तरह यह एक शिष्य को "नहीं" शब्द का प्रयोग करने का पहला अवसर भी प्रदान करता है! स्क्रिप्चर पढ़ना: पहला शिष्य (यूहन्ना 1:35-51) मैं तुम्हें मनुष्यों का मछुवारा बनाऊँगा (लूका 5:1-11, मत्ती 4:18-22, और मरकुस 1:16-20) एक कर संग्रहकर्ता, मत्ती चेला बनना (मत्ती 9:9, मरकुस 2:14 और लूका 5:27-28) आज्ञा: "मेरे पीछे हो ले।" सीख: आज्ञाकारिता का पाठ सीखना कठिन है। इसके लिए आवश्यक है कि एक व्यक्ति अपने ऊपर अधिकार को मान्यता दे और फिर अपनी इच्छा उस प्राधिकरण को सौंप दे। यह हमेशा आसान नहीं होता है, खासकर जब प्राधिकरण आपको कुछ ऐसा करने के लिए कह रहा है जो आप नहीं करना चाहते हैं। यीशु आपकी आज्ञाकारिता चाहता है। इसके बिना आप उनके शिष्य नहीं हो सकते। जब यीशु ने मूल शिष्यों को अपने पीछे चलने के लिए बुलाया, तो वे मसीहा को देख, छू, स्वाद, गंध और सुन सकते थे। वह उनके बीच शारीरिक रूप से मौजूद था और वे हर जगह उसकी भौतिक उपस्थिति का अनुसरण करते थे। परन्तु वह वह पाठ नहीं था जो वह उन्हें सिखा रहा था। यीशु ने अपने शिष्यों को आवाज आदेश जारी करके उनका पालन करना सिखाया, जिनका उनसे पालन करने की अपेक्षा की गई थी। उसने उदाहरण के द्वारा भी उनका नेतृत्व किया, अपने पिता की आज्ञाओं के प्रति अपनी आज्ञाकारिता का प्रदर्शन किया जो बाइबल के पुराने नियम के भाग में लिखी गई थीं। उसने जो उपदेश दिया, उसका अभ्यास किया। माता-पिता अपने बच्चों को वॉयस कमांड का पालन करना भी सिखाते हैं। बच्चे अपने माता-पिता की आवाज में अधिकार को समझते हैं और अपने माता-पिता द्वारा निर्धारित उदाहरण का पालन करते हैं। हालाँकि, जब माता-पिता अपने उपदेश का अभ्यास नहीं करते हैं, तो बच्चा माता-पिता की बातों का अनुकरण करता है, न कि वे जो कहते हैं। पहले चेलों ने यीशु की आज्ञा मानना सीखा। जब यीशु ने उन्हें उपदेश देना समाप्त कर दिया, तो यीशु ने उनसे कहा कि जाओ और उन्हें और अधिक चेले बनाओ, जो उन्हें सिखाने के लिए कि उसने उन्हें क्या करने की आज्ञा दी थी। उन्हें उदाहरण के द्वारा नेतृत्व करना था, वास्तव में वह करने के लिए जो उसने उन्हें करने के लिए कहा था। परिणाम आश्चर्यजनक थे! प्रेरितों के काम की पुस्तक स्पष्ट रूप से दिखाती है कि चमत्कारों ने इन शिष्यों की आज्ञाकारिता का अनुसरण किया और चर्च के विकास में विस्फोट हुआ। यीशु आज भी कलीसिया के लिए ये अपेक्षाएँ रखते हैं और उनका तरीका नहीं बदला है। वह अभी भी लोगों को उसका अनुसरण करने के लिए बुलाता है और चमत्कार अभी भी परमेश्वर के वचन की आज्ञाकारिता का पालन करते हैं। दरअसल, किसी व्यक्ति

के जीवन में पुनर्जन्म का चमत्कार उसी तरह होता है। वे यीशु के विषय में प्रचारित परमेश्वर के वचन को सुनते हैं, उस पर विश्वास करते हैं, उसे प्रभु के रूप में स्वीकार करते हैं और बपतिस्मा लेते हैं। जिस तरह से लोग यीशु का अनुसरण करते हैं, वह उसके वचन को सुनना और करना है। प्रेरित पौलुस ने कहा, "विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से आता है"। यीशु ने कहा, "धन्य हैं वे जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं"। और परमेश्वर ने स्वयं स्वर्ग से चेलों से कहा, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं, उसकी सुन।" समूह चर्चा वर्कशीट: ए। एक कमांड के तीन प्रमुख घटक होते हैं: 1. आज्ञा देना।2। आज्ञा सुनना 3. आज्ञा का पालन करना। B. किसी आदेश को मानने से पहले उसे सुनने के लिए चार तत्वों की आवश्यकता होती है।1. आपको इसे शारीरिक रूप से सुनना चाहिए।2. आपको इसका मतलब पता होना चाहिए।3. आपको पता होना चाहिए कि यह आपकी ओर निर्देशित है।4. आपको पता होना चाहिए कि यह आपके नेता से है। सी. वास्तव में एक आदेश का पालन करने के लिए तीन तत्वों की आवश्यकता होती है।1। आपको आज्ञा मानने के लिए तैयार रहना चाहिए।2. जो आप वर्तमान में कर रहे हैं उसे आपको रोकना होगा।3. आपको वास्तव में यह करना चाहिए। डी। लूका 5:1-11 में मिली यीशु और पतरस की कहानी से; किसी आदेश को सुनने और पालन करने के विभिन्न तत्वों की पहचान करना।1. हम जानते हैं कि पतरस ने आज्ञा इसलिए सुनी क्योंकि उसने उसका उत्तर दिया।2. पतरस जानता था कि आज्ञा का क्या अर्थ है क्योंकि वह एक मछुआरा था।3. पतरस जानता था कि यह उसी पर निर्देशित है क्योंकि यह उसकी नाव थी।4. पतरस जानता था कि यह किसी ऐसे व्यक्ति की ओर से है जिसके पास अधिकार है क्योंकि वह यीशु को स्वामी कहता है।5. हालांकि कुछ हद तक वह इस आदेश से असंतुष्ट थे, उन्होंने प्रस्तुत किया।6। पतरस ने जो कुछ वह कर रहा था उसे रोक दिया, बात कर रहा था।7. वह गहरे पानी में चला गया। ई. चमत्कार कब हुआ? पतरस की बात मानने के बाद चमत्कार हुआ। * आगे बढ़ने से पहले पेज 3ए और 3बी पर ग्रुप एक्सरसाइज करें। एफ. कारण क्यों ईसाई यीशु मसीह का अनुसरण करने के अपने चलने में ठोकर खाते हैं। 1. अज्ञान - न जाने शास्त्र क्या कहते हैं। 2. उदासीनता -- शास्त्र जो कहता है उसे लागू नहीं करना। 3. भ्रम - अपने जीवन में वर्तमान घटनाओं के बारे में अधिक चिंतित। 4. मिथ्या सूचना -- अपने रब की बजाय दूसरों की सुनना । पाठ का बिंदु: यीशु जो कहता है उसे सुनना और उसका पालन करना, परमेश्वर का वचन कहता है। आवेदन: यूहन्ना 10:27 को याद रखें - "मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।" प्रभु से कहें कि वह आपको व्यक्तिगत रूप से आज्ञा मानने की आज्ञा दें, परिणामों को लिखें और समूह के साथ साझा करें।

आप क्या देखते हैं? ग्रुप आइसब्रेकर: क्या चीज लोगों को आपसे अलग बनाती है? आप किसी के दिमाग को बदलने की कोशिश कैसे करेंगे? परिचय: एक बच्चे के घर के बाहर की दुनिया उसके लिए अजीब और अलग होती है। यह एक असहज जगह है, जिसमें घर की सुरक्षा का अभाव है। बच्चा आसानी से रोता है, सब कुछ अपरिचित और विदेशी है। लेकिन यह इस शत्रुतापूर्ण माहौल में है कि उसके माता-पिता उसे लाते हैं। उसे अपने परिवेश और लोगों से परिचित होने की जरूरत है, जिससे उसके माता-पिता इतनी आसानी से घुलमिल जाते हैं। यीशु अपने नए शिष्यों को भी वहाँ ले जाता है। यीशु के चेले गलील के यहूदी हैं, जो गलील सागर के उत्तरी किनारे पर हैं। वे एक प्रांतीय लोग हैं। वे वर्ष में तीन बार यहोवा के पर्वों में भाग लेने के लिए यरूशलेम की तीर्थयात्रा करते हैं। उनका प्रथागत मार्ग उन्हें यरदन नदी घाटी के माध्यम से आसान मार्ग पर ले जाता है। घाटी चौड़ी, अच्छी तरह से पानी और उपजाऊ है। और मार्ग उन्हें सामरियों के देश के चारों ओर ले जाता है, जो उनके घरों और यरूशलेम के बीच है। उनके लिए सामरियों का देश घिनौने लोगों का घर है, जो सच्चे परमेश्वर को नहीं जानते और जिनके साथ यहूदियों का बहुत कम लेन-देन होता है। शुरुआती वसंत में, शिष्य यीशु के साथ यरूशलेम में फसह के पर्व पर जाते हैं। वहाँ वे कुछ समय के लिए यरूशलेम के आसपास के मैत्रीपूर्ण वातावरण में रहते हैं। यह क्षेत्र यहूदिया है, जो इस्राएल की भूमि का दक्षिणी भाग है। वे क्षेत्र के प्रांतीय लोगों की सेवा करते हैं और कुछ को बपतिस्मा देते हैं। यह अवधि संभवत: वर्ष के दूसरे पर्व के समय तक रहती है जिसमें वे यरूशलेम में भाग लेते हैं। पर्व को "सप्ताह" कहा जाता है क्योंकि यह फसह के सात सप्ताह बाद होता है। समय देर से वसंत है। यह गर्म हो रहा है। यीशु ने अचानक गलील लौटने का फैसला किया। इस बार वह चेलों को शोमरोन होते हुए छोटे रास्ते से ले जाता है। पहाड़ों की यात्रा कठिन और अपरिचित है। घाटी मार्ग की तुलना में, यह चट्टानी, हवा में बहने वाली पहाड़ियों का एक शुष्क क्षेत्र है जिसमें थोड़ी छाया और पानी होता है। वे सीचर गांव में रुकते हैं। गेरिज़िम, आशीर्वाद का पर्वत और एबाल, शाप का पर्वत इसके ऊपर पश्चिम की ओर बढ़ता है। यह कुलपिता याकूब के कुएं का स्थान है। दोपहर का समय है। लंच ब्रेक का समय हो गया है। यीशु के लिए कुएँ पर आने वाली एक महिला से मिलने का समय आ गया है। उनके शिष्यों के दुनिया को देखने के तरीके को बदलने का समय आ गया है। स्क्रिप्चर पढ़ना: कुएँ की स्त्री (यूहन्ना 4:1-42) आज्ञा: “अपनी आंखें उठाकर खेतों को देखो, कि वे कटनी के लिये पक गए हैं।” पाठ: यीशु जो पाठ सिखाता है वह अवलोकन की शक्तियों से संबंधित है। शिष्यों को उनके आस-पास की प्राकृतिक दुनिया में भौतिक नियमों को देखने, समझने और लागू करने के लिए उपयोग किया जाता है। यीशु उन्हें अलग तरह से देखने की चुनौती देते हैं। वह चाहता है कि उनकी अवलोकन की शक्ति आध्यात्मिक तक बढ़े। यीशु ने अपनी शिक्षा को कथन के साथ प्रारंभ किया। "क्या तुम यह नहीं कहते, 'अभी चार महीने हुए हैं, और फिर कटनी आती है।" शिष्य की सांसारिक सोच प्रक्रियाएँ हावी हो जाती हैं। मई का महीना है, लोगों ने हाल ही में अपनी कपास बोई है, फसल को उगने में चार महीने और लगेंगे और वे इसे सितंबर में काट लेंगे। लेकिन फिर यीशु कहते हैं, "अपनी आंखें उठाकर खेतों को देखो, कि वे कटनी के लिए पक गए हैं।" जब शिष्य खेतों की ओर देखने के लिए मुड़ते हैं तो उन्हें कपास की फसल कटाई के लिए तैयार नहीं दिखाई देती है। लेकिन दूर से वे देखते हैं कि सफेद वस्त्र पहने हुए पुरुष खेतों के पार उनकी ओर दौड़ रहे हैं। जीसस पुरुषों के बारे में बात कर रहे हैं, कपास नहीं, पुरुषों की आत्मा की फसल। फसल अभी शुरू हो रही है, न कि अंतिम महान फसल के दौरान उम्र के अंत में। शिष्य का मन आध्यात्मिक संबंध बनाने के लिए संघर्ष करता है। यीशु जारी है। "जो काटता है, वह मजदूरी पाता है, और अनन्त जीवन के लिये फल बटोरता है; कि जो बोता है और जो काटता है, वह सब मिलकर आनन्द करें। क्योंकि इस मामले में यह कहावत सत्य है, 'एक बोता

है, और दूसरा काटता है।' मैंने तुम्हें वह काटने के लिए भेजा है जिसके लिए तुमने परिश्रम नहीं किया; औरों ने परिश्रम किया, और तुम उनके परिश्रम में प्रवेश कर गए।" शिष्य बोने और काटने के बारे में सोचने लगते हैं। जमीन में एक बीज डालें और उसके स्थान पर एक पौधा आ जाता है। एक व्यक्ति पौधे लगाता है और एक व्यक्ति फसल काटता है। पौधों में हमेशा अधिक बीज होते हैं। हम कुछ बीज को अगली फसल के लिए बोने के लिए बचाते हैं और शेष को भोजन और अन्य चीजों के लिए उपयोग करते हैं। यह सब हमारे लिए बहुत परिचित है। धीरे-धीरे उनके दिमाग में शास्त्र आ जाते हैं। उन्होंने लोगों को खेतों में दौड़ते हुए यीशु के पास जाते देखा था। हां! यह यशायाह की पुस्तक में मसीह के विषय में था। "देख, तू एक ऐसी जाति को जिसे तू नहीं जानता, पुकारेगा, और जो जाति तुझे नहीं जानती वह तेरे पास दौड़ेगी, क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा, यहां तक कि इस्राएल का पवित्र भी, क्योंकि उस ने तेरी महिमा की है।" यशायाह में भी बोना और काटना है। यह केवल परमेश्वर के वचन के बारे में है। "क्योंकि वर्षा और हिमपात आकाश से गिरते हैं, और पृथ्वी को सींचे, और उसे सहन और अंकुरित किए बिना वापस नहीं लौटते, और बोने वाले को बीज देते हैं। और खानेवाले को रोटी; मेरा वचन वैसा ही हो जो मेरे मुंह से निकलता है; वह मेरी इच्छा पूरी किए बिना, और जिस काम के लिए मैं ने उसे भेजा है उसमें सफल हुए बिना मेरी ओर फिर न लौटेगा।" अब चेले आरम्भ कर रहे हैं यह समझने के लिए कि यीशु किस बारे में बात कर रहा है। जो मसीहा से पहले आए थे, कुलपिता, मूसा, दाऊद और भविष्यद्वक्ताओं ने मसीहा के बारे में परमेश्वर के वचन का बीज बोया। उन्होंने मसीहा के आने, उसके राज्य के बारे में बोलकर बोया। मनुष्यों का उद्धार हर कोई जो मसीह के बाद आता है उसे हरि काटना है आत्माओं की बनियान। वे यह देखकर काटते हैं कि मसीहा, उसका राज्य और मनुष्यों का उद्धार आ गया है। और लोगों के दोनों समूह परमेश्वर के राज्य में एक साथ आनन्दित होंगे। समूह चर्चा: खेतों को फसल के लिए तैयार देखने के लिए हमें किन बाधाओं को दूर करना पड़ सकता है? ऐसे कौन से तरीके हैं जिनसे एक व्यक्ति अपनी दैनिक दिनचर्या में लोगों को देखकर आध्यात्मिक बातचीत शुरू कर सकता है? (एक उदाहरण: एक व्यक्ति अपनी घड़ी को देखता है कि यह दिन में कितना समय है। निम्नलिखित में से कोई भी प्रश्न पूछने से आध्यात्मिक बातचीत शुरू होगी। "क्या एक समय आएगा जब भगवान लोगों का न्याय करेगा? दुनिया कब खत्म होगी? क्या कोई व्यक्ति हमेशा के लिए जिएं? आपके जीवन में कितने साल बचे हैं?) सबक का बिंदु: अपने आस-पास के लोगों के प्रति चौकस रहें, इससे आध्यात्मिक मुठभेड़ हो सकती है। आवेदन: लोगों को उनकी दैनिक दिनचर्या में देखें। कुछ बातों के बारे में सोचें जो आप उनसे आध्यात्मिक बातचीत शुरू करने के लिए पूछ सकते हैं। अपनी टिप्पणियों और उन प्रश्नों को लिखें जो आप उनसे पूछ सकते हैं। उन्हें अगली समूह बैठक में साझा करें। चर्च में किसी को लंच या डिनर पर ले जाएं जिसे आप अच्छी तरह से नहीं जानते हैं।

पाठ 3

एक नया परिप्रेक्ष्य समूह आइसब्रेकर: एक पारिवारिक मूल्य क्या है जिस पर आपके माता-पिता ने जोर दिया और यह इतना महत्वपूर्ण क्यों था? परिचय: बच्चे देखने और सुनने से सीखते हैं। चेले यीशु को देखते और सुनते रहे हैं। वे उसके साथ एक साल से अधिक समय से हैं। सीचर में कुएं पर महिला के साथ उनकी मुठभेड़ के तुरंत बाद, जॉन द बैपटिस्ट को जेल में डाल दिया गया। यीशु अपने गृहनगर नासरत से कफरनहूम जाते हैं जहाँ वे अपनी सेवकाई के साथ सार्वजनिक रूप से जाते हैं। वह उपदेश देता है, बीमारों को चंगा करता है, और दुष्टात्माओं को निकालता है। यीशु जिस संदेश का प्रचार कर रहा है, वह है, "समय पूरा हुआ, और परमेश्वर का राज्य निकट है, मन फिराओ और सुसमाचार में विश्वास करो।" और जहां कहीं वह जाता है, भीड़ उसका पीछा करती रही है। यीशु अपने शिष्यों को यरूशलेम में सप्ताहों के पर्व में ले जाता है। जब वह सब्त के दिन बेथेस्डा के कुंड में एक लंगड़े आदमी को चंगा करता है, तो उसके खिलाफ विरोध शुरू हो जाता है। यीशु धार्मिक अगुवों को और अधिक क्रोधित करता है जब वह दावा करता है कि वह परमेश्वर का पुत्र है। तब उसके चेलों पर सब्त के दिन काम करने का आरोप लगाया जाता है जब वे खेतों से अनाज उठाते, भूसी और खाते हैं। गलील लौटकर, यीशु माउंट एरेमोस (एरेमोस टोपोस - "एकान्त स्थान") पर चढ़ता है जहाँ वह प्रार्थना में रात बिताता है। पहाड़ी के दक्षिणी छोर पर एक गुफा उनके लिए आश्रय प्रदान करती है। सुबह में, चेले यीशु के पास आते हैं और वह उनमें से बारह को अपने प्रेरित (भेजे हुए) होने के लिए नामित करता है। साथ में, वे एक समतल स्थान पर उतरते हैं जहाँ यीशु बोलना शुरू करते हैं जिसे आज पहाड़ी उपदेश के रूप में जाना जाता है। पर्वत पर उपदेश मसीह की व्यवस्था है। यह परमेश्वर के पारिवारिक मूल्यों पर यीशु की शिक्षा है। यह उन दस आज्ञाओं के साथ अनुकूल रूप से तुलना करता है जिन्हें मूसा ने प्राप्त किया और अपने लोगों, इस्राएलियों को दिया। पर्वत पर उपदेश और दस आज्ञाओं को देने के आसपास की घटनाएं बहुत समान हैं। दोनों घटनाएं तुरंत सप्ताह के पर्व का पालन करती हैं। घटनाओं के घटित होने से पहले मूसा और यीशु दोनों ने चमत्कार किए। दोनों का पीछा काफी संख्या में लोग कर रहे थे। दोनों एक पहाड़ पर चढ़ते हैं जहां वे भगवान के साथ समय बिताते हैं। दोनों नीचे की भीड़ को परमेश्वर की व्यवस्था देने के लिए पहाड़ पर उतरते हैं। मूसा उन दस आज्ञाओं का उद्धार करता है जो परमेश्वर की उँगली से पत्थर की दो पटियाओं पर लिखी गई हैं। यीशु अपनी आज्ञाएँ बोलते हैं और वे पवित्र आत्मा की शक्ति से लोगों के दिलों पर लिखी जाती हैं। दस आज्ञाओं और पर्वत पर उपदेश दोनों में सही जीवन जीने के निर्देश हैं। दोनों में आशीर्वाद और शाप शामिल हैं। मूसा ने इस्राएलियों को वाचा की आशीषों और शापों की घोषणा करने के द्वारा इस्राएलियों को व्यवस्था (टोरा) देना समाप्त कर दिया (व्यवस्थाविवरण 28)। यीशु ने अपनी व्यवस्था को नौ आशीषों (धन्यवाद) और चार श्रापों (दुख) के साथ देना शुरू किया। जैसे ही यीशु एरेमोस की ढलान से नीचे की प्रतीक्षा कर रहे लोगों की ओर उतरता है, उसके पास चिंतन करने का समय होता है। उसके आगे गलील का सागर दक्खिन की ओर फैला हुआ था। वीणा के आकार की झील का नीला नीला दृश्य हावी है। उनकी बायीं ओर सूर्य का सुनहरा गोला पूर्वी पहाड़ियों से ऊपर उठ गया है। उसका घर कफरनहूम दो मील दूर नहीं है। पश्चिम में गेनेसेरेट का मैदान है, जिसमें समृद्ध फसल पैदा करने वाली मिट्टी है। साल के इस समय अधिकांश दिनों में सूरज की चिलचिलाती गर्मी के कारण पूरा दृश्य धुंधला दिखाई देता है। एरेमोस का ढलान ही घास और जंगली फूलों से ढका हुआ है और गौरैयों की चहकती हवा भर जाती है। शिष्यों को, बच्चों की तरह, प्रशिक्षण के अगले चरण, पारिवारिक मूल्यों पर पाठ की आवश्यकता है। स्क्रिप्चर पढ़ना: द बीटिट्यूड्स (मैथ्यू 5:1-12) (लूका 6:20-26) समूह चर्चा: यीशु ने आठ बीटिट्यूड में जिन मूल्यों को सूचीबद्ध किया है, उनकी तुलना हमारी संस्कृति में लोगों द्वारा कैसे की जाती है? लोगों को हमारी संस्कृति कैसे सिखाई जाती है मूल्य? आज्ञा: आनन्दित और आनन्दित हो, क्योंकि

स्वर्ग में तुम्हारा प्रतिफल महान है। सबक: धन्यता लोगों के सोचने के तरीके को चुनौती देती है। यीशु चाहता है कि उसके चेले तीन बातें सीखें। पहला, परमेश्वर के परिवार में जो मूल्य हैं, वे दुनिया के मूल्यों के समान नहीं हैं। दूसरे, इन मूल्यों को धारण करने का इनाम भविष्य में है। और अंत में, कि परमेश्वर के परिवार का अंतर्निहित रवैया आनंद है, यहां तक कि उत्पीड़न के बावजूद भी। आनंद का अर्थ है अत्यधिक प्रसन्न होना। आनन्दित होने का अर्थ है फिर से अत्यधिक प्रसन्न होना। लोग खुश होने के कई कारण ढूंढते हैं और वे सभी खुद को भाग्यशाली परिस्थितियों में खोजने पर आधारित होते हैं। खुशी के कुछ कारण बच्चे के जन्म पर हो सकते हैं, काम में वृद्धि हो सकती है, जैकपॉट जीत सकते हैं, या अपनी फुटबॉल टीम को सुपर बाउल जीतते हुए देख सकते हैं। जब लोग खुश होते हैं तो वे आमतौर पर हर्षित शोर करते हैं और काफी एनिमेटेड होते हैं। यही वह मनोवृत्ति है जो यीशु चाहता है कि उसके चेले हों। लोगों के लिए खुश होना आसान होता है जब वे खुद को भाग्यशाली परिस्थितियों में पाते हैं। लेकिन जब कोई व्यक्ति खुद को दर्दनाक या कठिन परिस्थितियों में पाता है तो उसे खुश होने के लिए विशेष गुणों की आवश्यकता होती है। उसे परिस्थितियों से परे देखना चाहिए। यह ईश्वर में विश्वास करता है, यह विश्वास करते हुए कि वह इन परिस्थितियों को व्यक्ति के अपने भले के लिए अनुमति दे रहा है। इसके लिए परमेश्वर के भविष्य के वादों में आशा और दुख सहने के लिए प्रेम की भी आवश्यकता है। इसके लिए एक अलग दृष्टिकोण की आवश्यकता है। भविष्यवक्ता हबक्कूक ने भविष्यवाणी की थी कि परमेश्वर एक नई सृष्टि बनाने जा रहा है, एक अलग तरह के लोग जो दृष्टि से नहीं विश्वास से चलते थे। हबक्कूक की किताब की आखिरी तीन आयतें इस तरह पढ़ती हैं। "चाहे अंजीर का पेड़ न फूले, और न दाखलताओं में फल लगे, तौभी जलपाई की उपज घट जाए, और खेतों में अन्न न उपजे, तौभी भेड़-बकरी को काट डाला जाए, और पशु न हों। स्टालों में, तौभी मैं यहोवा के कारण घमण्ड करूंगा, मैं अपके उद्धारकर्ता परमेश्वर के कारण मगन रहूंगा। परमेश्वर यहोवा मेरा बल है, और उसने मेरे पांवों को पाँवों के समान बनाया है, और मुझे मेरे ऊंचे स्थानों पर चलता है।" नबी इस दुनिया के लोगों के देखने के तरीके की तुलना नई सृष्टि के चीजों को देखने के तरीके से करता है। पुरुष चीजों की कमी और अपने हाथों के कामों से चिंतित रहते हैं। जब ये चीजें विफल हो जाती हैं तो वे निराश हो जाते हैं। नई सृष्टि हिंद या मृग के समान बनी है। उनके पास एक बेहतर दृश्य है क्योंकि वे अधिक ऊंचाई पर रहते हैं। हिरणों को खाली स्टालों या खराब फसलों से कोई सरोकार नहीं है। वे मनुष्यों की परिस्थितियों के बारे में चिंता नहीं करते क्योंकि ऐसा नहीं है कि परमेश्वर ने उन्हें कैसे बनाया। भगवान हिरण को कपड़े पहनाते हैं और कठोर तत्वों में आश्रय प्रदान करते हैं। वह उन्हें भोजन और पानी की आपूर्ति करता है और वे दिन भर की गर्मी में ठंडी जगहों पर आराम करते हैं। कुछ लोग पूछते हैं, "परमेश्वर यीशु मसीह के कारण धर्मियों को सताने की अनुमति क्यों देता है?" तीन कारण हैं। पहला कारण यह है कि यह ईश्वर की ओर से एक चिन्ह है। यह ईसाइयों के लिए मुक्ति और उनका विरोध करने वालों के लिए विनाश का प्रतीक है। ईसाइयों को उनके उद्धार के संबंध में परमेश्वर से आश्वासन प्राप्त हो रहा है जब उन्हें यीशु मसीह की गवाही के लिए सताया जाता है। दूसरा कारण पहले से जुड़ा है, एक व्यक्ति के विश्वास की परीक्षा। असली है या नहीं? इस कारण का संदर्भ 1 पतरस 1:3-9 में मिलता है। तीसरा कारण पतरस की पहली पत्री में भी मिलता है। अध्याय 4 छंद 12-14 कहता है कि महिमा की आत्मा और परमेश्वर उन पर विश्राम करते हैं जो मसीह के कारण सताए जाते हैं। वास्तव में, जो इन व्यक्तियों का विरोध करते हैं और उन्हें सताते हैं वे परमेश्वर, उसके मसीह और उद्धार के मार्ग से घृणा करते हैं। यीशु ने कहा, "धन्य हो तुम, जब मनुष्य के पुत्र के कारण लोग तुम से बैर, और अपक्की निन्दा करते, और तुम्हारी निन्दा करते, और तुम्हारा नाम बुरा समझते हैं। उस दिन आनन्दित रहो, और आनन्दित रहो, क्योंकि देख, तेरा प्रतिफल स्वर्ग में बहुत बड़ा है, क्योंकि उसी प्रकार उनके बाप-दादा भविष्यद्वक्ताओं के साथ किया करते थे।" यीशु चाहता है कि उसके शिष्य अपने विश्वास के

लिए सताए जाने की प्रतीक्षा करें। इतना अधिक कि वह चाहता है कि वे उत्पीड़न में आनन्दित हों। यीशु ने उत्पीड़न को आदर्श माना। उसने इस वाक्यांश का उपयोग तब भी किया जब आपको सताया जाता है, बजाय इसके कि यदि आपको सताया जाता है . चूंकि यीशु उत्पीड़न को एक आशीष के रूप में देखता है, यह उसके अनुयायियों के लिए आवश्यक है कि वे उत्पीड़न के आने का रास्ता खोजें। यह काफी सरल है; बस यीशु मसीह में अपने विश्वास की घोषणा करना शुरू करें। पैटर्न को प्रेरितों के काम की पुस्तक में देखा जाता है: यीशु मसीह में विश्वास की घोषणा करें, उत्पीड़न आता है, फिर आनन्दित होना शुरू करें। समूह चर्चा:3. आप खुशी कैसे व्यक्त कर सकते हैं? पाठ का बिंदु: आनंद से जिएं, क्योंकि यह आपके लिए भगवान की इच्छा है और आपको पुरस्कृत किया जाएगा। आवेदन: पैटर्न के निम्नलिखित पांच खातों को पढ़ें प्रेरितों के काम की पुस्तक से उपदेश, उत्पीड़न और आनन्दित होने के बारे में। लिखिए कि आपने पाँच खातों के बारे में कैसा महसूस किया और समूह के साथ अपनी भावनाओं को साझा किया। पीटर और जॉन ने प्रचार किया (3:1-26) सताया (4:1-22) आनन्दित (4:23-31) प्रेरित sप्रचारित (5:12-16)उत्पीड़ित (5:17-39)खुश (5:40-42)स्टीफनप्रचारित (6:8-10)उत्पीड़ित (6:11-7:58)आनन्द (7:59-60) पॉल और बरनबास ने प्रचार किया (13:14-43) सताया गया (13:44-50)आनन्दित (13:51-52)पॉल और सीलास ने प्रचार किया (16:11-18)सताया (16:19-24)आनन्दित (16:25- 34)

पाठ 4

शाइनिंग लाइट ग्रुप आइसब्रेकर: समूह के सदस्यों को कमरे या कमरों में आंखें बंद करके घूमने के लिए कहें। समूह से निम्नलिखित प्रश्न पूछें, "इस अभ्यास ने आपको कैसा महसूस कराया?" परिचय: जैसे यीशु पर्वत पर उपदेश जारी रखते हैं, शिष्य ध्यान से सुन रहे हैं। वह सीधे उनकी ओर देखता है और घोषणा करता है कि वे पृथ्वी के नमक और जगत की ज्योति हैं। फिर अपने दाहिने हाथ के व्यापक इशारे से यीशु पश्चिम की ओर इशारा करते हैं। शिष्य की निगाहें तब तक चलती हैं जब तक कि उनकी निगाह पहाड़ी शहर ज़ेफ़त पर टिकी हुई है, जो आठ मील दूर नहीं है, जैसा कि यीशु ने उन्हें बताया, "एक पहाड़ी पर स्थित एक शहर को छिपाया नहीं जा सकता।" पवित्रशास्त्र पढ़ना: पर्वत पर उपदेश (जारी) मत्ती 5:13-16 तुम पृथ्वी के नमक हो; लेकिन अगर नमक बेस्वाद हो गया है, तो वह फिर से नमकीन कैसे बनेगा? यह अब किसी काम का नहीं, केवल मनुष्यों द्वारा फेंके जाने और पांवों से रौंदा जाने के सिवाय। आप ही दुनिया की रोशनी हो। पहाड़ी पर बसे शहर को छुपाया नहीं जा सकता। न तो लोग दीया जलाते हैं, और उसे चोंच के नाप के नीचे (एक कटोरा या टोकरी) रखते हैं, परन्तु दीवट पर; और वह घर के सब को उजियाला देता है। तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने इस प्रकार चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें। समूह चर्चा: आपको क्या लगता है कि यीशु अपने शिष्यों को पृथ्वी का नमक क्यों कहते हैं? नमक का प्रयोग वाचा के चिन्ह के रूप में किया जाता था। चेलों को पृथ्वी पर चिन्ह होना चाहिए कि परमेश्वर ने मनुष्यों के साथ एक वाचा बाँधी है। नमक एक परिरक्षक है जो भोजन को सड़न और भ्रष्टता से बचाता है। शिष्यों को लोगों के जीवन को संरक्षित करना है और उन्हें शुद्ध या पाप के भ्रष्टाचार से मुक्त रहने में मदद करना है। नमक एक मसाला है जो जीवन में स्वाद जोड़ता है। शिष्यों को आशीर्वाद देकर दूसरों के जीवन में मूल्य जोड़ना चाहिए। नमक कैसे बेस्वाद हो जाता है? लंबे समय तक हवा के संपर्क में रहने से नमक अपना स्वाद खो देता है, लेकिन केवल बाहरी सतह ही बेस्वाद हो जाती है। जमीन में रखा नमक अपना स्वाद नहीं खोता है। शिष्यों के नमक का स्रोत हृदय की मिट्टी में छिपा होना चाहिए। हृदय में नमक व्यक्ति के भीतर वास करने वाले ईश्वर के ज्ञान का द्योतक है। वाणी बोलने से हृदय में नमक छलक जाता है। कैथोलिक चर्च अभी भी कई बच्चों को उनके होठों पर या उनके मुंह में नमक डालकर एक संकेत के रूप में बपतिस्मा देता है कि भगवान का ज्ञान भीतर निवास कर रहा है। आज्ञा: तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने इस प्रकार चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें। समूह चर्चा:3. आप किसी व्यक्ति को कैसे बताएंगे कि वह अंधा था? 4. कुछ चीजें क्या हैं जो प्रकाश करता है? प्रकाश अंधकार को दूर करता है। प्रकाश छिपी हुई चीजों को उजागर करता है। प्रकाश लोगों को देखने में सक्षम बनाता है। वे अपनी जरूरत की चीजों को प्राप्त करने के लिए गतिविधियों का समन्वय करने में सक्षम हैं। प्रकाश लोगों को यह पहचानने में सहायता करता है कि चीजें क्या हैं। सबक: जैसे ही शिष्य यीशु को प्रकाश के बारे में ये शब्द बोलते सुनते हैं, उनके मन में प्रश्न बनने लगते हैं। यीशु उन्हें जगत की ज्योति क्यों कह रहे हैं? उनके पास क्या रोशनी है? वे इस प्रकाश को कैसे चमकने दे सकते हैं ताकि लोग स्वर्ग में परमेश्वर की महिमा कर सकें? यीशु किस बारे में बात कर रहा है? जैसे-जैसे शिष्य परिपक्व होते गए, उनके प्रश्नों के उत्तर मिलते गए। जब यीशु ने अपने शिष्यों को यह आदेश जारी किया तो उन्होंने "तेरे प्रकाश" का उल्लेख किया। शिष्यों ने पाया कि उनके पास एकमात्र प्रकाश यीशु ही था। प्रेरित यूहन्ना ने इस बारे में अपने सुसमाचार के आरंभिक वक्तव्य में लिखा था। “आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। वह भगवान के साथ शुरुआत में था। उसके द्वारा सब कुछ अस्तित्व में आया, और उसके अलावा कुछ भी अस्तित्व में नहीं आया जो अस्तित्व में आया है। उसी में जीवन था, और जीवन मनुष्यों का प्रकाश था। और उजियाला अन्धकार में चमकता है, और अन्धकार ने उसे

न समझा। परमेश्वर की ओर से भेजा गया एक मनुष्य आया, जिसका नाम यूहन्ना था। वह गवाही देने आया, कि ज्योति की गवाही दे, कि सब उसके द्वारा विश्वास करें। वह प्रकाश नहीं था, बल्कि इसलिए आया था कि वह प्रकाश की गवाही दे सके। एक सच्चा प्रकाश था, जो संसार में आकर प्रत्येक मनुष्य को आलोकित करता है।" प्रेरित यूहन्ना ने यीशु द्वारा अपने बारे में दिए गए एक बयान को भी दर्ज किया। यह इस तरह पढ़ता है। "इसलिये यीशु ने उन से फिर कहा, कि जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।" यीशु अपने शिष्यों को जगत की ज्योति कहते हैं। इसका कारण यह है कि उन्होंने उस पर विश्वास किया और उद्धार के मार्ग की घोषणा की। प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पियों को लिखी अपनी पत्री में इस बिंदु को और अधिक विकसित किया है। "सब कुछ बिना कुड़कुड़ाए या बिना विवाद के करो; जिस से तुम टेढ़े और टेढ़े-मेढ़े लोगों के बीच परमेश्वर की निन्दा करने से बढ़कर निर्दोष और निर्दोष ठहरोगे, जिनके बीच तुम जगत में ज्योतियों के समान दिखाई देते हो, और जीवन के वचन को थामे रहते हो, ताकि मसीह के दिन में मेरे पास गौरव का कारण हो सकता है क्योंकि मैं व्यर्थ नहीं दौड़ा और न ही व्यर्थ परिश्रम किया।" यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि वे अपने प्रकाश को इस प्रकार चमकने दें कि लोग उनके भले कार्यों को देख सकें। बदले में ये अच्छे कार्य लोगों को परमेश्वर की स्तुति करने के लिए प्रेरित करेंगे। अच्छे कामों को समझने के लिए अंतर्दृष्टि की आवश्यकता होती है, क्योंकि यदि मनुष्य अपने स्वयं के अच्छे काम करते हैं, तो उनके लिए भगवान की नहीं बल्कि उनकी प्रशंसा की जाती है। अच्छे कार्य क्या हैं, यह समझने का पहला सुराग मत्ती 19:16-17 में मिलता है। "और देखो, एक ने यीशु के पास आकर कहा, हे गुरू, मैं कौन सा भला काम करूं, कि अनन्त जीवन प्राप्त करूं?" और यीशु ने उससे कहा, "तुम मुझसे क्यों पूछ रहे हो कि क्या अच्छा है? एक ही है जो अच्छा है; परन्तु यदि तुम जीवन में प्रवेश करना चाहते हो, तो आज्ञाओं को मानना।" यीशु भलाई की तुलना केवल परमेश्वर से करता है! इसलिए, अच्छे काम वे हैं जो भगवान द्वारा किए जाते हैं, न कि पुरुषों द्वारा। जब पुरुष परमेश्वर के कार्यों की घोषणा कर रहे हैं तो वे अच्छा कर रहे हैं। यही धार्मिकता है! दो भजन इस बात को पूरी तरह स्पष्ट करते हैं। भजन संहिता 73:28 कहता है, "परन्तु परमेश्वर के समीप मेरा भला है; मैं ने परमेश्वर यहोवा को अपना शरणस्थान बनाया है, कि मैं तेरे सब कामोंका वर्णन करूं।" भजन संहिता 78:4 घोषित करता है, "हम उन्हें उनके बच्चों से न छिपाएंगे, परन्तु आनेवाली पीढ़ी से कहेंगे कि यहोवा की स्तुति, और उसकी शक्ति और उसके अद्भुत काम जो उसने किए हैं।" अंतिम सुराग यूहन्ना 6:28-29 में मिलता है। भीड़ ने यीशु से पूछा, "हम क्या करें, कि परमेश्वर के कामों को पूरा करें?" यीशु ने उत्तर दिया और उनसे कहा, "परमेश्वर का कार्य यह है कि तुम उस पर विश्वास करो जिसे उसने भेजा है।" पवित्रशास्त्र दिखाते हैं कि भले कामों में यीशु मसीह में विश्वास करना और परमेश्वर ने जो कुछ किया है उसकी घोषणा करना शामिल है। प्रेरित पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 4:4-6 में इन बातों का सारांश दिया। , जिसके मामले में इस दुनिया के भगवान ने अविश्वासियों के दिमाग को अंधा कर दिया है, कि वे मसीह की महिमा के सुसमाचार के प्रकाश को नहीं देख सकते हैं, जो भगवान की छवि है क्योंकि हम खुद को प्रचार नहीं करते हैं, लेकिन मसीह यीशु के रूप में प्रभु, और हम आप को यीशु के निमित्त तेरे दास-दास के रूप में। परमेश्वर के लिए, जिसने कहा, 'अंधेरे में से प्रकाश चमकेगा,' वही है जो परमेश्वर की महिमा के ज्ञान का प्रकाश देने के लिए हमारे दिलों में चमक गया है मसीह के सामने।" प्रेरितों ने अपने स्वयं के कार्यों की घोषणा नहीं की, लेकिन केवल अपने सेवक-हुड की घोषणा की। उन्होंने मसीह यीशु को प्रभु के रूप में प्रचारित किया और जब उन्होंने प्रचार किया तो प्रकाश चमक उठा। समूह चर्चा: 5। अपने शिष्यों को प्रकाश के बारे में अपने प्रवचन में, यीशु संभावना रखता है उस प्रकाश को छिपाया जा सकता है। क्या ईसाई अपने प्रकाश को छिपाते हैं और यदि हां, तो क्यों? (नीतिवचन 24:11-12) 6. यूहन्ना 3:18-20 में, यीशु ने घोषणा की कि लोग प्रकाश में नहीं आते बल्कि अंधकार को पसंद करते हैं

क्योंकि उनके कर्म बुरे हैं। उनके कथन को ध्यान में रखते हुए प्रकाश के रूप में आपकी क्या जिम्मेदारियां हैं? (इफिसियों 5:11-12) सबक का बिंदु: जब आप दूसरों के लिए यीशु की गवाही लाते हैं तो आपका प्रकाश चमकता है। आवेदन: नमक और प्रकाश बनो या तो इस बात की गवाही दें कि यीशु मसीह ही प्रभु हैं या किसी को यह समझने में मदद करें कि वे अंधे हैं। अगली समूह बैठक में क्या हुआ इसकी रिपोर्ट करें।

पाठ # 5

जीसस, कानून की पूर्ति और भविष्यवक्ताओं का समूह आइसब्रेकर:समूह से निम्नलिखित प्रश्न पूछें। विभिन्न प्रकार के कानून के नाम बताएं। (प्रकृति के नियम, सिद्धांत, माता-पिता, सरकारी और ईश्वर के नियम) कानून कौन बनाता है? (जो सत्ता में हैं) आपको क्यों लगता है कि हमारे पास कानून हैं? (सीमाएं स्थापित करने, दिशानिर्देश प्रदान करने, सामाजिक स्वीकृति, नागरिकों की सुरक्षा, और ईश्वरीयता को बढ़ावा देने के लिए) क्या आपने कभी कोई कानून तोड़ा है और यदि हां, तो इसका परिणाम क्या था? (हाँ) (एक दर्दनाक परिणाम) कानून तोड़ने के परिणाम क्यों होते हैं? (अनुचित व्यवहार को दंडित करने या अनुशासित करने के लिए) परिचय: अधिकांश लोगों को यहूदी धर्म में नहीं उठाया जाता है। यह समझने के लिए कि यीशु किस बारे में बात कर रहा है और चेलों ने उसे कैसे सुना, कुछ पृष्ठभूमि की जानकारी की आवश्यकता है। यीशु ने अपने अगले विषय का परिचय पर्वत के उपदेश में व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं के बारे में बात करके दिया। चलो वहाँ शुरू करते हैं। बाइबल जैसा कि हम आज जानते हैं, इसमें छियासठ पुस्तकें हैं जो दो भागों में विभाजित हैं। दो भागों को पुराने और नए नियम के रूप में जाना जाता है। नए नियम में सत्ताईस पुस्तकें हैं। इसे यीशु की मृत्यु के बाद सत्तर साल की अवधि के भीतर होने वाले विभिन्न लेखों के संग्रह से विकसित किया गया था। 397 ईस्वी में, कार्थेज की परिषद ने नए नियम को पवित्रशास्त्र के रूप में अनुमोदित किया। पुराने नियम में उनतीस पुस्तकें हैं। इसे मूसा के साथ शुरू होने वाले ग्यारह सौ साल की अवधि के भीतर होने वाले विभिन्न लेखों के संग्रह से विकसित किया गया था। ये उनतालीस पुस्तकें यीशु के समय के शास्त्र थे। जब कोई नए नियम का लेखक पवित्रशास्त्र की बात करता है तो वह केवल पुराने नियम की बात करता है। यहूदी धर्मग्रंथों को तीन भागों में बाँटते हैं। शास्त्रों को तनख कहा जाता है, जो तीन भागों के पहले अक्षरों से बना एक संक्षिप्त शब्द है। तोरा पहला भाग है और इसका अर्थ है "कानून" या "शिक्षण"। टोरा में मूसा या पेंटाटेच (उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, संख्या और व्यवस्थाविवरण) की पाँच पुस्तकें शामिल हैं। N'vi'im दूसरा भाग है और इसका अर्थ है "पैगंबर"। इस भाग में ऐतिहासिक पुस्तकें (यहोशू, न्यायाधीश, 1 और 2 शमूएल, और 1 और 2 राजा), प्रमुख भविष्यद्वक्ता (यशायाह, यिर्मयाह और यहेजकेल) और छोटे भविष्यद्वक्ता (होशे, योएल, आमोस, ओबद्याह, योना, मीका) शामिल हैं। नहूम, हबक्कूक, सपन्याह, हाग्गै, जकर्याह और मलाकी)। K'tuvim तीसरा प्रभाग है और इसका अर्थ है "लेखन"। द राइटिंग्स में शामिल हैं पांच स्क्रॉल (सभोपदेशक, रूथ, एस्तेर, गीतों का गीत, और विलाप) और अन्य लेखन (1 और 2 इतिहास, एज्रा, नहेम्याह, अय्यूब, भजन, नीतिवचन, और दानिय्येल)। टोरा ("कानून" या "शिक्षण") में छह सौ तेरह कानून शामिल हैं। तीन सौ पैंसठ नकारात्मक हैं। यहूदी रब्बियों के अनुसार माना जाता है कि ये शरीर में नसों की संख्या या एक वर्ष में दिनों के अनुरूप होते हैं। दो सौ अड़तालीस सकारात्मक नियम हैं, जो शरीर में हड्डियों की संख्या के अनुरूप हैं। हड्डियों का उद्देश्य शरीर को संरचना प्रदान करना है। नसें रक्त ले जाती हैं और "जीवन रक्त में है।" साथ में भगवान के नियम शरीर के लिए जीवन और संरचना प्रदान करते हैं या जिस तरह से एक व्यक्ति को दैनिक या वर्ष में 365 दिन रहना चाहिए। ये कानून दो व्यापक श्रेणियों में आते हैं: औपचारिक (भगवान के प्रति कानून) और नागरिक (एक दूसरे के प्रति कानून)। दस आज्ञाएँ इन सभी नियमों को संक्षेप में प्रस्तुत करती हैं और निर्गमन 20:1-17 में पाई जाती हैं। जब मूसा सीनै पर्वत से उतरा तो उसने पत्थर की दो पट्टियों पर लिखी दस आज्ञाओं को सुनाया। प्रत्येक पटल पर पाँच आज्ञाएँ लिखी हुई थीं। (पाठ के अंत में संलग्नक देखें) पहले पांच नियम मनुष्य के परमेश्वर के साथ संबंध से संबंधित हैं और दूसरे पांच नियम मनुष्य के एक दूसरे से संबंध से संबंधित हैं। पाँच के प्रत्येक सेट को अवरोही क्रम में सबसे बड़े से सबसे छोटे तक सूचीबद्ध किया गया है। विचार यह है कि यदि कोई व्यक्ति छोटी से छोटी आज्ञाओं को तोड़ता है तो वह एक ऐसे मार्ग पर होता है जो सबसे बड़ी आज्ञा को

तोड़ने की ओर ले जाता है। पाँच के पहले सेट में पाँचवीं आज्ञा है "अपने पिता और माता का आदर करना"। यदि कोई व्यक्ति उस आज्ञा को तोड़ता है तो यह पहली आज्ञा को तोड़ने की ओर ले जाता है, "मेरे सामने तुम्हारे पास कोई अन्य देवता नहीं होगा"। विचार इस प्रकार है। यदि कोई व्यक्ति अपने माता-पिता का सम्मान नहीं करेगा जिन्हें भगवान ने अपने ऊपर रखा है, तो वह भगवान का सम्मान भी नहीं करेगा क्योंकि वह स्वयंभू है और खुद को भगवान मानता है। पाँच के दूसरे सेट में, दसवीं आज्ञा है कि "तुम किसी भी चीज़ का लालच न करना जो किसी और की हो"। यदि कोई व्यक्ति उस आज्ञा को तोड़ता है तो यह छठी आज्ञा को तोड़ने की ओर ले जाता है, "तुम हत्या नहीं करना"। विचार इस प्रकार है। जब कोई व्यक्ति लालच करता है तो वह उसे पाने के लिए कुछ भी नहीं रोकता है। इस अवधारणा का एक वर्तमान उदाहरण एक बैंक लुटेरा होगा, जो होल्डअप के दौरान किसी की हत्या कर देता है। वह किसी ऐसी चीज का लालच करके शुरू करता है जो उसकी नहीं है, और फिर वह जो चाहता है उसे चुरा लेता है और अंत में उसे पाने के लिए किसी की हत्या कर देता है। दस आज्ञाओं को आगे केवल दो आज्ञाओं द्वारा संक्षेपित किया जा सकता है। जब यीशु का सामना इस प्रश्न से हुआ कि व्यवस्था में कौन-सी महान आज्ञा थी, तो यीशु ने दो शास्त्रों को उद्धृत करते हुए उत्तर दिया: व्यवस्थाविवरण 6:5 और लैव्यव्यवस्था 19:18। "और उस ने उस से कहा, तू अपके परमेश्वर यहोवा से अपके सारे मन से, और अपके सारे प्राण से, और अपक्की सारी बुद्धि से प्रेम रखना। यह बड़ी और मुख्य आज्ञा है। दूसरी इस प्रकार है, 'तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।' सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता इन्हीं दो आज्ञाओं पर निर्भर करते हैं।" पवित्रशास्त्र पढ़ना: व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता (मैथ्यू 5:17-20) आज्ञा: "यह न समझो कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं को मिटाने आया हूं; मैं मिटाने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं।" समूह चर्चा: आज कलीसिया में कई लोग कह रहे हैं कि ईसाई अब कानून के अधीन नहीं बल्कि अनुग्रह के अधीन हैं। आप इस कथन का क्या अर्थ समझते हैं? सबक: यीशु नहीं चाहते कि उनके शिष्य यह सोचें कि वह उनके पास जो कुछ भी है उसे दूर कर रहे हैं अपने स्वयं के धर्म को स्थापित करने के लिए सिखाया गया था। वह ऐसा नहीं कर रहा है। लेकिन माता-पिता की तरह अपने बच्चों के प्रति वह चाहता है कि वे ज्ञान और समझ हासिल करें। जब यीशु ने कानून और भविष्यवक्ताओं के बारे में बात की तो वह सिर्फ एक से अधिक के बारे में बात कर रहे थे कुछ कानून और भविष्यवाणियां। वह उन सभी के योग के बारे में बात कर रहा था जो पवित्रशास्त्र में लिखे गए थे। यीशु उन सभी चीजों का जिक्र कर रहे थे जो उनके पिता ने स्थापित की थीं (कानून) और वह सब कुछ जो उनके पिता चाहते थे (भविष्यद्वक्ताओं)। और यीशु घोषित किया कि वह अकेले ही उन्हें पूरा करेगा! मृतकों में से अपने पुनरुत्थान के बाद, यीशु अपने दो शिष्यों के सामने प्रकट हुए, जब वे एम्मॉस के रास्ते में थे। "और मूसा ("टोरा" या "व्यवस्था" या "शिक्षण") से शुरू हुआ। और सब भविष्यद्वक्ताओं के साथ उस ने उन्हें अपने विषय में जो कुछ पवित्र शास्त्र में है, समझा दिया।" कोई भी साधारण व्यक्ति जो कुछ लिखा गया था, उसे पूरी तरह से पूरा नहीं कर सकता था, केवल एक जिसे पवित्रशास्त्र ने गवाही दी थी, परमेश्वर का वचन, स्वयं, यीशु। प्रेरित यूहन्ना के अनुसार सुसमाचार यीशु की इस गवाही के साथ खुलता है। "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। वह भगवान के साथ शुरुआत में था। उसके द्वारा सब कुछ अस्तित्व में आया, और उसके अलावा कुछ भी अस्तित्व में नहीं आया जो अस्तित्व में आया है"। जॉन के शब्द अर्थ के साथ गर्भवती हैं, लेकिन समझना मुश्किल है। आइए उन पर अपनी पकड़ बनाने की कोशिश करें। क्या आपको याद है कि बाइबल कैसे शुरू होती है? "शुरुआत में भगवान ने आकाश और पृथ्वी को बनाया।" क्या आपको याद है कि उन्हें कैसे बनाया गया था? भगवान ने उन्हें अस्तित्व में बताया। उनके वचन से ही सब कुछ अस्तित्व में आया। यूहन्ना के अनुसार, यीशु परमेश्वर का वचन है। आप कह सकते हैं कि यीशु परमेश्वर के प्रत्येक विचार और योजना के पीछे रचनात्मक शक्ति है। वह चीजों को पास करता

है! परमेश्वर ने अपने पुत्र, परमेश्वर के वचन के माध्यम से सब कुछ बनाया। पवित्रशास्त्र स्वर्ग में हमारे पिता के प्रकट विचार और योजनाएँ हैं; उन्हें पूरा करना परमेश्वर के वचन पर निर्भर है। क्योंकि उसके सिवा कुछ भी सृजा नहीं गया। हम परमेश्वर के वचन को उस नाम से जानते हैं जिसे वह जन्म के समय दिया गया था, यीशु या यशुआ या यहोशू। नाम का अर्थ "मैं मुक्ति हूँ" या "भगवान का उद्धार" है। परमेश्वर के लोगों को भी परमेश्वर के वचन को इम्मानुएल या "परमेश्वर हमारे साथ" के रूप में संदर्भित करना था। हालाँकि, परमेश्वर का वचन केवल यीशु या इम्मानुएल से कहीं अधिक है। वह परमेश्वर का पुत्र है, जो सभी चीजों का निर्माता है और परमेश्वर, उसके पिता के साथ एक है। वह उस सब की अभिव्यक्ति है जो ईश्वर है। चूँकि परमेश्वर और पिता का वचन एक है, उन्हें कैसे विभाजित किया जा सकता है? वे नहीं कर सकते। परमेश्वर का वचन हमेशा पिता के साथ मेल खाता है और उसकी इच्छा के अलावा कुछ नहीं कर सकता। यूहन्ना 4:34 में यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "मेरा भोजन उसके भेजने वाले की इच्छा पर चलना और उसका कार्य पूरा करना है।" एकता, एकता और सद्भाव की यह अवधारणा मनुष्य को दी गई थी क्योंकि हम भगवान की छवि में बनाए गए थे। और चूंकि हम उनकी छवि में बनाए गए थे, भगवान नहीं चाहते कि हम झूठ बोलें। झूठ सद्भाव, एकता और एकता को नष्ट कर देता है। यीशु अपने शिष्यों को वह करने के लिए आगाह किया जो उन्होंने कहा था कि वे करने जा रहे थे जब उन्होंने उनसे कहा, "तुम्हारी हाँ हाँ हो, और तुम्हारा ना हो"। जब कोई व्यक्ति वह नहीं करता जो वह कहता है कि वह करने जा रहा है तो यह छवि को धूमिल करता है भगवान की। उस व्यक्ति में कोई एकता, एकता या सद्भाव नहीं है क्योंकि उसके शब्द उसके कार्यों के अनुरूप नहीं हैं। जैसा कि यीशु बोलना जारी रखता है, वह अपने शिष्यों को आश्वासन देता है कि जब तक इसमें सब कुछ पूरा नहीं हो जाता तब तक कानून समाप्त नहीं होगा। सभी आज्ञाएं कानून में आध्यात्मिक, पवित्र और अच्छे हैं। इसे इस तरह से सोचें, "कौन सा कानून लोगों के लिए अच्छा नहीं है?" यदि व्यवस्था अच्छी है, तो परमेश्वर, जो भला है और उसने उन्हें दिया है, उन्हें नहीं हटाएगा। यीशु आगे कहते हैं, "जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को रद्द करता है, और दूसरों को सिखाता है, वह सबसे छोटा कहलाएगा। स्वर्ग के राज्य; परन्तु जो कोई उन्हें रखता और सिखाता है, वह स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा।" क्या आपने उनके बयान में कुछ दिलचस्प देखा? एक व्यक्ति स्वर्ग के राज्य में हो सकता है और आज्ञाओं का पालन नहीं कर सकता है और दूसरों को भी ऐसा ही करना सिखा सकता है। आज्ञाओं का पालन करना या न रखना स्वर्ग के राज्य में बने रहने की आवश्यकता नहीं है। उनका पालन केवल स्वर्ग के राज्य में व्यक्ति के कद को निर्धारित करता है। यीशु का अगला बयान एक ब्लॉकबस्टर है! "क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जब तक तुम्हारा धर्म शास्त्रियों और फरीसियों के धर्म से बढ़कर न हो, तब तक तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने न पाओगे। व्यवस्था और आज्ञाओं को मानने से स्वर्ग के राज्य में प्रवेश प्राप्त नहीं किया जा सकता। यीशु ने कहा कि धार्मिकता इससे बड़ी है। शास्त्रियों और फरीसियों की, जिन्होंने प्रत्येक कानून को पूरी तरह से पालन करने की कोशिश की, आवश्यक था। यह धार्मिकता क्या है? रोमियों 4:3 और 9 में प्रेरित पौलुस इस प्रश्न का उत्तर देता है। "पवित्रशास्त्र क्या कहता है? 'और अब्राहम ने ईश्वर को माना , और यह उसके लिए धार्मिकता के रूप में गिना गया था।'" इब्राहीम न केवल यह मानता था कि परमेश्वर अस्तित्व में है बल्कि परमेश्वर ने जो कहा है। अब्राहम ने परमेश्वर के वचन पर विश्वास किया। यीशु परमेश्वर का वचन है। अब्राहम ने परमेश्वर और उसके वचन, पिता और परमेश्वर पर भरोसा किया पुत्र इस भरोसे, विश्वास या विश्वास को विश्वास कहा जाता है। "इब्राहीम के लिए विश्वास को धार्मिकता के रूप में गिना गया।" पाठ का बिंदु: यीशु मसीह, कानून और भविष्यवक्ताओं की सभी आवश्यकताओं को पूरा करता है। एक व्यक्ति उन आवश्यकताओं को पूरा करके स्वर्ग के राज्य में प्रवेश प्राप्त नहीं करता

है, लेकिन यीशु मसीह पर विश्वास और निर्भरता के द्वारा, के वचन भगवान आवेदन: अगली समूह बैठक में किसी भी अवसर की रिपोर्ट करें जब आप भगवान या किसी अन्य के लिए कुछ करने के लिए प्यार से प्रेरित थे।

पाठ # 6

क्रोध को शांत करना आइसब्रेकर: जब आप बड़े हो रहे थे तो आपके परिवार में विवाद कैसे सुलझाए गए थे? परिचय: पिछले पाठ का परिचय कानून से संबंधित है। मूसा को दिए गए नियमों को दस आज्ञाओं द्वारा संक्षेपित किया जा सकता है, जो बदले में दो को कम किया जा सकता है: भगवान से प्यार करो और अपने पड़ोसी से प्यार करो। वास्तव में पूरे कानून को सिर्फ एक शब्द, प्रेम तक सीमित किया जा सकता है। प्रेरित पौलुस ने उस विचार को कानून और अनुग्रह पर अपने प्रवचन में विकसित किया, जिसका शीर्षक गलाटियन्स था। “हे भाइयो, तुम स्वतन्त्रता के लिये बुलाए गए हो; न केवल अपनी स्वतंत्रता को शरीर के लिए एक अवसर में बदलना, बल्कि प्रेम के माध्यम से एक दूसरे की सेवा करना। क्योंकि सारी व्यवस्था एक ही शब्द में पूरी होती है, ‘तू अपके पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखेगा।’ परन्तु यदि तू एक दूसरे को काटे और खा जाए, तो सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि तू एक दूसरे से भस्म हो जाए। परन्तु मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो, और तुम शरीर की अभिलाषा पूरी न करोगे। क्योंकि शरीर अपनी अभिलाषा आत्मा के विरुद्ध, और आत्मा शरीर के विरुद्ध करता है; क्योंकि ये एक दूसरे के विरोध में हैं, जिस से जो तुझे अच्छा लगे वह न करना। परन्तु यदि तुम आत्मा के द्वारा चलाए जाते हो, तो व्यवस्था के अधीन नहीं हो।" पौलुस उस कथन में दो शब्दों को सीधे तौर पर जोड़ता है, आत्मा और प्रेम। वे एक ही हैं। प्रेरित यूहन्ना इस सोच से सहमत हैं। यूहन्ना 4:24 का सुसमाचार कहता है, "परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से दण्डवत करें।" 1 यूहन्ना 4:8 में वह आगे कहता है, "जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।" यीशु के मरे हुओं में से पुनरुत्थान के बाद चेलों ने पवित्र आत्मा प्राप्त किया। वे परमेश्वर से भर गए! वे प्रेम से भर गए! परमेश्वर का राज्य या परमेश्वर का शासन मनुष्यों के हृदयों में वास करने के लिए आया था। उन्होंने आत्मा प्राप्त की क्योंकि वे स्वीकार किया कि यीशु, परमेश्वर का वचन, परमेश्वर का पुत्र था। प्रेरित यूहन्ना ने इसे 1 यूहन्ना 4:15-16 में सारांशित किया। "जो कोई यह मान लेता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, परमेश्वर उस में बना रहता है, और वह परमेश्वर में . और हम ने उस प्रेम को जान लिया, और उस पर विश्वास किया है जो परमेश्वर ने हम से किया है। परमेश्वर प्रेम है, और जो प्रेम में बना रहता है वह परमेश्वर में बना रहता है, और परमेश्वर उस में बना रहता है। एक व्यक्ति के पवित्र आत्मा को प्राप्त करने के बाद उससे प्रेम में चलने की अपेक्षा की जाती है। "आत्मा के नेतृत्व में रहो" जैसा कि प्रेरित पॉल कहते हैं। व्यक्तिगत कानून अब उस पर शासन नहीं करते हैं। वह मूसा की व्यवस्था के अधीन नहीं है, बल्कि परमेश्वर के शासन के अधीन है। उसे अनुग्रह प्राप्त हुआ है, परमेश्वर का प्रेम उसमें वास करने के लिए आ रहा है। वह आत्मा के कानून के अधीन है। यह कहना कि ईसाई कानून के अधीन नहीं हैं, एक गलत और भ्रामक कथन है। एक व्यक्ति जो किसी प्रकार के कानून द्वारा शासित नहीं है, वह कानूनविहीन है दूसरे शब्दों में, वह अपने आप में एक व्यवस्था है जो उसकी अपनी दृष्टि में सही है। यीशु ने चेतावनी दी कि अंत के दिनों में अधर्म बढ़ेगा और लोगों का प्रेम ठंडा हो जाएगा। और प्रेरित पौलुस ने चेतावनी दी थी कि अधर्म का आदमी प्रकट होगा, जो विनाश का पुत्र है। शैतान अधर्मी था, वह संहारक है और जो लोग अधर्म का पालन करते हैं वे उसकी संतान हैं। ईसाइयों को आत्मा के कानून द्वारा शासित किया जाना है, इसलिए, प्रेम में आचरण करने के लिए बाध्य हैं। अपने पूरे प्रवचन के दौरान यीशु धैर्यपूर्वक अपने शिष्यों को छोटे बच्चों की तरह पढ़ाते हैं। वे जो कुछ भी जानते हैं उसे लेता है और गहराई से इसकी जांच करने के लिए प्रेरित करता है। यीशु चाहता है कि वे समझें कि व्यवस्था के पीछे क्या है। कानून की भावना क्या है या इसका मकसद क्या है? वह चाहता है कि वे सुनें और सीखें कि वे प्रेम की अभिव्यक्ति बन सकते हैं। शास्त्र पढ़ना: हत्या (मत्ती 5:21-26) समूह चर्चा: ऐसी कौन सी बात है जिसके कारण आप क्रोधित हो जाते हैं? आप सामान्य रूप से कब तक क्रोधित रहते हैं?आप कौन हैं भाई? कुछ उदाहरण

दीजिए। (भाई वे हैं जिनके या तो एक ही पिता या माता हैं, चाहे जन्म से या गोद लेने से या तो शारीरिक या आध्यात्मिक रूप से) आज्ञाएँ: अपनी भेंट वेदी के सामने छोड़ दो, और अपने रास्ते जाओ; पहिले अपने भाई से मेल मिलाप करना, और फिर आकर अपनी भेंट चढ़ा देना। जब तू मार्ग में अपने विरोधी के संग हो, तब उस से फुर्ती से मित्रता करना। पाठ: यीशु ने छठी आज्ञा को उद्धृत करते हुए इस पाठ की शुरुआत की, "तू हत्या न करना।" कुछ लोगों का मानना है कि यह आदेश पढ़ता है, "तू हत्या नहीं करेगा" और इसका अर्थ यह है कि कोई भी दूसरे के जीवन को लेने के लिए उचित नहीं है। यदि कोई व्यक्ति अपने लिए यह पद धारण करता है तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है। हालाँकि, दोनों पुराने और नए नियम का पवित्रशास्त्र इन दो विचारों को व्यक्त करने के लिए अलग-अलग शब्दों का उपयोग करता है। हत्या एक निंदनीय कृत्य है। यह सरकार द्वारा निष्पादित दंड के अधीन है। सजा मौत ही हो सकती है। दुर्घटनावश किसी की हत्या करना हत्या नहीं, हत्या है। किसी पर हमला होने पर अपनी, परिवार या संपत्ति की रक्षा करते हुए किसी की हत्या करना हत्या नहीं है, यह आत्मरक्षा है। युद्ध अपने आप में हत्या नहीं है; हालाँकि, परिस्थितियों के आधार पर युद्ध के ढांचे के भीतर होने वाली हत्या के व्यक्तिगत कार्य हो सकते हैं। इस पाठ में यीशु व्यक्तिगत जिम्मेदारी की अवधारणा को पुष्ट करते हैं। वह घोषणा करता है कि एक व्यक्ति के कार्यों और उद्देश्यों का न्याय किया जाएगा और बुरे कार्यों का अपना दंड होगा। यीशु हत्या के कदमों के पैटर्न और एक व्यक्ति के शरीर, आत्मा और आत्मा पर उनके प्रभाव को उजागर करता है। फिर वह हत्या की रोकथाम के निर्देश के साथ बंद करता है। हत्या हमेशा पूर्व नियोजित होती है। हत्या करने की प्रक्रिया के चरण हमेशा एक जैसे होते हैं। कुछ मामलों में प्रक्रिया बहुत तेजी से होती है। अदालतों में इन्हें आमतौर पर "जुनून के अपराध" के रूप में वर्णित किया जाता है। हत्यारे के पास अपने कार्यों के परिणामों पर विचार करने के लिए बहुत कम समय होता है। इसलिए, अदालत आमतौर पर अपनी सजा में अधिक उदार होती है। अन्य समय में प्रक्रिया धीरे-धीरे विकसित होती है, जिससे हत्यारे को अपने कार्यों पर विचार करने और उन पर पश्चाताप करने का समय मिलता है। क्योंकि यह व्यक्ति जानबूझकर और जानबूझकर कार्रवाई के दौरान जारी रहता है, इसे पूर्व नियोजित हत्या माना जाता है और अदालतों में इसे और अधिक कठोरता से निपटाया जाता है। यहां तक कि एक हत्या के कमीशन में जिसे "जुनून का अपराध" के रूप में वर्णित किया गया है, व्यक्ति ने कई बार हत्या करने के कदमों का पूर्वाभ्यास किया है, लेकिन वास्तव में इसे करने से रोक दिया है, जैसा कि हम देखेंगे। इस लिहाज से यह पूर्व नियोजित है। आइए उस प्रक्रिया के चरणों को देखें जो हत्या की ओर ले जाती है। यीशु उनमें से प्रत्येक को मत्ती 5:22 में प्रस्तुत करता है। चेतावनी के संकेत प्रक्रिया में प्रत्येक चरण के साथ होते हैं और पाप पर काबू पाने में विफलता का परिणाम होते हैं। इस प्रक्रिया में पहला चेतावनी संकेत किसी के प्रति क्रोध है। याकूब 4:1-3 के अनुसार यह सब शरीर में शुरू होता है, मांस की वासना। “तुम्हारे बीच झगड़ों और झगड़ों का स्रोत क्या है? क्या आपके सुखों का स्रोत नहीं है जो आपके सदस्यों में युद्ध छेड़ता है? तुम वासना और नहीं है; तो तुम हत्या करते हो। और तुम ईर्ष्यालु हो और प्राप्त नहीं कर सकते; इसलिए तुम लड़ते और झगड़ते हो। आपके पास नहीं है क्योंकि आप नहीं पूछते हैं। तुम मांगते हो और पाते नहीं, क्योंकि तुम गलत नीयत से मांगते हो, ताकि उसे अपने सुखों पर खर्च कर सको।” किसी व्यक्ति के क्रोध को सही ठहराने वाले व्यक्तिगत कारण उतने ही विविध हैं जितने कि इंद्रधनुष के रंग। लेकिन यह इस पर उबलता है, "मेरे पास वह नहीं है जो मैं चाहता हूं, इसलिए मुझे गुस्सा होने का अधिकार है।" दूसरा चेतावनी संकेत तब आता है जब क्रोधी व्यक्ति दूसरे को नीचा दिखाता है। यीशु ने "राका" शब्द का प्रयोग किया जिसका अर्थ है "मैं तुम पर थूकता हूं" या "मैं तुम्हारा तिरस्कार करता हूं"। प्रलोभन आँखों की वासना से आता है। यह मन या आत्मा से संबंधित है। क्रोधी व्यक्ति अपने आप को एक उच्च पद पर या दूसरे से अधिक महत्व के एक में देखता है। इसलिए उसे दूसरे का तिरस्कार करने का अधिकार है। याकूब

4:6 और 10 उस विषय पर बात करते हैं। "इसलिये यह कहता है, 'परमेश्वर घमण्ड का विरोध करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।'" "प्रभु के साम्हने अपने आप को दीन करो, और वह तुम्हें ऊंचा करेगा।" तीसरी और अंतिम चेतावनी जो हत्या से पहले होती है, वह है जब क्रोधित, तिरस्कार करने वाला व्यक्ति दूसरे पर मूर्ख होने का आरोप लगाता है। शास्त्रों के अनुसार मूर्ख केवल मूर्ख ही नहीं, बल्कि वह भी है जो अपने हृदय में कहता है कि ईश्वर नहीं है। आरोप लगाने या न्याय करने का प्रलोभन आत्मा के माध्यम से आता है और इसे जीवन का गौरव कहा जाता है। यह भाइयों पर दोष लगानेवाले शैतान का पाप है। क्रोधी, तिरस्कार करने वाला व्यक्ति ईश्वर की भूमिका निभाता है, मनुष्यों के हृदयों का न्याय करने में सक्षम होता है। तब न्यायाधीश के रूप में, वह एक वाक्य निष्पादित करने में सक्षम होता है। याकूब 4:11-12 कहता है, “हे भाइयो, एक दूसरे के विरुद्ध मत बोलो। जो भाई के विरुद्ध बोलता है, या अपने भाई का न्याय करता है, वह कानून के खिलाफ बोलता है, और कानून का न्याय करता है; परन्तु यदि तुम व्यवस्था का न्याय करते हो, तो व्यवस्था पर चलने वाले नहीं, परन्तु उसके न्यायी हो। व्यवस्था देनेवाला और न्यायी केवल एक ही है, जो बचाने और नाश करने में समर्थ है; परन्तु तू कौन है जो अपने पड़ोसी का न्याय करता है?” यीशु ने अपने शिष्यों को चुनौती देकर अपनी टिप्पणी समाप्त की। जब क्रोध का कारण शिष्य का दोष हो तो उन्हें दूसरों में क्रोध को वश में करने के लिए आक्रामक कार्रवाई करनी होती है। यीशु चाहता है कि वे शांतिदूत बनें। और वह चाहता है कि वे शीघ्रता से मेल करें और गलत को ठीक भी करें। यीशु का पहला निर्देश यह है, "इस कारण यदि तू अपक्की भेंट वेदी पर चढ़ाए, और वहां स्मरण रहे, कि तेरे भाई को तुझ से कोई विरोध है, तो अपक्की भेंट वहीं वेदी के साम्हने छोड़ दे, और अपना मार्ग ले; पहिले अपने भाई से मेल मिलाप कर, और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।” विचार यह है, "परमेश्वर के सामने आने से पहले उस व्यक्ति से मेल कर लो जो तुमसे नाराज़ है।" दूसरा निर्देश यह है कि, "जब आप रास्ते में अपने विरोधी के साथ हों, तो उसके साथ जल्दी से मित्रता करें, ताकि आपका प्रतिद्वंद्वी आपको न्यायाधीश और न्यायाधीश को अधिकारी को न सौंपे, और आपको जेल में डाल दिया जाए। . मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जब तक तुम अंतिम शत-प्रतिशत न चुका दो, तब तक तुम वहां से न निकलोगे।” यीशु तीन बिंदु बनाता है। सबसे पहले, यह आपको किसी भी तरह से खर्च करने वाला है। दूसरे, अपनी मर्जी से गलत को सही करने से गुस्सा कम होता है और दोस्त बनाने का मौका मिलता है। अगर मामला कोर्ट में चला जाता है तो उस व्यक्ति का गुस्सा शांत नहीं होता है और फैसला जीतने के बाद भी आप उसके दोस्त नहीं होंगे। अंत में, क्रोध के कारण को दूर करने से वह व्यक्ति तुच्छ नहीं होगा और आपका न्याय नहीं करेगा इस प्रकार आपने उसे पाप करने से रोक दिया है। आवेदन: हत्या का पैटर्न स्पष्ट है। वासना क्रोध उत्पन्न करती है, अभिमान तिरस्कार उत्पन्न करता है, और न्याय दोष उत्पन्न करता है, जो निष्पादन की ओर ले जाता है। हत्या की शुरुआत गुस्से से होती है। इससे निपटने के लिए शास्त्र सरल व्यावहारिक सलाह देते हैं। क्रोध में दिए गए व्यक्ति के साथ संगति न करें; वा क्रोधी मनुष्य के संग जाना, कहीं ऐसा न हो कि तुम उसके मार्ग सीखो, और अपने लिये फन्दा ढूंढो। (नीतिवचन 22:24-25) कोमल उत्तर से क्रोध ठण्डा हो जाता है, परन्तु कटु वचन क्रोध को भड़का देता है। (नीतिवचन 15:1) मनुष्य का विवेक उसे क्रोध करने में धीमा कर देता है, और अपराध को अनदेखा करना उसकी महिमा है। (नीतिवचन 19:11) गुपचुप भेंट से क्रोध शांत होता है, और घूस छाती में, और प्रबल क्रोध को शांत करती है। (नीतिवचन 21:14)क्रोधित हो, तौभी पाप न करना; अपने क्रोध पर सूर्य को अस्त न होने दें, और शैतान को अवसर न दें। (इफिसियों 4:26-27) अगली समूह सभा में रिपोर्ट करें कि किसी भी अवसर पर आपको क्रोधित होना पड़ा और आपने अपने साथ कैसे व्यवहार किया

पाठ # 7

विश्वासयोग्य आइसब्रेकर होना: आपके पहले प्रेमी या प्रेमिका के कौन से गुण आपको आकर्षित करते हैं? परिचय: यीशु ने अपने पहाड़ी उपदेश को परमेश्वर के राज्य में पारिवारिक मूल्यों की शिक्षा देना जारी रखा। उनका अगला विषय व्यभिचार है। यीशु व्यभिचार के विषय से निपट नहीं रहा है, जो सभी अनुचित यौन संबंधों के लिए एक सामान्य शब्द है और इसमें व्यभिचार, पशुता, व्यभिचार, वेश्यावृत्ति, अनाचार और समलैंगिकता शामिल है। हालांकि व्यभिचार में केवल अनुचित यौन संबंधों से कहीं अधिक शामिल है। यह वाचा संबंधों का उल्लंघन है। जब व्यभिचार आध्यात्मिक संदर्भ में होता है तो इसे धर्मत्याग, दूर हो जाना या मूर्तिपूजा कहा जाता है। आज बहुत से लोगों को व्यभिचार शब्द की उचित समझ नहीं है। अधिकांश लोग कहेंगे कि व्यभिचार तब होता है जब एक विवाहित व्यक्ति दूसरे के साथ यौन संबंध रखता है जो उसका जीवनसाथी नहीं है। इस अभ्यास में शामिल होना अनैतिकता या अशुद्धता माना जाता है और अक्सर व्यभिचार की ओर ले जाता है। हालाँकि, यह अपने आप में व्यभिचार नहीं है। व्यभिचार का हिब्रू अर्थ है विवाह को तोड़ना या एकता को तोड़ना। विवाह के भीतर अनैतिक यौन संबंध हो सकते हैं, लेकिन यदि युगल विवाहित रहता है तो विवाह या एकता का टूटना नहीं होता है, इसलिए व्यभिचार नहीं होता है। व्यभिचार माने जाने के लिए तीन घटनाएं होनी चाहिए: विवाह, तलाक और पुनर्विवाह। विवाह एकता है। यह एक पुरुष और महिला के शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से एक होने का कार्य है। इसमें दोनों के बीच एक समझौता या वाचा शामिल है। वे एक दूसरे के लिए अपने जीवन की प्रतिज्ञा करते हैं, एक साथ रहते हैं और एक दूसरे के प्रति कृपा दिखाते हैं। विवाह के लिए प्रतिज्ञा, शपथ या वचन देने की आवश्यकता होती है और भगवान उनके साक्षी होते हैं। तलाक एक सार्वजनिक बयान है कि शादी में शामिल हुए दो जीवन अलग हो गए हैं या अलग हो गए हैं। यह विवाह का टूटना या एकता का टूटना है। यह इंगित करता है कि तलाक होने के बाद युगल एक साथ नहीं रहेंगे या एक दूसरे के प्रति पक्ष नहीं दिखाएंगे। तलाक प्रमुख तत्व है जो व्यभिचार होने के लिए द्वार खोलता है। मत्ती 5:31-32 में यीशु इस बात को कहते हैं। "और यह कहा गया, 'जो कोई अपनी पत्नी को भेजे, वह उसे तलाक का प्रमाण पत्र दे'; लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के अलावा तलाक देता है, वह उससे व्यभिचार करता है; और जो कोई शादी करता है एक तलाकशुदा महिला व्यभिचार करती है। व्यभिचार पुनर्विवाह पर ही होता है, जब नई प्रतिज्ञा, शपथ या वादे दिए जाते हैं। फरीसी अच्छी तरह से जानते थे कि व्यभिचार के मुद्दे में तलाक की भूमिका होती है और उन्होंने इस पर यीशु से सवाल किया। वे जानना चाहते थे कि क्या यह मरकुस 10:3-12 में यीशु के उत्तर का पूरा लेखा-जोखा मिलता है। “और उस ने उन से कहा, मूसा ने तुझे क्या आज्ञा दी है?” उन्होंने कहा, 'मूसा ने एक आदमी को तलाक का प्रमाण पत्र लिखने और उसे विदा करने की अनुमति दी।' लेकिन यीशु ने उनसे कहा, 'आपके दिल की कठोरता के कारण उसने आपको यह आज्ञा लिखी है। लेकिन सृष्टि की शुरुआत से, भगवान ने उन्हें नर और नारी बनाया। इस कारण से एक आदमी अपने पिता और माता को छोड़ देगा, और दोनों एक हो जाएंगे एच; फलस्वरूप वे अब दो नहीं, बल्कि एक तन हैं। इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे कोई मनुष्य अलग न करे।’ और घर में चेलोंने उस से इस विषय में फिर पूछा। और उस ने उन से कहा, जो कोई अपक्की पत्नी को त्यागकर दूसरी स्त्री से ब्याह करे, वह उस से व्यभिचार करता है; और यदि वह आप ही अपके पति को त्यागकर किसी दूसरे पुरूष से ब्याह करे, तो वह व्यभिचार करती है।'" प्रेरित पौलुस इस दृष्टिकोण को 1 कुरिन्थियों 7:10-16 में पुष्ट करता है। एक दिलचस्प बात तब सामने आती है जब शास्त्री और फरीसी व्यभिचार में पकड़ी गई एक महिला को यीशु के पास ले आए। व्यभिचार का यह कृत्य क्या था? अधिकांश का मानना है कि वह एक विवाहित महिला थी जिसे एक पुरुष के साथ यौन संबंध बनाने के कृत्य में पकड़ा गया था। यदि ऐसा होता तो उस व्यक्ति को भी

पत्थरवाह क्यों नहीं किया जाता था, क्योंकि यह इस्राएल में व्यवस्था थी। सबसे संभावित परिदृश्य यह है। महिला ने शायद अपने पहले पति को तलाक दे दिया और वह अपने दूसरे पति से शादी करने की प्रक्रिया में थी, जो एक अकेला पुरुष था। वह शादी समारोह में व्यभिचार करते हुए पकड़ी गई थी। यीशु ने हत्या से व्यभिचार में जो परिवर्तन किया है वह निर्बाध है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह पूरी तरह से विषयों को बदल देता है लेकिन वह नहीं करता है। वह क्रोध और व्यभिचार दोनों के मूल मुद्दे से निपट रहा है, जो लोभ है, कुछ ऐसा चाहता है जो आपका नहीं है। यीशु लोभ को व्यभिचार से जोड़ता है क्योंकि यह दूसरे के प्रति इच्छा है जो तलाक, विवाह या एकता को तोड़ने की ओर ले जाती है। पवित्रशास्त्र पढ़ना: व्यभिचार (मत्ती 5:27-32) समूह चर्चा: यदि आपकी शादी हो चुकी है तो आपने कौन-सी कुछ प्रतिज्ञाएँ की हैं? विवाह टूटने के कुछ संभावित परिणाम क्या हैं? आज्ञाएं: और यदि तेरी दहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे फाड़कर अपने पास से फेंक दे। और यदि तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे काटकर अपने पास से फेंक दे। पाठ: इस पाठ के परिचय में व्यभिचार से जुड़े कानूनी मुद्दों को शामिल किया गया था। लेकिन यीशु चाहते हैं कि उनके चेले इसके मूल कारणों को देखें। राजा डेविड और बतशेबा की कहानी इन कारणों पर प्रकाश डालती है और व्यभिचार के नैतिक और कानूनी मुद्दों के विपरीत है। उनकी कहानी का सारांश निम्नलिखित है। राजा दाऊद ने एक विवाहित स्त्री बतशेबा को नहाते हुए देखा। कानून ने इसकी मनाही नहीं की। तब डेविड ने उसके साथ शारीरिक संपर्क शुरू किया। उन्होंने संभोग किया और वह गर्भवती हो गई। कानून के तहत अनैतिक यौन संबंध बनाने की मनाही थी। दाऊद ने अपने पाप, अजन्मे बच्चे के परिणामों को छिपाने की कोशिश की। यदि वह संकट से बाहर निकलने का रास्ता नहीं खोज पाता है तो बतशेबा को शर्मसार होना पड़ेगा, तलाक की संभावना से अधिक और संभवत: मौत के घाट उतार दिया जाएगा। दाऊद की पहली योजना में बतशेबा के पति का ऊरिय्याह था, जो सेना में सेनापति है और युद्ध में दूर है, यरूशलेम लौट आया। दाऊद चाहता था कि ऊरिय्याह बतशेबा के साथ यौन-संबंध रखे ताकि ऐसा लगे कि अजन्मा बच्चा उन्हीं का है। हालाँकि, ऊरिय्याह ने बतशेबा के साथ झूठ नहीं बोला। दाऊद जानता था कि यदि ऊरिय्याह बतशेबा को तलाक दे देता है, तो यदि वह उससे विवाह करता है तो वह व्यभिचार कर रहा होगा। उनकी दूसरी योजना सामने आई। दाऊद ने ऊरिय्याह को युद्ध में वापस भेज दिया और अपने सेनापति को निर्देश दिया कि वह ऊरिय्याह को लड़ाई में मारे जाने की अनुमति दे। कानून के तहत यह हत्या नहीं थी क्योंकि ऊरिय्याह युद्ध में मारा गया था। ऊरिय्याह की मृत्यु के बाद दाऊद ने बतशेबा से विवाह किया। व्यवस्था के तहत, दाऊद ने व्यभिचार नहीं किया क्योंकि बतशेबा के पति की मृत्यु हो गई और उसने उसे तलाक नहीं दिया। इसलिए कानूनी अर्थों में, डेविड ने व्यभिचार या हत्या नहीं की, लेकिन नैतिक रूप से वह दोनों ही मामलों में दोषी था। परमेश्वर दाऊद के मन के इरादों को जानता था और उसके विरुद्ध न्याय लाया। जैसा कि उसने हत्या के मुद्दे के साथ किया, यीशु उन कदमों के पैटर्न को प्रकट करता है जो व्यभिचार की ओर ले जाते हैं। प्रत्येक चरण चेतावनी के रूप में भी कार्य करता है। फिर यीशु हर कदम पर प्रलोभन पर काबू पाने के निर्देश जारी करता है। व्यभिचार करना किसी की प्रतिज्ञा के प्रति विश्वासघाती होने के बारे में है। और यह सब एक नज़र से शुरू होता है। मत्ती 5:28 में, यीशु कहता है कि जो कोई किसी स्त्री पर वासना की दृष्टि से देखता है, वह अपने मन में पहले से ही उसके साथ व्यभिचार कर चुका है। वह व्यभिचार के पाप की जिम्मेदारी पूरी तरह से आदमी के कंधों पर रखता है। अगर कोई पुरुष शादीशुदा है या शादीशुदा है और अपनी पत्नी से तलाक ले चुका है तो उसे पहली बार में दूसरी महिला को नहीं देखना चाहिए। दूसरे, यह पता लगाना एक पुरुष का कर्तव्य है कि कोई महिला विवाहित है या विवाहित और तलाकशुदा है इससे पहले कि वह उसका पीछा करे। एकल लोग या जिनके पति या पत्नी की मृत्यु हो जाती है उन्हें छूट दी गई है। व्यभिचार का पाप करने का प्रलोभन आंखों की वासना से आता है। यह ईर्ष्या या लोभ का

पाप है, किसी चीज या किसी व्यक्ति की इच्छा करना जिसके लिए कोई व्यक्ति हकदार नहीं है। यह वह तरीका है जिससे एक व्यक्ति दूसरे को देखता है। हमारे समाज में हमारे पास उस रूप के लिए एक शब्द है। हम कहते हैं कि, "उसकी आंखें ईर्ष्या से हरी हैं।" यीशु अपने शिष्यों को वासनापूर्ण नज़र से बचने का उपाय देते हैं। वह उन्हें आज्ञा देता है कि वे उनकी दाहिनी आंख निकाल लें और यदि उन्हें ठेस पहुंचे तो उसे फेंक दें। इस अरामी मुहावरे का सीधा सा अर्थ है, "ईर्ष्या करना या लोभ करना बंद करो।" यीशु आगे कहते हैं, "यदि तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे काटकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिये भला है कि तेरे शरीर का एक अंग नाश हो जाए, और तेरा सारा शरीर नरक में न जाए। ।" व्यभिचार करने की दिशा में दूसरा कदम दूसरे व्यक्ति को अपने कब्जे में लेना शामिल है। आमतौर पर यह अनुचित स्पर्श के माध्यम से अनैतिक यौन संबंधों की ओर ले जाता है। यह शरीर की वासना है। यीशु अपने शिष्यों को उनके दाहिने हाथ को काटने की आज्ञा देते हैं यदि यह उन्हें नाराज करता है। मुहावरा जिसका अर्थ है "चोरी करना बंद करो।" व्यभिचार के मार्ग पर चलने वाले अधिकांश लोग सोचते हैं कि वे अपने जीवनसाथी के अलावा किसी अन्य व्यक्ति के साथ अवैध यौन मुठभेड़ कर रहे हैं। उन्होंने कभी खुद को ईर्ष्यालु लोग या चोर नहीं माना है। अंतिम कदम और चेतावनी तलाक है। यीशु की मांग है कि उसके शिष्य अपने जीवनसाथी को तलाक न दें रिश्ते में बेवफाई के अलावा किसी भी कारण से। उस स्थिति में पति या पत्नी ने पहले ही किसी अन्य व्यक्ति के साथ एक होकर विवाह अनुबंध का उल्लंघन किया है। भगवान के साथ आध्यात्मिक व्यभिचार उसी मार्ग का अनुसरण करता है। पहले चरण में एक व्यक्ति अन्य देवताओं को देखता है या उनकी इच्छा करता है। दूसरे में वह उनकी सेवा करता है। तीसरा चरण एक सच्चे ईश्वर से तलाक है। इस कार्य को धर्मत्याग कहा जाता है जिसका अर्थ है अलग होना या अलग होना। शास्त्रों में हमें बताया गया है कि इज़राइल ने वेश्या की भूमिका निभाई। वे विदेशी देवताओं के पीछे चले गए और उनकी सेवा की। हालाँकि परमेश्वर इस्राएल से अप्रसन्न था, उसने उन्हें तलाक नहीं दिया या "एकता को तोड़ा"। परमेश्वर ने खुद को एक वफादार पति के रूप में दिखाया है। 2 तीमुथियुस 2:11-13 में, पॉल ने इस बारे में लिखा है ई प्रभु यीशु मसीह की विश्वासयोग्यता। "यह विश्वास योग्य बात है, क्योंकि यदि हम उसके साथ मरे हैं, तो उसके साथ जीएंगे भी; यदि हम धीरज धरें, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे; यदि हम उसका इन्कार करेंगे, तो वह भी हमारा इन्कार करेगा; यदि हम अविश्वासी हैं, तो वह विश्वासयोग्य बना रहता है; क्योंकि वह अपने आप का इन्कार नहीं कर सकता।" प्यार का तरीका रिश्तों में वफादारी है। समूह चर्चा:3. व्यभिचार पर यीशु की शिक्षा हमारे समाज के विचारों से कैसे भिन्न है? सबक का बिंदु: वासनापूर्ण नज़र से बचें। आवेदन: अगली समूह बैठक में किसी भी अवसर पर रिपोर्ट करें कि आपको बेवफा होना पड़ा और आपने इससे कैसे निपटा।

पाठ # 8

वादों को पूरा करना आइसब्रेकर: एक वादा बताएं कि किसी ने आपसे किया था, जो नहीं रखा गया था और यह आपको कैसा लगा? परिचय:यीशु आसानी से विषयों को व्यभिचार से प्रतिज्ञाओं में परिवर्तित करता है। वह विवाह और प्रतिज्ञा दोनों में विश्वासघात (एकता को तोड़ना) से निपटकर दो विषयों को जोड़ता है। इस पाठ में यीशु किस बारे में बात कर रहे हैं, इसे बेहतर ढंग से समझने के लिए, कुछ परस्पर संबंधित शब्दों की बाइबल की समझ सहायक होगी। परिभाषाएँ कसम खाने का अर्थ है किसी का शब्द या गवाही देना कि कुछ सच है या सच है। व्रत का अर्थ है कुछ करने या देने की शपथ लेना। वचन देना ही व्रत है। प्रतिज्ञा कुछ मूर्त है जो उस व्यक्ति द्वारा आवश्यक है जिससे वादा या प्रतिज्ञा की जाती है। प्रतिज्ञा ज़मानत या आश्वासन के रूप में कार्य करती है कि प्रतिज्ञा पूरी होगी। ऋण पर संपार्श्विक इस अवधारणा को व्यक्त करता है। एक शपथ एक व्रत या वादे के समान होती है जिसके साथ कुछ मूल्य दिया जाता है। शपथ के लिए हिब्रू शब्द भी सात नंबर के लिए एक ही शब्द है। सात को भगवान की संख्या माना जाता है और उन्हें शपथ की अवधारणा से जोड़ता है। इसका अर्थ है कुछ ऐसा जिसे सात से गुणा किया गया हो या पूर्ण और पूर्ण बनाया गया हो। यह विचार है कि इसे जल्दबाजी या लापरवाही से नहीं बल्कि सात बार दोहराया गया था। समझौते को मजबूत करने के लिए शपथ, वादों, प्रतिज्ञाओं, शपथों और वाचाओं में एक शाप या शाप जोड़ा जाता है। शाप देने के लिए भगवान से उस व्यक्ति पर किसी न किसी रूप में बुराई लाने के लिए कहा जाता है जो वादा पूरा नहीं करता है। "भगवान लानत" शब्द इसका एक उदाहरण है। जिस व्यक्ति को वादा दिया गया है उसे श्राप की आवश्यकता हो सकती है या जो वादा करता है वह इसे प्रदान करता है। एक वाचा दो या दो से अधिक लोगों के बीच एक औपचारिक समझौता है और इसमें उपरोक्त सभी शामिल हो सकते हैं। इन शब्दों से जुड़े कार्यों को देखने के लिए हम उत्पत्ति 21:22-33 में एक कहानी की ओर मुड़ेंगे। "उस समय ऐसा हुआ, कि अबीमेलेक और उसके सेनापति पीकोल ने इब्राहीम से कहा, कि जो कुछ तू करता है उस में परमेश्वर तेरे संग रहता है; सो अब यहां परमेश्वर की शपथ खाकर कह, कि तू मुझ से वा मेरे वंश, वा मेरे वंश से मिथ्या व्यवहार न करेगा; परन्तु जो करूणा मैं ने तुझ पर दिखाई है उसके अनुसार तू मुझ पर और उस देश पर भी जिसमें तू रहने आया है दिखाना।' और इब्राहीम ने कहा, 'मैं शपथ खाता हूं।' परन्तु इब्राहीम ने जल के कुएं के कारण अबीमेलेक से शिकायत की। , जिसे अबीमेलेक के सेवकों ने ले लिया था। और अबीमेलेक ने कहा, मैं नहीं जानता कि यह काम किस ने किया है; न तो तू ने मुझ से कहा, और न मैं ने आज तक सुना। तब इब्राहीम ने भेड़-बकरी और गाय-बैल लेकर अबीमेलेक को दिए; और उन दोनों ने वाचा बान्धी। तब इब्राहीम ने भेड़-बकरियों की सात बच्चियों को अलग रखा। और अबीमेलेक ने इब्राहीम से कहा, इन सात बच्चियों का क्या अर्थ है, जिन्हें तू ने अलग रखा है? और उस ने कहा, तू इन सात बच्चियोंको मेरे हाथ से ले लेना, कि वह मेरी गवाही हो, कि मैंने इसे खोदा।' इसलिए उसने उस स्थान का नाम बेर्शेबा रखा (जिसका अर्थ है शपथ का कुआँ या सात का कुआँ); क्योंकि वहां उन दोनों ने शपय खाई। तब उन्होंने बेर्शेबा में वाचा बान्धी; और अबीमेलेक और उसके सेनापति पीकोल उठकर पलिश्तियोंके देश को लौट गए। और इब्राहीम ने बेर्शेबा में एक इमली का पेड़ लगाया, और वहां उस ने यहोवा, जो अनन्तकाल का परमेश्वर है, से प्रार्थना की। समूह चर्चा:इस कहानी में पहले वर्णित सात शब्दों में से चार शब्दों का प्रयोग किया गया है, वे कौन से हैं? (शपथ, वाचा, शपथ और प्रतिज्ञा) पवित्रशास्त्र पढ़ना: वादों को निभाना (मत्ती 5:33-37) आज्ञाएँ: बिल्कुल भी शपथ न लें। आपको कथन करने दें, हाँ, हाँ या नहीं, नहीं। सबक: शपथ लेना, शपथ लेना और वादे करना पवित्र है और इसे हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। परमेश्वर उन सबका गवाह है जो मनुष्य कहते हैं और उनके वचनों से उनका न्याय किया जाएगा। यीशु इस तथ्य की पुष्टि करते हैं जब वे फरीसियों के साथ बोलते हैं। मत्ती 12:36-37 में वह घोषणा करता

है, "और मैं तुम से कहता हूं, कि हर एक धूर्त वचन जो मनुष्य कहें, वे न्याय के दिन उसका हिसाब देंगे। शब्दों की निंदा की जाएगी। " यीशु ने शिष्यों से कहा कि उन्हें शपथ, प्रतिज्ञा या वादे की कसम नहीं खानी चाहिए। ये सभी भविष्य की तारीख में कुछ देने या करने से संबंधित हैं। शपथ, प्रतिज्ञा और वादे अभिमान पर आधारित हैं। कोई नहीं जानता कि वह लंबे समय तक जीवित रहेगा या नहीं या उसके पास जो वादा करता है उसे पूरा करने के लिए संसाधन हैं, केवल भगवान को छोड़कर। इस बिंदु को शादी की प्रतिज्ञाओं द्वारा सबसे अच्छी तरह से चित्रित किया गया है, जिनमें से अधिकांश शब्दों के साथ समाप्त होते हैं, "जब तक मृत्यु हमें अलग न करे।" यीशु ने शिष्यों से कहा कि उन्हें स्वर्ग, पृथ्वी या यरूशलेम की शपथ नहीं लेनी चाहिए क्योंकि ये चीजें ईश्वर की हैं, न कि उस व्यक्ति की जो उन्हें प्रतिज्ञा के रूप में भेंट कर रहा है। किसी को भी किसी अन्य व्यक्ति की संपत्ति को प्रतिज्ञा के रूप में देने का अधिकार नहीं है एक व्यक्ति जो भगवान की शपथ लेता है, उसका ऋणी होना चाहता है। जो इस तरह से शपथ लेता है वह वास्तव में कह रहा है कि उसके पास भगवान पर अधिकार है और वह मांग कर सकता है कि भगवान अपनी व्यक्तिगत इच्छा पूरी करे। क्या शपथ लेने वाले व्यक्ति को असफल होना चाहिए इसे रखो, दूसरा भगवान से कैसे एकत्र करेगा? इस तरह से शपथ लेने से केवल एक शिष्य का भगवान के साथ संबंध खराब हो जाता है और यीशु मसीह की उसकी गवाही को बर्बाद कर देता है यदि वह अपनी शपथ लेने में विफल रहता है। अगले कथन में यीशु शब्द "आपके सिर" का उपयोग करता है व्यक्ति के स्वयं के नाम पर एक शपथ का संकेत दें। जो व्यक्ति इस प्रकार की शपथ लेता है वह स्वयं को प्रतिज्ञा के रूप में प्रस्तुत करता है। वह घोषणा कर रहा है कि वह ईश्वर है या कम से कम उसके बराबर शक्ति और अधिकार है। इसका एक उदाहरण इब्रानियों 6 में दिया गया है। :13. "क्योंकि जब परमेश्वर ने इब्राहीम से वादा किया, क्योंकि वह किसी बड़े की कसम नहीं खा सकता था, उसने खुद ही शपथ ली। जो कोई इस प्रकार शपथ खाता है यदि वह अपनी शपथ नहीं रखता है, तो वह दूसरे का ऋणी होगा, इस प्रकार उसे उसकी सेवा करनी होगी और भगवान की नहीं। स्वयं की शपथ इस सच्चाई को छुपाती है, कि मनुष्य भगवान नहीं हैं, जबकि वास्तव में वे हैं कमजोर और उसकी मदद की जरूरत है। यदि कोई शिष्य इस तरह से शपथ लेता है और अपनी शपथ नहीं रखता है, तो यीशु मसीह की उसकी गवाही और लोगों को बचाने की उसकी क्षमता भी संदेह में डूब जाएगी। यह कहकर, "तुम्हारी हाँ हाँ हो और तुम्हारी नहीं हो नहीं", यीशु घोषणा कर रहा है कि वह अपने शिष्यों से अपनी बात रखने की अपेक्षा करता है! जो उन्होंने कहा था उसे करने के लिए वे करेंगे। यदि शिष्य अपनी बात नहीं रखते हैं तो उन्हें झूठे के रूप में जाना जाएगा और उन्हें बोलने के लिए नहीं गिना जा सकता है सच्चाई या भरोसा किया जा सकता है। फिर लोग कैसे विश्वास करेंगे, सुसमाचार का संदेश जो वे प्रचार करते हैं? एक पुरानी कहावत है जो इस प्रकार है: "मनुष्य उतना ही अच्छा है जितना कि उसका वचन।" भगवान अच्छा है। वह हमेशा वही करता है जो वह कहता है कि वह करने जा रहा है। समूह चर्चा: 2. लोग वादे क्यों करते हैं? 3. टूटे हुए वादे का परिणाम क्या होता है? 4. आपको क्या लगता है कि टूटे हुए वादे बच्चों को कैसे प्रभावित करते हैं? 5 आखिरी वादा क्या था जिसे आप याद कर सकते हैं? क्या आपने इसे निभाया? एक वादा क्या था जो आपने कभी नहीं किया था या रखना आपके लिए सबसे कठिन था। 7. भगवान का कौन सा वादा आपका पसंदीदा है और क्यों? का बिंदु पाठ: अपने आप को झूठ बोलने की स्थिति में न रखें आवेदन: अगली समूह बैठक में रिपोर्ट करें कि किसी भी अवसर पर आपको कुछ वादा करना था और आपने इससे कैसे निपटा।

पाठ # 9

अपने अधिकारों को त्यागना आइसब्रेकर: अपने देश के नागरिक के रूप में आपके कुछ अधिकारों की सूची बनाएं? परिचय: अपने पहाड़ी उपदेश में, यीशु अपने शिष्यों को ईश्वरीय पारिवारिक मूल्य प्रदान करना जारी रखता है। उनका अगला विषय व्यक्तिगत चोट अधिकारों से संबंधित है। वह इसे एक आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत वाक्यांश के साथ पेश करता है। यह वाक्यांश निर्गमन 21:24, लैव्यव्यवस्था 24:20 और व्यवस्थाविवरण 19:21 में पाया जाता है। पश्चिमी समाज में हम सोचते हैं कि यह वाक्यांश इंगित करता है कि एक व्यक्ति व्यक्तिगत चोट का बदला ले सकता है। हालाँकि, जब वाक्यांश को पूरे मार्ग के संदर्भ में पढ़ा जाता है जिसमें यह पाया जाता है, तो यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि भगवान प्रतिशोध की आज्ञा नहीं दे रहे हैं। वह केवल प्रतिशोध की राशि की सीमा निर्धारित करता है जिसे ठीक किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति की आंख किसी दूसरे से चोट लगने के कारण चली जाती है, तो उसे घायल व्यक्ति को मारने और उसकी संपत्ति लेने का अधिकार नहीं है। कानून के तहत, प्रतिशोध को हुए नुकसान तक सीमित था। सैद्धांतिक रूप से घायल व्यक्ति उसी चोट का कारण बन सकता है जिसने उसे घायल किया है लेकिन यह क्या अच्छा है कि दो लोगों की एक आंख चली गई है? आम तौर पर, यहूदी अदालत ने चोट के पांच अलग-अलग पहलुओं के लिए मुआवजा दिया: क्षति, दर्द, उपचार, काम से समय की हानि, और अपमान। कानून का उद्देश्य निष्पक्ष, सम-हाथ और न्यायपूर्ण होना था। पवित्रशास्त्र पढ़ना: अपने अधिकारों को छोड़ना (मत्ती 5:38-42 और लूका 6:29-30) समूह चर्चा: यीशु ने जो सिखाया उसे सुनने के बाद आपके दिमाग में क्या विचार आते हैं? आज्ञाएँ:उसका विरोध मत करो जो बुरा है।उसकी ओर दूसरा गाल भी मोड़ो।उसे तुम्हारा कोट भी लेने दो।उसके साथ दो मील जाओ।जो तुमसे मांगे उसे दे दो।जो उधार लेना चाहता है उससे मुंह मत मोड़ो अप से। सबक: यीशु ने व्यक्तिगत चोट के लिए उचित मुआवजे के विषय को शारीरिक चोट, आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत से संबंधित एक बयान के साथ खोला। फिर वह अपने शिष्यों को एक अलग दृष्टिकोण अपनाने की चुनौती देता है। व्यक्तिगत चोट के चार मामलों का उपयोग करके यीशु प्रदर्शित करता है कि वह चाहता है कि वे उदार लोग हों, जो अपने अधिकारों की मांग नहीं करते हैं। पहले मामले में एक शिष्य द्वारा प्राप्त मानसिक और भावनात्मक चोटें शामिल हैं। यीशु ने कहा, “परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि दुष्ट का साम्हना न करना; परन्तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, वह दूसरा भी उसी की ओर फेर दे।” एक थप्पड़ और एक बंद मुट्ठी दो अलग-अलग चीजें हैं। एक बंद मुट्ठी इंगित करती है कि लड़ाई हो रही है। एक थप्पड़ खुले हाथ से किया जाता है। यह अपमान के विचार को व्यक्त करता है। इसका उपयोग किसी को अपमानित करने या लड़ाई भड़काने के लिए किया जाता है। गाल फेरना एक अरामी मुहावरा है जिसका अर्थ है "लड़ाई या झगड़ा शुरू न करें।" लड़ने या झगड़ा करने में दो लोगों की जरूरत होती है। यदि घायल व्यक्ति जवाबी कार्रवाई नहीं करता है तो कोई लड़ाई या झगड़ा नहीं होता है। नीतिवचन 17:14 कहता है, "झगड़े का आरम्भ जल के रिसने के समान है, सो झगड़े के फूटने से पहिले उसे छोड़ देना।" एक और कहावत है, "झगड़ों से दूर रहना मनुष्य के लिए सम्मान की बात है, लेकिन कोई भी मूर्ख झगड़ा करेगा"। यीशु चाहता है कि उसके चेले सही होने के अपने अधिकार को छोड़ दें। परमेश्वर धर्मी का न्याय करेगा। दूसरे मामले में एक शिष्य द्वारा की गई क्षति शामिल है। यीशु ने कहा, "और यदि कोई तुम पर मुकद्दमा करना चाहे, और तुम्हारी कमीज ले ले, तो वह तुम्हारा अंगरखा भी ले ले।" इस मामले में घायल पक्ष चोट के लिए एक कथित मुआवजे की मांग कर रहा है लेकिन इसे लेने के लिए अभी तक अदालत नहीं गया है। यीशु ने शिष्यों से मांग को पूरा करने और और भी अधिक देने के लिए कहा। इसका कारण घायल व्यक्ति से दोस्ती करना है। यीशु ने इसी विचार को पहले पहाड़ी उपदेश में व्यक्त किया था। यीशु चाहते हैं कि उनके शिष्य व्यक्तिगत कानूनी

सुरक्षा का अधिकार छोड़ दें जब उन्होंने किसी के साथ अन्याय किया हो। भगवान देखेंगे कि न्याय हुआ है। तीसरे मामले में एक शिष्य द्वारा प्रदान की गई सेवाओं के लिए मुआवजे की कमी शामिल है। यीशु ने कहा, "और जो कोई तुझे एक मील चलने को विवश करे, उसके साथ दो मील चले।" दूसरे मील तक जाना अभी भी एक लोकप्रिय मुहावरा है और इसका मतलब है कि आवश्यकता से अधिक करना। यीशु चाहते हैं कि उनके शिष्य अपने समय और प्रतिभा के उपयोग के लिए मुआवजे का अधिकार छोड़ दें। भगवान इनाम देगा। शिष्य के पास जो कुछ है उसे उधार देना, किसी को माँगना चौथा मामला है। ऊपरी तौर पर यह काफी आसान लगता है, लेकिन मत्ती का सुसमाचार पूरे विचार को व्यक्त नहीं करता है। लूका 6:30 इस मामले की सच्चाई की घोषणा करता है। "जो कोई तुझ से मांगे उसे दे, और जो तेरा कुछ ले ले, उसे वापस न मांग।" इसमें शिष्य की संपत्ति का नुकसान शामिल है। इस शिक्षा के पीछे मूल विचार व्यवस्थाविवरण की पुस्तक से आता है। "क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे वचन के अनुसार तुझे आशीष देगा, और तू बहुत सी जातियों को उधार देगा, परन्तु उधार न लेगा; और तू बहुत जातियों पर राज्य करेगा, परन्तु वे तुझ पर प्रभुता न करेंगे। हे मनुष्य, अपके भाइयोंमें से किसी एक नगर में जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है, उस नगर में तू अपके मन को कठोर न करना, और न अपके कंगाल भाई पर से अपना हाथ बन्द करना; और जो कुछ उसकी घटी हो, उसके लिये उदारता से उसे उधार दे: सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि तेरे मन में यह विचार हो, कि सातवाँ वर्ष प्रायश्चित का वर्ष निकट है, और तेरी दृष्टि उसके प्रति शत्रुतापूर्ण है। तेरा कंगाल भाई, और तू उसको कुछ न देना, तब वह तेरे विरुद्ध यहोवा की दोहाई देगा, और यह तेरे लिथे पाप होगा: तू उसे उदारता से देना, और जब तू उसे दे, तब तेरा मन उदास न होगा, क्योंकि क्योंकि तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों और सब कामोंमें तुझे आशीष देगा, क्योंकि कंगाल कभी न छूटेगा भूमि में होना; इसलिए मैं तुझे यह आज्ञा देता हूं, कि तू अपके भाई पर अपके देश के दरिद्र और कंगालोंके लिथे अपक्की हाथ खोल। यीशु चाहता है कि उसके चेले अपनी संपत्ति की वापसी का अधिकार छोड़ दें। ईश्वर सभी वस्तुओं का स्वामी है। प्रत्येक मामले में, यीशु ने अपने शिष्यों को आवश्यकता से अधिक करने के लिए कहा। दूसरे शब्दों में, उन्हें उपहार देना था या दूसरों को आशीर्वाद देना था। यीशु चाहता है कि उसके चेले स्वर्ग में अपने पिता के समान उदार हों, खुले हाथ के लोग हों। उन्हें इस संसार की बातों को नहीं समझना चाहिए और न ही अपने अधिकारों को थामे रहना चाहिए, क्योंकि स्वर्ग में उनका पिता उन्हें प्रतिफल देगा। समूह चर्चा: यदि यीशु के चेले अपनी आवश्यकता से अधिक करते हैं तो लोग क्या सोचेंगे? आपको क्या लगता है कि यह मसीह जैसा व्यवहार दूसरों को कैसे प्रभावित करता है? दोस्ती कैसे बनती है? पाठ का बिंदु: आवश्यकता से अधिक करें। आवेदन: अगली समूह बैठक में किसी भी अवसर पर रिपोर्ट करें कि आपको अपने अधिकारों का त्याग करके उदार होना था।

पाठ # 10

अपने दुश्मनों से प्यार करें आइसब्रेकर: प्यार शब्द का आपके लिए क्या मतलब है? परिचय: पवित्रशास्त्र के नए नियम के भाग में प्रेम का वर्णन करने के लिए दो प्राथमिक यूनानी शब्दों का उपयोग किया गया है: अगापे और फीलियो। इन दोनों शब्दों के अलग-अलग अर्थ हैं। पाठ की समझ विकसित करने के लिए यह जानना अनिवार्य है कि पवित्रशास्त्र के किसी विशेष मार्ग में दोनों में से किस शब्द का उपयोग किया जा रहा है। फीलियो शब्द प्रेम की भावनाओं से संबंधित है। यह प्यार की भावना है! इस शब्द का प्रयोग किसी वस्तु के प्रति लगाव को दर्शाता है। किसी वस्तु के प्रति प्रेम के कुछ उदाहरण हैं: एक माँ अपने बच्चे के प्रति प्रेम करती है। एक पति अपनी पत्नी के प्रति प्रेम करता है। भाई-बहन एक-दूसरे के प्रति प्रेम रखते हैं। फरीसियों को बाज़ार में अभिवादन करना पसंद था। लोग पैसे से प्यार करते हैं। अगापे शब्द प्रेम की भावना से संबंधित है। यह प्रेम की सेवा है! इस शब्द का प्रयोग सही काम करने का द्योतक है और यह दान शब्द के समान है। अगापे शब्द अपने चरित्र और कार्यों में खुद को प्रकट करता है: अगापे स्वयं भगवान का चरित्र है। पवित्रशास्त्र में जो कहता है, "ईश्वर प्रेम है" इस्तेमाल किया गया शब्द अगापे है। अगापे यह है कि प्रेम कैसे व्यवहार करता है। पॉल के कुरिन्थियों के लिए पहला पत्र, अध्याय 13 में प्रेम पर अक्सर उद्धृत मार्ग अगापे के व्यवहार को रेखांकित करता है। पवित्रशास्त्र पढ़ना: अपने शत्रुओं से प्रेम करो (मत्ती 5:43-48) और (लूका 6:27-28, 31-35) आज्ञाएँ: अपने शत्रुओं से प्रेम करो। उन लोगों का भला करो जो तुमसे घृणा करते हैं। उन लोगों को आशीर्वाद दो जो तुम्हें शाप देते हैं। प्रार्थना करो उन लोगों के लिए जो आपके साथ दुर्व्यवहार करते हैं।अच्छा करो और बदले में कुछ न मिलने की उम्मीद में उधार दो।और जैसे आप चाहते हैं कि लोग आपके साथ व्यवहार करें, वैसे ही उनके साथ व्यवहार करें।इसलिए आपको परिपूर्ण होना है। पाठ: यीशु ने अपनी शिक्षा को इस कथन के साथ प्रारंभ किया, "आपने सुना है कि कहा गया था, 'तू अपने पड़ोसी से प्रेम करेगा, और अपने शत्रु से घृणा करेगा।" उद्धरण का केवल पहला भाग पवित्रशास्त्र से है। पुराने नियम में कहीं भी अपने शत्रु से घृणा करना सिखाया नहीं गया था। स्पष्ट रूप से कुछ नेता यीशु के समय इस अवधारणा को सिखा रहे थे। यीशु ने अपने शिष्यों को अपने शत्रुओं से प्रेम करने की आज्ञा दी। प्रयुक्त शब्द अगापे है। यीशु कह रहे हैं कि उनके शिष्यों को "अपने शत्रुओं से सही काम करना चाहिए।" उनके लिए स्नेह की आवश्यकता नहीं है, केवल ईश्वरीय व्यवहार की आवश्यकता है। फिर वह एक व्यक्ति के दुश्मनों से प्यार करने के छह व्यावहारिक तरीकों का वर्णन करता है। अपने दुश्मनों की सेवा करें। अपने दुश्मन के लिए अच्छा काम करें, बुरे कामों के लिए नहीं। अपने दुश्मन के साथ वैसा ही व्यवहार करें, जैसा आप चाहते हैं।आशीर्वाद, अच्छा बोलें या उसकी प्रशंसा करें।प्राथमिक यहाँ प्रयुक्त आशीर्वाद शब्द का अर्थ आपके शत्रु के बारे में अच्छा बोलना है, जो आपको कोस रहा है। हालाँकि, आशीर्वाद शब्द का सही अर्थ "घुटना टेकना या झुकना" है। शब्द द्वारा व्यक्त किया गया विचार यह है कि एक ऊँट अपने घुटनों पर झुकता है ताकि उस पर बोझ डाला जा सके। बिलाम के गधे का उदाहरण संख्या 22:21-34 में पढ़ें। . यीशु ने अपने शिष्यों को स्वर्ग में उनके पिता के समान बनने के लिए चुनौती देकर प्रेरित किया। वह कहता है कि ईश्वर धर्मी और दुष्ट दोनों का समान रूप से भला करता है। वह सूर्य को चमकाता है और वर्षा दोनों पर पड़ती है। प्रेम किसी के लिए एक तरह से और दूसरों के लिए दूसरे तरीके से व्यवहार नहीं करता है। यह हमेशा सुसंगत होता है और बदलता नहीं है। उनके लिए जिन्हें उसके शिष्य होने के लिए बुलाया गया था, यह याद रखने में मदद करता है कि हम कभी उनके दुश्मन थे। लेकिन भगवान के हमारे प्रति निरंतर प्रेम के कारण अब हम उनके मित्र हैं। समूह चर्चा: क्या एक व्यक्ति को आपका दुश्मन बनाता है? किन तरीकों से आपके लिए अपने दुश्मनों से प्यार करना मुश्किल है? कुछ व्यावहारिक तरीकों की सूची बनाएं जिनसे आप अपने दुश्मनों से प्यार कर सकते हैं। सबक का बिंदु: सभी का भला

करें। आवेदन: अगली समूह बैठक में किसी भी अवसर पर रिपोर्ट करें कि आपको एक दुश्मन से प्यार करना पड़ा और इसका परिणाम क्या था?

पाठ # 11

प्राप्त सम्मान परिचय: अपने पिछले शिक्षण में यीशु ने प्यार के बारे में बात की। असली प्यार भगवान का चरित्र है। इसकी प्रकृति सही काम करना है और इसके कार्य दूसरों को लाभान्वित करते हैं। असली प्यार किसी के प्रति अलग-अलग व्यवहार नहीं करता, चाहे वह अच्छा या बुरा हो। और यह उन भावनाओं पर आधारित नहीं है जो परिवर्तन के अधीन हैं। तेजी से आग के उत्तराधिकार में एक मंच के रूप में प्यार का उपयोग तीन प्यार करने वाले कार्यों को सूचीबद्ध करता है जो उनके शिष्यों को प्रदर्शन करना चाहिए: almsgiving, प्रार्थना और उपवास। हालांकि, ये माध्यमिक मुद्दे हैं। वह वास्तविक मुद्दा जो वह संबोधित करता है वह कार्यों के पीछे आत्मा है। एक व्यक्ति इन प्रेम के इन कृत्यों को क्यों करता है और किससे उन्हें सम्मान प्राप्त होगा? पवित्रशास्त्र संदर्भ: आइसब्रेकर (मैथ्यू 6: 1-18) आइसब्रेकर: तीन स्कीट। समूह को तीन टीमों में नीचे रखें। प्रत्येक टीम के लिए एक नेता का निर्धारण करें। प्रत्येक टीम को पवित्रशास्त्र का एक पारित करें। # 1 मैथ्यू 6: 1-4Team आदेश: मनुष्यों से उन्हें ध्यान देने से पहले अपने धार्मिकता का अभ्यास करने से सावधान रहें। आप से पहले एक तुरही नहीं लगती। अपने बाएं हाथ को यह नहीं जानने दें कि आपका दाहिना हाथ क्या कर रहा है। आप अपने भीतर के कमरे में नहीं हैं। और जब आपके पास है। सबक: Almsgiving, प्रार्थना और उपवास के मुद्दों पर पवित्रशास्त्र के मार्ग में पांच आम तत्व होते हैं। पहला तत्व यह है कि यीशु प्रत्येक मुद्दे के बारे में विशिष्ट आदेश देता है। दूसरा तत्व यह है कि अच्छे कर्म किए जा रहे हैं: almsgiving, प्रार्थना और उपवास। तीसरा तत्व पाखंड है। चौथा पुरुषों द्वारा देखा जा रहा है और पांचवां यह है कि पिता जो गुप्त पुरस्कारों में देखता है। यीशु पहले भिक्षा देने के अच्छे काम को संबोधित करता है। भिक्षा शब्द का अर्थ करुणा है। यह गरीबों को पैसे देने से जुड़ा हुआ है और इसे भगवान से संबंधित दस बजे से भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। एएलएस सीधे किसी व्यक्ति को एक व्यक्ति को दे सकता है या एक पूल किए गए फंड में एकत्रित हो सकता है ताकि गरीबों को वितरित किया जा सके। यीशु अपने शिष्यों को गुप्त रूप से अपने almsgiving करने के लिए निर्देश देता है। वह चाहता है कि वे इसे इस तरह से करें कि अन्य पुरुष नोटिस नहीं करते हैं। जब किसी व्यक्ति को चैरिटी को दूसरे से प्राप्त होता है तो वह जानता है, हमेशा ऋणात्मकता की भावना होती है जो इसके साथ जाती है। जब दाता गरीबों के लिए अज्ञात होता है, तो वह केवल धन्यवाद दे सकता है। दूसरा निर्देश भिक्षा देने से पहले एक तुरही नहीं लग रहा है। यीशु के दिवस अमीर लोगों में, जो गर्व से फंस गए थे, ने वास्तव में एक तुरही लग सकती है इससे पहले कि वे उन्हें हर किसी के लिए स्पष्ट कर रहे थे कि वे धर्मार्थ लोग थे। यीशु जो मुद्दा यह है कि लोगों को उनके देने की घोषणा नहीं करनी चाहिए। उन्होंने इस विचार को अपने अगले आदेश के साथ मजबूत किया, "अपने बाएं हाथ को यह नहीं बताएं कि आपका दाहिना हाथ क्या कर रहा है।" हम जानते हैं कि बाएं हाथ के लिए यह असंभव है कि दाहिने हाथ क्या कर रहा है लेकिन बिंदु बुद्धिमान होना है। अच्छे कर्मों पर उनकी चर्चा में यीशु ने पाखंड शब्द पर ध्यान आकर्षित किया। यह शब्द का उनका पहला रिकॉर्ड किया गया उपयोग है। इसलिए, हमें इसके अर्थ की स्पष्ट समझ हासिल करनी चाहिए ताकि इसे भविष्य के संदर्भों में ठीक से लागू किया जा सके। एक पाखंड एक ग्रहण चरित्र के तहत एक अभिनेता है। वह एक भूमिका निभा रहा है। आप जो देखते हैं, वास्तविकता नहीं है; यह फोनी है। यीशु ने कहा कि पाखंडी सभाओं और सड़कों में पाया जा सकता है। वे चर्चों और अन्य सार्वजनिक स्थानों में भी पाए जाते हैं। जब भी कोई दर्शक इकट्ठा होता है, तो उनके प्रदर्शन को देखा जा सकता है। वे एक सार्वजनिक चरण पर प्रदर्शन करने वाले अभिनेता हैं। और वे खेल रहे भूमिका के लिए पुरुषों की प्रशंसा के लिए रहते हैं। पाखंड एक गर्व से प्रेरित

होता है जो कहता है, "देखें कि मैं कितना अच्छा हूं" और अपने प्रदर्शन के लिए क्रेडिट प्राप्त करने की इच्छा रखता हूं। पाखंड अपने धर्मों के अपने कामों से खुद के लिए प्यार से बाहर नहीं करता है। यीशु दूसरे अच्छे काम पर चलता है; प्रार्थना। वह अपने शिष्यों को लोगों से दूर जाने के लिए कहता है। आंतरिक कमरे में जाएं और दरवाजा बंद करें ताकि लोग आपको प्रार्थना नहीं कर सकें। पाखंडी लोग सार्वजनिक रूप से प्रार्थना करते हैं क्योंकि वे चाहते हैं कि लोग सोचें कि वे पवित्र हैं। लेकिन प्रार्थना एक आदमी और उसके भगवान के बीच एक निजी बातचीत है। दूसरा अच्छा काम जो यीशु पते प्रार्थना है। वह शिष्यों को जानता है कि गैर-यहूदी की तरह व्यर्थ पुनरावृत्ति का उपयोग न करें। उनके मंत्र और मंत्र बेकार हैं। शायद गैर-यह जानता है कि भगवान अच्छी तरह से नहीं सुनते हैं इसलिए उन्हें खुद को दोहराना होगा। शायद वह उस पल में सो रहा है या नहीं सुन रहा है और उन्हें अपना ध्यान हासिल करना है। या उनका मकसद उसे एक ही याचिका के साथ थके हुए हो सकता है ताकि वह अपनी प्रार्थना का जवाब दे सके? यशायाह पैगंबर, अध्याय 65, पद 24 की किताब में यह कहता है, "यह भी आने से पहले यह भी आएगा, मैं जवाब दूंगा; और जब वे अभी भी बोल रहे हैं, मैं सुनूंगा। " तीसरा अच्छा काम उपवास के साथ सौदा करता है। ज्यादातर लोग सोचते हैं कि इसका मतलब भोजन से दूर रहना है। हालांकि, यह शब्द की वास्तविक भावना नहीं है। तेजी से माना जाने के लिए चार स्थितियों को पूरा किया जाना चाहिए। एक व्यक्ति (1) कुछ (2) के बिना करता है जो कुछ समय के लिए (4) के लिए आवश्यक या वांछित (3) करता है (4) कुछ को पूरा करने के व्यक्त उद्देश्य के साथ। भगवान अपने लोगों को तेजी से चाहते हैं, लेकिन पैगंबर यशायाह के अनुसार यह भोजन के लिए नहीं है। संदर्भ यशायाह 58: 6-14 है। "क्या यह त्वरित नहीं है जो मैं चुनता हूं, जो कि बुरीपन के बांड को ढीला करने के लिए, और उत्पीड़ित को मुक्त करने के लिए, और हर योक को तोड़ने के लिए, और हर बार अपनी रोटी को भुखमरी से विभाजित नहीं करना है, और बेघर गरीबों को अंदर लाएं यदि आप अपने बीच से योक को हटाते हैं, तो उंगली की ओर इशारा करते हैं, और दुष्टता बोलते हैं, और यदि आप खुद को भूख से देते हैं, और पीड़ितों की इच्छा को पूरा करते हैं, तो आपकी रोशनी अंधेरे में बढ़ेगी, और आपकी चमक दोपहर की तरह बन जाएगी। और यहोवा होगा और मैं तुम्हें अपने पिता के बाकी के विरासत के साथ खिलाऊंगा, क्योंकि यहोवा के मुंह ने कहा है। " यीशु के समय के दौरान लोगों ने उपवास का एक बड़ा शो बनाया। उन्होंने सैक्लोथ पहना और राख को अपने सिर पर रखा। लोग जानते थे कि वे स्वेच्छा से पीड़ित थे ताकि वे भगवान के पक्ष को हासिल कर सकें। यीशु अपने शिष्यों को एक खुशहाल चेहरा नहीं डालने के लिए कहता है। कारण यह है कि लोग चेहरे की अभिव्यक्तियों को पढ़ने में सक्षम हैं। एक उदास चेहरा उदासी या पीड़ा को इंगित करता है। जब लोग एक उदास चेहरे देखते हैं तो वे स्वाभाविक रूप से इसका कारण पूछते हैं। फिर से पाखंड के पास अपने विनम्र राज्य पर ध्यान आकर्षित करने का मौका मिलता है, "ओह, मैं इस के लाभ के लिए उपवास कर रहा हूं।" पुरुष अपने प्रयासों की सराहना कर सकते हैं लेकिन भगवान अपमानित हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि व्यक्ति की विनम्रता को भगवान के हाथ को उसके पक्ष में स्थानांतरित करने की आवश्यकता होती है। एक उदास चेहरा भी एक स्थिति में काम करने के लिए भगवान में आशाहीनता और विश्वास की कमी को इंगित करता है। दूसरी तरफ एक खुश चेहरा भीतर से विकीण को इंगित करता है। यह व्यक्ति आशा और विश्वास से भरा है कि भगवान स्थिति के बीच में काम करेंगे। लोग यह भी जानना चाहते हैं कि एक व्यक्ति खुश क्यों है। यह प्रेषित पीटर की सलाह को "हमेशा हर किसी के लिए रक्षा करने के लिए तैयार होने के लिए तैयार हो सकता है जो आपको आशा के लिए एक खाता देने के लिए कहता है, फिर भी सौम्यता और सम्मान के साथ।" यीशु अपने शिष्यों को इन सभी अच्छे कर्मों को गुप्त रूप से करने के लिए कहता है क्योंकि उनके पिता जो गुप्त रूप से देखता है उन्हें इनाम देंगे। वे उनके सम्मान, महिमा और प्रशंसा प्राप्त करेंगे। एक पाखंड के विपरीत, अच्छे कर्मों के लिए एक शिष्य का मकसद नम्रता पर आधारित है। वह भगवान

को क्रेडिट प्राप्त करने की इच्छा रखता है। और धर्म के उनके कृत्य भगवान और दूसरों के लिए प्यार पर आधारित हैं। अच्छे कर्मों को हमेशा एक बलिदान की आवश्यकता होती है। यह पैसा है, प्रार्थना में, यह समय है और यह भोजन या कुछ और उपवास करने में। अच्छे कर्म करने का अंतिम परिणाम उन सभी के लिए एक इनाम है जो उन्हें करता है। पाखंड के लिए यह पुरुषों की प्रशंसा है और शिष्य के लिए यह खजाना स्वर्ग में उनके लिए रखी गई है। समूह चर्चा: अभिनेताओं को समाज में इतना सम्मान क्यों कहा जाता है? आपके द्वारा प्राप्त सम्मान का वर्णन करें और बताएं कि यह आपको कैसा महसूस कराया गया है। पाठ का बिंदु: अपने अच्छे कर्मों के लिए एक बेहतर इनाम प्राप्त करें। आवेदन: अगली बैठक से पहले कम से कम एक अच्छा काम करें और इसके बारे में किसी को भी न बताएं।

पाठ # 12

प्रार्थना बर्फ तोड़ने वाला: एक बच्चे के रूप में आपने कोई प्रार्थना की थी और यदि ऐसा है तो क्या आप उन्हें याद कर सकते हैं? प्रस्तावना: पिछले पाठ में हमने जिन मुद्दों पर चर्चा की उनमें से एक प्रार्थना थी। यीशु ने अपने शिष्यों को बताया कि कैसे कपटियों और अन्यजातियों के विपरीत प्रार्थना करनी चाहिए। प्रार्थना पर प्रवचन के बीच में वह अपने शिष्यों को "हमारे पिता" या "भगवान की प्रार्थना" के रूप में जाना जाता है। इसने उन अवधारणाओं को व्यक्त किया जो अन्यजातियों के प्रार्थना करने के तरीके के विपरीत थीं और यीशु ने विशेष रूप से इसके एक विशेष पहलू पर ध्यान केंद्रित किया। पवित्रशास्त्र पढ़ना: प्रभु की प्रार्थना (मत्ती 6:9-15) समूह चर्चा: क्या आप सोचते हैं कि प्रभु की प्रार्थना को बार-बार कहने से हम अन्यजातियों की तरह निरर्थक दोहराव का उपयोग करने के दोषी हैं? क्यों या क्यों नहीं? आज्ञा: फिर इस प्रकार प्रार्थना करो। पाठ: यीशु प्रार्थना के बारे में सिखा रहा है। वह चाहता है कि उसके चेले उनके कहे शब्दों के पीछे के आध्यात्मिक सिद्धांतों को समझें। प्रार्थना का अर्थ रटना या अर्थहीन दोहराव नहीं है। एक प्रभावशाली प्रार्थना होने के अलावा, प्रभु की प्रार्थना, परमेश्वर के पास जाने के लिए एक अच्छी रूपरेखा भी प्रदान करती है। इसमें एक पता, प्रशंसा और याचिकाएं शामिल हैं। "हमारे पिता जो स्वर्ग में कला करते हैं" पता है। "हमारे पिता" शब्दों का प्रयोग इंगित करता है कि परिवार शामिल है। यह मानता है कि प्रत्येक शिष्य का एक बच्चे का रिश्ता होता है और उसके भाई-बहन होते हैं। अपने भाइयों और बहनों के लिए प्यार इस बात में दिखाया जाता है कि वह उन्हें अपनी प्रार्थना में शामिल कर रहा है। पता स्वर्ग में पिता को निर्देशित किया गया है और इसलिए शिष्य के मानव पिता के साथ भ्रमित नहीं किया जा सकता क्योंकि उनमें से कुछ अभी भी पृथ्वी पर रह रहे हैं। यह मानता है कि भगवान उनके निर्माता (पिता) हैं और सम्मान और आज्ञाकारिता उनके कारण है। "तेरा नाम पवित्र हो" स्तुति है। पवित्र शब्द का अर्थ पवित्र या पवित्र होता है। ऐसा कहकर शिष्य घोषणा कर रहे हैं कि ईश्वर का नाम शुद्ध है, किसी भी प्रकार की अशुद्धता से मुक्त है। उसके बच्चे होने के नाते, उन्हें यह पहचानना चाहिए कि वे उसका नाम धारण करते हैं। इसके साथ ही उस नाम पर खरा उतरने की जिम्मेदारी भी आती है। पहली याचिका है “तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा पूरी हो, जैसी स्वर्ग में पृथ्वी पर पूरी होती है।” चेले यह मानते हैं कि पृथ्वी पर परमेश्वर की इच्छा पूरी नहीं हो रही है और वे पृथ्वी पर अपना पूर्ण शासन बढ़ाकर उसे आशीष देने के लिए कह रहे हैं। (परमेश्वर के राज्य की अधिक गहराई से परीक्षा #18 के पाठ में सिखाई जाएगी) यीशु प्रार्थना पर शिक्षा देना जारी रखता है। वह शिष्यों को तीन और चीजों के लिए भगवान से प्रार्थना करने का निर्देश देता है: शरीर के लिए भोजन, आत्मा के लिए क्षमा और आत्मा के लिए मार्गदर्शन। "आज के दिन हमें हमारी प्रतिदिन की रोटी दो" इन याचिकाओं में से पहली है। "इस दिन" शब्दों का उपयोग करके यीशु संकेत दे रहे हैं कि जब तक शिष्य के पास जीवन है, तब तक प्रभु की प्रार्थना प्रतिदिन की जानी चाहिए। यह याचिका स्वीकार करती है कि भगवान शरीर के लिए प्रदाता है। "और हमें हमारे कर्ज माफ कर दो, जैसा कि हमने अपने कर्जदारों को भी माफ कर दिया है" अगली याचिका है। यहां इस्तेमाल किए गए ऋण और देनदार शब्दों का अन्य तरीकों से अनुवाद किया जा सकता है। अन्य शब्द जिनका उपयोग ऋण के लिए किया जा सकता है, उनमें शामिल हो सकते हैं: साइड स्लिप, लैप्स, मिस द मार्क, ट्रांसग्रेस, अतिचार, विचलन, गिरना, गलती, अपराध या पाप। ऋण शब्द के पीछे का विचार कुछ ऐसा है जिससे नुकसान हुआ है। एक देनदार वह है जो नुकसान पहुंचाता है; इसलिए वह जिसे हानि पहुँचाता है उसका ऋणी हो जाता है। प्रार्थना पर यीशु के निर्देशों में यह याचिका मुख्य बिंदु है। प्रार्थना को समाप्त करने के बाद, वह शिष्यों का ध्यान इस बिंदु पर केंद्रित करता है। प्रार्थना में प्रयुक्त शब्द से शिष्य ईश्वर से कह रहा है कि उसने पहले ही सबके प्रति अपने ऋण को क्षमा कर दिया है। इसलिए, यदि उसने उन्हें क्षमा नहीं किया है, तो वह परमेश्वर से झूठ बोल रहा है। प्रेरितों के काम की

पुस्तक, अध्याय 5, और पद 1-11 में दो शिष्यों, हनन्याह और सफीरा की मृत्यु में परमेश्वर से झूठ बोलने की गंभीरता का प्रदर्शन किया गया है। कुछ लोग अनुवाद को इस रूप में पढ़ सकते हैं "जैसे हम अपने देनदारों को क्षमा करते हैं, वैसे ही हमें हमारे ऋण क्षमा करें"। ऐसा करने में शिष्य अभी भी अपनी ही बातों में फंसा हुआ है। एक मामले में इसे पढ़ा जा सकता है, जब हम अपने देनदारों को माफ करते हैं तो भगवान हमें माफ कर देते हैं। भगवान करेगा, जब शिष्य करता है! दूसरे मामले में इसे इस तरह समझा जा सकता है, जैसे हम दूसरों को माफ करते हैं, वैसे ही भगवान हमें माफ कर दें। इस रूपांतर में भगवान शिष्य की तरह ही क्षमा करेंगे। इसलिए यदि शिष्य क्षमा नहीं करता है, तो उसी प्रकार ईश्वर भी नहीं करेगा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई व्यक्ति पवित्रशास्त्र को कैसे पढ़ता है; बिंदु वही है। यदि शिष्य दूसरों को क्षमा नहीं करता है, तो ईश्वर उसे क्षमा नहीं करेगा। परमेश्वर कुछ और कैसे कर सकता है, क्योंकि यीशु मसीह का पूरा सुसमाचार क्षमा और मेल-मिलाप पर आधारित है? भगवान हमेशा माफ करने को तैयार रहते हैं, लेकिन क्या हम हैं? इस विशेष याचिका से एक और समस्या उत्पन्न होती है और वह है प्रार्थना में इसके स्थान से। यह तीसरी याचिका के सामने आता है, जिसमें लिखा है, "और हमें परीक्षा में न ले, परन्तु बुराई से बचा।" ईश्वर शिष्य को बुराई से नहीं बचा सकता क्योंकि वह क्षमा नहीं करेगा और जब तक वह नहीं करेगा तब तक ईश्वर उसे क्षमा नहीं करेगा। चर्च में क्षमा की कमी प्राथमिक कारण है कि वह अपने बीच में बुराई से पीड़ित है। अंतिम याचिका यह भी मानती है कि ईश्वर शिष्यों को बुराई से दूर रखने और एक बार शामिल होने के बाद उन्हें इससे मुक्त करने में सक्षम है। बाइबल के कुछ अनुवादों में दो अतिरिक्त कथन हैं। “क्योंकि राज्य, और पराक्रम, और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन" पहले कथन में चेले स्वीकार करते हैं कि वे जिस से प्रार्थना कर रहे हैं वह ईश्वर है, पूरी तरह से संप्रभु, हमेशा के लिए जीवित और उनकी याचिकाओं को पूरा करने में सक्षम। परमेश्वर, जो अपने राज्य का प्रभारी है, दैनिक भोजन प्रदान करता है, उसकी शक्ति पापों को क्षमा करती है और उसकी महिमा लोगों को परीक्षा में नहीं ले जाती बल्कि उन्हें बुराई से बचाती है। पिछले वाक्य में परमेश्वर के लिए प्रेम शब्द को प्रतिस्थापित करके यह पढ़ा जाएगा, प्रेम दैनिक भोजन प्रदान करता है, पापों को क्षमा करता है, और लोगों को प्रलोभन में नहीं ले जाता है बल्कि उन्हें बुराई से बचाता है। क्या यह आपको परमेश्वर के राज्य में एक शिष्य के उद्देश्य के बारे में कुछ जानकारी देता है? प्रार्थना "आमीन" कथन के साथ समाप्त होती है। इसका मतलब है कि बात पक्की है या सच। समूह चर्चा: एक ऐसे व्यक्ति का नाम बताइए जिसे आपने माफ नहीं किया है और समूह को बताएं कि क्यों। पाठ का बिंदु: प्रतिदिन प्रभु की प्रार्थना का अभ्यास करें। आवेदन: एक कागज के टुकड़े पर उन सभी के नाम लिखें जिन्हें आपने माफ नहीं किया है। हर एक को माफ कर दो और फिर कागज के टुकड़े को जला दो। राख को हवा में वितरित करें ताकि उन्हें पूर्व की ओर पश्चिम की ओर ले जाया जा सके। फिर अपने शब्दों की समझ के साथ जो आप कह रहे हैं, प्रभु की प्रार्थना करें।

पाठ # 11

खजाना आइसब्रेकर प्राप्त करना: विज़ुअलाइज़ेशन लोगों को सीखने में मदद करता है। यदि आपके पास किसी प्रकार का खजाना है तो उसे बैठक में लाएं और समूह से पूछें कि वस्तु क्या है। इसकी ठीक से पहचान हो जाने के बाद समूह से पूछें कि खजाना किस लिए है। फिर सवाल पूछें, "एक बच्चे के रूप में आपका सबसे क़ीमती अधिकार क्या था?" और क्यों?" परिचय: यीशु ने पहाड़ी उपदेश जारी रखा। स्क्रिप्चर पढ़ना: खज़ाना (मत्ती 6:19-23) समूह चर्चा: पवित्रशास्त्र के अंश के अनुसार अभी पढ़ें कि वे दो स्थान कहाँ हैं जहाँ ख़ज़ाना जमा किया जा सकता है? EarthHeaven कुछ ऐसे खजानों के नाम बताइए जिन्हें धरती पर रखा जा सकता है। सोने की चांदी कीमती गहनेपैसे के कपड़े के घर कारेंफर्नीचरसभी प्रकार के खिलौने...अलग-अलग उम्र के पुरुषों और महिलाओं के लिए। आज्ञाएँ: पृथ्वी पर अपने लिए धन जमा मत करो। परन्तु स्वर्ग में अपने लिए धन जमा करो। पाठ - भाग 1: जैसा कि यीशु की अधिकांश शिक्षाओं के साथ होता है, वह प्राथमिक स्तर पर शुरू करता है, फिर श्रोता को गहरे स्तर तक ले जाता है और फिर मुद्दे के मूल तक ले जाता है। यह इस के साथ अलग नहीं है। जैसे ही शिष्य उसके पहले कथन को सुनते हैं, वे इसका अर्थ आसानी से समझ सकते हैं। पृथ्वी पर अपने लिये धन इकट्ठा न करना, जहां कीड़ा और काई नाश करते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। शुरू करने के लिए यीशु खजाने के बारे में बात कर रहे हैं, कीमती चीजों के बारे में, सामान्य चीजों के बारे में नहीं। वह जीवन की आवश्यकताओं के बारे में बात नहीं कर रहा है। आम तौर पर, आपकी ज़रूरत की चीज़ें नियमित रूप से उपयोग की जा रही हैं; इसलिए कीड़ा और काई उन्हें नष्ट नहीं करते, क्योंकि वे बेकार नहीं बैठे हैं। और चोर आमतौर पर उन चीजों को लेने के लिए कहीं सेंध लगाने का जोखिम नहीं उठाते हैं जो मूल्यवान नहीं हैं। उदाहरण के लिए, चोर चोरी कर सकते हैं और पैसे चुरा सकते हैं लेकिन आमतौर पर आपकी अंडरशर्ट नहीं लेते हैं। समूह चर्चा: खजाना पाने के लिए व्यक्ति को कितनी मेहनत करनी चाहिए?कितना पर्याप्त है? पाठ - भाग 2: यीशु की अगली आज्ञा चेलों को थोड़ा और गहरे स्तर पर सोचने के लिए विवश करती है। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा और न काई नष्ट करते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चोरी करते हैं। यह कुछ समस्याएं प्रस्तुत करता है। आम से लेकर फिरौन तक के पूर्वजों के पास जीवन के लिए कीमती चीजें उनके साथ दफन थीं। परन्तु ये सब वस्तुएँ आज तक पृथ्वी पर बनी हुई हैं। फिर चेले अपने खजाने को धरती से स्वर्ग तक कैसे पहुंचाएंगे? क्या भगवान उन्हें बीम करते हैं? दूसरी समस्या दिमाग में आती है। पहली आज्ञा में ऐसा प्रतीत होता था कि वह नहीं चाहता था कि वे संचायक या खजाने के जमाकर्ता हों, लेकिन अब वह उन्हें बताता है कि ठीक यही वह उनसे करना चाहता है। ऐसा लगता है कि यह केवल एक मामला है जहां वह चाहता है कि वे खजाना जमा करें। लेकिन स्वर्ग में सोना, चांदी, कीमती रत्न क्या अच्छा है? निश्चय ही यीशु इन बातों से कहीं बढ़कर बात कर रहा होगा। स्वर्ग के खजाने का शाश्वत मूल्य होना चाहिए। इन अनन्त खजानों का उल्लेख पूरे पवित्रशास्त्र में किया गया है और प्रेरित पौलुस ने उन्हें कुरिन्थियों के लिए अपनी पहली पत्री में सारांशित किया है। परन्तु अब विश्वास, आशा, प्रेम, ये तीनों बने रहो; लेकिन इनमें से सबसे बड़ा प्यार है। विश्वास की तुलना सोने से, आशा की चाँदी से, और बहुमूल्य रत्नों की तुलना प्रेम से की गई है। सोने की तरह आस्था आग से शुद्ध होती है। आशा है कि चाँदी जैसी गंदगी को हटाकर शुद्ध करना होगा। और कीमती गहनों की तरह प्यार हर तरह के आकार, आकार और रंगों में आता है। समूह चर्चा: कुछ कार्यों के नाम बताइए जिनमें विश्वास की आवश्यकता होती है। कुछ ऐसे कार्यों के नाम बताइए जिनमें आशा की आवश्यकता होती है। कुछ ऐसे कार्यों के नाम बताइए जिनमें प्रेम की आवश्यकता होती है। पाठ - भाग 3: यीशु ने दो आज्ञाओं को मूल मुद्दे के साथ समाप्त किया है "जहां तुम्हारा खजाना है, वहां तुम्हारा दिल भी होगा।" वह चाहता है कि उसके शिष्य यह समझें कि एक व्यक्ति के पास लौकिक या शाश्वत चीजों को महत्व

देने का विकल्प होता है। और वे जो भी चुनेंगे, उसी के लिए वे काम करेंगे। क्या कोई व्यक्ति यह देख सकता है कि विश्वास, आशा और प्रेम जैसी चीजें जो हमेशा बनी रहती हैं, सोने, चांदी और कीमती रत्नों की तुलना में अधिक मूल्यवान हैं जो अस्थायी हैं? जीसस के अनुसार यह इस बात पर निर्भर करता है कि किसी व्यक्ति की आंख किस प्रकार की है। चाहे वह अच्छा हो या बुरा, स्पष्ट हो या बुरा, या प्रकाश से भरा हो या अंधकार से भरा हो। आँख वही देखती है जो दिल की कदर करता है! यीशु ने इब्रानी शब्द "अच्छा" या "स्पष्ट आँख" का इस्तेमाल यह इंगित करने के लिए किया कि एक व्यक्ति उदार है। एक "बुरी नज़र" या "बुरी नज़र" इंगित करती है कि एक व्यक्ति कंजूस या लालची है। इसका उल्लेख नीतिवचन की पुस्तक में पाया जा सकता है। अध्याय 22 बनाम 9 में यह कहा गया है, "जिसके पास भरपूर आँख है, वह धन्य होगा, क्योंकि वह अपनी रोटी कंगालों को देता है।" इसी तरह, अध्याय 28 बनाम 22 में यह कहता है, "जो धनी होने की फुर्ती करता है, उस पर बुरी नजर होती है, और यह नहीं सोचता कि उस पर दरिद्रता आ पड़ेगी।" किसी व्यक्ति को नियंत्रित करने वाली आत्मा यह निर्धारित करती है कि वह उदार है या कंजूस। इसके लिए ईश्वर में विश्वास, शाश्वत पुरस्कारों की आशा और दूसरों के लिए उदार होने के लिए प्रेम की आवश्यकता होती है। यह विशेष रूप से सच है जब कोई व्यक्ति गरीब होता है। बाद में यीशु ने एक गरीब विधवा का उल्लेख किया जिसने खजाने में दो छोटे सिक्के अन्य सभी से अधिक दिए थे। क्यों? वह अपने भगवान के प्रति विश्वास में समृद्ध थी। पाठ का बिंदु: अपना खजाना चुनें और उसे उचित स्थान पर संग्रहीत करें। आवेदन:पहला कुरिन्थियों 3:10-15 पढ़ें अगली समूह बैठक से पहले एक ऐसा कार्य करें जिसमें विश्वास की आवश्यकता हो, एक जिसमें आशा की आवश्यकता हो और एक जिसमें प्रेम की आवश्यकता हो। अपने कार्यों को रिकॉर्ड करें और उन्हें अगली समूह बैठक में साझा करें।

पाठ # 14

द स्केल्स ऑफ़ जस्टिस आइसब्रेकर: समूह को एक निर्णय बताएं जो आपने किया था जिसका आपको पछतावा था। परिचय: "न्याय मत करो, ऐसा न हो कि तुम पर न्याय किया जाए।" यह कथन एक टन ईंटों की तरह यीशु के श्रोताओं पर दृढ़ विश्वास के साथ पड़ता है। यह शायद पवित्रशास्त्र के सबसे गलत समझा जाने वाले अंशों में से एक है और कई लोगों के लिए इसे निगलना मुश्किल है। यदि उस कथन को अपने आप खड़े रहने के लिए छोड़ दिया जाता है तो ऐसा प्रतीत होता है कि ईसाइयों को कभी भी किसी भी चीज़ के बारे में निर्णय नहीं लेना चाहिए। बहरहाल, मामला यह नहीं। इसका अनुसरण करने वाले बयानों के संदर्भ में, हम देखते हैं कि यीशु दो अलग-अलग विषयों के बारे में बोल रहा है: 1) अन्य लोगों का न्याय करना और 2) यह समझना कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है, फिर उचित कार्रवाई करना। इस पाठ में, अन्य लोगों को आंकने के विषय को शामिल किया जाएगा। पाठ #15 में, हम स्वयं के लिए अच्छे और बुरे की समझ को शामिल करेंगे। अन्य लोगों का न्याय करने पर यीशु की टिप्पणी में जाने से पहले, आइए देखें कि किसी अन्य व्यक्ति का निष्पक्ष निष्पक्ष निर्णय लेने के लिए किन तत्वों की आवश्यकता है। एक जज।एक कानून।एक आरोप लगाने वाला।एक आरोपी।गवाहों की गवाही।एक फैसला।और यदि आवश्यक हो, एक सजा। एक कानूनी, नागरिक, धार्मिक या दैवीय प्राधिकरण को न्यायाधीश की नियुक्ति करनी चाहिए। जो लोग यीशु मसीह के चेले हैं, उनसे सवाल यह है कि "क्या आप न्यायी नियुक्त किए गए हैं और यदि हां तो किसके द्वारा?" पवित्रशास्त्र के अनुसार एक है जिसे परमेश्वर ने न्याय करने के लिए नियुक्त किया है और वह है यीशु मसीह। प्रेरितों के काम 10:42-43 की पुस्तक कहती है, "और उस ने हमें लोगों को प्रचार करने की आज्ञा दी, और सच्चाई से गवाही देने के लिए कि यह वही है जिसे परमेश्वर ने जीवितों और मरे हुओं का न्यायी नियुक्त किया है। उसी में से सब कुछ भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं कि उसके नाम से जो कोई उस पर विश्वास करता है, उसे पापों की क्षमा मिलती है।" एक कानूनी, नागरिक, धार्मिक या दैवीय अधिकार, एक कानून स्थापित करना चाहिए। ऐसे कई कानून हैं जो एक गठित प्राधिकरण द्वारा स्थापित किए गए हैं और इसमें शामिल हैं: परिवार, नागरिक, भगवान का कानून, मूसा का कानून और आत्मा का कानून नाम लेकिन कुछ। अभियुक्त के खिलाफ आरोप लगाने के लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि वह किस कानून के तहत है। न्यायाधीश को उस कानून का गहन ज्ञान होना चाहिए और एक उचित निर्णय देने के लिए उसकी सीमाओं के भीतर रहना चाहिए। उदाहरण के लिए, यह होगा इस्लामी कानून के तहत एक अमेरिकी नगरपालिका मजिस्ट्रेट के लिए एक सजा पारित करने के लिए अनुपयुक्त हो। उसे ऐसा करने के लिए नियुक्त नहीं किया गया था, कुरान का कोई ज्ञान नहीं है, और निश्चित रूप से इसकी सीमाओं के भीतर रहने में सक्षम नहीं होगा। अभियुक्त को अपना मामला अवश्य लाना चाहिए गठित प्राधिकारी का न्यायाधीश। वह न्यायाधीश के रूप में सेवा नहीं कर सकता! अन्यथा यह न्याय का उपहास होगा क्योंकि मामले में उसके पूर्वाग्रह के कारण कोई निष्पक्षता नहीं होगी। और आरोप लगाने वाला कानूनी रूप से आरोपी पर आरोप नहीं लगा सकता है। केवल उनके पास कानूनी अधिकार है आरोपी पर औपचारिक आरोप ला सकते हैं। निष्पक्ष निष्पक्ष सुनवाई के लिए, अभियुक्त को कानून तोड़ने के आरोपी को दोषी ठहराने के लिए संतोषजनक सबूत लाने होंगे। आमतौर पर साक्ष्य गवाहों की गवाही के रूप में होता है। 2 कुरिन्थियों 13:1 में प्रेरित पौलुस के अनुसार, वह कहता है कि प्रत्येक तथ्य की पुष्टि दो या तीन गवाहों की गवाही से की जानी चाहिए। न्यायाधीश, अभियुक्त नहीं, केवल वही है जो निर्दोष या दोषी का फैसला सुना सकता है। आरोप लगाने वाले और आरोपी दोनों को अपने फैसले का पालन करना चाहिए। यदि अभियुक्त दोषी पाया जाता है तो केवल न्यायाधीश ही किए गए अपराध के लिए उचित सजा का फैसला करता है। फिर न्यायाधीश दोषी पक्ष को उस व्यक्ति को सौंप देता है जो उसकी सजा को पूरा करेगा। शायद यीशु ने यह आदेश इसलिए जारी किया

क्योंकि वह लोगों के दिलों को जानता था। अधिकांश कानून निर्माता, न्यायाधीश, आरोप लगाने वाले, गवाह और जल्लाद के रूप में सेवा करना चाहते हैं जब वे दूसरे को कुछ करते देखते हैं, तो वे अपनी नजर में गलत मानते हैं। लेकिन अधिकांश नहीं चाहेंगे कि दूसरे के साथ उसी तरह से व्यवहार किया जाए। समूह चर्चा:इस पाठ के परिचय पर आपकी क्या टिप्पणी है? पवित्रशास्त्र पढ़ना: न्याय के तराजू (मत्ती 7:1-5) (लूका 6:36-42) आज्ञाएँ: दयालु बनो। न्याय मत करो और तुम पर न्याय नहीं किया जाएगा। निंदा मत करो, और तुम निंदा नहीं करोगे . माफ़ करना, और तुम्हें माफ़ कर दिया जाएगा। दे दो, और यह तुम्हें दे दिया जाएगा। पहले अपनी आँख से लट्ठा निकालो। सबक: भाग # 1 शब्दों के अपने शुरुआती दौर के बाद, "न्याय न करें कि ऐसा न हो कि आप पर न्याय किया जाए", यीशु ने अपनी स्थिति को सुदृढ़ करना शुरू कर दिया। वह ईश्वर के परिवार में न्याय प्रणाली की व्याख्या करता है। परमेश्वर की न्याय प्रणाली का पहला भाग वह इस प्रकार व्यक्त करता है, "क्योंकि जिस प्रकार तुम न्याय करते हो, उसी से तुम्हारा न्याय किया जाएगा।" दूसरे शब्दों में, जिस तरीके और तरीके से एक शिष्य दूसरे का न्याय करता है, उसी तरह ईश्वर शिष्य का न्याय करेगा। चूँकि हमें उसी तरह से आंका जाएगा जैसे हम दूसरों का न्याय करते हैं, कुछ गंभीर विचार मन में आने चाहिए। एक विचार हो सकता है, "मैं चाहता हूं कि परमेश्वर किस कानून के तहत मेरा न्याय करे, मूसा की व्यवस्था या आत्मा की व्यवस्था, जो स्वतंत्रता की व्यवस्था है?" एक और विचार हो सकता है, "क्या मैं चाहता हूँ कि परमेश्वर मेरे अभियुक्त और न्यायी दोनों के रूप में एक ही समय में सेवा करे?" क्या मैं परमेश्वर से अपेक्षा करता हूँ कि वह केवल दोष लगाने वाले के स्थान पर अन्य गवाहों की भी सुनेगा? क्या मुझे उम्मीद है कि वह उन गवाहों की विश्वसनीयता की जाँच करेगा? और क्या मैं अपनी रक्षा के लिए अवसर प्रदान करना चाहूँगा? तो शायद हमें दूसरों को भी यही शिष्टाचार देना चाहिए! यीशु परमेश्वर की न्याय प्रणाली के दूसरे भाग की व्याख्या इस प्रकार करते हैं, "तेरे नाप से नापा जाएगा।" दूसरे शब्दों में, जो निर्णय और वाक्य आप दूसरों को सुनाते हैं वही वही है जो आप परमेश्वर से प्राप्त करेंगे। "निंदा मत करो, और तुम्हारी निंदा नहीं की जाएगी: क्षमा करें और आपको क्षमा किया जाएगा।" यीशु के शिष्य को और अधिक प्रश्नों पर विचार करने की आवश्यकता है। क्या मैं चाहता हूँ कि परमेश्वर मेरी निंदा करे या मुझे क्षमा करे? अगर वह मेरी निंदा करता है तो क्या मैं चाहता हूं कि सजा कोमल या कठोर हो? यीशु इंगित करता है कि बोने और काटने की व्यवस्था तब प्रभावी होती है जब वह कहता है, “दे, तो तुझे दिया जाएगा; अच्छे नाप दबे हुए, और हिलाए हुए, और दौड़ते हुए तेरी गोद में उंडेलेंगे।” मनुष्य न केवल जो बोता है वही काटता है, वरन वह उसी रीति से उसके पास कई गुना होकर वापस भी आ जाता है। जिस प्रकार एक बीज से अनेक बीज उत्पन्न होते हैं, जिससे खाने वाले को रोटी और बोने वाले को बीज दोनों मिलते हैं, वैसे ही इस संसार में व्यक्ति के निर्णय होते हैं। समूह चर्चा: आपने अभी जो सीखा है उसके आधार पर आप दूसरों को कैसे आंकेंगे? पाठ: भाग # 2 यीशु अपने शिष्यों को एक दृष्टांत बोलकर दूसरों के न्याय के बारे में सिखाना जारी रखता है। वह दृष्टांत की शुरुआत दो अलंकारिक प्रश्नों से करता है। एक अंधा आदमी एक अंधे आदमी का मार्गदर्शन नहीं कर सकता, क्या वह कर सकता है? क्या वे दोनों गड्ढे में नहीं गिरेंगे? और फिर इसे इस आदेश के साथ समाप्त करें, "पहले अपनी आंख से लॉग आउट करें।" यीशु के विषय के संदर्भ में दृष्टान्त से कई निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। सबसे पहले, यीशु अंधे व्यक्ति की तुलना उस व्यक्ति के रूप में करता है जो दूसरे का न्याय करना चाहता है। दूसरा, उसके अंधे होने का कारण यह है कि उसकी अपनी आंख में एक लट्ठा है जो उसे अंधा कर रहा है। तीसरा, जो दूसरे का न्याय करता है उसे किसी और का निर्देशन, नेतृत्व या चेला नहीं बनाना चाहिए क्योंकि वह स्वयं को स्पष्ट रूप से नहीं देख सकता है। चौथा, जो कोई दूसरे का न्याय करता है, उसे निश्चित रूप से अपने जैसे किसी का अनुसरण नहीं करना चाहिए, क्योंकि वे दोनों अंधे हैं और एक ही जाल में पड़ेंगे। और पांचवां, दोनों अंधे व्यक्तियों को किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश करनी चाहिए

जिसके पास उनका नेतृत्व करने के लिए स्पष्ट दृष्टि हो। यीशु का दूसरा कथन है, "शिष्य अपने गुरु से बड़ा नहीं होता; परन्तु हर कोई, पूरी तरह प्रशिक्षित होने के बाद, अपने शिक्षक के समान होगा।" एक शिष्य के लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि उसका शिक्षक अन्य लोगों का न्याय करता है या नहीं, क्योंकि शिष्य उसके जैसा बन जाएगा। प्रेरित यूहन्ना के अनुसार, यीशु को किसी का न्याय करने के लिए नहीं भेजा गया था। "क्योंकि परमेश्वर ने पुत्र को जगत में जगत का न्याय करने के लिथे नहीं भेजा, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दोष नहीं लगाया जाता; वह जो विश्वास नहीं करता है, पहले ही न्याय किया जा चुका है, क्योंकि उसने ईश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया है"। जैसा कि हम यीशु के दूसरे कथन पर ध्यान केंद्रित करना जारी रखते हैं, हम समझते हैं कि एक शिष्य को पूरी तरह से प्रशिक्षित होने की आवश्यकता है। प्रशिक्षण में दो भाग होते हैं: सीखना और लागू करना या इसे दूसरे तरीके से कहना, सुनना और पालन करना। एक व्यक्ति तब तक प्रशिक्षित नहीं होता जब तक कि वह दोनों भागों को पूरा नहीं कर लेता। प्रशिक्षित होने में समय लगता है। और एक शिष्य को अपने शिक्षक से कभी भी ऐसा कुछ नहीं सिखाया जा सकता है जिसे शिक्षक पहले से नहीं जानता हो। ईसाइयों के लिए विचार करने का एक बिंदु यह है कि वे अपने शिक्षक के रूप में किसे चाहते हैं: शैतान, जिसे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में भाइयों या यीशु मसीह, दुनिया के उद्धारकर्ता के आरोप लगाने वाले के रूप में पहचाना जाता है? यीशु इस दृष्टान्त के अन्तिम भाग को इस प्रकार बताते हैं। "और तू अपने भाई की आंख के तिनके को क्यों देखता है, परन्तु उस लट्ठे को जो तेरी अपनी आंख में है, ध्यान नहीं देता? या तू अपने भाई से कैसे कह सकता है, 'भाई, मैं उस तिनके को निकाल दूं जो भीतर है। तेरी आंख,' जब तू अपक्की आंख का लट्ठा नहीं देखता? हे कपटी, पहिले अपनी आंख का लट्ठा निकाल, और तब तू अपने भाई की आंख का लट्ठा साफ देख सकेगा। कुछ अवलोकन यह समझने के लिए हैं कि यीशु अपने शिष्यों को क्या समझाना चाहता है। सबसे पहले, दृष्टांत में दोनों व्यक्ति भाई-बहन के रूप में एक-दूसरे से संबंधित हैं। उनके एक समान माता-पिता हैं। और चूंकि यीशु परमेश्वर के परिवार में मूल्यों की चर्चा कर रहे हैं, शिष्य आश्वस्त हैं कि वह उन सभी लोगों के बारे में बात कर रहा है जिनके पिता के रूप में भगवान हैं। दूसरा, किसी भी व्यक्ति की आंख में लट्ठा निश्चित रूप से किसी और की आंख में एक धब्बा देखने के लिए कठिन समय होने वाला है। लॉग उसके विचार को अवरुद्ध कर देगा, अनिवार्य रूप से प्रतिपादन वह अंधा है। साथ ही जिस व्यक्ति की आंख में लट्ठा है वह पहले से देख रहा होगा दूसरे की आंख में केवल एक धब्बा देखने के लिए बहुत मुश्किल है। वह अपने भाई की बहुत बारीकी से जांच कर रहा होगा। वह निश्चित रूप से कुछ ढूंढ रहा है। तीसरा, यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि जिस व्यक्ति की आंख में लट्ठा है, उसने केवल अपनी दृष्टि के आधार पर दूसरे की आंख में धब्बे की खोज की है। आमतौर पर जिस व्यक्ति की आंख में धब्बा होता है, वह किसी और के सामने जलन को नोटिस करता है। तब वह व्यक्ति इसे स्वयं हटा देगा या संभवतः दूसरे से पूछेगा कि क्या उसे स्वयं इसे करने में कठिनाई हो रही है। जिस व्यक्ति की आंख में लट्ठा है, उसके बारे में कई सवाल उठते हैं। वह अपनी ही आँख में लट्ठा कैसे नहीं देख सकता? क्या वह दर्द के प्रति इतना संवेदनशील हो गया है कि उसे इसकी भनक तक नहीं लगी? और अगर वह इतना संवेदनहीन है, तो क्या कोई उसके धब्बे हटाने में उसकी सहायता चाहेगा क्योंकि ऐसा करने के लिए उसे कोमल स्पर्श की आवश्यकता होती है? उसने अपना लॉग क्यों नहीं हटाया? क्या वह लट्ठों को हटाने में इतना मुश्किल होने के बाद भी धब्बे हटाने में सक्षम है? और चूंकि उसने अपनी आंखों में लॉग को नहीं देखा है, क्या कोई यह सुनिश्चित कर सकता है कि वह वास्तव में अन्य लोगों की आंखों में धब्बे का पता लगा सकता है? समूह चर्चा: इस दृष्टांत से हम कई प्रश्न पूछकर आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में सक्षम हैं। वह व्यक्ति अपने साथी विश्वासी को इतनी बारीकी से क्यों देख रहा था? (उसमें दोष खोजने के लिए।) एक आस्तिक दूसरे में दोष क्यों खोजना चाहेगा? (दूसरे

व्यक्ति को कम मूल्य का बनाने के लिए या दूसरे पर अधिकार हासिल करने के लिए।) दोष खोजने वालों के पास क्या मुद्दे हैं? (दूसरों के बारे में उनका निर्णय अपने स्वयं के मूल्य को बढ़ाने की आवश्यकता से उत्पन्न होता है। वे वास्तव में यह नहीं मानते हैं कि भगवान अपना काम कर रहे हैं और उन्हें न्याय का एक गरीब डिस्पेंसर मानते हैं। उनका मानना है कि वे बेहतर न्यायाधीश हैं कि क्या किया जाना चाहिए फिर परमेश्वर, इसलिये वे अपने आप को न्यायी ठहराते हैं। इसका मूल कारण घमण्ड है।) स्वयं निर्णय करो; क्या दूसरे अच्छे या बुरे का न्याय करने का मूल कारण है? सबक का बिंदु: केवल एक न्यायाधीश है, और मैं वह नहीं हूं। आवेदन: दूसरे का न्याय न करने के लिए कर्तव्यनिष्ठा से प्रयास करें। इस प्रयास में आपके सामने आने वाली किसी भी परीक्षा की अगली बैठक में समूह को बताने की तैयारी करें।

पाठ # 15

विवेकपूर्ण आइसब्रेकर विकसित करना: समूह की बैठक में बाइबिल कवर के साथ एक पुस्तक लाएँ और समूह को दिखाएँ कि यह क्या है? (प्रतिक्रिया "बाइबल" होने की सबसे अधिक संभावना है।) क्या सभी ने अपनी बाइबल यूहन्ना 7:24 के लिए खोली है। आप पुस्तक की कुछ पंक्तियों को बाइबल के कवर के साथ पढ़ना शुरू करते हैं। फिर समूह से यूहन्ना 7 को संबंधित करने के लिए कहें: 24 अभी क्या हुआ है। परिचय: पिछले पाठ में, अन्य लोगों को आंकने के विषय पर चर्चा की गई थी। यीशु के चेलों से कहा गया था कि वे दूसरों का न्याय न करें। नए नियम के कई सन्दर्भ इस कार्य का समर्थन करते हैं और हम यहां उनकी समीक्षा करेंगे। पहला कथन रोमियों की पुस्तक का है। "इस कारण तुम में से हर एक जो न्याय करता है, निराधार है, क्योंकि जिस से तुम दूसरे का न्याय करते हो, उसी से अपने आप को दोषी ठहराते हो; तुम्हारे लिए जो एक ही काम का न्याय करते हैं। और हम जानते हैं कि परमेश्वर का न्याय उन लोगों पर पड़ता है जो इस तरह की चीजों का अभ्यास करते हैं। और क्या तू यह समझता है, कि हे मनुष्य, जब तू उन पर न्याय करेगा जो ऐसे काम करते हैं और आप भी वही करते हैं, कि तू परमेश्वर के न्याय से बच जाएगा? या क्या आप उसकी दया और सहनशीलता और धैर्य के धन को हल्का समझते हैं, यह नहीं जानते कि परमेश्वर की कृपा आपको पश्चाताप की ओर ले जाती है? परन्तु अपने हठ और पश्चाताप न करनेवाले मन के कारण, क्रोध के दिन और परमेश्वर के उस धर्मी न्याय के प्रकट होने के दिन, जो हर एक मनुष्य को उसके कामों के अनुसार करेगा, अपने लिये जलजलाहट बटोरता है।" असल में, प्रेरित पौलुस उन लोगों की तुलना करता है जो अन्य लोगों का न्याय करते हैं, हठी और अपश्चातापी हृदय वाले हैं। वे अपने लिए क्रोध जमा कर रहे हैं। रोमियों की पुस्तक में एक और कथन कहता है, "तू कौन होता है जो दूसरे के दास का न्याय करता है? वह अपने स्वामी के पास खड़ा होता है या गिर जाता है; और वह खड़ा रहेगा, क्योंकि यहोवा उसे खड़ा कर सकता है।" प्रेरित पौलुस इसी विचार के साथ आगे बढ़ता है। "लेकिन तुम, तुम अपने भाई का न्याय क्यों करते हो? वा फिर तू क्यों अपके भाई को तुच्छ जानता है? क्योंकि हम सब परमेश्वर के न्याय आसन के साम्हने खड़े होंगे। क्योंकि लिखा है, कि यहोवा की यह वाणी है, कि मेरे जीवन की सौगन्ध, सब घुटनो के बल मेरे साम्हने दण्डवत् करें, और सब जीभ परमेश्वर की स्तुति करें। तब हम में से हर एक अपना लेखा परमेश्वर को देगा।" जेम्स, प्रभु के भाई और यरूशलेम में चर्च के प्रमुख ने अपने नाम के तहत पत्र में दूसरों का न्याय करने के मुद्दे को ताकत दी। वह कहता है, "हे भाइयो, एक दूसरे के विरुद्ध मत बोलो। जो भाई के विरुद्ध बोलता है, या अपने भाई का न्याय करता है, वह कानून के खिलाफ बोलता है, और कानून का न्याय करता है; परन्तु यदि तुम व्यवस्था का न्याय करते हो, तो व्यवस्था पर चलने वाले नहीं, परन्तु उसके न्यायी हो। व्यवस्था देनेवाला और न्यायी केवल एक ही है, जो बचाने और नाश करने में समर्थ है; परन्तु तू कौन है जो अपने पड़ोसी का न्याय करता है?" अपनी पत्री के अंत के निकट याकूब उस बात को फिर से पुष्ट करता है जब वह कहता है, "हे भाइयो, एक दूसरे के विरुद्ध शिकायत मत करो, कि तुम पर दोष न लगाया जाए; देखो, न्यायी द्वार पर खड़ा है।" इनमें से हर एक पवित्रशास्त्र यीशु की शिक्षा का समर्थन करता है: "न्याय न करो, और न तुम पर दोष लगाया जाएगा; और न दोषी ठहराओ, और न तुम दोषी ठहरोगे; क्षमा, और तुम क्षमा किए जाओगे।" यीशु के शिष्यों को अन्य लोगों का न्याय नहीं करना चाहिए क्योंकि भगवान ने उन्हें न्यायाधीश के रूप में नियुक्त नहीं किया है। प्रेरितों के काम की किताब में लिखा है, "इसलिए अज्ञानता के समय को नजरअंदाज करते हुए, भगवान अब मनुष्यों से यह घोषणा कर रहे हैं कि हर जगह पश्चाताप करना चाहिए, क्योंकि वह उस ने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा जिसे उस ने ठहराया है, धर्म से जगत का न्याय करेगा, और उसे मरे हुओं में से जिलाकर सब मनुष्यों को प्रमाण देगा।" रोमियों की पुस्तक उस बिंदु पर बल जोड़ती है जैसा कि यह घोषणा करता है, "जिस दिन,

मेरे सुसमाचार के अनुसार, परमेश्वर मसीह यीशु के द्वारा मनुष्यों के रहस्यों का न्याय करेगा"। और इब्रानियों नाम की पुस्तक इसका सार प्रस्तुत करती है। "क्योंकि हम उसे जानते हैं जिसने कहा, 'प्रतिशोध मेरा है, मैं चुकाऊंगा।' और फिर, 'यहोवा अपने लोगों का न्याय करेगा।' जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ना एक भयानक बात है।" यद्यपि यीशु नहीं चाहता कि उसके चेले अन्य लोगों का न्याय करें, वह उनसे आध्यात्मिक सत्यों को समझने और भले और बुरे के बीच निर्णय लेने की अपेक्षा करता है। तीन शब्द: जज, विवेचना और निर्णय बहुत समान हैं। वास्तव में पूरे पवित्रशास्त्र में विवेक और निर्णय के स्थान पर न्यायाधीश शब्द का प्रयोग कई बार किया जाता है और संदर्भ में इसके उपयोग से ही इसका सही अर्थ निकाला जा सकता है। इस बिंदु का एक उदाहरण लूका 7:41-43 के सुसमाचार से आता है जब यीशु शमौन नामक एक व्यक्ति को एक दृष्टान्त बताता है। "एक साहूकार के दो कर्जदार थे: एक पर पाँच सौ दीनार का और दूसरे का पचास का था। जब वे चुकाने में असमर्थ थे, तो उसने दया से उन दोनों को क्षमा कर दिया। इसलिए उनमें से कौन उससे अधिक प्यार करेगा? शमौन ने उत्तर दिया और कहा, 'मुझे लगता है कि जिसे उस ने और अधिक क्षमा किया।' और उस ने उस से कहा, 'तू ने ठीक न्याय किया है।'" इस मामले में शमौन ने सीधे किसी अन्य व्यक्ति का न्याय नहीं किया, लेकिन एक आध्यात्मिक सत्य को सही ढंग से समझ लिया। शब्द का अर्थ है समझना या पहचानना या स्पष्ट रूप से स्पष्ट करने के लिए। यह किसी चीज या किसी व्यक्ति के बारे में सच्चाई की खोज है जिसमें व्यक्तिगत राय बनाई जा सकती है। एक बार सच्चाई जानने के बाद, कोई व्यक्ति मामले के बारे में कार्रवाई कर सकता है। हालांकि, कार्रवाई होना जरूरी नहीं है दूसरे का न्याय, जिसके लिए एक फरमान जारी करने या उन पर एक वाक्य पारित करने की आवश्यकता है। यीशु बाद में अपने शिष्यों को दिए गए एक बयान में अवधारणा को सारांशित करता है। "देखो, मैं तुम्हें भेड़ियों के बीच भेड़ियों के रूप में भेजता हूं; इसलिए साँपों के समान चतुर बनो (समझदार) छ), और कबूतर के रूप में निर्दोष (निर्णय पारित किए बिना)"। पवित्रशास्त्र पढ़ना: विवेक विकसित करना (मत्ती 7:6) समूह चर्चा: अच्छे और बुरे के बीच अंतर करने के लिए आप किन मानदंडों का उपयोग करते हैं? आज्ञा: कुत्तों को पवित्र वस्तु मत दो। अपने मोती सूअर के आगे मत फेंको। सबक: पूरे पवित्रशास्त्र में शिष्यों को समझदार होने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। वास्तव में, पवित्र आत्मा के उपहारों में से एक आत्माओं की समझ है, जो कि यह निर्धारित करने में चर्च की सहायता करना है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक के अनुसार अच्छाई और बुराई का पता लगाने के लिए इंद्रियों के प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। प्रशिक्षण और अभ्यास से समझ में परिपक्वता आती है। मुकदमों में, निर्णय देने से पहले दो या दो से अधिक गवाहों की आवश्यकता होती थी। अच्छाई और बुराई के बीच सटीक रूप से अंतर करने के लिए, एक राय बनने से पहले तीन कारकों पर विचार करने की आवश्यकता होती है। तीनों की सहमति होनी चाहिए। वे हैं: व्यक्ति के कार्य। व्यक्ति के शब्द।परमेश्वर का वचन। जैसा कि कहा जाता है, "आप किसी पुस्तक को उसके आवरण से नहीं आंक सकते" और न ही आप केवल बाहरी रूप से अच्छे और बुरे को पहचान सकते हैं। किसी व्यक्ति के कार्य या स्थिति की बाहरी उपस्थिति समझदारी में महत्वपूर्ण है लेकिन अनन्य परीक्षा नहीं हो सकती है। उदाहरण के लिए, यदि हमने किसी को किसी और पर बंदूक तानते हुए देखा है, तो हमारे पास यह जानने के लिए पर्याप्त जानकारी नहीं है कि यह अच्छा है या बुरा; हमें और जानकारी चाहिए। नीकुदेमुस ने एक बार इस्राएल के शासकों को एक सटीक समझ बनाने के बारे में याद दिलाया जब उसने कहा, "हमारी व्यवस्था किसी व्यक्ति का न्याय नहीं करती है, जब तक कि वह पहले उसकी बात नहीं सुनता और जानता है कि वह क्या कर रहा है, करता है"। यीशु ने यह भी कहा, "जैसा मैं सुनता हूं, वैसा ही न्याय करता हूं"। शब्द इस बात का एक महत्वपूर्ण संकेतक हैं कि दिल में क्या है: मकसद के पीछे की भावना। यीशु ने फरीसियों से बात करते समय इस बात की ओर संकेत किया। "क्योंकि मुंह से वही निकलता है जो मन

में भरता है। अच्छा मनुष्य अपने भले भण्डार में से अच्छाई निकालता है; और दुष्ट अपने बुरे भण्डार में से बुराई को निकालता है।" मकसद भगवान के लिए मायने रखता है। पहले अपने पहाड़ी उपदेश में, यीशु ने अच्छे काम करने वाले पुरुषों के तीन दृष्टांतों का इस्तेमाल किया: भिक्षा, प्रार्थना और उपवास। जिन लोगों ने ये अच्छे कर्म किए, उन्हें पुरस्कार मिला। जिन लोगों ने उन्हें निजी तौर पर किया, उन्हें भगवान से उनका इनाम मिला। जिन लोगों ने उन्हें सार्वजनिक रूप से देखने के लिए किया, उन्हें पुरुषों से प्रशंसा मिली, लेकिन यीशु ने उन्हें पाखंडी के रूप में लेबल किया। वह उनके इरादों को जानता था। नीतिवचन की पुस्तक के अनुसार, "हर एक मनुष्य की चाल उसकी अपनी दृष्टि में ठीक होती है, परन्तु यहोवा मनों को तौलता है।" परमेश्वर का वचन, जैसा कि पवित्रशास्त्र या पवित्र आत्मा के माध्यम से प्रकट होता है, अच्छे और बुरे को समझने का अंतिम कारक है। क्या कार्य और शब्द या दिखावे और उद्देश्य परमेश्वर के वचन के अनुरूप हैं? इब्रानियों की पुस्तक कहती है, "क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित और सक्रिय और किसी भी दोधारी तलवार से भी अधिक चोखा है, और प्राण और आत्मा के जोड़, और गूदे, दोनों के भेद तक भेदता है, और विचारों का न्याय करने में सक्षम है और दिल के इरादे" जो लोग विवेक से पवित्रशास्त्र का उपयोग करते हैं, उनके लिए इसे सही ढंग से करना महत्वपूर्ण है और उनके बारे में केवल सरसरी तौर पर ज्ञान की आवश्यकता नहीं है। प्रेरित पौलुस ने पवित्रशास्त्र के अपने अध्ययन में तीमुथियुस को प्रोत्साहित किया। "स्वयं को परमेश्वर के स्वीकृत कर्मकार के रूप में प्रस्तुत करने के लिए मेहनती बनें, जिसे शर्मिंदा होने की आवश्यकता नहीं है, सत्य के वचन को सही ढंग से संभालना"। विवेक पर अपनी शिक्षा के पहले भाग में यीशु अपने शिष्यों को आज्ञाओं की एक जोड़ी जारी करता है जिसके लिए अच्छे और बुरे की समझ की आवश्यकता होती है और फिर उचित कार्रवाई करने की आवश्यकता होती है। "पवित्र वस्तु कुत्तों को न देना, और अपने मोतियों को सूअरों के आगे मत फेंकना, ऐसा न हो कि वे उन्हें अपने पांवों तले रौंदें, और मुड़कर तुझे टुकड़े-टुकड़े कर दें।" ये आज्ञाएँ शिष्य की पवित्रशास्त्र को समझने और उन्हें सटीक रूप से लागू करने की क्षमता का परीक्षण करती हैं। शाब्दिक अर्थ में, कोई बच्चा या पागल व्यक्ति के अलावा कोई भी ऐसा कुछ करने के बारे में सोच भी नहीं सकता जैसे यीशु संकेत दे रहा है। सामान्य ज्ञान यह बताता है कि जानवरों को यह नहीं पता कि पवित्र या मूल्यवान क्या है, इसलिए उन्हें पहले स्थान पर पवित्र चीजें या मोती क्यों दें। उन्हें अपना खाना देना बेहतर है। हालाँकि, आदेशों को सुनने पर अधिकांश लोग यह मानते हैं कि शाब्दिक व्याख्या की तुलना में उनके लिए और भी कुछ होना चाहिए। वे समझते हैं कि यीशु इन आज्ञाओं का प्रयोग आलंकारिक रूप से चेलों को एक गहरी आध्यात्मिक सच्चाई बताने के लिए कर रहे हैं। लेकिन इस सहज ज्ञान से अधिक यह जानने के लिए कि यीशु किस बारे में बात कर रहे हैं और फिर इसे सटीक रूप से लागू करने के लिए। प्राकृतिक दुनिया में बच्चे अपनी पांचों इंद्रियों का तुरंत उपयोग करना शुरू कर देते हैं, लेकिन उन्हें पूरी तरह विकसित होने में कई साल लग जाते हैं। इस प्राकृतिक परिपक्वता प्रक्रिया के भाग के लिए इंद्रियों को संप्रेषित करने के लिए शब्दों को सीखने की आवश्यकता होती है। और बच्चों को परिपक्व निर्णय लेने के लिए अवधारणाओं और विचारों को जोड़ना भी सीखना चाहिए। अधिकांश समाजों में, बच्चों को यौवन तक पहुँचने तक उनके निर्णयों के लिए जवाबदेह नहीं ठहराया जाता है। उदाहरण के लिए, एक तीन साल का बच्चा अपनी माँ के गहने सुअर को खिलाने का प्रयास कर सकता है, लेकिन बारह साल का बच्चा इस पर विचार भी नहीं करेगा। यही सिद्धांत शिष्यों पर भी लागू होता है। एक बार जब कोई व्यक्ति परमेश्वर के राज्य में फिर से जन्म लेता है तो वह अपनी आध्यात्मिक इंद्रियों को विकसित करना शुरू कर देता है, उन्हें संप्रेषित करने के लिए शब्द सीखता है और परमेश्वर के विचारों और अवधारणाओं को विकसित करने के लिए पवित्रशास्त्र का उपयोग करता है। यह समझने के लिए कि यीशु आध्यात्मिक रूप से इन दो आदेशों को जारी करने के बारे में क्या बात कर रहा है। हम कुछ सामान्य अवलोकनों के साथ शुरू करेंगे। आज्ञाएँ अधिक विशेष रूप से

एक अपरिपक्व शिष्य को निर्देशित की जाती हैं, क्योंकि एक परिपक्व व्यक्ति पहली बार में ऐसा कुछ भी करने पर विचार नहीं करेगा। परिपक्व व्यक्ति ने अपनी इंद्रियों को अच्छे और बुरे की पहचान करने के लिए प्रशिक्षित किया है। देने या फेंकने की क्रिया जानवरों को कुछ खिलाने के प्रयास को इंगित करती है। कुत्ते और सूअर जानवर हैं। उनका स्वभाव वैसा नहीं होता जैसा कि भोजन करने वाला होता है: इस मामले में एक शिष्य। इसलिए वे यीशु मसीह में संगी विश्वासी नहीं हो सकते। शब्द "पवित्र" परमेश्वर से संबंधित या समर्पित किसी चीज़ को इंगित करता है। शब्द "तुम्हारे मोती" कुछ मूल्यवान इंगित करता है जो भोजन करने वाले व्यक्ति के पास है। पहला आदेश कुत्तों को कुछ पवित्र देने से संबंधित है। नीतिवचन की पुस्तक में कुत्तों का उल्लेख किया गया है, "जैसे कुत्ते अपनी उल्टी पर लौट आते हैं, वह मूर्ख है जो अपनी मूर्खता को दोहराता है"। इस शास्त्र के माध्यम से हमें पता चलता है कि कुत्ते की तुलना मूर्ख से की जाती है। और पवित्रशास्त्र के अनुसार मूर्ख मूर्ख या मूर्ख व्यक्ति से बढ़कर है; वह वह है जो भगवान में विश्वास नहीं करता है। भजन संहिता 14:1 कहता है, "मूर्ख ने अपने मन में कहा है, कि कोई परमेश्वर नहीं।" नीतिवचन में, कुत्ता और मूर्ख दोनों अपनी उल्टी पर लौट आते हैं, जिसमें कुछ ऐसा होता है जिसे उन्होंने खाया या खाया और अस्वीकार कर दिया। उसकी शिक्षा, यीशु ने कहा कि जानवर पैरों के नीचे रौंदेंगे या जो शिष्य उन्हें देता है उसका तिरस्कार करेगा और फिर शिष्य को नष्ट करने के लिए खुद को चालू कर देगा। इसका एक संदर्भ नीतिवचन की पुस्तक में पाया जाता है, "जो ठट्ठा करने वाले को सुधारता है, उसका अपमान होता है। अपने लिए, और जो दुष्ट को डांटता है, उसकी निन्दा की जाती है। ठट्ठा करनेवाले को न ताड़ना, ऐसा न हो कि वह तुझ से बैर करे, बुद्धिमान को ताड़ना दे, और वह तुझ से प्रेम रखे। ठट्ठा करनेवाला और मूर्ख एक ही हैं। कुत्तों के बारे में बात यह है कि "भगवान से संबंधित कुछ भी न दें, जिसने पहले ही भगवान को अस्वीकार कर दिया है।" (अर्थात पवित्र भोज, आत्मिक उपहार, स्वयं, आदि) दूसरी आज्ञा में सूअर के सामने मोती डालना शामिल है। पवित्रशास्त्र से हम सीखते हैं कि मोती ज्ञान या कीमती सत्य से जुड़े हैं। अय्यूब 28:18 की पुस्तक कहती है, "और अधिग्रहण ज्ञान मोतियों से भी बढ़कर है।" नीतिवचन 11:22 की पुस्तक में सूअर का ज़िक्र किया गया है, “जैसे सूअर के थूथन में सोने का छल्ला होता है, वैसे ही सुन्दर स्त्री विवेकहीन होती है।” एक महिला जिसके पास विवेक की कमी है, वह है जिसके पास अभाव है: स्वाद, धारणा, कारण, बुद्धि, सलाह, व्यवहार, निर्णय, या समझ। वह लोगों को पाप करने के लिए लुभाती है। उसके चरित्र का यह संदर्भ नीतिवचन 9:13-18 की पुस्तक में पाया जाता है। "मूर्खता की स्त्री हठी है, वह भोली है, और कुछ भी नहीं जानती। वह अपके घर के द्वार पर नगर के ऊंचे स्थानोंके पास एक आसन पर बैठी है, और मार्ग बनानेवालोंको पुकारती है। सीधे: 'जो कोई भोला है, वह यहाँ की ओर मुड़े,' और जिसे समझ की कमी है, वह कहती है, 'चोरी का पानी मीठा है, और गुप्त में खाई गई रोटी सुखद है।' लेकिन वह नहीं जानता कि मरे हुए हैं, कि उसके मेहमान अधोलोक में हैं।” सूअर के बारे में बात यह है कि "उसे ज्ञान मत दो जो इसे समझ या समझ नहीं सकता।" (याद रखें, प्रभु का भय [श्रद्धा] ज्ञान की शुरुआत है।) सारांश: कई ईमानदार ईसाई अपने आस-पास के सभी लोगों को ईश्वरीय चीजें देना चाहते हैं। हालांकि यीशु अपने शिष्यों को इन चीजों को देने में परिपक्व और समझदार होने की आज्ञा देते हैं। अन्य। उनमें सुसमाचार, संवाद, ज्ञान, निर्देश और आध्यात्मिक उपहार जैसी चीजें शामिल हैं। उन्होंने माना कि कुछ लोग न केवल उन्हें अस्वीकार करेंगे जो शिष्य उन्हें देने की कोशिश कर रहा है, बल्कि वास्तविक रूप से इसका तिरस्कार करेंगे और शिष्य को भी चालू कर देंगे। यीशु अपने शिष्यों के भीतर रहने के लिए सीमाएं निर्धारित करता है क्योंकि वह प्यार करता है और उनकी रक्षा करना चाहता है। इसलिए हम में से प्रत्येक को उसकी चेतावनी पर ध्यान देना चाहिए और उसकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए। आवेदन: मरकुस 7:24-30 पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। संक्षेप में कारणों की व्याख्या करें आपके उत्तर। 1. क्या सिरोफोनीशियन महिला एक सूअर थी? नहीं, उसने

मूल्य पहचाना और उसे यीशु से प्राप्त करने के लिए चला गया। 2. क्या सिरोफोनीशियन महिला एक कुत्ता थी? हालाँकि यीशु ने शुरू में महिला को कुत्तों से जोड़ा था, उसने साबित किया उसके लिए कि वह एक आस्तिक थी। ए। उसने भगवान को पहचाना और सम्मानित किया। बी। उसने भगवान की भलाई और दया का आह्वान किया। सी। उसने परमेश्वर के बच्चों को पहचाना और उनका सम्मान किया। डी। उसने अपना स्थान पहचाना, ईश्वर और उसकी पसंद का सम्मान करते हुए इसे विनम्रता से स्वीकार किया। उसने यीशु को आश्वासन दिया कि वह उसके हाथों से कुछ भी स्वीकार करेगी और उसे चालू नहीं करेगी। 3. यीशु ने अपना न्याय कैसे किया? जो उसने सुना है उसके द्वारा।" मैं अपनी पहल पर कुछ नहीं कर सकता। जैसा कि मैं सुनता हूं, मैं न्याय करता हूं; और मेरा निर्णय न्यायपूर्ण है, क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं चाहता, परन्तु उस की इच्छा जिसने मुझे भेजा है। (यूहन्ना 5: 30) क्योंकि मुंह से वही निकलता है, जो मन में भरता है: "भला मनुष्य अपने भले भण्डार में से अच्छी बातें निकालता है; और दुष्ट अपने बुरे भण्डार में से बुराई को निकालता है। "और मैं तुम से कहता हूं, कि हर एक असावधान वचन जो मनुष्य बोलेंगे, वे न्याय के दिन उसका हिसाब देंगे। क्योंकि तेरे वचनों से तू धर्मी ठहरेगा, और तेरे वचनों से तू दोषी ठहराया जाएगा।" (मत्ती 12:34-37) “मूर्ख भी जब चुप रहता है, तो वह बुद्धिमान समझा जाता है, और जब वह अपने होंठ बंद करता है, तो वह समझदार समझा जाता है।” (नीतिवचन 17:28)

पाठ # 16

हमेशा के लिए कैसे जीते हैं आइसब्रेकर: क्या आप कभी किसी नई मंजिल को पाने की कोशिश में खो गए हैं? यदि हां, तो अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए खो जाने के बाद आपके द्वारा उठाए गए कदमों का वर्णन करें। परिचय: पिछले पाठ में यीशु ने अपने शिष्यों को आध्यात्मिक समझ के बारे में पढ़ाना शुरू किया। वह चाहता है कि वे आध्यात्मिक सच्चाइयों की खोज करें और उन्हें लागू करें। वह उन्हें आध्यात्मिक रूप से यह समझने के लिए दबाव डाल रहा है कि हमेशा के लिए कैसे जीना है। हमेशा के लिए जीवन जीने या अनन्त जीवन में यह शामिल नहीं है कि कैसे एक व्यक्ति "बचाया" जाता है और स्वर्ग जाता है। यह वह तरीका है जिससे एक व्यक्ति हमेशा के लिए जीवन जीता है। यह है कि भगवान जीवन को कैसे जीते हुए देखता है। इसकी हिब्रू मानसिकता यह है कि जब तक मनुष्य के पास श्वास है तब तक उसके पास जीवन है। और जब तक उसके पास सांस है, उसे ऐसा जीवन जीना चाहिए जो परमेश्वर के लिए सम्मानजनक हो, क्योंकि परमेश्वर उसके जीवन का निर्माता और पालनकर्ता है। यह अवधारणा कि मनुष्य पृथ्वी पर रहते हुए एक तरह से रहता है और दूसरे तरीके से जब वह "स्वर्ग में जाता है" मौजूद नहीं है। शिष्यों को यह सिखाने के बाद कि अनन्त जीवन जीना कैसा है (अपने भाई से क्रोधित न होना, विश्वासयोग्य होना, अपनी हाँ को हाँ होने देना, प्रार्थना करना, क्षमा करना आदि) यीशु अपने मुख्य बिंदु पर लौट आते हैं। "क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जब तक तुम्हारा धर्म शास्त्रियों और फरीसियों के धर्म से बढ़कर न हो, तब तक तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने न पाओगे। रैपिड-फायर उत्तराधिकार में यीशु ने पाँच आज्ञाएँ जारी कीं जो उसके श्रोताओं को स्वर्ग के राज्य में प्रवेश पाने के सुराग के साथ छोड़ देती हैं। पवित्रशास्त्र पढ़ना: हमेशा के लिए कैसे जीना है (मत्ती 7:7-14) आज्ञाएँ: माँगो, और यह तुम्हें दिया जाएगा। खोजो, और तुम पाओगे। खटखटाओ, और यह तुम्हारे लिए खोला जाएगा। हालाँकि आप लोगों को चाहते हैं तुम्हारा इलाज करने के लिए, इसलिए उनका इलाज करो।सँकरे द्वार से प्रवेश करो। पाठ: पहली बार मत्ती 7:7-14 को पढ़ने पर, ऐसा प्रतीत होता है कि यीशु तीन अलग-अलग विषयों के बारे में बात कर रहा है: प्रार्थना, सुनहरा नियम, और जीवन की ओर ले जाने वाले संकीर्ण द्वार में प्रवेश। हालाँकि, प्रतिबिंब पर, एक बड़ी तस्वीर सामने आती है। यह इस बात का सारांश है कि लोगों को परमेश्वर के दृष्टिकोण से जीवन कैसे जीना चाहिए। हमेशा के लिए कैसे जीना है इसका एक प्रारंभिक बिंदु, एक मार्ग और एक गंतव्य है। कभी-कभी एक प्राकृतिक उदाहरण को प्रतिस्थापित करके, एक आध्यात्मिक व्यक्ति को अधिक आसानी से समझा जा सकता है। तो हम निम्नलिखित दृष्टांत का उपयोग करेंगे। जब लोग किसी के घर जाना चाहते हैं, जहां वे पहले कभी नहीं गए हैं, तो वे पहले दिशा-निर्देश मांगते हैं। दूसरे, वे निर्देशों का पालन करते हैं। कुछ लोग खो जाने या दिशाओं के बारे में भ्रमित होने की स्थिति में नक्शा साथ ले जाते हैं। दूसरे अपने सेल फोन लेते हैं! और अंत में व्यक्ति के घर पहुंचने पर, वे प्रवेश पाने के लिए दस्तक देते हैं। यीशु ने कहा कि हमेशा के लिए जीने की दिशा में पहला कदम निर्देश मांगना है। फिर वह कहता है कि पूछने वाला ईश्वर पिता है। यीशु ने अपने श्रोताओं को आश्वासन दिया कि जो कोई परमेश्वर से मांगेगा वह प्राप्त करेगा, क्योंकि परमेश्वर भला है। "मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा।" याकूब 1:5 यह भी कहता है, "परन्तु यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो सब मनुष्यों को बिना उलाहना दिए उदारता से देता है, और वह उसे दी जाएगी।" यह भी निहित है लेकिन यह नहीं कहा गया है कि भगवान के अलावा किसी को हमेशा के लिए जीने के निर्देश के लिए कहा जा सकता है, क्योंकि दो तरीके हैं, दो द्वार और दो गंतव्यों की तुलना की जा रही है। ईश्वर से निर्देश माँगना दर्शाता है कि एक व्यक्ति का हृदय सही है, जो विश्वास से भरा है और ईश्वर के प्रावधानों पर निर्भर है। दूसरा कदम गंतव्य के लिए निर्देशों या "रास्ते" का पालन करना है। यीशु गंतव्य के लिए दिशाओं या "रास्ते" को समझने में काफी आसान बनाता है: इसलिए, हालांकि, आप चाहते हैं कि लोग आपके

साथ व्यवहार करें, इसलिए उनके साथ व्यवहार करें, क्योंकि यह कानून और भविष्यद्वक्ता है। दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करने से यह सिद्ध होता है कि व्यक्ति की सोच सही है, वह दूसरों को अपने समान मानता है और अभिमान में बाधक नहीं होता। यह संकरा रास्ता है! यीशु ने अपने श्रोताओं को आश्वासन दिया कि हर कोई जो इन निर्देशों का पालन करना चाहता है या संकरा रास्ता खोजना चाहता है, वह ऐसा करेगा। "खोजो और आपको मिल जाएगा।" अंतिम चरण सही द्वार या दरवाजे से प्रवेश करना है। यीशु इंगित करता है कि दो द्वार या द्वार हैं जिनसे होकर मनुष्य गुजर सकता है। एक अनन्त जीवन की ओर ले जाता है, दूसरा विनाश की ओर। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि अगर वे हमेशा के लिए जीना चाहते हैं तो उन्हें संकरे द्वार में प्रवेश करना चाहिए, अन्यथा वे नष्ट हो जाएंगे। संकीर्ण द्वार केवल एक आदमी की चौड़ाई है और एक समय में एक व्यक्ति इसमें प्रवेश कर सकता है। वह द्वार यीशु है! यूहन्ना 10:9 में यीशु ने घोषणा की, "द्वार मैं हूं; यदि कोई मेरे द्वारा प्रवेश करे, तो उद्धार पाएगा, और भीतर और बाहर जाकर चारा पाएगा।" जो कोई भी यीशु का द्वार खटखटाएगा, वह उसे खोल देगा। सभी देवत्व, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, लोगों को हमेशा के लिए जीने में मदद करने में शामिल हैं। पिता मार्ग देता है, पवित्र आत्मा मार्ग की अगुवाई करता है, और पुत्र द्वार खोलता है . हमेशा के लिए जीने के निर्देश सरल हैं: 1) परमेश्वर पर निर्भर हैं, 2) पवित्र आत्मा का अनुसरण करते हैं और 3) यीशु के माध्यम से जाते हैं। इसे आसान बनाने के लिए परमेश्वर लोगों के खो जाने की स्थिति में बाइबल नामक एक रोड मैप प्रदान करता है। वह अन्य स्टेशनों को भी रखता है जो लोग रास्ते से हट जाते हैं उनके कदमों को पुनर्निर्देशित करने के लिए लोग। उन्हें प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, पादरी और शिक्षक कहा जाता है। और यदि वे चीजें पर्याप्त नहीं थीं, तो परमेश्वर ने पवित्र आत्मा को अपने लोगों के अंदर रहने के लिए भेजा, ताकि वे उसके पास संचार की सीधी रेखा है। अन्य निष्कर्ष हैं जो यीशु के हमेशा के लिए जीने के पाठ से निकाले जा सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति पिता से निर्देश नहीं मांगता है कि कैसे जीना है, तो वह केवल वही खोजेगा जो दूसरे मानते हैं जीने का तरीका है। बेशक वे लोग हमेशा के लिए नहीं रहते थे, नहीं इस दुनिया को खाते हैं और निश्चित रूप से उनके पास एक शाश्वत दृष्टिकोण नहीं है, तो उन्हें रास्ता कैसे पता चलेगा? उनका रास्ता चौड़ा और खोजने में आसान है। लोग अनुयायी हैं। भेड़ों की तरह, वे सुरक्षा और चरागाह के लिए एक चरवाहे का अनुसरण करेंगे। परन्तु वे एक बकरे के पीछे-पीछे वध भी करेंगे। यीशु ने कहा कि वह अच्छा चरवाहा था और उसने पवित्र आत्मा को अपने झुंड की अगुवाई और मार्गदर्शन करने के लिए भेजा। उसने उन्हें अपनी आज्ञाएँ और मार्ग में उनकी सहायता करने के लिए धर्मपरायण लोग भी दिए। दूसरी ओर बकरी (शैतान) चाहती है कि लोग दुनिया की राह पर चले और उन्हें धोखा देने के लिए झूठे भविष्यवक्ताओं और झूठे शिक्षकों का इस्तेमाल करें। बिना अंत के जीवन दो द्वारों में से एक में प्रवेश करके प्राप्त किया जाता है, एक संकरा या चौड़ा। यीशु ने कहा कि वह भेड़ों का संकरा द्वार (द्वार) था। और यूहन्ना 6:37 में यीशु ने कहा, "जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, और जो मेरे पास आएगा उसे मैं निश्चय न निकालूंगा।" दूसरी ओर, चौड़ा द्वार विनाश की ओर ले जाता है। यह अच्छी तरह से विज्ञापित है, खोजने में आसान है और कई लोग एक समय में इसके माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं। दो द्वारों का एक सादृश्य उस दुनिया से खींचा जा सकता है जिसमें हम वर्तमान में रहते हैं। द्वार जो विनाश की ओर ले जाता है उसकी तुलना सिनेमाघरों, मनोरंजन पार्कों और खेल आयोजनों के प्रवेश द्वारों से की जा सकती है। भीड़ बहुत बड़ी है, लोग अंदर जाने के लिए दबाव डाल रहे हैं और कई एक समय में प्रवेश कर सकते हैं। दूसरी ओर वह द्वार जो शाश्वत की ओर जाता है जीवन की तुलना घरों के प्रवेश द्वार से की जा सकती है। भीड़ विरल है, कोई भी लाइन में खड़ा नहीं होता है और आमतौर पर एक समय में एक बार अंदर जाता है। अनन्त जीवन की ओर जाने वाला द्वार विनाश की ओर जाने वाले द्वार की तुलना में छोटा है और वहाँ हैं कुछ जो इसे ढूंढते हैं। हालांकि, बहुत से लोग लंबे समय तक एक संकीर्ण द्वार के माध्यम से प्रवेश कर सकते हैं। और

द्वार व्यस्त और आसान हो सकता है जब जो लोग एक बार प्रवेश कर चुके हैं वे दूसरों को द्वार के लिए रास्ता दिखाते हैं। समूह चर्चा: एक व्यक्ति क्या सुराग छोड़ता है जब वे खो गये? जो लोग खो गए हैं या गलत रास्ते पर जा रहे हैं, उनके प्रति आपकी क्या प्रतिक्रिया है? आपको क्या लगता है कि अधिक लोगों को बचाने के लिए परमेश्वर को क्या करने की आवश्यकता है? परमेश्वर ऐसा क्या कर सकता है जो आपको खोए हुए लोगों को अनंत काल तक जीने का तरीका दिखाने में अधिक प्रभावी बना दे? सबक का बिंदु: यदि आप एक नए गंतव्य पर जाना चाहते हैं तो उन लोगों के निर्देशों का पालन करें जो पहले वहां रहे हैं। आवेदन: उस चीज़ के लिए प्रार्थना करें जिसकी आपको ईश्वर से आवश्यकता है जो आपको खोए हुए लोगों को हमेशा के लिए जीने का तरीका दिखाने में अधिक प्रभावी बनाएगी।

पाठ # 17

फल निरीक्षण आइसब्रेकर: आपका पसंदीदा फल कौन सा है और आप इसकी गुणवत्ता की जांच कैसे करते हैं? परिचय: जैसे ही यीशु पर्वत पर उपदेश को समाप्त करना शुरू करते हैं, वे अपने शिष्यों को अच्छे और बुरे के बीच अंतर जानने के लिए समझदार होने की सलाह देते रहते हैं। वह उन्हें झूठे नबियों से सावधान रहने की चेतावनी देता है। फिर वह बताता है कि उन्हें और उनकी त्रुटि को कैसे पहचाना जाए। पैगंबर की सरल परिभाषा एक ऐसा व्यक्ति है जो लोगों को भगवान की इच्छा की घोषणा करता है। वे आमतौर पर अलौकिक उपहारों से संपन्न होते हैं, जो लोगों के लिए संकेत और चमत्कार के रूप में काम करते हैं कि उनकी गवाही प्रामाणिक है। सामान्य उपहारों में से एक भविष्य की किसी घटना की भविष्यवाणी करने की असाधारण क्षमता है; इसलिए कई बार उन्हें द्रष्टा कहा जाता है। चूंकि उनकी प्राथमिक जिम्मेदारी ईश्वर की इच्छा को प्रकट करना है, उन्हें शिक्षकों के साथ वर्गीकृत किया जा सकता है। कुछ नबी और शिक्षक सच्चे होते हैं और कुछ झूठे। एक सच्चा परमेश्वर चाहता है कि लोग उसके भविष्यवक्ताओं और उसके शिक्षकों पर ध्यान दें क्योंकि वे लोगों को धार्मिकता के मार्ग पर चलने में सहायता करने के लिए उपहार के रूप में भेजे जाते हैं। हालाँकि, इस्राएलियों से कहा गया था कि वे भविष्यद्वक्ताओं की जाँच करें कि क्या वे झूठे हैं। ये परीक्षण व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के तेरहवें और अठारहवें अध्यायों में पाए जा सकते हैं। दो परीक्षण हैं और दोनों परीक्षणों को पूरा करने में विफलता, जिसके परिणामस्वरूप नबी की मृत्यु हो गई। पहली परीक्षा में प्रभु के नाम से बोलना शामिल था। भले ही वह चिन्ह या चमत्कार हुआ, जैसा कि भविष्यवक्ता ने घोषित किया था, लेकिन उसने लोगों को अन्य देवताओं की सेवा करने के लिए कहा, वह झूठा था। दूसरे परीक्षण में एक भविष्यवक्ता शामिल था जो अपने मन की बात कह रहा था। यदि कोई भविष्यद्वक्ता यहोवा के नाम से लोगों के पास आया, परन्तु उसका चिन्ह या चमत्कार उसके कहने के अनुसार नहीं हुआ, तो वह झूठा था। पवित्रशास्त्र पढ़ना:फल निरीक्षण (मत्ती 7:15-29) (लूका 6:43-49) आज्ञा: झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहें। सबक: यीशु के मरे हुओं में से पुनरुत्थान के बाद पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा देने के साथ, चर्च को भविष्यवाणी करने और संकेत और चमत्कार करने की शक्ति दी गई थी। हालांकि, यह झूठे भविष्यवक्ताओं और शिक्षकों को अनजान में रेंगने और परमेश्वर के लोगों को भीतर से नष्ट करने का अवसर प्रदान करेगा। यीशु ने धोखे के इस समय का पूर्वाभास किया और चेलों को चेतावनी दी कि अंत के दिनों में झूठे भविष्यद्वक्ता आएंगे और बहुतों को गुमराह करेंगे। यह जानते हुए कि कुछ लोग उसके नाम से बोलने और चिन्ह और चमत्कार दोनों करने में सक्षम होंगे, यीशु ने अपने शिष्यों को भविष्यद्वक्ताओं और शिक्षकों का परीक्षण करने के लिए तीसरी विधि का उपयोग करने का निर्देश दिया: चरित्र की परीक्षा। "आप उन्हें उनके फलों से जानेंगे"। इन झूठे भविष्यवक्ताओं का पता लगाना मुश्किल है क्योंकि वे खुद को यीशु के झुंड के सदस्यों के रूप में प्रच्छन्न करते हैं लेकिन अंदर से वे हिंसक भेड़िये हैं। पिछले पाठ से हमने पाया कि कुत्ते वे हैं जिन्होंने अपने दिलों में भगवान को अस्वीकार कर दिया है और भेड़िये कुत्ते परिवार का हिस्सा हैं। प्रेरित पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया से इन लोगों के बारे में बात की। "मैं जानता हूं, कि मेरे जाने के पश्चात् जंगली भेड़िये तुम्हारे बीच में आएंगे, और भेड़-बकरियों को नहीं छोड़ेंगे; और तुम्हारे ही बीच में से ऐसे पुरूष उठेंगे, जो टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहकर चेलों को अपने पीछे खींच लेंगे।" यहूदा पद 11 की पुस्तक के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि झूठे भविष्यद्वक्ताओं और शिक्षकों में तीन बुनियादी लक्षण समान हैं। यहूदा कहता है, "क्योंकि वे कैन के मार्ग पर चले गए हैं, और वेतन के लिए वे बिलाम की त्रुटि में सिर के बल दौड़ पड़े हैं, और कोरह के विद्रोह में मारे गए।" कैन, बिलाम और कोरह में एक दूसरे के साथ कई चीजें समान हैं। उनमें से प्रत्येक परमेश्वर को गहराई से जानता था, उसे बोलते हुए सुना था, और परमेश्वर द्वारा प्रमुखता के स्थान पर रखा गया था। वे प्रत्येक ने परमेश्वर की पूजा की और उसे प्रसाद दिया। हालांकि,

इनमें से कोई भी नहीं वे परमेश्वर से संतुष्ट थे। प्रत्येक लोभ से प्रेरित था और चीजों को अपने तरीके से करने के द्वारा परमेश्वर के अधिकार को खत्म करना चाहता था। और उनमें से प्रत्येक परमेश्वर के लोगों की मृत्यु के लिए जिम्मेदार था। कैन एक पुरुष और महिला का जेठा पुत्र था। वह परमेश्वर की आज्ञा मानने में आदम और हव्वा की विफलता, उनके परिणामों और भूमि पर श्राप की कहानी जानता था। और वह अपने माता-पिता के प्रति परमेश्वर की क्षमा और दया के बारे में जानता था जब परमेश्वर ने उनकी नग्नता के लिए एक आवरण के रूप में खाल प्रदान की थी। फिर भी कैन ने प्राप्त करने की कोशिश की अपने हाथों के कामों से और उसके माथे के पसीने से परमेश्वर का अनुग्रह जब वह उस भूमि की उपज में से एक भेंट लाया जिसे परमेश्वर ने शाप दिया था। परमेश्वर ने कैन की भेंट को अस्वीकार कर दिया, लेकिन अपने छोटे भाई हाबिल को स्वीकार कर लिया, जो उसके भेड़-बकरियों में से पहलौठे को लाया था। हाबिल सम्मानित भगवान। उसके मन में परमेश्वर के अधिकार का आदर था और वह उसके काम करने के तरीकों पर भरोसा करता था। उसने स्वीकार किया कि परमेश्वर का अनुग्रह मनुष्य के प्रयास से नहीं, बल्कि परमेश्वर के प्रावधान के लिए उसकी कृतज्ञता के द्वारा प्राप्त किया गया था। हाबिल को अपने माथे के पसीने से उस भूमि पर काम नहीं करना पड़ा जिसे परमेश्वर ने अपनी भेंट लाने के लिए शाप दिया था। उसे केवल अपनी भेड़ों के लिए परमेश्वर का आभारी होना था। उन्होंने हाबिल को खाने, पीने और कपड़े दिए। फिर, हाबिल की ओर से बिना किसी प्रयास के, भेड़ों ने स्वाभाविक रूप से परमेश्वर को भेंट चढ़ाने और उसके धन में वृद्धि करने के लिए गुणा किया। क्योंकि कैन ने अपने भाई के पक्ष की लालसा की, इसलिए उसने उसकी हत्या कर दी। बिलाम परमेश्वर का नबी था। वह परमेश्वर की वाणी को सटीक रूप से सुनने, भविष्य की भविष्यवाणी करने, और लोगों को आशीर्वाद देने या शाप देने की शक्ति रखने में सक्षम था। मोआबियों के राजा बालाक ने इस्राएल को शाप देने के लिए बिलाम को काम पर रखा। हालांकि, भगवान ने उसे ऐसा करने से रोका। पहला, बिलाम को उसके ही गदहे ने डांटा और दूसरा, परमेश्वर ने केवल उसे इस्राएल को आशीष देने की अनुमति दी। परन्तु बिलाम ने राजा के सोने का लालच किया। इस मामले में परमेश्वर की इच्छा जानने के बावजूद, बिलाम ने राजा को एक ऐसा तरीका बताया जो इस्राएल को नष्ट कर देगा। राजा को मोआब की स्त्रियों को इस्राएलियों को बहकाने के लिये भेजना था। स्त्रियाँ पुरुषों के मन को मोआब के देवताओं की उपासना और उपासना करने के लिए फेर देती थीं, जिससे परमेश्वर अपने लोगों को उनके पापों के कारण नष्ट कर देता था। योजना काम कर गई और परमेश्वर के बहुत से लोग नष्ट हो गए। कोरह एक इस्राएली था। वह लेवी का वंशज था, जिसका गोत्र याजक के रूप में कार्य करता था। वह कहात के कबीले से संबंधित था, जिसे उच्च सम्मान में रखा जाता था क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें तम्बू में पूजा के लिए उपयोग किए जाने वाले पवित्र सामान और बर्तन धारण करने के लिए चुना था। कोरह अपने लोगों का नेता था। वह परमेश्वर को जानता था, उसने उन सभी चमत्कारों को देखा था जो परमेश्वर ने मूसा के द्वारा किए थे और कि परमेश्वर ने लोगों की अगुवाई करने के लिए मूसा को चुना था। फिर भी उसने विद्रोह किया क्योंकि उसने मूसा की शक्ति और अधिकार की लालसा की थी। उसके विद्रोह के परिणामस्वरूप उसका, उसका परिवार और इस्राएल के दो सौ पचास अन्य अगुवों और उनके परिवारों का नाश हो गया। इन पुरुषों के जीवन की संक्षिप्त समीक्षा के बाद हम देखते हैं कि उनका प्राथमिक ध्यान आत्म-प्रचार था। उनके कार्यों से पता चलता है कि वे व्यक्तिगत लाभ से प्रेरित थे न कि परमेश्वर और मनुष्य के प्रेम से। पवित्रशास्त्र में कैन, बिलाम और कोरह का उपयोग उदाहरण के रूप में किया गया है कि मनुष्य के तीन अलग-अलग पहलुओं में गलत प्रेरणा हो सकती है: शरीर, आत्मा और आत्मा। कैन के मार्ग में शरीर शामिल है। यह शरीर की इच्छाओं को पूरा कर रहा है और इसका सबूत है 1) परमेश्वर के लोगों के बीच में अपवित्र रहना। बिलाम की त्रुटि लालच से आत्मा की इच्छाओं को संतुष्ट कर रही है और 2 द्वारा प्रमाणित है) शिक्षण

जो भगवान के लोगों को गिरने का कारण बनता है। कोरह के विद्रोह में आत्मा शामिल है। इसका आधार घमण्ड है और इसमें परमेश्वर, उसके अगुवों और उसके मार्गों के विरुद्ध कुड़कुड़ाना और शिकायत करना शामिल है। यह 3 के माध्यम से प्रमाणित होता है) परमेश्वर के लोगों में विभाजन का कारण बनता है। यीशु अपने शिष्यों को स्पष्ट रूप से बताता है कि हर कोई जो यह घोषणा करता है कि यीशु ही प्रभु है, वास्तव में उसका नहीं है। वह अपने शिष्यों को चर्च में आने वाले उद्धार से संबंधित एक त्रुटि के बारे में आगाह कर रहा है। रोमियों 10:8-11 की पुस्तक में प्रेरित पौलुस के अनुसार, उद्धार का मार्ग समझाया गया है। "वचन तुम्हारे निकट है, तुम्हारे मुंह में और तुम्हारे हृदय में--अर्थात विश्वास का वह वचन जिसका हम प्रचार कर रहे हैं, कि यदि तुम अपने मुंह से यीशु को प्रभु के रूप में स्वीकार करते हो, और अपने दिल में विश्वास करते हो कि भगवान ने उसे ऊपर से उठाया है मरे हुए, तू उद्धार पाएगा; क्योंकि मनुष्य मन से विश्वास करता है, और धार्मिकता का परिणाम होता है, और मुंह से अंगीकार करता है, जिसके परिणाम में उद्धार होता है। क्योंकि पवित्रशास्त्र कहता है, 'जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह निराश नहीं होगा।'" प्रेरित पौलुस सरलता से कहता है और सही ढंग से उद्धार का मार्ग बताता है। लेकिन लोग इस सच्चाई को विकृत कर देंगे। अपने दूसरे पत्र में प्रेरित पतरस ने अपने श्रोताओं को चेतावनी दी है कि अशिक्षित और अस्थिर प्रेरित पौलुस की शिक्षाओं को विकृत कर देंगे, जैसा कि वे बाकी शास्त्रों को भी करते हैं, उनके लिए फिर वह उन्हें सावधान करता है कि वे सावधान रहें, कहीं ऐसा न हो कि वे सिद्धांतहीन लोगों की भूल में फंसकर अपनी ही दृढ़ता से गिर जाएं। फिर वह उन्हें अपने प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। विकृति कि Pe टेर यीशु मसीह के प्रभुत्व की चिंताओं के बारे में बात कर रहा है। इसमें केवल इस तथ्य को मानसिक आरोहण देना शामिल है कि यीशु ही प्रभु है। लोग बस "यीशु ही प्रभु हैं" शब्द कहेंगे और विश्वास करेंगे कि वे बचाए जाएंगे। उनके लिए यह कथन एक जादुई मंत्र या स्वर्ग का टिकट बन जाता है। जबकि इस मामले की सच्चाई यह है कि जब कोई व्यक्ति यह स्वीकार करता है कि यीशु ही प्रभु है तो वह वास्तव में कह रहा है कि वह वह सब कुछ करेगा जो उसके प्रभु ने उसे करने की आज्ञा दी है। जब कोई व्यक्ति अपने भगवान की आज्ञा के अनुसार नहीं करता है तो यह दर्शाता है कि वह एक पाखंडी है, एक बात कह रहा है और दूसरा कर रहा है। उनके व्यवहार से उनके चरित्र का पता चलता है। वह वास्तव में अपने दिल में विश्वास नहीं करता है कि यीशु ही प्रभु है या वह वही करेगा जो यीशु कहता है। जैसा कि याकूब अपनी पत्री में कहता है, "विश्वास कर्म बिना मरा हुआ है।" यीशु इसकी पुष्टि करते हैं जब वे कहते हैं, "मैं तुम्हें कभी नहीं जानता था; हे अधर्म के काम करने वालो, मुझ से दूर हो जाओ"। जो लोग अनुग्रह के सुसमाचार को विकृत करते हैं, वे यह घोषणा करते हुए करते हैं कि वे अब व्यवस्था के अधीन नहीं, परन्तु अनुग्रह के अधीन हैं। जब उनके लिए इसका मतलब यह है कि वे अपनी पसंद के किसी भी तरीके से जीने के लिए स्वतंत्र हैं, तो यह एक विकृति है। संक्षेप में वे कह रहे हैं कि खुद से बड़ा कोई अधिकार नहीं है और वे अपनी नजर में जो सही है वह कर सकते हैं। उनके जीवन का स्वामी कोई नहीं है। रोमियों के अध्याय 6, पद 14-15 के अपने पत्र में, प्रेरित पौलुस कहता है कि यीशु मसीह के अनुयायी अब व्यवस्था के अधीन नहीं, परन्तु अनुग्रह के अधीन हैं। जब पूरे पत्र के संदर्भ में पढ़ा जाता है तो यह समझा जाता है कि यीशु के शिष्य अब मूसा के कानून के पत्र का पालन करने के लिए बाध्य नहीं हैं। परन्तु परमेश्वर की कृपा से वे आत्मा की व्यवस्था का पालन करने के लिए बाध्य हैं। आत्मा के कानून के तहत दायित्व एक व्यक्ति के कहने और करने में भगवान और दूसरों के लिए प्यार से प्रेरित होना है। प्रेरित पौलुस ने गलातियों को लिखे अपने पत्र में मूसा की व्यवस्था और मसीह की आत्मा के विपरीत इस मुद्दे को और अधिक स्पष्टता प्रदान की। गलातियों 5:18 में, वह कहता है कि एक व्यक्ति जो पवित्र आत्मा के नेतृत्व में चल रहा है, व्यवस्था के अधीन नहीं है। लेकिन वह यहीं नहीं रुकता। उसके अगले कथनों से पता चलता है कि पवित्र आत्मा या किसी व्यक्ति

का अपना शरीर उसकी अगुवाई कर रहा है या नहीं। "अब शरीर के कार्य स्पष्ट हैं, जो हैं: अनैतिकता, अशुद्धता, कामुकता, मूर्तिपूजा, टोना, शत्रुता, कलह, ईर्ष्या, क्रोध का प्रकोप, विवाद, मतभेद, गुट, ईर्ष्या, पियक्कड़पन, दुराचार, और इस तरह की चीजें, जिस के विषय में मैं ने तुम को वैसे ही चेतावनी दी है, जैसे मैं ने तुम्हें चेतावनी दी है, कि जो ऐसे काम करते हैं, वे परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। परन्तु आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, सच्चाई, नम्रता, संयम है; ऐसी चीजों के विरुद्ध कोई भी कानून नहीं है"। यीशु ने दो घर बनाने वालों के अपने दृष्टांत में सुसमाचार की इस विकृति को स्पष्ट रूप से उजागर किया है। दोनों लोगों ने खुद को तूफान से बचाने के लिए घर बनाए। तूफान भगवान के क्रोध या न्याय का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि वह अकेले ही प्रकृति की शक्तियों को नियंत्रित करता है। घर उन साधनों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनके द्वारा लोगों को परमेश्वर के क्रोध या न्याय से बचाया जाएगा। एक आदमी का उद्धार रेत पर आधारित था, जो केवल यीशु के वचनों को सुनने के बराबर है। इस आदमी की मुक्ति की आशा नष्ट हो गई थी। दूसरे व्यक्ति का उद्धार चट्टान पर आधारित था, जो यीशु के वचनों को सुनने और करने दोनों के बराबर है। इस आदमी की मुक्ति की आशा पर्याप्त साबित हुई। यूहन्ना 12:47-50 के सुसमाचार में, यीशु इस सत्य को दोहराते हैं। "और यदि कोई मेरी बातें सुनकर न माने, तो मैं उसका दोष नहीं लगाता; क्योंकि मैं जगत का न्याय करने नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने आया हूं। जो मुझे झुठलाता, और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता, उसके पास एक है जो उसका न्याय करता है, वह वचन जो मैं ने कहा, वह अन्तिम दिन में उसका न्याय करेगा। क्योंकि मैं ने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा, परन्तु पिता जिस ने मुझे भेजा है, उसी ने मुझे आज्ञा दी है, कि क्या कहूं, और क्या बोलूं। मैं जानता हूं, कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है, इसलिये जो कुछ मैं कहता हूं, वैसा ही बोलता हूं जैसा पिता ने मुझ से कहा है।" आवेदन: यीशु चाहता है कि उसके शिष्य फल निरीक्षक बनें, अच्छे और बुरे की पहचान करें, और दूसरों का न्याय किए बिना अपने लिए जो अच्छा है उसे चुनें। पवित्रशास्त्र का उपयोग करके हम झूठे भविष्यवक्ताओं और शिक्षकों को पहचानना शुरू कर सकते हैं। 1. निम्नलिखित अंश पढ़ें एक समय में एक क्रम में पवित्रशास्त्र। जुदेब। 2 जॉन: 7-11 सी। 1 जॉन 2:18-23, 4:1-6, और 5:1-5 डी। 2 पीटर 2: 1-222। पहचानें पवित्रशास्त्र के प्रत्येक मार्ग में प्रकट झूठे भविष्यवक्ताओं और शिक्षकों के व्यवहार।3. कैन, बिलाम या कोरह द्वारा प्रदर्शित तीन बुनियादी चरित्र लक्षणों में से एक के तहत प्रत्येक व्यवहार की सूची बनाएं। कैन का मार्ग (मांस की इच्छा ... परमेश्वर के लोग) 1. अधर्मी व्यक्ति जो हमारे परमेश्वर के अनुग्रह को अनैतिकता में बदल देते हैं। 2. वे मांस को अशुद्ध करते हैं। 3. अपनी देखभाल करना। 4. वे सांसारिक हैं, आत्मा से रहित हैं। 5. कई लोग अनुसरण करेंगे उनकी कामुकता, और उनके कारण सत्य का मार्ग बदनाम होगा। 6. वे मांस को उसकी भ्रष्ट इच्छाओं में लिप्त करते हैं। 7. टी अरे इसे दिन में आनंद लेना एक खुशी की बात है। 8. उनकी आंखें व्यभिचार से भरी हुई हैं, और वह पाप से कभी न टलती हैं। 9. वे सही मार्ग को छोड़ देते हैं।10. वे शारीरिक इच्छाओं से लुभाते हैं। बिलाम की त्रुटि (लालच ... शिक्षा जो परमेश्वर के लोगों को गिरा देती है) 1. वे हमारे एकमात्र स्वामी और प्रभु, यीशु मसीह को अस्वीकार करते हैं। 2. वे अहंकार से बोलते हैं, फायदा पाने के लिए लोगों की चापलूसी करते हैं। 3. वे यीशु मसीह को शरीर में आने के रूप में स्वीकार नहीं करते हैं। 4. वे मसीह की शिक्षा में बने नहीं रहते। 5. वे प्रेरितों की नहीं सुनते। 6. वे इनकार करते हैं कि यीशु ही मसीह है। 7. वे यह नहीं मानते कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। 8. वे गुप्त रूप से विनाशकारी विधर्मियों का परिचय देते हैं। 9. लालच में वे झूठे शब्दों से आपका शोषण करेंगे।10. लालच में प्रशिक्षित हृदय वाले अस्थिर आत्माओं को लुभाएं।11. जब तक वे भ्रष्टाचार में रहते हैं तब तक स्वतंत्रता का वादा करें। कोरह का विद्रोह (परमेश्वर, उसके नेताओं और उसके तरीकों के खिलाफ कुड़कुड़ाना और शिकायत करना ... घमंड परमेश्वर के लोगों में विभाजन का कारण बनता है) 1. अधिकार को अस्वीकार करें। 2. दुष्ट स्वर्गदूतों की महिमा 3. ये

बड़बड़ा रहे हैं, दोष ढूंढ रहे हैं। 4. ठट्ठा करने वाले, अपनी ही अधर्मी वासनाओं का अनुसरण करते हैं। 5. जो विभाजन का कारण बनते हैं। 6. वे चर्च में नहीं रहते हैं। 7. वे परमेश्वर की आज्ञाओं को नहीं मानते। 8. तिरस्कार अधिकार। 9. साहसी। 10. स्व-इच्छाधारी।

पाठ # 18

राज्य दृष्टान्त आइसब्रेकर: आपकी पसंदीदा पारिवारिक कहानी क्या है और आपके लिए इसका क्या अर्थ है। परिचय: पहाड़ी उपदेश को समाप्त करने के बाद यीशु के जीवन में कई उल्लेखनीय घटनाएँ घटती हैं। पहाड़ से उतरने के तुरंत बाद वह एक कोढ़ी को चंगा करता है और कफरनहूम लौटकर एक रोमन सूबेदार के सेवक को चंगा करता है जो बीमार है और मरने वाला है। इसके तुरंत बाद यीशु नैन शहर जाते हैं जहाँ उनका सामना एक अंतिम संस्कार के जुलूस से होता है और एक विधवा के बेटे को मरे हुओं में से जीवित करता है। इस आश्वासन की तलाश में कि यीशु ही मसीहा है, जॉन बैपटिस्ट, जो जेल में है, अपने शिष्यों को उसका साक्षात्कार करने के लिए भेजता है। इसके बाद यीशु एक फरीसी शमौन के घर में प्रवेश करता है, जहाँ उसका एक पापी स्त्री से सामना होता है। वह अपने आँसुओं से उनके चरण धोती है और उन पर इत्र का अभिषेक करती है और फिर विवाद के बीच वह उनके पापों को क्षमा कर देती है। यीशु फिर अपने शिष्यों और उन महिलाओं के साथ एक मिशनरी यात्रा पर निकलते हैं जो उसका समर्थन करती हैं। आसपास के शहरों और गांवों में जाकर, वह प्रचार करता है और परमेश्वर के राज्य की घोषणा करता है। कफरनहूम में लौटकर यीशु फिर से भीड़ से घिरा हुआ है। वहाँ, यरूशलेम के शास्त्री उस पर शैतान के वश में होने का आरोप लगाने लगते हैं। वह दृष्टान्तों की एक श्रृंखला में उनके आरोपों का सामना करता है और घोषणा करता है कि पवित्र आत्मा के खिलाफ ईशनिंदा को छोड़कर पुरुषों के सभी पाप उन्हें क्षमा कर दिए जाएंगे। तब यीशु नाव पर चढ़ गया और परमेश्वर के राज्य के विषय में आठ दृष्टान्तों को सिखाता है। यीशु की शिक्षा पर आगे बढ़ने से पहले, दो बुनियादी अवधारणाओं को समझना चाहिए: एक दृष्टांत क्या है और परमेश्वर का राज्य क्या है। सबसे पहले, आइए देखें कि एक दृष्टांत क्या है। एक दृष्टांत एक कथा या लघु कहानी है। जब लोग एक दृष्टांत सुनते हैं तो वे आसानी से इसका शाब्दिक अर्थ समझ जाते हैं। दृष्टांत का एक मुख्य विषय है और इसमें एक या एक से अधिक सत्य, अवधारणाएँ और/या सिद्धांत शामिल हैं जो इससे संबंधित हैं। और एक दृष्टान्त का उद्देश्य या लक्ष्य दृष्टान्त के मुख्य विषय से संबंधित सत्य, अवधारणाओं और सिद्धांतों की तुलना किसी अन्य विषय से करना है जिसे समझना अधिक कठिन है। समूह चर्चा: मुख्य विषय के रूप में अपने साथ एक सरल दृष्टांत बनाएं और उसे समूह को बताएं। समूह को यह अनुमान लगाने का प्रयास करने दें कि आप दृष्टांत में किन सत्य, अवधारणाओं या सिद्धांतों को संप्रेषित करने का प्रयास कर रहे हैं। थोड़े समय के बाद समूह को उन सत्यों, अवधारणाओं या सिद्धांतों को बताएं जिन्हें आप दृष्टांत के उपयोग के माध्यम से संप्रेषित करने का प्रयास कर रहे हैं। अब, आइए हम परमेश्वर के राज्य के अर्थ पर विचार करें। परमेश्वर के राज्य का सीधा सा अर्थ है परमेश्वर का शासन। हालाँकि, परमेश्वर के राज्य और उसके आने के विचार को दृढ़ता से समझना कभी-कभी कठिन होता है। मैं इसे थोड़ा आसान बनाने की कोशिश करूंगा। एक राज्य होने के लिए, पांच तत्व मौजूद होने चाहिए: व्यक्ति (राजा) प्रक्रिया (शासन करने या शासन करने की विधि) लोग (प्रजा जो राजा के शासन को उसकी इच्छा पूरी करने के लिए प्रस्तुत करते हैं) स्थान (जिस क्षेत्र पर राजा का अधिकार बढ़ा दिया गया है) अस्तित्व की अवधि (राजा जिस समय तक शासन करता है) इसलिए यह कहा जा सकता है कि: (1) भगवान, राजा (2) उसकी आत्मा द्वारा शासन कर रहा है (3) यीशु मसीह के माध्यम से और जो लोग उसके (4) स्वर्ग में (5) हमेशा के लिए हैं। राज्यों को उपहार या युद्ध के माध्यम से बढ़ाया जाता है। आमतौर पर वे युद्ध के माध्यम से विस्तारित होते हैं, एक राज्य के लोगों को विरोधी राज्य के लोगों से युद्ध करना चाहिए। क्षेत्र का विस्तार करने के लिए विरोधी लोगों को युद्ध में जीतना आवश्यक है। विरोधी लोगों की विजय तीन तरीकों में से एक में हो सकती है: विरोधी लोगों को पक्ष बदलने या निष्ठा बदलने के लिए राजी करना। विरोधी राजा की हार या तो कब्जा और कारावास या मौत से होती है। (हालांकि इस प्रकार की विजय में कुछ लोगों की निष्ठा नहीं बदल सकती है। हालांकि उन्हें नए राजा

की सेवा करने के लिए मजबूर किया जाता है, वे विद्रोह करने के अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हैं) लोगों की मृत्यु। साद्दश्य से, यीशु मसीह को इस संसार के राज्यों को शैतान द्वारा एक उपहार के रूप में पेश किया गया था। उन्हें पाने के लिए यीशु को परमेश्वर से शैतान के प्रति अपनी निष्ठा को बदलना होगा। उसने नहीं किया और युद्ध शुरू हो गया। परमेश्वर का राज्य वर्तमान में इस संसार के राज्यों के शासक शैतान के विरुद्ध युद्ध में लगा हुआ है। यीशु मसीह और वे सभी जो उसके (ईसाई) हैं, शैतान, उसके राक्षसों, रियासतों और शक्तियों के खिलाफ पृथ्वी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। वे पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का विस्तार कर रहे हैं। इस समय परमेश्वर का राज्य विरोधी लोगों को पक्ष बदलने के लिए राजी कर रहा है। निकट भविष्य में, यीशु वापस आएंगे, विरोधी राजा को पकड़ लेंगे और एक हजार साल के लिए कैद कर लेंगे। इस हज़ार साल की अवधि के दौरान यीशु राज्य करेगा और पृथ्वी पर हर कोई परमेश्वर की सेवा करेगा। उस समय के अंत में, विरोधी राजा जेल से रिहा हो जाएगा और उन लोगों का नेतृत्व करेगा जिनके हृदय ने निष्ठा नहीं बदली है, फिर से परमेश्वर के राज्य के खिलाफ विद्रोह में। मृत्यु उनकी नियति है। भगवान अपने प्रतिद्वंद्वी को आसानी से हरा सकते थे, लेकिन उनकी इच्छा लोगों के दिलों को जीतना है ताकि वे स्वेच्छा से अपनी निष्ठा बदल सकें। वह प्रेम के माध्यम से ऐसा करता है: अपने पुत्र यीशु और उनके (ईसाई) लोगों के माध्यम से प्रेम-कृपा के कार्य प्रदर्शित करता है। यीशु के चेलों को एक उदार युद्ध छेड़ना है। यहां तक कि खुद को मारने की इजाजत देने के लिए, अपने राजा की भलाई के दुश्मन को मनाने के लिए कुछ भी। परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाने के कारणों में से एक यह प्रदर्शित करना था कि उसके पास जीवन और मृत्यु की शक्ति है। यह परमेश्वर के राज्य का विस्तार करने के अपने संघर्ष में एक शिष्य के लिए एक प्रोत्साहन के रूप में कार्य करता है। यीशु अपने शिष्यों को राजदूत बनाता है ताकि वे उसके शत्रुओं को क्षमादान दे सकें। माफी समझौते में भगवान हर पाप और अत्याचार को माफ करने का वादा करता है जो उसके दुश्मनों ने उसके और उसके लोगों के खिलाफ किया है। जो लोग अपनी निष्ठा बदलते हैं, उनके लिए परमेश्वर उसके साथ अनन्त जीवन का वादा करता है। स्क्रिप्चर पढ़ना: राज्य दृष्टान्त (मत्ती 13:1-23) (मरकुस 4:1-20) (लूका 8:4-15) आज्ञाएँ: निहारना। इसे सुनो।जिसके कान हों, वह सुन ले।फिर बोने वाले का दृष्टान्त सुनो। सबक: इससे पहले कि यीशु दृष्टान्तों को पढ़ाना शुरू करे, वह भीड़ को पुकारता है कि वह जो कुछ कहना चाहता है उसे सुनें। वह पहला दृष्टांत "देखो" शब्द से शुरू करता है, जिसका अर्थ है देखना या देखना और शब्दों के साथ समाप्त होता है, "जिसके कान हों, वह सुन ले।" इन वाक्यांशों का उपयोग करके यीशु भीड़ को चुनौती दे रहा है कि वह जो कह रहा है उसकी समझ हासिल करें, न कि केवल उसके शब्दों की आवाज़ सुनें या कहानी की कल्पना करें। लेकिन भीड़ इस बात से अनजान है कि यीशु किस बारे में बात कर रहा है। चेले भी हैरान हैं, इसलिए वे यीशु से पूछते हैं कि वह दृष्टान्तों में क्यों बोल रहा है। यीशु उन्हें समझाते हैं कि वह भविष्यवाणी को पूरा कर रहे हैं: कि कुछ दृष्टान्तों को समझेंगे और कुछ नहीं। वह आगे बताता है कि शिष्यों को परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को समझने का अधिकार दिया गया है जबकि उनसे पहले के भविष्यवक्ताओं और धर्मी लोगों को नहीं था। ऐसा लगता है कि यीशु कह रहा है कि केवल वे ही शिष्य थे जिन्हें परमेश्वर के राज्य के रहस्यों या छिपे हुए ज्ञान की जानकारी होनी थी। लेकिन ऐसा नहीं था। भीड़ चमत्कार देख सकती थी लेकिन समझ नहीं पा रही थी कि "कौन" उन्हें कर रहा था या क्यों किया जा रहा था। उन्होंने "परमेश्वर का वचन" सुना, लेकिन उनके शब्दों को नहीं समझ सके। उनकी रुचि का स्तर इतना कम था कि उन्होंने यीशु से यह भी नहीं पूछा कि उसका क्या मतलब है। यद्यपि एक दृष्टांत का शाब्दिक अर्थ उस संदर्भ को समझना आसान है जिसमें इसका उपयोग किया जाता है, इसे समझना मुश्किल हो सकता है। दृष्टांत का उपयोग करने वाले व्यक्ति से यह पूछना हमेशा बुद्धिमानी है कि वह इसके उपयोग से क्या संकेत कर रहा है। उदाहरण के लिए, यदि आपको बताया गया था कि आप एक ओक के पेड़ की तरह थे, तो आपको अर्थ के

बारे में तत्काल धारणा हो सकती है, लेकिन स्पष्टीकरण प्राप्त करना बुद्धिमानी होगी। हम में से बहुत से लोग तुरंत सोचेंगे कि जिस व्यक्ति ने कहा कि हम एक ओक के पेड़ की तरह थे, इसका मतलब यह था कि हम मजबूत हैं। लेकिन हो सकता है कि जो कहा जा रहा हो, वह ऐसा न हो। इस बात को और स्पष्ट करने के लिए मैंने कई चीजें सूचीबद्ध की हैं जो शायद निहित भी हो सकती हैं।आप एक मोटी चमड़ी वाले व्यक्ति हैं। तुम्हारा बाहरी भाग खुरदरा है।तुम इतने अनम्य हो कि तुम थोड़ा झुक भी नहीं सकते।तुम दूसरों को आश्रय देते हो। शिष्यों ने यीशु से यह पूछने में बुद्धिमानी की कि उसका क्या मतलब है क्योंकि यह परमेश्वर के राज्य से संबंधित छिपी चीजों को खोलने की कुंजी थी। यीशु ने अपना उत्तर यह कहते हुए आरम्भ किया, "क्या तुम इस दृष्टान्त को नहीं समझते? और तुम सब दृष्टान्तों को कैसे समझोगे?" वह इस तथ्य की ओर इशारा कर रहा है कि पहले दृष्टान्त को समझना आवश्यक है, यदि उन्हें अन्य दृष्टान्तों को समझना है। उन्हें इसकी अवधारणाओं और शब्द व्याख्याओं को समझना चाहिए। वह उनसे कहता है, "बोने वाले के दृष्टान्त को सुनो।" यीशु चाहता है कि वे समझ के साथ सुनें, उसके वचनों पर मनन करें और परमेश्वर के राज्य के सत्य की खोज करें। समूह चर्चा: 1. परमेश्वर के राज्य के बारे में मुख्य सत्य क्या है जिसे इस दृष्टांत से पहचाना जा सकता है? (के राज्य परमेश्वर के वचन को बोलने से परमेश्वर का विस्तार होता है) 2. यीशु के अनुसार निम्नलिखित शब्दों की प्रत्यक्ष व्याख्या क्या है?a. बीज (परमेश्वर का वचन)b. मिट्टी (लोगों के दिलों की स्थिति)c. पक्षी (शैतान, विरोधी) डी. सूर्य (दुख या उत्पीड़न) ई. कांटे (इस दुनिया की परवाह, धन का धोखा, और अन्य चीजों की इच्छा।) 3. परमेश्वर का वचन क्या है? (यीशु मसीह और वह सब कुछ जो परमेश्वर कहते हैं) 4. बोने वाला कौन है? (मुख्य रूप से यीशु मसीह, मनुष्य का पुत्र, लेकिन इसमें कोई भी शामिल हो सकता है जो परमेश्वर का वचन बोलता है, जिसमें कुलपिता, भविष्यद्वक्ता, प्रेरित और हम शामिल हैं) 5. बुवाई कैसे की जाती है? (द्वारा) बोलना) यीशु जिस विधि का वर्णन कर रहे हैं उसे व्यापक कहा जाता है कास्टिंग। बोने वाला अपने बैग से मुट्ठी भर बीज लेता है और उसे छोड़ देता है क्योंकि उसकी बांह हवा के माध्यम से एक व्यापक बाहरी चाप बनाती है। 6. रोपण कैसे होता है और इसकी तुलना किससे की जाती है? (सुनकर) (विश्वास) 7. कठिन मार्ग, पथरीली मिट्टी, कंटीली भूमि और अच्छी पृथ्वी हमें कौन-सी दो बातें बताती हैं? (मनुष्य के हृदय की दशाएं और वहां क्या रोपण होगा) बुवाई की प्रसारण पद्धति में बीज हर जगह बिखरा हुआ है। किसान जानबूझकर बीज को अनुत्पादक भूमि में नहीं बिखेरता है क्योंकि यह बेकार है। हालाँकि इसमें से कुछ की मदद नहीं की जा सकती है। बीज को बिखेरते हुए बोने वाला जिस रास्ते पर चलता है, वह कठिन जमीन है। चट्टानी मिट्टी वह जमीन है जो अभी तक तैयार नहीं हुई है और आमतौर पर अच्छी मिट्टी के निकट होती है। कांटेदार जमीन आमतौर पर बाड़ की रेखाओं के पास खेतों के सिरों पर पाई जाती है। 8. मैदान की तैयारी के लिए कौन जिम्मेदार है? (खेत का मालिक) 9. मिट्टी की विभिन्न स्थितियों के लिए क्या उपाय हैं? कठिन मार्ग - जोता जा सकता है, पक्षियों का पीछा किया जा सकता है, और मिट्टी को सख्त होने से रोकने के लिए बोने वाला हर बार एक अलग रास्ता अपना सकता है। चट्टानी मिट्टी - चट्टानों को हटाने के लिए खुदाई करके उपयोग योग्य मिट्टी में बदली जा सकती है। सी। कंटीली भूमि - निराई की जा सकती है । डी। अच्छी पृथ्वी - पोषक तत्वों को जोड़कर या जमीन को परती रहने से सुधारा जा सकता है। परमेश्वर ने इस्राएलियों को आज्ञा दी कि वे सातवें वर्ष अपने खेतों को विश्राम दें।

पाठ # 19

आइसब्रेकर को समझने में वृद्धि: भाषण के इस आंकड़े से संबंधित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। "आपने सिर पर कील ठोक दी।" मुख्य बात क्या है? (आपने एक अच्छी बात या अवलोकन किया) कील मारने के लिए किस उपकरण का उपयोग किया जा रहा है? (हथौड़ा - घर चलाने के लिए बिंदु)यह उपकरण किसका प्रतीक है? (आपके द्वारा बोले गए शब्द) कील किसका प्रतीक है? (बिंदु या अवलोकन) परिचय: परमेश्वर के दृष्टान्तों के राज्य के बारे में एक व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त करने के लिए, तीन समानार्थक सुसमाचार, मत्ती, मरकुस और लूका को एक साथ जोड़ने की आवश्यकता है। इससे हमें पता चलता है कि यीशु ने दृष्टान्तों को किस क्रम में दिया था, उस समय वह कहाँ था और किसको दिया था। स्थान: यीशु गलील के समुद्र पर एक नाव में बैठे हैं। श्रोता: शिष्यों सहित भीड़। यीशु पहला दृष्टान्त बताता है, जो बोने वाले का है। केवल चेले। यीशु ने अपने शिष्यों को बोने वाले के दृष्टान्त की समझ के आधार पर दो आज्ञाएँ जारी कीं। उनमें एक दीपक और माप का एक मानक शामिल होता है। यीशु दूसरे दृष्टान्त को बताता है, कि बढ़ते पौधे के बारे में केवल अपने शिष्यों को। यीशु तीसरे दृष्टांत को बताता है, कि गेहूँ और सभी को तारे। यीशु चौथा दृष्टान्त बताता है, कि राई का दाना सबके लिये।यीशु पांचवां दृष्टान्त, खमीर का, सब को बताते हैं। स्थान: यीशु एक घर में है। श्रोता: केवल शिष्य। यीशु ने तीसरे दृष्टान्त की व्याख्या की, जो कि गेहूँ और तारे की व्याख्या केवल अपने शिष्यों को देता है। यीशु छठे दृष्टांत को बताता है, जो कि एक खेत में छिपे हुए खजाने की है। केवल चेले।यीशु सातवां दृष्टांत बताते हैं, कि महान मूल्य के मोती का केवल अपने शिष्यों को। यीशु आठवें दृष्टान्त को बताता है, कि महाजाल समुद्र में फेंका गया केवल उसके शिष्यों को। यीशु ने शिष्यों को बताया कि अब दृष्टान्तों को समझ लिया है; वे समझ सकेंगे कि परमेश्वर के राज्य के विषय में क्या कहा जा चुका है, और आनेवाली बातें भी। पवित्रशास्त्र पढ़ना: समझ में बढ़ना। (मरकुस 4:21-29) (लूका 8:16-18) आज्ञाएँ: यदि किसी के सुनने के कान हों, तो वह सुन ले। ध्यान रखना कि तुम क्या सुनते हो। पाठ - भाग एक: मरकुस के सुसमाचार के अनुसार, बोने वाले के दृष्टान्त की अपनी व्याख्या को समाप्त करने के बाद, यीशु ने दो दृष्टांत जोड़े। एक का संबंध दीपक से है और दूसरे का माप। इन दृष्टांतों के साथ वह दो आज्ञाएँ जारी करता है। वे हैं, “यदि किसी के सुनने के कान हों, तो सुन ले” और “जो कुछ तू सुनता है उसकी चौकसी करना।” दृष्टांत और आज्ञा दोनों बोने वाले के दृष्टान्त और उसकी व्याख्या से जुड़े हुए हैं। दृष्टान्त की व्याख्या में, बीज परमेश्वर का वचन है। शब्द "परमेश्वर का वचन" कई रूप ले सकता है: पवित्रशास्त्र, यीशु मसीह, स्वयं, या किसी के द्वारा परमेश्वर द्वारा कही गई कोई बात। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि "परमेश्वर का वचन" किस रूप में आता है, दृष्टांतों और आज्ञाओं के सिद्धांत सही हैं। यीशु अपने शिष्यों से कहते हैं कि दीपक का उद्देश्य प्रकाश प्रदान करना है। शिष्य मानते हैं कि वह दृष्टान्त का उल्लेख कर रहे हैं और बदले में परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को प्रकट कर रहे हैं। उन्हें यह भी याद है कि यीशु ने हाल ही में अपने पहाड़ी उपदेश के दौरान इसी तरह के शब्दों का इस्तेमाल किया था। उस समय यीशु ने कहा, "वे जगत की ज्योति थे।" पहली बार चेले उस भूमिका को पकड़ने लगे हैं जिसके लिए उन्हें बुलाया गया है। उन्हें "परमेश्वर के वचन" को प्रकट करके प्रकाश बनना है, जो कि परमेश्वर का राज्य है। यीशु ने उन्हें इस बात का आश्वासन देते हुए कहा, "क्योंकि कुछ भी छिपा नहीं है, सिवाय प्रगट होने के, और कुछ भी गुप्त नहीं है, केवल इसलिए कि वह प्रगट हो जाए।" लोग कीमती चीजें छिपाते हैं और उन्हें तब तक छिपा कर रखते हैं जब तक उन्हें लगता है कि यह उनके उपयोग के लिए उपयुक्त समय नहीं है। यह एक बीज के समान है जो जमीन में छिपा हुआ या लगाया जाता है और फिर उसके मौसम में सामने आता है। बीज का मूल्य और क्या यह तब तक उत्पन्न होगा जब तक सूर्य का प्रकाश इसे प्रकट नहीं करता है। लोग तब तक रहस्य रखते हैं जब तक उन्हें कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिल जाता है जिस पर वे अपने रहस्यों

पर भरोसा कर सकते हैं। यीशु केवल शिष्यों को बता रहे हैं कि वे विश्वसनीय हैं और यह प्रकट करने का समय है दैवीय कथन।" वह निर्देश जारी करते हुए अपनी बात समाप्त करता है, "यदि किसी के सुनने के कान हों, तो सुन ले।" बोने वाले के दृष्टान्त के आधार पर, जिसे शिष्यों ने अभी सुना है, यह आदेश नई ताकत लेता है। जो शब्द वे अपने कानों से सुन रहे हैं, उन्हें लगाया जाना चाहिए और उनके दिल की उपजाऊ मिट्टी में रहना चाहिए। तब शब्द बढ़ेंगे और दूसरे दिलों में बसने के लिए और शब्द पैदा करो।चूंकि एक शिष्य के दिल की मिट्टी उपजाऊ होती है, यीशु चेतावनी देते हैं। "ध्यान रखना कि तुम क्या सुनते हो।" दूसरे शब्दों में, उन चीजों में चयनात्मक रहें जिन्हें आप रोपने की अनुमति देते हैं और अपने दिल में बने रहते हैं। क्यों? क्योंकि जो भी शब्द बोए जाते हैं और दिल में रहते हैं, चाहे अच्छा हो या बुरा, आपके द्वारा बोले जाने वाले शब्दों को उत्पन्न करने के लिए बढ़ेगा। और सब कुछ आप बढ़ने की अनुमति दें गुणा किया जाएगा। समूह चर्चा: सूर्य के प्रकाश और पानी विकास को कैसे प्रभावित करते हैं? (दोनों विकास के लिए आवश्यक हैं। बहुत कम धूप और बीज परिपक्वता तक नहीं बढ़ेंगे। हालांकि सूरज की रोशनी एक पौधे को मुरझाएगी और मर जाएगी यदि यह नहीं है 'पर्याप्त पानी की आपूर्ति नहीं है। बहुत अधिक पानी डूबने से पौधे को मार देता है।) सूर्य का प्रकाश किसका प्रतीक है? (दुख या उत्पीड़न) पानी क्या प्रतीक है? (यूहन्ना 7:37-39 के अनुसार पवित्र आत्मा) सूर्य का प्रकाश कहाँ होता है और पानी कहाँ से आता है? (स्वर्ग) पाठ - भाग दो: बोने वाले के दृष्टान्त का अध्ययन उन नियमों पर भी प्रकाश डालता है जो अन्य राज्य दृष्टान्तों को समझने को नियंत्रित करते हैं। ईश्वर दृष्टांत के प्रत्येक राज्य का विषय ईश्वर का नियम है। ईश्वर के विषय में सत्य नियम हो सकता है एक व्यक्ति या उन सभी पर लागू होता है जो उसके द्वारा शासित होते हैं। प्रत्येक दृष्टान्त परमेश्वर के राज्य के विषय में एक मुख्य बात बताता है। दृष्टांत में प्रयुक्त अवधारणाएँ और सिद्धांत ईश्वर के शासन से संबंधित सत्य हैं। ये सत्य विषय और मुख्य बिंदु में गहराई और स्पष्टता जोड़ते हैं। उन्हें एक राज्य दृष्टान्त से दूसरे राज्य में ले जाया जा सकता है। इन सत्यों में से एक का एक उदाहरण है, बीज पौधे पैदा करते हैं। दूसरे राज्य के दृष्टान्तों में उपयोग किए जाने पर यीशु किसी भी शब्द को जो विशिष्ट अर्थ देता है वह वही रहता है। उदाहरण के लिए, बीज शब्द हैं। जैसे ही यीशु अपने शिष्यों को बढ़ते हुए पौधे का दृष्टान्त बताते हैं, और अधिक सत्य स्पष्ट हो जाते हैं। दृष्टान्त का प्राथमिक बिंदु यह है कि परमेश्वर का राज्य बढ़ता है। यह वृद्धि व्यक्तिगत और कॉर्पोरेट रूप से देखी जा सकती है। दृष्टांत के अनुसार हृदय में रोपित शब्द परिपक्व होने से पहले विकसित होने में समय लेता है और यह तीन पहचान योग्य चरणों में बढ़ता है। विकास के तीन चरणों को ब्लेड, सिर और सिर में परिपक्व अनाज के रूप में जाना जाता है। विकास के ये चरण उनके अनुरूप हैं जिन्होंने उद्धार के वचन पर विश्वास किया है। प्रेरित यूहन्ना ने अपने पहले पत्र में इन तीन चरणों को बच्चों, युवकों और पिताओं के रूप में पहचाना। यह परिपक्वता पर होता है कि नए बीज बनते हैं और प्रजनन होता है। समूह चर्चा: कुछ अन्य सत्य क्या हैं जो बढ़ते पौधे के दृष्टांत से पता लगाए जा सकते हैं? शुरू में कोई सबूत नहीं है कि एक शब्द बढ़ रहा है, इसलिए यह विश्वास करने के लिए बोने वाले की ओर से विश्वास करता है कि यह होगा। चूंकि विकास लेता है समय के लिए बोने वाले की ओर से धैर्य की आवश्यकता होती है कि उसके द्वारा बोले गए शब्दों को देखने के लिए फल लगते हैं। बीज बोने के तुरंत बाद पानी देना शुरू हो जाता है और पूरे विकास काल में जारी रहता है। ब्लेड के उजागर होने के बाद ही सूर्य का प्रकाश चलन में आता है। निराई तब होती है जब पौधों की दोनों प्रजातियों को प्रतिष्ठित किया जा सकता है। आवेदन: आपको दिए गए दृष्टांत पर अगली बैठक में समूह के लिए एक संक्षिप्त प्रस्तुति देने की तैयारी करें। मुख्य बिंदु और सहायक सत्य विकसित करें। चर्चा करें कि दृष्टांत को व्यक्तिगत रूप से या सामूहिक रूप से कैसे लागू किया जा सकता है।

पाठ # 20

अधिक राज्य सत्य परिचय: जब यीशु तट के किनारे एक नाव में बैठता है तो वह परमेश्वर के राज्य के विषय में तीन और दृष्टान्तों को बताता है: गेहूँ और तारे, राई और खमीर। फिर वह भीड़ को छोड़कर एक घर में प्रवेश करता है। एक बार वहाँ वह अपने शिष्यों को गेहूँ और तारे का दृष्टान्त समझाता है और उन्हें तीन और दृष्टान्त बताता है: एक खेत में खजाना, बड़ी कीमत का मोती और समुद्र में डाला गया जाल। पवित्रशास्त्र पढ़ना: अधिक राज्य सत्य (मत्ती 13:24-52) (मरकुस 4:30-34) आज्ञा: जिसके कान हों, वह सुन ले। पाठ: यीशु ने अपने शिष्यों को एक आदेश जारी करके गेहूँ और तारे के दृष्टान्त की अपनी व्याख्या समाप्त की। "वह जिसके कान हैं, उसे सुन लेने दो।" यीशु चाहता है कि उसके चेले उसकी बातों को दृढ़ता से समझें, क्योंकि गेहूँ और ताड़ का दृष्टान्त बोने वाले और बढ़ते पौधे के दृष्टान्तों से प्राप्त सत्य की पुष्टि करने में सहायक है। यह अन्य राज्य दृष्टान्तों को अतिरिक्त अंतर्दृष्टि और दिशा भी प्रदान करता है। चूँकि यीशु ने गेहूँ और ताड़ के दृष्टान्त में व्याख्या पहले ही दे दी है, यह पाठ आपकी समझ को स्पष्ट करने के लिए इसके शब्दों के अर्थ में अंतर्दृष्टि प्रदान करने पर केंद्रित है। दृष्टांत इस कथन से शुरू होता है, "स्वर्ग के राज्य की तुलना उस व्यक्ति से की जा सकती है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया"। उनके कथन से निम्नलिखित अवलोकन किए जा सकते हैं: 1. अभिव्यक्ति "स्वर्ग का राज्य" परमेश्वर के राज्य को कहने का एक और तरीका है और इसका उपयोग पूरे मत्ती के सुसमाचार में किया जाता है। स्वर्ग शब्द को यहूदियों ने अपने साहित्य में पवित्र अनुष्ठान के रूप में "ईश्वर" शब्द के उपयोग से बचने के लिए प्रतिस्थापित किया था। 2. यीशु "मनुष्य" शब्द की व्याख्या "मनुष्य का पुत्र" के रूप में करते हैं। एक शाब्दिक अर्थ में इसका अर्थ आदम का कोई भी वंशज हो सकता है, हालाँकि इस शब्द का इस्तेमाल मसीहा के शीर्षक के रूप में भी किया गया था, जैसा कि दानिय्येल की पुस्तक, अध्याय 7, छंद 13-14 से लिया गया है। 3. बोने वाले के दृष्टांत से हमने सीखा कि बीज शब्दों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यीशु अच्छे बीज की व्याख्या परमेश्वर के राज्य की सन्तान के रूप में करते हैं। बच्चों शब्द को पुत्र, वंश या संतान के रूप में भी पढ़ा जा सकता है। इससे हम सीखते हैं कि परमेश्वर का वचन ईश्वरीय संतान पैदा करता है। इन संतानों का निर्माण तब होता है जब मनुष्य के हृदय में परमेश्वर के वचन पर विश्वास किया जाता है। वे परिपक्वता तक बढ़ते हैं और अधिक बीज पैदा करते हैं जो दूसरे दिलों में लगाए जा सकते हैं।4। क्षेत्र संसार है। विश्व के लिए ग्रीक शब्द कॉसमॉस है। इसका मतलब पृथ्वी नहीं है, बल्कि जिस तरह से सभी चीजों को बनाया गया था। पृथ्वी ब्रह्मांड का हिस्सा है। इसी तरह स्वर्गीय पिंड, पौधे, जानवर और भौतिकी के नियम आदि हैं। 5. दुनिया, जिसमें विभिन्न मिट्टी हैं, मनुष्य के पुत्र का है, शैतान का नहीं। दृष्टान्त की अगली पंक्तियाँ इस प्रकार पढ़ती हैं, "परन्तु जब मनुष्य सो रहे थे, तो उसका शत्रु आया, और गेहूँ के बीच में जंगली बीज बोया, और चला गया। परन्तु जब गेहूँ उग आया और अनाज बोया, तब वे भी स्पष्ट हो गए।" 1. जब पुरुष सो रहे थे, यह शब्द केवल यह कहने का एक तरीका है कि पुरुष इस बात से अनजान थे कि क्या हो रहा था या वे ध्यान नहीं दे रहे थे। 2. यीशु ने घोषणा की कि मनुष्य के पुत्र का दुश्मन शैतान है। शैतान शब्द का अर्थ है आरोप लगाने वाला। शैतान को शैतान भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है प्रतिद्वंद्वी। 3. प्राचीन काल में दुश्मन के गेहूं के खेतों में तारे बोना आम बात थी। यीशु जिस तारे की बात कर रहे हैं, वह "दाढ़ीदार डारनेल" एक जहरीली राई घास है जो गेहूं से तब तक अलग नहीं रहती जब तक अनाज परिपक्वता पर सिर में दिखाई देता है। पूर्वजों के अनुसार, तारे एक अलग प्रकार के बीज नहीं हैं, बल्कि केवल एक पतित प्रकार के गेहूं हैं। तारे की बुवाई से गेहूं की फसल कम हो जाती है, क्योंकि तारे गेहूं का गला घोंट देते हैं और ले लेते हैं मिट्टी में पोषक तत्वों को बढ़ाएं। यह गेहूं को तारे से अलग करने के लिए किसान के अधिक काम की भी मांग करता है। 4. इस दृष्टांत से हम सीखते हैं कि शैतान अपना बीज बोने की उसी विधि का उपयोग करता है जैसे मनुष्य के

पुत्र: बोलकर। शैतान पृथ्वी को भ्रष्ट करता है, जिससे मनुष्य बनाया गया है, उसके शब्दों से। जब मनुष्य के हृदय में शैतान के वचनों पर विश्वास किया जाता है तो वे शैतान की संतान उत्पन्न करते हैं जो बदले में अन्य मनुष्यों के हृदयों में बोने के लिए अधिक वचन उत्पन्न करता है। यीशु के अनुसार, शैतान की संतान वे हैं जो दूसरों को ठोकर खिलाते हैं और वे जो स्वयं के लिए कानून हैं। दृष्टांत की अंतिम पंक्ति इस प्रकार पढ़ती है, "गेहूं और टारस को कटनी तक एक साथ बढ़ने दो; और कटनी के समय मैं लवने वालों से कहूंगा, पहिले खरबूजे को बटोर ले, और उन्हें गट्ठर में बान्ध ले, कि वे जला दें; परन्तु गेहूँ को मेरे खलिहान में इकट्ठा करो।"1. गेहूँ और ताड़ को एक साथ उगने देना इस बात का संकेत है कि इस दुनिया में फसल की कटाई तक अच्छाई और बुराई एक साथ रहती है।2. काटने वालों को मनुष्य के स्वर्गदूतों के पुत्र के रूप में वर्णित किया गया है। फरिश्ता शब्द का अर्थ दूत होता है। ये संदेशवाहक या तो स्वर्गीय या मानव हो सकते हैं। 3. यीशु ने कहा कि फसल युग (संसार) का अंत है। उम्र या दुनिया के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला ग्रीक शब्द आयन है। यह अस्तित्व की अवधि को इंगित करता है। ए। युग समाप्त होता है जब परमेश्वर का वचन, जो एक व्यक्ति के हृदय में बोया गया है, परिपक्वता तक बढ़ता है और काटा जाता है। इसका परिणाम एक नई सृष्टि में होता है और ईसाई मंडलियों में इसे फिर से जन्म लेने के रूप में जाना जाता है। बी। एक सामूहिक अर्थ में, युग समाप्त होता है जब परमेश्वर एक नया स्वर्ग और नई पृथ्वी बनाता है जैसा कि प्रकाशितवाक्य 20:11-15 और 21:1 की पुस्तक में वर्णित है। इस घटना को एक हजार साल पहले हुई प्रभु यीशु मसीह की वापसी के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए। जब कुल मिलाकर पांच दृष्टांतों को लिया जाता है, तो यीशु ने भीड़ से बात की, भगवान के राज्य का एक व्यापक दृष्टिकोण बनाते हैं। वे दिखाते हैं कि यह कैसे शुरू होता है (बोने वाला), यह कैसे बढ़ता है (बढ़ता हुआ पौधा) और यह कैसे समाप्त होता है (गेहूं और तारे)। राज्य का विकास एक ही समय में (सरसों के बीज) और आंतरिक रूप से (खमीर) दोनों में हो रहा है। अन्य दृष्टान्त: राई के बीज का दृष्टान्त दर्शाता है कि ईश्वर का राज्य बहुत छोटा शुरू होता है लेकिन बड़े आकार में बढ़ता है। इज़राइल में, सरसों का पौधा पंद्रह फीट तक की ऊँचाई प्राप्त कर सकता है और इस प्रकार इसे एक पेड़ का रूप दे सकता है। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि पक्षी सरसों के पौधे की ओर आकर्षित होते हैं और वास्तव में इसकी शाखाओं में अपना घोंसला बनाते हैं। हालाँकि, यीशु कुछ और ही बात कर रहे हैं। याद रखें, कि बोने वाले के दृष्टांत में पक्षी शैतान का प्रतिनिधित्व करते थे। जब परमेश्वर का राज्य बीज रूप में होता है तो शैतान उसे आसानी से खा सकता है। लेकिन जब राई के पेड़ के चित्र के अनुसार पूर्ण विकसित हो जाता है तो वह उसे नष्ट नहीं कर सकता। लेकिन एक बार जब परमेश्वर का राज्य बड़ा हो जाता है तो शैतान वहां अपना घर बना सकता है और उसके द्वारा उत्पन्न बीज को खा सकता है। पक्षी आमतौर पर एक पेड़ के कांटों में या जहां एक नई शाखा बनती है, वहां अपना घोंसला बनाते हैं। जहां चर्च में विभाजन होता है वहां शैतान पाया जा सकता है। खमीर का दृष्टांत दिखाता है कि परमेश्वर का राज्य उसके संपर्क में आने वाली हर चीज़ को बदल देता है। कई ईसाई मानते हैं कि खमीर पाप का प्रतिनिधित्व करता है। हालाँकि, एक अधिक सटीक दृष्टिकोण है। खमीर एक परिवर्तन एजेंट है। यह उन सभी की विशेषताओं को बदल देता है जिनमें इसे रखा जाता है। यीशु बाद में शिक्षा की तुलना खमीर से करेंगे जब वह शिष्यों को "फरीसियों और सदूकियों के खमीर से सावधान रहने" के लिए कहता है। शिक्षण, चाहे सच्चा हो या झूठ, अच्छे या बुरे के लिए मन को भ्रष्ट या बदल देता है। दृष्टान्त में, भोजन के तीन भागों में खमीर डाला गया था। तीन भाग उस पूरी चीज़ का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसे ख़मीर किया गया था। सूखी माप की इब्रानी मानक पूरी इकाई एपा है और एक एपा के बराबर तीन सआह लगते हैं। इसके द्वारा यीशु संकेत कर रहे हैं कि प्रत्येक मनुष्य में तीन भाग होते हैं: आत्मा, आत्मा और शरीर। जब खमीर या परमेश्वर का राज्य इस मामले में, प्रत्येक भाग में पेश किया जाता है, तो व्यक्ति की संपूर्ण प्रकृति बदल जाएगी। खेत में

छिपे खजाने का दृष्टांत परमेश्वर के राज्य के बारे में और अधिक सच्चाईयों को प्रकट करता है। खजाना इंगित करता है कि यह मूल्यवान है। क्षेत्र दुनिया का प्रतिनिधित्व करता है। परमेश्वर का राज्य खेत की मिट्टी में छिपा हुआ था, जो मनुष्य के हृदय का प्रतिनिधित्व करता है। दृष्टांत में एक आदमी खजाने की तलाश में था, उसने उसे खोज लिया। मनुष्य यीशु मसीह, मनुष्य के पुत्र का प्रतिनिधित्व करता है। खजाने की खोज के बाद उसने उसे फिर से छिपा दिया। फिर उसने अपना जीवन दे दिया, जो उसके पास सब कुछ था, दुनिया को खरीदने के लिए। यीशु जिस खज़ाने को मनुष्यों के दिलों में खोज रहा था, वह यह विश्वास था कि वह मसीह, जीवित परमेश्वर का पुत्र था। यीशु ने पतरस के हृदय में इस खजाने की खोज की जब उसने शिष्यों से पूछा, "तुम क्या कहते हो कि मैं कौन हूं?" पतरस ने उत्तर दिया कि वह जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीह है। तब यीशु ने उस से कहा, हे शमौन बरजोना, तू धन्य है, क्योंकि मांस और लोहू ने तुझ पर नहीं, परन्तु मेरे पिता जो स्वर्ग में है, यह प्रगट किया। यीशु ने इस खजाने को फिर से छिपा दिया जब उसने चेलों से कहा कि वे किसी को न बताएं कि वह मसीह है। महान मूल्य के मोती का दृष्टांत इस तथ्य को स्थापित करता है कि ईश्वर का राज्य सबसे मूल्यवान चीज है जो किसी के पास भी हो सकती है। व्यापारी वह है जो खरीद-बिक्री से जीविकोपार्जन करता है। वह एक जानकार व्यवसायी है और अपने माल की कीमत जानता है। जब वह सबसे मूल्यवान वस्तु पाता है जो उसके पास हो सकती है, तो वह उसे प्राप्त करने के लिए अपना सब कुछ बेच देता है। खरीद के समय व्यापारी व्यवसाय से बाहर है, उसके पास वस्तु विनिमय के लिए और कुछ नहीं है। अन्य कम मूल्य के मोती फिर से प्राप्त करने के लिए अधिक मूल्य के मोती को बेचने में क्या समझदारी होगी? व्यापारी इस दुनिया में किसी का भी प्रतिनिधित्व करता है जो इस जीवन में मूल्यवान चीजों की तलाश कर रहा है। परमेश्वर के राज्य को प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि एक व्यक्ति इसके बदले में वह सब कुछ त्याग दे जिसे उसने मूल्यवान समझा है। उस समय कोई क्यों परमेश्वर के राज्य का त्याग करे ताकि वह जो उसके पास पहले था उसे वापस पा सके। बड़ी कीमत के मोती के दृष्टांत की दूसरी व्याख्या में भी योग्यता है। इस परिदृश्य में व्यापारी भगवान का राज्य है। चर्च के माध्यम से काम करने के रूप में आज भगवान के राज्य को सबसे अच्छी तरह से व्यक्त किया गया है। तो यह कहा जा सकता है कि चर्च खुद को निवेश करने या रखने के लिए कुछ ढूंढ रहा है। महान मूल्य का मोती उस परम वस्तु का प्रतिनिधित्व करता है जिसे प्राप्त किया जा सकता है। वास्तव में यह इतना मूल्यवान है कि चर्च को इसकी तलाश करनी चाहिए। यह क्या है? कुलपिता अय्यूब अपने नाम की पुस्तक के 28वें अध्याय में ज्ञान पर अपने प्रवचन के दौरान इसका उत्तर देता है। श्लोक 18 में वे कहते हैं, "मूंगा और क्रिस्टल का उल्लेख नहीं किया जाना चाहिए, और ज्ञान की प्राप्ति मोतियों से अधिक है।" सादृश्य स्पष्ट है; महान मूल्य का मोती ज्ञान है! अय्यूब ने अपने भाषण को यह परिभाषित करते हुए समाप्त किया कि ज्ञान क्या है। "देखो, प्रभु का भय, वह ज्ञान है; और बुराई से दूर रहना ही समझ है।" समुद्र में डाले गए महाजाल के दृष्टांत से पता चलता है कि इस युग में परमेश्वर का राज्य चयनात्मक नहीं है। दृष्टान्त में, मछली लोगों का प्रतिनिधित्व करती है। यह निष्कर्ष यीशु द्वारा पतरस, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना चार मछुआरों को बुलाए जाने से लिया गया है। यीशु ने कहा कि तब से वे मनुष्यों को पकड़ेंगे। परमेश्वर का राज्य, जैसा कि आज कलीसिया के माध्यम से कार्य करने के रूप में सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व किया जाता है, सभी प्रकार के लोगों को अपनी ओर खींचता है। जैसे ही जाल को पानी के माध्यम से खींचा जाता है, मछुआरा यह नहीं देख सकता कि क्या पकड़ा जा रहा है और जब तक जाल को किनारे पर नहीं खींचा जाता है तब तक मछली के प्रकार का निर्धारण नहीं किया जा सकता है। यहूदी तब अपनी पकड़ को दो समूहों में अलग कर देते थे, जो शुद्ध थे उन्हें खाया जा सकता था और जो अशुद्ध थे उन्हें त्याग दिया जाता था। स्वच्छ मछलियाँ वे होती हैं जिनमें तराजू और पंख दोनों होते हैं जबकि अशुद्ध मछलियाँ वे होती हैं जिनमें इनमें से किसी एक विशेषता का अभाव होता

है। अगले युग के आने से पहले जिसमें एक नया स्वर्ग और पृथ्वी प्रकट होगी, परमेश्वर के राज्य में खींचे गए व्यक्तियों का एक अलगाव होगा। धर्मी को संरक्षित किया जाएगा और अधर्मी को त्याग दिया जाएगा आवेदन: भगवान के आठ दृष्टांतों के बारे में आपके कोई भी प्रश्न हैं जो हमने पहले सामान्य चर्चा के लिए अगली समूह बैठक में अध्ययन किए हैं।

पाठ # 21

हार्वेस्ट फील्ड आइसब्रेकर में जाना: "फसल फील्ड" शब्द का आपके लिए क्या अर्थ है? (ऐसा खेत जिसमें बोई गई फसल कटने के लिए तैयार हो।) कटनी का खेत कहाँ है? (कहीं भी कि बीज बोया गया है और कटाई के लिए तैयार है) एक व्यक्ति को कैसे पता चलता है कि खेत कब कटने के लिए तैयार है? (फसल परिपक्व होती है: खाने के लिए तैयार या अधिक फसल पैदा करने के लिए बोई जाती है) एक व्यक्ति फसल की परिपक्वता की पहचान कैसे करता है? (इसका परीक्षण करके: नेत्रहीन, दृढ़ता, आदि) फसल के समय क्या होता है? (फसल को चुना जाता है, जमा किया जाता है और भविष्य के उपयोग के लिए संग्रहीत किया जाता है) परिचय: यीशु अपने शिष्यों को लोगों में भगवान के राज्य (शासन) का उत्पादन करने के लिए तैयार कर रहा है। यह जीवन में उनका मिशन बन जाएगा। पिछले तीन पाठों में हमने देखा कि यीशु ने दृष्टान्तों के उपयोग के माध्यम से कई राज्य सच्चाइयों को प्रकट किया। उन सत्यों को कॉर्पोरेट या व्यक्तिगत रूप से लोगों पर लागू किया जा सकता है। आइए उन्हें यहाँ संक्षेप में प्रस्तुत करें: परमेश्वर का राज्य लोगों के जीवन में उन्हें परमेश्वर का वचन बोलने के द्वारा बोया जाता है। यह हृदय की स्थिति के आधार पर परिपक्वता तक बढ़ भी सकता है और नहीं भी। परमेश्वर का राज्य लोगों के जीवन में चरणों से बढ़ता है: पहले ब्लेड (बचपन), फिर सिर (युवा) और अंत में सिर में परिपक्व अनाज (वयस्कता)) विकास पानी (संपादन) और धूप (उत्पीड़न) के माध्यम से आता है। जो ठोकरें खाते हैं और कानूनविहीन जीवन जीते हैं, वे राज्य को प्रभावित करते हैं। यह जरूरी है कि उन पर ध्यान न दिया जाए, क्योंकि जो कुछ भी माना जाता है, वह हृदय उत्पन्न करेगा। जब परिपक्वता प्राप्त हो जाती है, तो जो लोग ठोकर खाते हैं और अधर्म का जीवन जीते हैं, उनका राज्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। परमेश्वर का राज्य बाहरी (दृश्य प्रमाण) और आंतरिक दोनों तरह से बढ़ता है। परमेश्वर के राज्य में अनदेखे लाभ हैं। परमेश्वर का राज्य सबसे अमूल्य वस्तु है जिसके पास कोई भी हो सकता है। परमेश्वर का राज्य तब तक जारी रहेगा जब तक वह पूर्ण नहीं हो जाता, और तब बुराई से अच्छाई का अलगाव होगा। शास्त्र पढ़ना:फसल के खेत में जाना। (मत्ती 8:23-34 और 9:35-38) (मरकुस 4:35-5:20) (लूका 8:22-39) आज्ञाएँ: आइए हम झील के उस पार जाएँ। फसल है बहुतायत में, लेकिन कार्यकर्ता कम हैं। इसलिये खेत के यहोवा से बिनती करो, कि वह अपनी कटनी के लिये मजदूर भेज दे। पाठ: परमेश्वर के राज्य पर अपनी शिक्षाओं को समाप्त करने के बाद, यीशु शक्तिशाली नए तरीकों से राज्य की शक्ति का प्रदर्शन करना शुरू करते हैं। उस शाम यीशु और उनके शिष्यों ने नावों की एक नाव के साथ, गेरासेन्स के क्षेत्र में झील के पूर्वी हिस्से के लिए एक मार्ग निर्धारित किया। पांच मील की यात्रा के दौरान उनका सामना एक भयंकर तूफान से होता है जो उन सभी को नष्ट करने की धमकी देता है। शिष्यों द्वारा यीशु को नींद से जगाया जाता है और वह तूफान और समुद्र को शांत होने की आज्ञा देता है। पूर्वी तट पर पहुंचने पर उनका सामना कब्रों के बीच रहने वाले एक दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति से होता है। यीशु ने मनुष्य के राक्षसों (लगभग 6000) को सूअर के झुंड में डाल दिया और राक्षसों के कब्जे के बाद, सूअरों का झुंड एक खड़ी ढलान से नीचे चला गया और झील में डूब गया। समूह चर्चा: आपको क्यों लगता है कि यीशु अपने शिष्यों को झील के दूसरी ओर जाना चाहते थे? (वह शैतान के राज्य के साथ टकराव में या संभवतः शिष्यों को असहज करने के लिए परमेश्वर के राज्य की शक्ति का प्रदर्शन करना चाहता था। परिस्थितियों में ताकि वे कठिन परिस्थितियों में संचालन में भगवान की शक्ति का निरीक्षण कर सकें) हवा और समुद्र को डांटने के बाद, आपको क्यों लगता है कि यीशु ने अपने शिष्यों से कहा, "तुम इतने डरपोक क्यों हो" और "यह कैसे है कि आपको विश्वास नहीं है ?" (वह शिष्यों को परमेश्वर में विश्वास रखने और उनकी परिस्थितियों पर अधिकार करने के लिए चुनौती दे रहा था। अपने पूरे मंत्रालय में, यीशु ने मनुष्य के पुत्र के रूप में, पृथ्वी और बुरी आध्यात्मिक शक्तियों पर शक्ति का प्रदर्शन किया, लेकिन पुरुषों की स्वतंत्र इच्छा पर कभी

नहीं।) आप परमेश्वर के राज्य के संदेश को अज्ञात क्षेत्रों में ले जाने से डरते हैं? सबक - जारी रखा: झील के उत्तरी किनारे पर लौटने पर यीशु ने एक महिला को चंगा किया, जिसे बारह साल से खून बह रहा है। उस दिन बाद में वह एक छोटी लड़की को मरे हुओं में से उठाता है, दो अंधे लोगों की आंखों की रोशनी बहाल करता है और एक आदमी को बोलने के लिए प्रेरित करता है। वहाँ से यीशु अपने गृहनगर नासरत को वापस जाता है जहाँ वह हाथ रखकर कुछ बीमार लोगों को चंगा करता है। जैसे ही यीशु अपने अगले प्रचार दौरे पर यात्रा करते हैं, उन्होंने देखा कि लोग बिना चरवाहे के भेड़ों की तरह व्यवहार कर रहे हैं। वे बिना किसी उद्देश्य के, बिना किसी उद्देश्य के, हर तरह की बीमारी और बीमारी से पीड़ित होकर भटकते हैं, क्योंकि उनके दुश्मन उन्हें एक-एक करके उठा लेते हैं। उनकी देखभाल करने, दिशा देने और सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है। उनके लिए करुणा महसूस करना और यह पहचानना कि वह उन सभी की देखभाल करने में सक्षम नहीं है, यीशु अपने शिष्यों को प्रार्थना के लिए बुलाते हैं। समूह चर्चा: क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं, जो बिना चरवाहे के भेड़ की तरह व्यवहार कर रहा है और यदि ऐसा है तो वे किस व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं? (वे बिना किसी उद्देश्य के भटकते हैं, हर तरह की बीमारी और बीमारी को झेलते हैं, क्योंकि उनके दुश्मन उन्हें एक-एक करके उठाते हैं।) आपको क्या लगता है कि यीशु ने अपने शिष्यों से अधिक फसल काटने वालों के लिए प्रार्थना करने के लिए क्यों कहा, न कि अधिक बोने वालों के लिए? (कटाई के लिए अधिक लोगों की आवश्यकता होती है फिर यह बोने के लिए) सबक का बिंदु: फसल का खेत खोजें और काम पर जाएं। आवेदन: फसल के भगवान के लिए हर दिन प्रार्थना करें कि वह अपनी फसल में श्रमिकों को भेजे।

पाठ # 22

इंजीलवाद आइसब्रेकर: "सुसमाचार प्रचार" शब्द सुनते ही आपके दिमाग में कौन से चित्र या चित्र आते हैं? 1-6 और 10:1-16) समूह चर्चा: मसीह का अनुसरण करने के आपके निर्णय में सबसे प्रभावशाली व्यक्ति कौन था? उस व्यक्ति का आपसे क्या संबंध था? _____ उस व्यक्ति ने क्या किया जिससे आप प्रभावित हुए? वर्णन करें कि उस व्यक्ति ने आपको कैसा महसूस कराया। उस व्यक्ति ने आपको प्रभावित करने के लिए क्या कहा? आज्ञाएं: अन्यजातियों के रास्ते में मत जाओ। सामरियों के किसी भी शहर में प्रवेश न करें। इस्राएल के घर की खोई हुई भेड़ों के पास जाओ। हर उस शहर में जाओ जहां मैं आने वाला हूं। जैसे तुम जाओ, यह कहते हुए प्रचार करो, "स्वर्ग का राज्य निकट है। बीमारों को चंगा करो। उनसे कहो, "परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ गया है।" मरे हुओं को उठाओ। कोढ़ियों को शुद्ध करो। राक्षसों को बाहर निकालो। स्वतंत्र रूप से प्राप्त किया, स्वतंत्र रूप से दे दो।अपने पैसे के बेल्ट के लिए सोना, या चांदी, या तांबा प्राप्त न करें। अपनी यात्रा के लिए एक बैग न प्राप्त करें। दो ट्यूनिक्स भी प्राप्त न करें। सैंडल प्राप्त न करें। एक कर्मचारी प्राप्त न करें। रास्ते में किसी को भी नमस्कार न करें जिस किसी भी नगर या गाँव में प्रवेश करो, उस से पूछो कि कौन योग्य है।जब तक तुम चले न जाओ, तब तक वहीं रहो।जो तुम्हारे सामने रखा है उसे खाओ।घर में प्रवेश करते ही, अपना अभिवादन करो, "इस घर में शांति हो!" घर योग्य है (शांति का आदमी वहाँ है ई), उस पर आपका शांति का अभिवादन आए। यदि घर योग्य नहीं है (शांति का आदमी नहीं है), तो आपकी शांति आपके पास लौट आए। जो कोई आपको प्राप्त नहीं करता है, और न ही आपकी बातों पर ध्यान देता है, जैसे आप बाहर जाते हैं उस घर वा उस नगर की धूल झाड़, और उसकी गलियों में जाकर कह, कि तेरे नगर की धूल जो हमारे पांव में लगी है, हम तेरे साम्हने पोंछ देते हैं; तौभी निश्चय जान लो, कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ गया है।" सबक: पवित्रशास्त्र कहता है कि यीशु ने "महान आयोग" देने से पहले लोगों की देखभाल के लिए दो बार राजदूत भेजे। पहली बार उसने बारह प्रेरितों को लगभग छह महीने की अवधि के लिए केवल इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास भेजा। कई महीनों बाद उसने अन्य सत्तर शिष्यों को लगभग दो महीने की अवधि के लिए उन सभी शहरों में भेजा जहाँ वह आने वाला था। उन्होंने दोनों समूहों को जो निर्देश दिए, वे अनिवार्य रूप से समान और बहुत ही विशिष्ट थे। प्रार्थना दोनों उपक्रमों से पहले हुई। सभी ने भगवान से गुहार लगाई कि वे मजदूरों को फसल काटने के लिए भेजें। तब यीशु ने जाने वालों को आज्ञा दी। उसने उन्हें जोड़े में भेजा, ताकि परमेश्वर का हर एक वचन दो या दो से अधिक गवाहों के मुंह में पक्का हो जाए। उसने उनसे कहा कि वे प्रचार करें कि लोगों को पश्चाताप करना चाहिए और यह घोषणा करना चाहिए कि परमेश्वर का राज्य निकट है। और उस ने उन से लोगों को चंगा करने को कहा, कि उनकी गवाही केवल शब्दों में ही नहीं, वरन ऊपर से परमेश्वर की सामर्थ पर टिकी रहे। यीशु ने इन राजदूतों को दुष्टात्माओं को निकालने और हर तरह की बीमारी और बीमारी को ठीक करने की शक्ति दी। उसने "बारह" को केवल यहूदियों के लिए और "सत्तर" को उन शहरों में भेजा, जहाँ वह जाएगा। जब उसने अपने शिष्यों को "महान आज्ञा" दी, तो इसमें यरूशलेम, यहूदिया, सामरिया और पृथ्वी के छोर तक शामिल थे। यीशु ने अपने गंतव्यों की यात्रा के संबंध में जो निर्देश दिए थे, वे अत्यावश्यकता के भाव में लिपटे हुए लग रहे थे। उनके शिष्यों को यात्रा के लिए कोई औपचारिक तैयारी नहीं करनी थी। उन्हें अपनी यात्रा या अपने समर्थन के लिए कुछ भी हासिल नहीं करना था जैसे कि पैसा, कपड़े, सामान या भोजन। और उन्हें रास्ते में किसी के साथ विद्वेष, चिटचैट या बेकार की बातचीत नहीं करनी थी। यह निर्देश 1 राजा 13 में कहानी के राजदूतों को याद दिलाएगा: परमेश्वर ने एक भविष्यवक्ता को एक मिशन पर भेजा था जिसमें विशेष निर्देश थे कि रास्ते में खाने और पीने के लिए न रुकें। उसने अवज्ञा की और तुरंत मर गया। एक शहर में प्रवेश करने पर यीशु

के राजदूतों को एक "शांति का आदमी" मिलना था। उन्हें उसके घर में रहना था और उस शहर में रहने की अवधि के दौरान उसका खाना खाना था। उनके घर में प्रवेश करने पर उन्हें "शालोम अलीखेम" या "आप पर शांति हो" के साथ लोगों का अभिवादन करना था। शब्द "शालोम" न केवल शांति का विचार देता है बल्कि सुरक्षा, कल्याण, स्वास्थ्य, संतोष, सफलता, आराम, अखंडता और पूर्णता भी बताता है। जब यह अभिवादन दिया जाता है, तो भगवान उस घर के लोगों को अपनी शांति और कृपा प्रदान करते हैं। यदि यीशु के राजदूतों को उस घर द्वारा अस्वीकार कर दिया जाता है, तो परमेश्वर अपनी शांति और अनुग्रह वापस ले लेता है। अपने राजदूतों को विश्वसनीयता देने के लिए, यीशु ने उन्हें हर तरह की बीमारी और बीमारी को ठीक करने की शक्ति दी। वे कोढ़ियों को शुद्ध करने और दुष्टात्माओं को निकालने में सक्षम थे। किसी के चंगे हो जाने के बाद उन्हें यह घोषणा करनी थी, “परमेश्वर का राज्य निकट है”। चंगा करने की शक्ति के साथ एक अतिरिक्त जिम्मेदारी आई। यीशु के राजदूतों को चंगाई के लिए कोई पैसा या मुआवजा लेने की अनुमति नहीं थी, क्योंकि उन्होंने स्वतंत्र रूप से भगवान से उपहार प्राप्त किया था, इसलिए उन्हें इसे स्वतंत्र रूप से देना चाहिए। यह 2 राजाओं 5 से नामान, कोढ़ी की कहानी के राजदूतों को याद दिलाएगा। भविष्यवक्ता एलीशा ने नामान को उसके कोढ़ से मुक्त रूप से चंगा किया, लेकिन एलीशा का सेवक गेहजी चंगाई के लिए कुछ मुआवजा प्राप्त करने के लिए नामान के पीछे दौड़ा। परिणामस्वरूप, एलीशा ने नामान के कोढ़ को गेहजी पर डाल दिया। यदि कोई घर या शहर उनकी बातों को मानने या मानने से इनकार करता है, तो यीशु के राजदूतों को सड़कों पर जाना चाहिए और अपने पैरों की धूल झाड़नी चाहिए। जब वे ऐसा कर रहे थे, तो वे कहने लगे, “तेरे नगर की धूल जो हमारे पांवों में लगी रहती है, हम तेरे साम्हने मिटा देते हैं; तौभी निश्चय जान लो, कि परमेश्वर का राज्य तुम्हारे निकट आ गया है।” ऐतिहासिक रूप से, यहूदी लोग एक गैर-यहूदी (गैर-यहूदी) शहर को छोड़ने और इज़राइल की भूमि पर लौटने से पहले अपने पैरों से अनुष्ठानिक रूप से अशुद्ध धूल को हिलाते थे। यीशु चाहता है कि उसके राजदूत इस विचार को उन लोगों तक पहुँचाएँ जिन्होंने उन्हें अस्वीकार कर दिया। कि वे यहूदी होकर परमेश्वर का वचन ग्रहण न करें, कि अब से वे उनके लिए अन्यजातियों के समान हों। इस अवधारणा को प्रेरितों के काम 13:51 में प्रदर्शित किया गया था। इस विचार के साथ रक्त दोषहीनता की अवधारणा आती है। जब लोग परमेश्वर के वचन को अस्वीकार करते हैं, तो जिन लोगों ने इसका प्रचार किया है वे निर्दोष हैं जब परमेश्वर उन लोगों के विरुद्ध न्याय करता है जिन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया था। इस अवधारणा को प्रेरितों के काम 18:6 में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया गया है। पाठ का बिंदु: यीशु के अनुसार, आपको इस तरह से प्रचार करना चाहिए। आवेदन: फसल के प्रभु के लिए उनकी फसल में श्रमिकों को भेजने के लिए हर दिन प्रार्थना करें। अगले सप्ताह कम से कम एक व्यक्ति को सुसमाचार का प्रचार करें, जो यीशु ने इसे करने के लिए कहा था, उसके करीब रहने की कोशिश करें।

पाठ # 23

सर्प और कबूतर बर्फ तोड़ने वाला: आपको क्यों लगता है कि ईसाई सुसमाचार प्रचार के बारे में अपर्याप्त और भयभीत महसूस करते हैं? परिचय: अपने शिष्यों को परमेश्वर के राज्य के संदेश की घोषणा करने के निर्देश देने के बाद, यीशु उन्हें शत्रुतापूर्ण वातावरण में प्रवेश करने के लिए तैयार करते हैं। वह चेलों को उन लोगों के बीच भेज रहा है जो उसके संदेश का विरोध करेंगे, यहाँ तक कि उन्हें मारने की हद तक। पवित्रशास्त्र पढ़ना:(मत्ती 10:16-23) (लूका 10:3) आज्ञाएँ: देखो, मैं तुम्हें भेड़ों के रूप में भेड़ियों के बीच में भेजता हूँ; इसलिए साँपों की नाईं चतुर और कबूतरों की नाईं भोले बनो।मनुष्यों से सावधान रहना;परन्तु जब वे तुम्हें पकड़वाएं, तो इस बात की चिन्ता न करना कि तुम कैसे और क्या बोलोगे; क्योंकि जो कुछ तुझे बोलना है उसी घड़ी तुझे दिया जाएगा। परन्तु जब जब वे इस नगर में तुझे सताएं, तब दूसरे को भाग जाना। पाठ: यीशु ने चेलों से कहा कि वह उन्हें भेड़ों के रूप में भेड़ियों के बीच भेज रहा है। पिछले पाठ में, यीशु ने उन्हें कुत्ते परिवार के बारे में बताया था। उसने कहा। "कुत्तों को पवित्र वस्तु मत दो।" निर्देश का मतलब था कि उन्हें कुछ भी नहीं देना था जो भगवान (पवित्र) से था जो पहले से ही भगवान (कुत्तों) को अस्वीकार कर चुके थे। दूसरे शब्दों में उन्हें इन लोगों को राज्य के संदेश का प्रचार नहीं करना था। शिष्यों को सांपों की तरह चतुर होना था, नीचे रहकर उनके संपर्क से बचना, चुपचाप और उद्देश्यपूर्ण ढंग से दृष्टि से दूर रहकर आगे बढ़ना था। उन्हें भी कबूतरों की तरह शांतिपूर्ण प्रकृति का होना चाहिए था। चेलों को अच्छे आचरण का प्रदर्शन करना था, न कि पुरुषों को तर्क के लिए उकसाना और न ही उन्हें ईसाइयों को सताने का कारण देना था। यीशु ने चेलों से कहा कि वे इन लोगों से सावधान रहें, इसलिए यह पहचानना महत्वपूर्ण हो जाता है कि वे किस तरह के लोग हैं। भेड़ियों की तरह, उनके पास कई सामान्य लक्षण हैं। वे समाज में एक साथ बंध जाते हैं, एक समूह के रूप में सबसे कमजोर व्यक्ति पर हमला करते हैं और आमतौर पर किसी चीज के बारे में चिल्लाते हैं। यीशु ने शिष्यों से कहा कि आप उन्हें उनके फल से पहचान सकते हैं: (1) प्रेम में चलने के बजाय शरीर के अनुसार जीना, (2) दूसरों को परमेश्वर के बच्चों को गिराना सिखाना और (3) कुड़कुड़ाना और परमेश्वर और उसके तरीकों के खिलाफ शिकायत करना। इन सावधानियों को लेने के बावजूद, यीशु ने कहा कि शिष्य सभी टकरावों से बचने में सक्षम नहीं होंगे। कुछ को अदालत में मुकदमा चलाया जाएगा और उनके संदेश के लिए सताया जाएगा। यीशु ने उन्हें आश्वासन दिया कि उन्हें इस बात की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है कि परीक्षण के दौरान अपनी रक्षा कैसे करें, क्योंकि पवित्र आत्मा उन्हें प्रबुद्ध करेगा कि क्या कहना है। एक बार जब चेलों को एक शहर में सताया गया, तो उन्हें तुरंत अगले शहर में भाग जाना था। यह सिद्धांत आज के ईसाइयों पर लागू होता है। एक बार जब एक व्यक्ति को मसीह की गवाही दी जाती है और उस गवाही के लिए गवाह को सताया जाता है, तो उसे उस व्यक्ति के लिए एक और गवाही नहीं देनी होती है, बल्कि वास्तव में जितनी जल्दी हो सके उससे दूर जाने के लिए बाध्य होता है। परमेश्वर गवाह को उस व्यक्ति के लहू का दोषी नहीं ठहराएगा यदि वह उसके पापों में मर जाए। इस समय परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने के अपने निर्देशों में, यीशु एक दिलचस्प कथन करते हैं, "क्योंकि मैं तुम से सच सच कहता हूं, जब तक मनुष्य का पुत्र नहीं आता, तब तक तुम इस्राएल के नगरों से होकर न जाना।" वह अनिवार्य रूप से अपने दूसरे आगमन की तुलना पूरे इस्राएल में सुसमाचार के प्रचार के साथ कर रहा है। कई वर्षों तक यह प्रचार कार्य करना कठिन था क्योंकि यहूदी लोग राष्ट्रों के बीच तितर-बितर हो गए थे और भूमि के नियंत्रण में नहीं थे। 1948 में, इज़राइल एक बार फिर से एक राष्ट्र बन गया और "अन्यजातियों का समय" पूरा हो गया। इज़राइल में सुसमाचार का प्रचार करना अभी भी मुश्किल है क्योंकि यह कानून के खिलाफ है लेकिन ईसाइयों के लिए यह प्राथमिक महत्व है कि वे अपने देश में यहूदी लोगों को संदेश जारी रखें। समूह चर्चा: आपको क्या लगता है कि किसी भी "परमेश्वर के वचन" को एक व्यक्ति में बोने

में कितना समय लगता है इससे पहले कि आप जो बोया है उसे काट सकें? (बिल्कुल तुरंत। 2 कुरिन्थियों 6:2 कहता है, देखो, अब "स्वीकार्य समय" है, देखो, अब "उद्धार का दिन" है। साथ ही आमोस 9:13 में यह कहता है, "देखो, दिन आ रहे हैं," घोषित करता है। यहोवा, “जब हल चलानेवाले को पकड़ लेगा।”) आपके विचार में सभोपदेशक 11:4 का क्या अर्थ है? जो हवा को देखता है वह बोता नहीं है और जो बादलों को देखता है वह काट नहीं पाएगा। (यह कविता हमें बताती है कि आदर्श परिस्थितियों की तलाश में एक भयभीत व्यक्ति न तो बोएगा और न ही काटेगा। उनका औचित्य इस तरह चलता है: 1) हवा मेरे बीज को अनुत्पादक जमीन पर उड़ा सकती है; इसलिए मैं इसे बर्बाद कर रहा हूं और 2) बादल संकेत कर रहे हैं कि बारिश हो सकती है; इसलिए फसल बर्बाद हो जाएगी।) एक व्यक्ति अपने डर को कैसे दूर कर सकता है? (जिस तरह से वह सोचता है उसे बदलकर। उदाहरण के लिए, ऊपर के मामले में वह अपने फेंक की दिशा बदल सकता है और अपनी फसलों को ढकने के लिए प्रावधान कर सकता है।) भगवान के वचन को बोने का सबसे अच्छा समय कब है? (भोर को अपना बीज बो, और सांझ को आलसी न होना, क्योंकि तू नहीं जानता कि बोना भोर होगा या सांझ, वा दोनों एक ही के अच्छे होंगे या नहीं - सभोपदेशक 11:6.) भजन संहिता 126 में क्या लिखा है :5-6 आपके लिए मायने रखता है? जो आंसुओं में बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए कटेंगे। जो अपने बीज का थैला लेकर रोता हुआ इधर-उधर जाता है, वह अपने पूलों को साथ लेकर जयजयकार के साथ फिर आएगा। आँसू बोने के समय को इंगित करते हैं। जमीन टूट गई है और अच्छी तरह से पानी पिलाया गया है आँसू दूसरे के या आपके अपने हो सकते हैं। छह प्रकार के आँसू हैं: आनंद (उत्पत्ति 33:4)दु:ख (2राजा 20:5)निराशा (एस्तेर 4:1 ,3) कष्ट - जैसे प्रसव (यशायाह 42:14) पश्चाताप (योएल 2:12-13) करुणा (यूहन्ना 11:35) अपने बीज बोने का एक बुद्धिमान तरीका क्या है? (शान्ति से बोओ। याकूब 3:17-18 कहता है, "परन्तु ऊपर से आनेवाली बुद्धि पहिले तो शुद्ध है, फिर शान्तिप्रिय, कोमल, कोमल, दया और अच्छे फलों से भरपूर, अटल, कपट रहित है। और वह बीज जिसका फल धार्मिकता है। जो मेल मिलाप करते हैं उनके द्वारा शांति से बोया जाता है") कितनी बुवाई करनी चाहिए? (यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुम कितना काटना चाहते हो। 2 कुरिन्थियों 9:6 कहता है, अब मैं यह कहता हूं, जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी; और जो बहुत बोता है वह भी बहुत काटेगा।) तुम क्या बो रहे हो? (धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता; क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।) सबक का बिंदु: जिस तरह से आप सुसमाचार की घोषणा करते हैं, उसमें बुद्धिमान बनें। आवेदन: फसल के प्रभु के लिए उनकी फसल में श्रमिकों को भेजने के लिए हर दिन प्रार्थना करें। अगले सप्ताह कम से कम एक व्यक्ति को सुसमाचार का प्रचार करें, जो यीशु ने इसे करने के लिए कहा था, उसके करीब रहने की कोशिश करें।

पाठ # 24

गंभीर निर्णय आइसब्रेकर: क्या आप यीशु मसीह के लिए शहीद होना चाहते हैं? _____क्यों या क्यों नहीं? _____

परिचय: शास्त्रों में शहीद के लिए ग्रीक शब्द "मार्टस" है। इसका सीधा सा अर्थ है "गवाह या गवाही" और यह जरूरी नहीं कि मृत्यु के विचार को व्यक्त करे। पूरे पवित्रशास्त्र में यह शब्द किसी बात का प्रमाण देने से जुड़ा है। मृत्यु शहीद शब्द के साथ जुड़ गई क्योंकि जो लोग गवाह थे वे उनकी गवाही की वैधता के बारे में आश्वस्त थे, यहां तक कि वे जो विश्वास करते थे उसके लिए मरने के बिंदु तक। ईसाइयों के रूप में हमें शहीदों के रूप में रहना चाहिए, हमारे शब्दों और कार्यों के माध्यम से मसीह में एक बदले हुए जीवन का प्रमाण देते हुए। शास्त्र पढ़ना:(मत्ती 10:24-42) आज्ञाएँ: इसलिए, उनसे मत डरो। जो मैं तुम्हें अंधेरे में कहता हूं, प्रकाश में बोलो। जो तुम अपने कान में फुसफुसाते हो, उसे छतों पर सुनाते हो।और करो उन लोगों से मत डरो जो शरीर को मारते हैं, लेकिन आत्मा को मारने में असमर्थ हैं, बल्कि उससे डरो जो शरीर और आत्मा को नरक में नष्ट करने में सक्षम है। इसलिए, डरो मत। यह मत सोचो कि मैं पृथ्वी पर शांति लाने आया हूं; मैं शांति लाने नहीं, तलवार लेने आया हूं। पाठ: यीशु एक व्यावहारिक थे और उन्होंने अपने शिष्यों को प्रेरित करने के लिए प्रचार का उपयोग नहीं किया। उसने उन्हें सच बताया। उनके विश्वास और उनके द्वारा घोषित संदेश के लिए उन्हें सताया जाएगा। आसन्न उत्पीड़न के संदेश के बावजूद, यीशु अपने शिष्यों के लिए कई आदेश जारी करता है कि वे सीधे उस डर का सामना करें जिसका वे अनुभव करते हैं। वह सचमुच अपने शिष्यों को आज्ञा देता है कि वे मनुष्यों से न डरें, बल्कि परमेश्वर से डरें। एक आदेश जारी करके, यीशु शिष्यों को निर्णय लेने के लिए बाध्य कर रहे हैं। क्या वे परमेश्वर या उनकी भावनाओं के द्वारा शासित होने का चुनाव करेंगे? भगवान को चुनने का तर्क सरल है। पुरुष शरीर को मार सकते हैं, जो वैसे भी हमेशा के लिए नहीं रहने वाला है। लेकिन उनके पास आत्मा को नष्ट करने की कोई शक्ति नहीं है, जो हमेशा के लिए रहेगी। केवल ईश्वर के पास ही वह शक्ति है। इसलिए मनुष्यों से परमेश्वर का भय मानना उत्तम है। यीशु चेलों को यह कहकर सांत्वना देते हैं कि वह उनकी गवाही को सामने लाने में उनमें से प्रत्येक के साथ सक्रिय रूप से लगे रहेंगे। वास्तव में, वह उनका मार्गदर्शन करेगा कि क्या कहना है। "जो मैं तुम से अन्धकार में कहता हूं, उजियाले में कहो।" इस मामले में यीशु कह रहा है कि वह उनके साथ सपनों और दर्शनों के माध्यम से संवाद करेगा। इसके कई संदर्भ हैं: “अब एक बात चुपके से मेरे पास पहुंचाई गई, और मेरे कान ने उसकी फुसफुसाहट सुनी। रात के दर्शनों से घबराए हुए विचारों के बीच, जब पुरुषों को गहरी नींद आती है, तो मुझ पर भय छा गया, और कांपने लगा, और मेरी सभी हड्डियों को हिला दिया। तब एक आत्मा मेरे मुख के पास से निकली; मेरे मांस के बाल झड़ गए। वह स्थिर खड़ा रहा, परन्तु मैं उसका रूप न समझ सका; मेरी आँखों के सामने एक रूप था; तब सन्नाटा छा गया, और मैं ने यह शब्द सुना:” (अय्यूब 4:12) “इसके बाद मैं सब मनुष्यों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा; और तेरे बेटे-बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी, तेरे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तेरे जवान दर्शन पाएंगे।” (योएल 2:28 और प्रेरितों के काम 2:17) रात में पौलुस को एक दर्शन दिखाई दिया: मकिदुनिया का एक व्यक्ति खड़ा होकर उससे बिनती कर रहा था, और कह रहा था, “मकिदुनिया में आकर हमारी सहायता कर।” जब उसने यह दर्शन देखा, तो हम ने तुरन्त मकिदुनिया जाने का प्रयत्न किया, और यह समझकर कि परमेश्वर ने हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिये बुलाया है। (प्रेरितों 16:9-10) यीशु अपने शिष्यों से यह भी कहते हैं, “जो कुछ तुम अपने कानों में फुसफुसाते हुए सुनते हो, छतों पर उसका प्रचार करो।” इस मामले में यीशु कह रहे हैं कि वह उनके साथ उनके कानों में फुसफुसाते हुए, उनके साथ श्रव्य रूप से संवाद करेंगे। यह

बेहद आम है। अदन की वाटिका के समय से ही परमेश्वर मनुष्यों से बातें करता आ रहा है। कुछ पुरुष परमेश्वर की वाणी सुनने से इंकार करते हैं और अन्य लोग उसकी अवज्ञा करना चुनते हैं। जब यीशु से पूछा गया कि सबसे बड़ी आज्ञा कौन सी है, तो उसने इस तरह उत्तर दिया: "सबसे महत्वपूर्ण है, 'हे इस्राएल, सुन! हमारा परमेश्वर यहोवा एक ही यहोवा है; और तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपके सारे मन से, और अपके सारे प्राण से, और अपके सारे मन से, और अपकी सारी शक्ति से प्रेम रखेगा। इन से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं।" (मरकुस 12:29-31) क्या आपने इस पर ध्यान दिया? पहली आज्ञा है सुनना, उसके बाद प्रेम करना। परमेश्वर उसे प्रेम करने की तुलना उसकी वाणी सुनने के साथ कर रहा है ताकि उसका पालन किया जा सके! यीशु का एक और कथन इसका समर्थन करता है, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे" (यूहन्ना 14:15)। यीशु की आवाज सुनने वाले शिष्यों के कुछ संदर्भ निम्नलिखित हैं: "भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं, और वह अपनी भेड़ों को नाम लेकर बुलाता है और उन्हें बाहर ले जाता है। जब वह अपना सब कुछ देता है, तब वह उनके आगे आगे जाता है, और भेड़ें उसके पीछे पीछे हो लेती हैं, क्योंकि वे उसका शब्द जानती हैं। वे किसी परदेशी का अनुसरण नहीं करेंगे, वरन उसके पास से भाग जाएंगे, क्योंकि वे परदेशियों का शब्द नहीं जानते।" (यूहन्ना 10:3-5) "मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।" (यूहन्ना 10:27) "हर कोई जो सत्य का है, मेरा शब्द सुनता है।" (यूहन्ना 18:37) और वह भूमि पर गिर पड़ा, और यह शब्द उस से सुना, "हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?" और उसने कहा, "हे प्रभु, तू कौन है?" और उस ने कहा, मैं यीशु हूं जिसे तुम सताते हो, परन्तु उठकर नगर में प्रवेश कर, तो तुझे बताया जाएगा कि तुझे क्या करना है। (प्रेरितों 9:4-6) इसलिए, जैसा पवित्र आत्मा कहता है, "आज यदि तुम उसका शब्द सुनो।" (इब्रानियों 3:7) समूह चर्चा: कई क्रिसमस कार्ड लूका 2:14, "पृथ्वी पर शांति, मनुष्यों के प्रति सद्भावना" के वाक्यांश के साथ शुरू होते हैं। यह दृष्टिकोण यीशु की कही हुई बातों से कैसे मेल खाता है, "यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर मेल कराने आया हूं; मैं मेल कराने नहीं, परन्तु तलवार लेने आया हूँ?" (लूका 2:14 का अधिक सटीक अनुवाद है, "पृथ्वी पर उन मनुष्यों के बीच शांति, जिनसे परमेश्वर प्रसन्न होते हैं।" दूसरे शब्दों में, "पृथ्वी पर केवल उन्हीं को शांति मिलती है जिन पर परमेश्वर प्रसन्न होता है।" यीशु का प्राथमिक उद्देश्य था लोगों को परमेश्वर से मिलाने के लिए, पृथ्वी पर शांति लाने के लिए नहीं। वह जानता था कि जो वह घोषणा कर रहा था वह लोगों को विभाजित करेगा। वे या तो उसके लिए होंगे या उसके खिलाफ होंगे।) कौन अधिक सुंदर है, सफेद लिली या लाल गुलाब? _____ प्रत्येक की विशेषताओं की सूची बनाएं और एक समूह निर्णय पर आएं। सबक - जारी रखा: प्रारंभिक चर्च ने प्रभु यीशु मसीह के संबंध में एक व्यक्ति की गवाही के महत्व को पहचाना और उसकी गवाही के दो पहलुओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रतीकों का विकास किया। घाटी की लिली सफेद थी, जो संतों के अच्छे कामों को दर्शाती थी। यह जीवित रहते हुए पुरुषों के सामने एक व्यक्ति की गवाही का प्रतिनिधित्व करता था। शेरोन का गुलाब लाल था, जो शहीदों के खून का प्रतीक था। यह उसकी मृत्यु के तरीके में परमेश्वर के सामने एक व्यक्ति की गवाही का प्रतिनिधित्व करता है। दोनों फूल सुगंधित होते हैं। जिस प्रकार फूलों की सुगंध मनभावन होती है, उसी प्रकार एक ईसाई को ईश्वर को प्रसन्न करना चाहिए चाहे वह जीवित रहे या मरे। क्या अपने विश्वास के लिए जीना बेहतर है या अपने विश्वास के लिए मरना? प्रेरित पौलुस उसी दुविधा से जूझ रहा था। फिलिप्पियों के नाम अपनी पत्री के पहले अध्याय में वह इस मुद्दे से निपटता है। 62 ईस्वी में अपना पत्र लिखने के समय, पॉल रोम में नजरबंद था और यीशु मसीह के सुसमाचार की घोषणा के लिए सजा की प्रतीक्षा कर रहा था। क्या वह जीवित रहेगा या वह मर जाएगा? सुनिए उन्होंने क्या कहा। "मसीह अब भी, हमेशा की तरह, मेरे शरीर में ऊंचा किया जाएगा, चाहे जीवन के द्वारा या मृत्यु के द्वारा। क्योंकि मेरे लिए जीना मसीह है और मरना लाभ है। परन्तु यदि मैं शरीर में जीवित रहूं,

तो यह मेरे लिये फलदायी परिश्रम ठहरेगा; और मुझे नहीं पता कि किसे चुनना है। परन्तु मैं दोनों दिशाओं से कठोर हूं, और जाने और मसीह के साथ रहने की अभिलाषा रखता हूं, क्योंकि यह तो बहुत अच्छा है; तौभी शरीर में बने रहना तुम्हारे लिये अधिक आवश्यक है। इस बात से आश्वस्त होकर, मुझे पता है कि मैं आपकी प्रगति और विश्वास में आनंद के लिए आप सभी के साथ बना रहूंगा और आपके साथ रहूंगा। " और पॉल जीवित रहा। उस वर्ष बाद में उन्हें जेल से रिहा किया गया और मिशन के क्षेत्र में चार और साल बिताए। 67 या 68 ईस्वी में अपनी आस्था के लिए उन्हें फिर से जेल में डाल दिया गया और शहीद कर दिया गया। जीने या मरने के लिए बेहतर था या नहीं, पॉल का निर्णय मृत्यु या व्यक्तिगत नुकसान के डर से प्रेरित नहीं था। उन मुद्दों को तय किया गया था जब उसने पहली बार विश्वास किया था। यीशु के "डरो मत" के निर्देशों का पालन करते हुए, पॉल ने निर्णय लिया कि मसीह को उसके शरीर में ऊंचा किया जाएगा चाहे वह जीवित रहे या मरे। यह प्रत्येक मसीही विश्वासी के जीवन का केन्द्र बिन्दु और उद्देश्य होना चाहिए। जीवन और मृत्यु के निर्णय लेने में उसकी मदद करने के लिए पौलुस ने दो परीक्षाओं का उपयोग किया: क्या यह केवल मेरी अपनी ही नहीं परमेश्वर की महिमा के लिए है? (मेरे लिए जीना मसीह है और मरना उसके साथ रहना है) क्या यह सिर्फ मेरे ही नहीं दूसरों के हित में है? (मैं दूसरों को खुद से ज्यादा महत्वपूर्ण मानता हूं) समूह चर्चा: क्या आप मौत से नहीं डरना चुनेंगे? (क्या आप वास्तव में मसीह के विषय में अपने स्वयं के संदेश पर विश्वास करते हैं?) क्या आप व्यक्तिगत नुकसान से नहीं डरना चुनेंगे? (क्या आप इस दुनिया की चीजों से बहुत ज्यादा प्यार करते हैं?) क्या आप उत्पीड़न से नहीं डरना चुनेंगे? (क्या आप मनुष्यों या भगवान की स्तुति के लिए जीते हैं?) फुटनोट: सफेद गेंदे और लाल गुलाब दोनों का उपयोग विजेता का ताज बुनने के लिए किया जाता है। प्रत्येक आस्तिक को एक प्राप्त होगा, जो उन लोगों का प्रतीक है जिनका विश्वास जीवन के माध्यम से और जिनका विश्वास मृत्यु के माध्यम से विजय प्राप्त करता है। सबक का बिंदु: भगवान में विश्वास से पुरुषों का डर दूर हो जाता है आवेदन: फसल के भगवान के लिए हर दिन प्रार्थना करें कि वह अपनी फसल में श्रमिकों को भेजे। इस सप्ताह कम से कम एक व्यक्ति को सुसमाचार का प्रचार करें कि कैसे करीब रहने की कोशिश करें यीशु ने करने के लिए कहा।

पाठ 25

परमेश्वर के समाधान की तलाश में आइसब्रेकर: यदि आप किसी को परमेश्वर का वचन सिखाते और चिन्ह और चमत्कार करते हुए सुनते हैं, तो आप क्या करेंगे? परिचय: जब शिष्य मार्च के अंत में अपने पहले प्रचार दौरे से लौटते हैं, तो यीशु उन्हें अपने साथ बेथसैदा ले जाते हैं। लेकिन बेथसैदा में मंत्रालय का काम करना इतना भारी है कि उनके पास खाने का समय नहीं है। तो यीशु ने सुझाव दिया कि वे नाव में बैठें और थोड़ा आराम और विश्राम के लिए अकेले चले जाएं ... किसी शांत स्थान पर। हालांकि, राक्षसों को बाहर निकालना, लोगों को चंगा करना और संकेत और चमत्कार करना भीड़ को आकर्षित करता है। लाकेशोर के साथ दौड़ते हुए लोग नाव की प्रगति का अनुसरण करते हैं और तट में डालने से पहले पहुंच जाते हैं। अपनी थकान के बावजूद यीशु भीड़ पर दया करते हैं और शेष दिन उन्हें सिखाने में व्यतीत करते हैं। पवित्रशास्त्र पढ़ना:(मत्ती 14:15-21) (मरकुस 6:35-44) (लूका 9:12-17) (यूहन्ना 6:3-14) 5000 लोगों को खिलाने की घटना को बेहतर ढंग से समझने के लिए, मेरे पास है सुसमाचार के चारों वृत्तान्तों को इस प्रकार एक पठन में मिला दिया: और दिन ढलने लगा, और बारहों ने आकर उस से कहा, भीड़ को विदा कर, कि वे आसपास के गांवों और ग्रामीण इलाकों में जाकर ठहरने का स्थान ढूंढे और प्राप्त करें खाने के लिए कुछ, क्योंकि हम यहाँ एक उजाड़ स्थान पर हैं।" परन्तु यीशु ने उन से कहा, उन्हें जाने की आवश्यकता नहीं, तुम उन्हें खाने के लिए कुछ दे दो। और उन्होंने उस से कहा, क्या हम जाकर दो सौ दीनार रोटी पर खर्च करें और उन्हें कुछ खाने को दें? तब यीशु ने आंखें उठाकर, कि एक बड़ी भीड़ उसके पास आ रही है, फिलिप्पुस से कहा, हम कहां से रोटी मोल लें, कि ये खा सकें? और यह उसकी परीक्षा लेने को कह रहा था; क्योंकि वह स्वयं जानता था कि वह क्या करना चाहता है। फिलिप्पुस ने उसे उत्तर दिया, "दो सौ दीनार की रोटी उनके लिए पर्याप्त नहीं है, कि प्रत्येक को थोड़ा मिल सके।" और उस ने उन से कहा, तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं? जाकर देखो! उसके चेलों में से एक, शमौन पतरस के भाई अन्द्रियास ने उससे कहा, "यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं, परन्तु इतने लोगों के लिए ये क्या हैं?" और उसने कहा, "उन्हें यहाँ मेरे पास ले आओ।" और उस ने अपके चेलोंसे कहा, क्या उन को पचास-पचास की टोली में खाने को बैठने दो। और उन्होंने वैसा ही किया, और उन सब को लेटा दिया। अब उस जगह पर बहुत घास थी। और वे सैकड़ों और अर्धशतक की कंपनियों में झुक गए। और उस ने वे पांच रोटियां और दो मछिलयां लीं, और आकाश की ओर दृष्टि करके खाने को आशीष दी, और रोटियां तोड़ीं, और चेलोंको उनके आगे परोसने के लिथे देता रहा; और उसने उन दो मछलियों को उन सब में बांट दिया। और वे सब खाकर तृप्त हुए। और जब वे भर गए, तो उस ने अपने चेलों से कहा, बचे हुए टुकड़े बटोर लो, कि कुछ खो न जाए। और उन्होंने टूटे हुए टुकड़ों में से बारह टोकरियाँ भरीं, और मछलियों में से भी। और स्त्रियों और बालकों को छोड़ कर खाने वाले कोई पांच हजार पुरूष थे। आज्ञा: अकेले किसी सुनसान जगह पर आ जाओ और कुछ देर आराम करो।तुम उन्हें खाने के लिए कुछ दो।तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं? जाओ देखो!उन्हें यहाँ मेरे पास लाओ।उन्हें लगभग पचास-पचास के समूह में खाने के लिए लेटाओ।बचे हुए टुकड़े इकट्ठा करो कि कुछ भी खो न जाए। समूह चर्चा: आपको कितनी बार सेवकाई का काम करने से छुट्टी लेनी चाहिए? _____

_ सबक: शिष्यों के लिए नए मंत्रालय के पाठ तैयार हैं। अपनी मिशनरी यात्राओं के दौरान चेलों ने उन निर्देशों पर ध्यान केंद्रित किया था जो यीशु ने उन्हें फसल के खेत में जाने के बारे में दिए थे। अब उनका सामना तत्काल सेटिंग में मंत्रालय करने से हो रहा है। आइए यह कहकर शुरू करें कि परमेश्वर कोई कार्यपालक नहीं है। वह अपने लोगों को मुश्किल से नहीं चलाता। यीशु ने अपने शिष्य की आराम और विश्राम की आवश्यकता को पहचाना और उन्हें कुछ लेने की आज्ञा

दी। चर्च मंत्रालयों में शामिल बहुत से लोग वास्तव में खुद को जला देते हैं क्योंकि वे एक ब्रेक नहीं लेंगे। उनकी विफलता आमतौर पर गर्व के मुद्दे से जुड़ी होती है। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि वे मानते हैं कि भगवान ने उन्हें जो मंत्रालय दिया है वह उनके बिना एक मिनट (आत्म महत्व) के बिना नहीं चल सकता। या काम करने वाला कोई और नहीं है (भगवान प्रदान करने में विफल रहा है)। या शायद, वे केवल परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं जब वे सेवकाई का कार्य कर रहे होते हैं (परमेश्वर एक कार्यपालक है)। परमेश्वर आलस्य को माफ नहीं करता है, लेकिन वह यह भी नहीं चाहता है कि उसके लोग भी काम के शौकीन हों। यही कारण है कि उसने बाइबल में ऐसे कई अवसर दिए हैं जिनमें उन्हें आराम करने की आवश्यकता थी: सप्ताह में एक दिन। हर साल सात छुट्टियां। प्रति वर्ष तीन छुट्टियां: वसंत, 8 दिन प्लस यात्रा का समय, गर्मी, 2 दिन प्लस यात्रा समय, और पतझड़, 8 दिन प्लस यात्रा का समय। हर सातवें साल पूरे साल की छुट्टी। साथ ही पूरे साल हर छुट्टी पचासवाँ साल।और वो सिर्फ आराम की आवश्यक अवधि थी! समूह चर्चा: जब आप अत्यधिक आवश्यकता की भावना का सामना करते हैं तो आप कैसे प्रतिक्रिया करते हैं? _____

सबक जारी रहा: जैसे-जैसे शिष्यों को सिखाया जा रहा लोगों की शारीरिक जरूरतों के बारे में पता चलता है, वे अपनी चिंताओं के साथ यीशु के पास जाते हैं। हम में से कई लोगों की तरह उनका पहला उपाय यह है कि लोगों को उनकी जरूरतों के लिए प्रावधान करने के लिए उन्हें दूर भेज दिया जाए। यह एक विवेकपूर्ण और उचित विचार है। "सभी को आत्मनिर्भर होने दें और अपनी खुद की सामग्री का मालिक बनें।" अमेरिका में, हम इसे रिपब्लिकन तरीका कह सकते हैं। लेकिन यीशु उस विचार को तुरंत रोक देते हैं। वह अपने चेलों को आज्ञा देता है, “तू उन्हें खाने को कुछ दे।” वह चाहता है कि शिष्य इन लोगों की जरूरतों के लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारी स्वीकार करें। और शायद इसने उनके लिए सदियों पुराने प्रश्न का उत्तर दिया, "क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ" (उत्पत्ति 4:9)। अपनी प्रतिक्रिया से, यीशु ने स्पष्ट रूप से विश्वास किया कि प्रेम का मार्ग जरूरतमंद लोगों की मदद करके व्यक्त किया गया था। अपने व्यक्तिगत उत्तरदायित्व को स्वीकार करते हुए चेले यीशु को एक वैकल्पिक समाधान के साथ प्रस्तुत करते हैं। हम में से कई लोगों की तरह इसका समाधान लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए अपना पैसा खर्च करना है। निश्चित रूप से यह एक विवेकपूर्ण और उचित विचार है। "आइए हम स्वीकार करें कि सामाजिक जिम्मेदारी है और उस पर कुछ पैसे फेंक दें।" अमेरिका में, हम इसे डेमोक्रेटिक तरीका कह सकते हैं। लेकिन यीशु उस विचार पर विराम लगाते हैं, साथ ही शिष्यों को स्थिति के माध्यम से तार्किक रूप से सोचने के लिए मजबूर करते हैं। क्योंकि वे बीच में कहीं नहीं हैं, वह पूछता है, "हम कहां से रोटी मोल लें, कि ये खा सकें?" दूसरे शब्दों में: क्या आपको याद है कि दिन में देर हो चुकी है?चूंकि हम एक दूरस्थ स्थान पर हैं, आप रोटी लेने के लिए कहाँ जा रहे हैं?क्या आप एक शहर में इन सभी लोगों के खाने के लिए पर्याप्त रोटी प्राप्त कर सकते हैं या आपके पास होगा कई शहरों में जाने के लिए?तुम किस शहर में जाओगे?क्या शहर में किराने की दुकान है या आपको घर-घर रोटी मांगनी पड़ेगी? अगर आप रोटी खरीदते हैं तो पैसे कौन लेता है अगर आप अलग-अलग शहरों में जाते हैं?तो आप रोटी को यहाँ वापस कैसे ले जाएँगे? अंत में, फिलिप ने स्थिति की भयावहता को समझ लिया जब वह जवाब देता है, "दो सौ दीनार की रोटी उनके लिए पर्याप्त नहीं है, हर किसी के लिए थोड़ा प्राप्त करने के लिए।" फिलिप के दिल को आशीर्वाद। लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए उनके पास जो भी पैसा था, वह खर्च करने को तैयार थे, लेकिन यहां तक कि उन्होंने इस विचार की निरर्थकता को भी देखा। पैसा खर्च करने के बाद वे खुद की देखभाल करने, मंत्रालय के काम को बढ़ावा देने या भविष्य की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम नहीं होंगे। दूसरों की जरूरतों को पूरा करने के लिए शिष्य के समाधान सुनने के बाद, यीशु अपना समाधान स्वयं प्रदान करते हैं। यह एक परिचित पैटर्न

का अनुसरण करता है, विश्वास से जीना:माँगना - परमेश्वर से एक रहस्योद्घाटन या वचन के लिए। इसे रीमा कहा जाता है: एक व्यक्तिगत रहस्योद्घाटन या एक स्थिति में एक व्यक्ति के लिए भगवान से शब्द। यह मदद मांगने और उत्तर की प्रतीक्षा करने जैसा है।यीशु जानता था कि वह क्या करने जा रहा है। और यह उसकी परीक्षा लेने को कह रहा था; क्योंकि वह स्वयं जानता था कि वह क्या करने का इरादा रखता है।खोज - इसे पूरा करने के लिए संसाधनों की तलाश में दूसरों को भगवान की योजना के बारे में बताएं। "आपके पास कितनी रोटियां हैं? जाओ देखो!" "उन्हें यहां मेरे पास लाओ।" और उस ने अपके चेलोंसे कहा, उन को कोई पचास-पचास की टोली में खाने के लिथे लिटा दो। दस्तक - भगवान की योजना पर कार्रवाई करें कि वह आपके लिए अपना वचन पूरा करेगा। भगवान को उनके प्रावधान के लिए धन्यवाद। और उन्होंने पांच रोटियां और दो मछलियां लीं, और स्वर्ग की ओर देखकर, उन्होंने भोजन को आशीर्वाद दिया। उसने जो कहा वह करो और रोटियों को तोड़ दिया, और चेलों को उनके आगे परोसने के लिये देता रहा, और उन दो मछलियों को उन सब में बांट दिया, "बचे हुए टुकड़े बटोर लो, कि कुछ खो न जाए।" और उन्होंने टूटे हुए टुकड़ों में से बारह टोकरियाँ भरीं, और मछलियों में से भी। जरूरतों के लिए प्रावधान प्राप्त करने के प्राथमिक पैटर्न को प्रदर्शित करने के अलावा, यीशु अपने शिष्यों को अपनी आज्ञाओं के माध्यम से कुछ अन्य सिद्धांत भी सिखाता है। आइए उनकी जांच करें। जब यीशु ने कहा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं? देखने के लिए जाना!" वह संकेत दे रहा है कि जब कोई आवश्यकता उत्पन्न होती है तो उन संसाधनों को देखें जिन्हें ईश्वर ने विशिष्ट आवश्यकता को पूरा करने के लिए पहले ही प्रदान किया है। यह कहते हुए, "उन्हें यहाँ मेरे पास ले आओ।" यीशु कह रहा है कि वह चाहता है कि उसके चेले अपने संसाधनों को उसके पास लाए। स्वर्ग और पृथ्वी के भगवान के रूप में वह अपनी जरूरत को पूरा करने के लिए छोटे से छोटे संसाधनों को भी गुणा कर सकता है। यीशु ने अपने शिष्यों को पचास के दशक और पुराने नियम के बाद एक सैकड़ों लोगों को समूह में रखा था लोगों की सेवा करने का पैटर्न। मूल समूह दसियों, अर्द्धशतक, एक सैकड़ों और एक हज़ार थे और प्रत्येक समूह के लिए एक नेता था जो लोगों की सेवा करता था। उदाहरण के लिए जब दस पुरुष मिल सकते थे तो एक आराधनालय स्थापित किया गया था और बड़े को नियुक्त किया गया था। यह परमेश्वर को उसके भोजन के लिए धन्यवाद देना हमेशा उचित होता है, जैसा कि यह प्रतीत हो सकता है। तब यीशु ने जो कुछ उसके पास था उसे देना शुरू कर दिया और जो उसके पास था वह कई गुना बढ़ गया। यह "बोने और काटने" के कानून से आता है। "दे, और यह तुम्हें दिया जाएगा। वे तुम्हारी गोद में एक अच्छा नाप डालेंगे। दबे हुए, और हिलाए हुए, और दौड़ते हुए दौड़ते हुए, क्योंकि तेरे नाप के नाप से वह तेरे बदले में नापा जाएगा।” (लूका 6:38) अब मैं यह कहता हूं, कि जो थोड़ा बोता है, वह थोड़ा काटेगा, और जो बहुत बोएगा, वह भी बहुत काटेगा। परमेश्वर हर्ष से देनेवाले से प्रेम करता है। और परमेश्वर आप पर सब प्रकार का अनुग्रह करने में समर्थ है, ताकि हर वस्तु में सर्वदा पर्याप्तता के साथ, तुम्हारे पास हर एक भले काम के लिए बहुतायत हो; जैसा लिखा है, "वह विदेश में बिखरा हुआ है, उसने तुम्हें दिया है।" बेचारा, उसका धर्म सदा बना रहता है।" अब वह जो बोने वाले को बीज और भोजन के लिए रोटी देता है, वह आपके बीज को बोने के लिए प्रदान करेगा और आपके धर्म की फसल को बढ़ाएगा; आप सभी उदारता के लिए हर चीज में समृद्ध होंगे, जो हमारे माध्यम से भगवान को धन्यवाद देता है। सेवकाई के लिए यह सेवा न केवल संतों की जरूरतों को पूरी तरह से पूरा कर रही है, बल्कि परमेश्वर को बहुत धन्यवाद के माध्यम से भी बह रही है। (2 कुरिन्थियों 9:6-12)ध्यान दें, यीशु ने अपना सब कुछ दे दिया। अंत में, यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि जो कुछ बचा था उसे इकट्ठा करो। वह चाहता है कि चेले यह पहचानें कि जो कुछ भी भगवान आपूर्ति करता है, वह एक कारण से करता है। इसलिए उसके प्रावधान को बर्बाद न करें। भले ही वे इस समय अधिशेष की तत्काल आवश्यकता नहीं देख सकते हैं भविष्य में एक उद्देश्य। समूह चर्चा: यीशु के आस-पास के लोग

कौन थे और उसने उन्हें क्या खिलाया? (लूका 4:18)गरीबों ने "सुसमाचार का प्रचार किया (सुसमाचार)"बंदियों ने "मुक्ति की घोषणा की" अंधे "घोषित ठीक हो गए" y दृष्टि"दलित "घोषित स्वतंत्रता" आपके आस-पास के लोग कौन हैं? _____
_____ जब आपको एहसास होता है कि आपके पास दुनिया की जरूरतों में योगदान करने के लिए विशेष उपहार हैं तो आपको कैसा महसूस होता है? _____
_____ सबक का बिंदु: परमेश्वर चाहता है कि आप लोगों को आशीष देने और उसके नाम की महिमा करने के लिए आपका उपयोग करें। आवेदन: अपने आसपास के लोगों के लिए मंत्री।

पाठ 26

डरो मत! आइसब्रेकर: क्या कभी प्रभु ने आपसे कुछ ऐसा करने के लिए कहा है, जिसका पालन करना आपको कठिन लगा? यदि उत्तर हाँ है, तो घटनाओं का वर्णन कीजिए। परिचय: जब यीशु ने केवल दो मछलियों और पाँच रोटियों से पाँच हज़ार आदमियों को खाना खिलाया तो लोग चकित रह गए। वे उसे राजा बनाना चाहते थे। यह जानकर, यीशु ने तुरंत अपने शिष्यों को नाव में बैठने और बेथसैदा लौटने के लिए कहा, जबकि वह प्रार्थना करने के लिए पहाड़ पर गया था। पहाड़ी पर अपने सुविधाजनक स्थान से यीशु ने दूर से शिष्यों को हवा के खिलाफ अपनी नाव चलाने के लिए संघर्ष करते हुए देखा। सो वह रात के चौथे पहर में जल पर चलते हुए उनके पास गया। पवित्रशास्त्र पढ़ना:(मत्ती 14:24-33) (मरकुस 6:47-52) (यूहन्ना 6:14-21) समूह चर्चा: यदि आप शिष्यों के साथ नाव में होते तो यीशु को चलते हुए देखने के बारे में आपने क्या सोचा होता जल? _____ _____ आपको क्यों लगता है कि यीशु उनके पास से गुजरने वाला था? _____ _____ आज्ञा: हिम्मत रखो, मैं हूं, डरो मत। सबक: इस कहानी की घटनाओं से कई सबक सीखे जा सकते हैं। प्राथमिक में यीशु जो करने के लिए कहता है उसकी आज्ञाकारिता शामिल है और ऐसा करने में वह वह सब प्रदान करेगा जो हमें उसके अनुरोध को पूरा करने के लिए चाहिए। आइए कहानी पर करीब से नज़र डालते हैं। क्रम तब शुरू होता है जब यीशु शिष्यों को अपनी नाव में बैठने और झील के दूसरी ओर बेथसैदा जाने के लिए कहते हैं। उन्होंने तुरंत उसकी बात मानी और यहां तक कि चलते रहे जब हवाओं और समुद्र ने उनके लिए मुश्किल बना दी। यीशु ने ऊपर से उनकी प्रगति को देखा। उसने उस संघर्ष को देखा जो वे उसकी आज्ञाओं का पालन करने में कर रहे थे जैसे वह हमारी करता है। उन पर दया करते हुए उन्होंने झील के उस पार चलने का फैसला किया ताकि उनके संघर्ष के बीच उन्हें प्रोत्साहन दिया जा सके। उस रात झील पर अंधेरा था इसलिए यीशु उनके पास काफी पास से गुजरा ताकि वे उसे पहचान सकें। पानी पर चलने का चमत्कार उन्हें आश्वस्त करने के लिए था। दूसरे शब्दों में, अगर वह कह रहा था, "चलते रहो दोस्तों, मैं तुम्हें बेथसैदा में वैसे ही देखूंगा जैसे मैंने कहा था।" इस अचानक हुई मुलाकात से शिष्यों को यह समझ में आ गया था कि यीशु उनकी कठिनाइयों से अवगत थे, लेकिन उनसे बाधाओं के बावजूद झील के दूसरी तरफ जाने की उम्मीद कर रहे थे। लेकिन परिणाम आश्चर्यजनक रूप से अलग था। शिष्य उनके अप्रत्याशित रूप से भयभीत थे, यह सोचकर कि उन्होंने भूत देखा है। शास्त्रों के अनुसार यह भय उत्पन्न हुआ क्योंकि वे रोटियों के चमत्कार के बारे में भूल गए थे और उनके दिल कठोर हो गए थे। हम में से बहुत से शिष्य भूल गए हैं कि यीशु अभी भी अपने लोगों के समर्थन में अलौकिक चीजें करता है। समूह चर्चा: यीशु को आपके पास पानी पर चलते हुए देखकर आपकी क्या प्रतिक्रिया रही होगी? क्या प्रभु ने आपके जीवन में कोई चमत्कार किया है? _____ यदि उसके पास है, तो हमें बताएं कि वे क्या थे और उन पर आपकी क्या प्रतिक्रियाएँ थीं। समय। संघर्ष के बीच में यीशु चाहता है कि हम उसकी आज्ञा को याद रखें, "हिम्मत रखो मैं हूँ, डरो मत"। कहानी की शुरुआत में यीशु अपने शिष्यों को अपने सामने झील के उस पार जाने के लिए कहते हैं जहां वह उनसे मिलेंगे। ईसाइयों को सभी को सुसमाचार प्रचार करने के लिए नियुक्त किया गया है और जब ऐसा होगा तो वह वापस आएंगे और हमसे हवा में मिलेंगे। "हिम्मत रखो यह मैं हूँ, डरो मत।" यीशु के जाने के बाद वह एक ऊँचे पहाड़ पर चला जाता है। यीशु के पुनरुत्थान के बाद वह स्वर्ग चला गया। "हिम्मत रखो मैं हूँ, डरो मत।" पहाड़ पर यीशु प्रार्थना करते हैं।यीशु, हमारे महायाजक हमारे लिए मध्यस्थता करने के लिए जीवित

हैं। "हिम्मत रखो यह मैं हूँ, डरो मत।" यीशु ने चेलों को विपरीत हवा के विरुद्ध आगे बढ़ने के लिए संघर्ष करते देखा। वह एक ऐसे संसार में उसकी इच्छा पूरी करने के लिए हमारे संघर्षों को देखता है जो परमेश्वर के विपरीत है। "हिम्मत रखो, मैं हूं, डरो मत।" वह शिष्यों को प्रोत्साहित करने के लिए चमत्कारिक तरीके से उनके पास आया। वह हमें प्रोत्साहित करने के लिए चमत्कारी तरीकों से हमारे पास आता है। "हिम्मत रखो, यह मैं हूं, डरो मत।" अलौकिक को देखकर शिष्य भयभीत हो गए। अलौकिक को देखकर ईसाई भयभीत हो जाते हैं। "हिम्मत रखो यह मैं हूं, डरो मत"। शिष्य अलौकिक घटना के बारे में निश्चित नहीं थे। क्या यह यीशु थे?ईसाई अलौकिक घटनाओं के बारे में भी आश्चर्य करते हैं। क्या यह वास्तव में यीशु है?“हिम्मत रखो मैं हूँ, डरो मत।” पतरस ने यीशु से पूछा कि क्या वह उसके साथ चमत्कार में शामिल हो सकता है। कुछ ईसाई उन चमत्कारी कार्यों में भाग लेना चाहते हैं जो यीशु कर रहे हैं। "हिम्मत रखो मैं हूँ, डरो मत"। अन्य शिष्य नाव में ही रह गए। कुछ ईसाई चमत्कार में भाग नहीं लेना चाहते। "हिम्मत रखो यह मैं हूँ, डरो मत"। विश्वास से पतरस ने यीशु की बात मानी और नाव से बाहर निकल गया। विश्वास से ईसाई यीशु की आज्ञा मानते हैं और अलौकिक में भाग लेते हैं। "हिम्मत रखो मैं हूं, डरो मत"। पतरस ने यीशु से अपनी आँखें हटा लीं और हवा से विचलित हो गया। ईसाई अपनी आँखें यीशु से हटा लेते हैं और अपने आस-पास की परिस्थितियों से विचलित हो जाते हैं। "हिम्मत रखो मैं हूँ, डरो मत"। जब पतरस संकट में पड़ा, तो उसने यीशु को बचाने के लिए पुकारा और बचा लिया गया। ईसाई यीशु की दोहाई देते हैं और वह उन्हें बचाता है। "हिम्मत रखो, मैं हूँ, डरो मत"। यीशु ने पतरस से कहा, "हे अल्प विश्वासियों, तुमने सन्देह क्यों किया?" यीशु ने ईसाइयों से कहा, "हे अल्प विश्वासियों, तुमने सन्देह क्यों किया?" "हिम्मत रखो यह मैं हूँ, डरो मत"। जब यीशु नाव में चढ़े तो हवा रुक गई। ईसाइयों के लिए अपने उद्देश्यों तक पहुंचना आसान हो जाता है जब यीशु सवारी के लिए साथ होते हैं। "हिम्मत रखो मैं हूं, डरो मत" समूह चर्चा: पीटर के पानी पर चलने के बाद यीशु ने "तुम अल्प विश्वासी" क्यों कहा? _____ _____ महान विश्वास क्या होता? _____ _____ संदेह क्यों करते हैं? _____ _____ आप भयभीत क्यों हैं? _____ _____ सबक का बिंदु: यीशु आपकी परवाह करता है और आपकी मदद करेगा। आवेदन:याद रखें, शास्त्रों में 365 "डर नहीं" हैं, जो पूरे साल एक दिन के लिए पर्याप्त हैं। हर रोज उनका उपयोग करें!

पाठ 27

थोड़ा ख़मीर आइसब्रेकर: अपनी तीन पसंदीदा परंपराओं के नाम बताइए। परिचय: जब यीशु अपने शिष्यों के साथ नाव में चढ़े तो झील पर तूफान थम गया, लेकिन जब वे उतरे तो एक अलग तरह का तूफान पहले से ही चल रहा था। भीड़ यीशु को खोज रही थी इसलिए उसने अपने आप को उनके लिए उपलब्ध कराया। पाँच रोटियों और दो मछलियों के साथ 5000 आदमियों को अपने आधार के रूप में खिलाने का उपयोग करते हुए, यीशु ने भोजन के लिए काम करने के बारे में चर्चा शुरू की। चर्चा का सार दो प्रकार का था: वह कार्य जो परमेश्वर चाहता है कि लोग उसके पुत्र, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करें और जो भोजन वे खा रहे हैं वह उसका शरीर और रक्त है। चर्चा ने विवाद की आग लगा दी। कई शिष्यों का मानना था कि यीशु उन्हें नरभक्षण में भाग लेने के लिए कह रहे थे, इसलिए उन्होंने उसका अनुसरण करना छोड़ दिया। तब शास्त्रियों और फरीसियों ने यीशु को घेर लिया, जब उन्होंने देखा कि उसके चेले हाथ धोने से पहले रोटी खाते हैं। पवित्रशास्त्र पढ़ना:(मत्ती 15:1-20 और 16:5-12) (मरकुस 7:1-23 और 8:13-21) आज्ञाएँ: तुम सब मेरी बात सुनो और समझो। सुनने के लिए कान, वह सुन ले।उन्हें अकेला छोड़ दो।सावधान रहें और फरीसियों और सदूकियों के खमीर से सावधान रहें। समूह चर्चा: इस चर्च में हम जिस परंपरा का पालन करते हैं उसका नाम बताएं? परंपरा की उत्पत्ति क्या है? इसे किसने अधिकृत किया? _____ _____ हम इसे क्यों पकड़ते हैं? _____ _____ सबक:परंपरा महत्वपूर्ण है। यह बिना लिखित निर्देश के एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मौखिक रूप से या उदाहरण के द्वारा जानकारी, विश्वास और रीति-रिवाजों को सौंपने का एक तरीका है। पृथ्वी पर प्रत्येक समाज परंपरा का उपयोग करता है। यह लोगों को एक दूसरे से संबंधित होने और जीवन के एक व्यवस्थित तरीके को बनाए रखने में मदद करता है। जब शास्त्रियों और फरीसियों ने हाथ धोने से पहले खाने के लिए यीशु के शिष्यों की आलोचना की, तो वे लंबे समय से चली आ रही परंपरा के लिए अपील कर रहे थे। हममें से कई लोगों के माता-पिता थे जो एक ही परंपरा का पालन करते थे। यीशु ने खाने से पहले हाथ धोने की परंपरा को अशुद्धता के बारे में सिखाने के अवसर के रूप में या दूसरे शब्दों में "ऐसी चीजें जो लोगों को अशुद्ध करती हैं" के रूप में इस्तेमाल किया। विषय के भीतर सीखने के लिए तीन सबक हैं। वे इतने महत्वपूर्ण हैं कि यीशु ने लोगों को आज्ञा दी कि वह जो कह रहा था उसे सुनें और समझें। पहला सबक यह है कि जो कुछ भी खाता है वह उसे अशुद्ध नहीं करता है। यहूदी श्रोताओं के लिए इसे सुनना और समझना कठिन था क्योंकि उन्होंने मूसा के कानून के सख्त आहार कानूनों (कश्रुत) का पालन किया था। यीशु ने यहूदी कोषेर कानूनों को समाप्त नहीं किया क्योंकि कुछ लोग विश्वास करने के इच्छुक हैं। उन्होंने केवल इतना कहा कि लोग जो खाते हैं वह उन्हें अशुद्ध नहीं करता है क्योंकि जो मुंह में जाता है वह पेट में संसाधित होता है और शरीर अच्छे का उपयोग करता है और अपशिष्ट को हटा देता है। कई वर्षों बाद प्रेरित पतरस का सीधे इस मुद्दे से सामना हुआ जब उसने अन्यजातियों के विषय में एक दर्शन देखा। वह सन्दर्भ प्रेरितों के काम 10:9-15 है। अगले दिन, जब वे अपने रास्ते में थे और शहर की ओर आ रहे थे, पतरस लगभग छठे घंटे प्रार्थना करने के लिए छत पर चढ़ गया। परन्तु वह भूखा हो गया, और खाने का मन करने लगा; परन्तु जब वे तैयारी कर ही रहे थे, कि वह अचेत हो गया; और उसने देखा कि आकाश खुल गया है, और एक बड़ी चादर की तरह एक वस्तु नीचे उतर रही है, जो चारों कोनों से जमीन पर उतरी हुई है, और उसमें सब प्रकार के चौपाये, और पृथ्वी के रेंगने वाले जीव, और आकाश के पक्षी हैं। उसके

पास एक आवाज आई, “हे पतरस, उठ, मार कर खा ले!” परन्तु पतरस ने कहा, “हे प्रभु, कदापि नहीं, क्योंकि मैं ने कभी भी अपवित्र और अशुद्ध कुछ भी नहीं खाया।” दूसरी बार उसके पास फिर से एक आवाज आई, "भगवान ने क्या शुद्ध किया है, अब से अपवित्र मत समझो।" ऐसा तीन बार हुआ, और तुरंत ही वस्तु को आकाश में उठा लिया गया। पतरस ने दर्शन का पालन किया। वह अन्यजातियों के पास गया और सुसमाचार का प्रचार किया। यह तब तक नहीं था जब तक कि पवित्र आत्मा उन पर न गिरे और वे अन्यभाषा में बोलने लगे और परमेश्वर की प्रशंसा करने लगे कि पतरस उन्हें पूरी तरह से स्वीकार कर सके। और तब भी वह अपने पुराने विश्वासों में वापस चला गया जब तक कि प्रेरित पौलुस ने उसका सामना नहीं किया। (गलतियों 2:11-21) दूसरे पाठ में यीशु ने जोर देकर कहा कि जो कहा जाता है वह मन से निकलता है और एक व्यक्ति को अशुद्ध करता है। क्योंकि बुरे विचार, हत्यारे, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा मन से निकलती है। शब्द प्रकट करते हैं कि दिल में क्या है और शास्त्र कई सलाह देते हैं कि एक व्यक्ति को क्या बोलना चाहिए। यहाँ कुछ ही हैं: मृत्यु और जीवन जीभ के वश में हैं, और जो इसे प्यार करते हैं वे इसका फल खाएंगे। लेकिन जुबान को कोई वश में नहीं कर सकता; यह एक बेचैन बुराई है और घातक जहर से भरा है। उसी से हम अपने प्रभु और पिता को धन्य कहते हैं, और उसी से मनुष्योंको, जो परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं, श्राप देते हैं; एक ही मुख से आशीर्वाद और शाप दोनों निकलते हैं। मेरे भाइयो, ये बातें इस तरह नहीं होनी चाहिए। मूर्ख भी जब चुप रहता है, तो वह बुद्धिमान समझा जाता है। जब वह अपने होठों को बंद करता है, तो उसे विवेकपूर्ण माना जाता है। परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि जो कुछ चिन्तारहित बातें लोग कहें, वे न्याय के दिन उसका लेखा दें। क्योंकि तेरे वचनों से तू धर्मी ठहरेगा, और तेरे वचनों से तू दोषी ठहराया जाएगा। जब पतरस ने अन्यजातियों को अन्यभाषा में बोलते हुए और परमेश्वर की प्रशंसा करते हुए सुना, तो उसने महसूस किया कि परमेश्वर ने उन्हें एक नया हृदय दिया है। यह यीशु की शिक्षा की पुष्टि थी कि जो कहा जाता है वह हृदय से आता है। इसलिए, इन लोगों को भगवान द्वारा शुद्ध माना जाना था। अंतिम पाठ में मानव परंपरा को परमेश्वर की आज्ञाओं के बराबर या उससे अधिक के रूप में पढ़ाने के बारे में बताया गया है। यीशु ने स्पष्ट रूप से शास्त्रियों और फरीसियों को दिखाया कि वे मौखिक कानून को महत्व दे रहे थे, जिसमें मिशना, गेमारा और पवित्रशास्त्र (टोरा) के ऊपर अन्य कार्य शामिल थे। "परन्तु वे मनुष्यों के उपदेशों की शिक्षा देकर व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं। ईश्वर की आज्ञा की उपेक्षा करते हुए, आप पुरुषों की परंपरा को धारण करते हैं। ” चूँकि वे दूसरों को भी ऐसा ही करना सिखा रहे थे, यीशु ने अपने शिष्यों को उन्हें अकेला छोड़ने की आज्ञा दी। कुछ समय बाद यीशु ने चेलों को याद दिलाया कि वे फरीसियों और सदूकियों की शिक्षा से सावधान रहें। उसने उनकी शिक्षा की तुलना खमीर से की। जिस प्रकार पदार्थ के प्रत्येक भाग में खमीर प्रवेश कर जाता है जिसमें वह रखा जाता है, वैसे ही शिक्षण भी करता है। लोगों को जो सिखाया जाता है वह उन्हें जीवन भर के लिए प्रभावित करता है। फरीसियों और सदूकियों दोनों ने अपनी मौखिक परंपराओं को परमेश्वर के वचन से ऊपर रखा। और ऐसा करके वे अशुद्ध, अशुद्ध और अशुद्ध थे। याद रखें, यीशु ने अभी-अभी अपने शिष्यों से कहा था कि जो व्यक्ति के मुंह से निकलता है वह उसे अशुद्ध करता है। और अपने वचनों के द्वारा वे दिखा रहे थे कि वे अपनी परंपरा को परमेश्वर के वचन से अधिक महत्व देते थे, इसलिए उनके हृदय अशुद्ध थे। एक व्यक्ति के लिए अशुद्ध होना एक बात है, लेकिन जब वह शिक्षण के माध्यम से दूसरे को संक्रमित करता है तो यह बिलकुल दूसरी बात है। अपने पत्र में, यीशु के भाई जेम्स, इस विचार का समर्थन करते हैं, जब वे कहते हैं, "मेरे भाइयों, बहुत से स्वामी न बनें, यह जानते हुए कि हम अधिक निंदा प्राप्त करेंगे। क्योंकि बहुत सी बातों में हम सब को ठेस पहुँचाते हैं। यदि कोई मनुष्य वचन से अपमान न करे, तो वही सिद्ध पुरुष है, और सारे शरीर पर लगाम लगाने में भी समर्थ है।” समूह चर्चा: एक चर्च परंपरा का नाम बताइए जो पवित्रशास्त्र के विपरीत है? परंपरा की

उत्पत्ति क्या है? इसे किसने अधिकृत किया? लोग इसे क्यों रखते हैं? _____
_____ पाठ का बिंदु: आप जो शब्द बोलते हैं उन पर ध्यान से विचार करें। आवेदन: उन परंपराओं पर चिंतन करें जिन्हें आप धारण करते हैं और दूसरों को सिखाते हैं। क्या वे परमेश्वर के वचन का उल्लंघन करते हैं?

पाठ 27

थोड़ा ख़मीर आइसब्रेकर: अपनी तीन पसंदीदा परंपराओं के नाम बताइए। परिचय: जब यीशु अपने शिष्यों के साथ नाव में चढ़े तो झील पर तूफान थम गया, लेकिन जब वे उतरे तो एक अलग तरह का तूफान पहले से ही चल रहा था। भीड़ यीशु को खोज रही थी इसलिए उसने अपने आप को उनके लिए उपलब्ध कराया। पाँच रोटियों और दो मछलियों के साथ 5000 आदमियों को अपने आधार के रूप में खिलाने का उपयोग करते हुए, यीशु ने भोजन के लिए काम करने के बारे में चर्चा शुरू की। चर्चा का सार दो प्रकार का था: वह कार्य जो परमेश्वर चाहता है कि लोग उसके पुत्र, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करें और जो भोजन वे खा रहे हैं वह उसका शरीर और रक्त है। चर्चा ने विवाद की आग लगा दी। कई शिष्यों का मानना था कि यीशु उन्हें नरभक्षण में भाग लेने के लिए कह रहे थे, इसलिए उन्होंने उसका अनुसरण करना छोड़ दिया। तब शास्त्रियों और फरीसियों ने यीशु को घेर लिया, जब उन्होंने देखा कि उसके चेले हाथ धोने से पहले रोटी खाते हैं। पवित्रशास्त्र पढ़ना:(मत्ती 15:1-20 और 16:5-12) (मरकुस 7:1-23 और 8:13-21) आज्ञाएँ: तुम सब मेरी बात सुनो और समझो। सुनने के लिए कान, वह सुन ले।उन्हें अकेला छोड़ दो।सावधान रहें और फरीसियों और सदूकियों के खमीर से सावधान रहें। समूह चर्चा: इस चर्च में हम जिस परंपरा का पालन करते हैं उसका नाम बताएं? परंपरा की उत्पत्ति क्या है? इसे किसने अधिकृत किया? _____ _____ हम इसे क्यों पकड़ते हैं? _____ _____ सबक:परंपरा महत्वपूर्ण है। यह बिना लिखित निर्देश के एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मौखिक रूप से या उदाहरण के द्वारा जानकारी, विश्वास और रीति-रिवाजों को सौंपने का एक तरीका है। पृथ्वी पर प्रत्येक समाज परंपरा का उपयोग करता है। यह लोगों को एक दूसरे से संबंधित होने और जीवन के एक व्यवस्थित तरीके को बनाए रखने में मदद करता है। जब शास्त्रियों और फरीसियों ने हाथ धोने से पहले खाने के लिए यीशु के शिष्यों की आलोचना की, तो वे लंबे समय से चली आ रही परंपरा के लिए अपील कर रहे थे। हममें से कई लोगों के माता-पिता थे जो एक ही परंपरा का पालन करते थे। यीशु ने खाने से पहले हाथ धोने की परंपरा को अशुद्धता के बारे में सिखाने के अवसर के रूप में या दूसरे शब्दों में "ऐसी चीजें जो लोगों को अशुद्ध करती हैं" के रूप में इस्तेमाल किया। विषय के भीतर सीखने के लिए तीन सबक हैं। वे इतने महत्वपूर्ण हैं कि यीशु ने लोगों को आज्ञा दी कि वह जो कह रहा था उसे सुनें और समझें। पहला सबक यह है कि जो कुछ भी खाता है वह उसे अशुद्ध नहीं करता है। यहूदी श्रोताओं के लिए इसे सुनना और समझना कठिन था क्योंकि उन्होंने मूसा के कानून के सख्त आहार कानूनों (कश्रुत) का पालन किया था। यीशु ने यहूदी कोषेर कानूनों को समाप्त नहीं किया क्योंकि कुछ लोग विश्वास करने के इच्छुक हैं। उन्होंने केवल इतना कहा कि लोग जो खाते हैं वह उन्हें अशुद्ध नहीं करता है क्योंकि जो मुंह में जाता है वह पेट में संसाधित होता है और शरीर अच्छे का उपयोग करता है और अपशिष्ट को हटा देता है। कई वर्षों बाद प्रेरित पतरस का सीधे इस मुद्दे से सामना हुआ जब उसने अन्यजातियों के विषय में एक दर्शन देखा। वह सन्दर्भ प्रेरितों के काम 10:9-15 है। अगले दिन, जब वे अपने रास्ते में थे और शहर की ओर आ रहे थे, पतरस लगभग छठे घंटे प्रार्थना करने के लिए छत पर चढ़ गया। परन्तु वह भूखा हो गया, और खाने का मन करने लगा; परन्तु जब वे तैयारी कर ही रहे थे, कि वह अचेत हो गया; और उसने देखा कि आकाश खुल गया है, और एक बड़ी चादर की तरह एक वस्तु नीचे उतर रही है, जो चारों कोनों से जमीन पर उतरी हुई है, और उसमें सब प्रकार के चौपाये, और पृथ्वी के रेंगने वाले जीव, और आकाश के पक्षी हैं। उसके

पास एक आवाज आई, “हे पतरस, उठ, मार कर खा ले!” परन्तु पतरस ने कहा, “हे प्रभु, कदापि नहीं, क्योंकि मैं ने कभी भी अपवित्र और अशुद्ध कुछ भी नहीं खाया।” दूसरी बार उसके पास फिर से एक आवाज आई, "भगवान ने क्या शुद्ध किया है, अब से अपवित्र मत समझो।" ऐसा तीन बार हुआ, और तुरंत ही वस्तु को आकाश में उठा लिया गया। पतरस ने दर्शन का पालन किया। वह अन्यजातियों के पास गया और सुसमाचार का प्रचार किया। यह तब तक नहीं था जब तक कि पवित्र आत्मा उन पर न गिरे और वे अन्यभाषा में बोलने लगे और परमेश्वर की प्रशंसा करने लगे कि पतरस उन्हें पूरी तरह से स्वीकार कर सके। और तब भी वह अपने पुराने विश्वासों में वापस चला गया जब तक कि प्रेरित पौलुस ने उसका सामना नहीं किया। (गलतियों 2:11-21) दूसरे पाठ में यीशु ने जोर देकर कहा कि जो कहा जाता है वह मन से निकलता है और एक व्यक्ति को अशुद्ध करता है। क्योंकि बुरे विचार, हत्यारे, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा मन से निकलती है। शब्द प्रकट करते हैं कि दिल में क्या है और शास्त्र कई सलाह देते हैं कि एक व्यक्ति को क्या बोलना चाहिए। यहाँ कुछ ही हैं: मृत्यु और जीवन जीभ के वश में हैं, और जो इसे प्यार करते हैं वे इसका फल खाएंगे। लेकिन जुबान को कोई वश में नहीं कर सकता; यह एक बेचैन बुराई है और घातक जहर से भरा है। उसी से हम अपने प्रभु और पिता को धन्य कहते हैं, और उसी से मनुष्योंको, जो परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं, श्राप देते हैं; एक ही मुख से आशीर्वाद और शाप दोनों निकलते हैं। मेरे भाइयो, ये बातें इस तरह नहीं होनी चाहिए। मूर्ख भी जब चुप रहता है, तो वह बुद्धिमान समझा जाता है। जब वह अपने होठों को बंद करता है, तो उसे विवेकपूर्ण माना जाता है। परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि जो कुछ चिन्तारहित बातें लोग कहें, वे न्याय के दिन उसका लेखा दें। क्योंकि तेरे वचनों से तू धर्मी ठहरेगा, और तेरे वचनों से तू दोषी ठहराया जाएगा। जब पतरस ने अन्यजातियों को अन्यभाषा में बोलते हुए और परमेश्वर की प्रशंसा करते हुए सुना, तो उसने महसूस किया कि परमेश्वर ने उन्हें एक नया हृदय दिया है। यह यीशु की शिक्षा की पुष्टि थी कि जो कहा जाता है वह हृदय से आता है। इसलिए, इन लोगों को भगवान द्वारा शुद्ध माना जाना था। अंतिम पाठ में मानव परंपरा को परमेश्वर की आज्ञाओं के बराबर या उससे अधिक के रूप में पढ़ाने के बारे में बताया गया है। यीशु ने स्पष्ट रूप से शास्त्रियों और फरीसियों को दिखाया कि वे मौखिक कानून को महत्व दे रहे थे, जिसमें मिशना, गेमारा और पवित्रशास्त्र (टोरा) के ऊपर अन्य कार्य शामिल थे। "परन्तु वे मनुष्यों के उपदेशों की शिक्षा देकर व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं। ईश्वर की आज्ञा की उपेक्षा करते हुए, आप पुरुषों की परंपरा को धारण करते हैं। ” चूँकि वे दूसरों को भी ऐसा ही करना सिखा रहे थे, यीशु ने अपने शिष्यों को उन्हें अकेला छोड़ने की आज्ञा दी। कुछ समय बाद यीशु ने चेलों को याद दिलाया कि वे फरीसियों और सदूकियों की शिक्षा से सावधान रहें। उसने उनकी शिक्षा की तुलना खमीर से की। जिस प्रकार पदार्थ के प्रत्येक भाग में खमीर प्रवेश कर जाता है जिसमें वह रखा जाता है, वैसे ही शिक्षण भी करता है। लोगों को जो सिखाया जाता है वह उन्हें जीवन भर के लिए प्रभावित करता है। फरीसियों और सदूकियों दोनों ने अपनी मौखिक परंपराओं को परमेश्वर के वचन से ऊपर रखा। और ऐसा करके वे अशुद्ध, अशुद्ध और अशुद्ध थे। याद रखें, यीशु ने अभी-अभी अपने शिष्यों से कहा था कि जो व्यक्ति के मुंह से निकलता है वह उसे अशुद्ध करता है। और अपने वचनों के द्वारा वे दिखा रहे थे कि वे अपनी परंपरा को परमेश्वर के वचन से अधिक महत्व देते थे, इसलिए उनके हृदय अशुद्ध थे। एक व्यक्ति के लिए अशुद्ध होना एक बात है, लेकिन जब वह शिक्षण के माध्यम से दूसरे को संक्रमित करता है तो यह बिलकुल दूसरी बात है। अपने पत्र में, यीशु के भाई जेम्स, इस विचार का समर्थन करते हैं, जब वे कहते हैं, "मेरे भाइयों, बहुत से स्वामी न बनें, यह जानते हुए कि हम अधिक निंदा प्राप्त करेंगे। क्योंकि बहुत सी बातों में हम सब को ठेस पहुँचाते हैं। यदि कोई मनुष्य वचन से अपमान न करे, तो वही सिद्ध पुरुष है, और सारे शरीर पर लगाम लगाने में भी समर्थ है।” समूह चर्चा: एक चर्च परंपरा का नाम बताइए जो पवित्रशास्त्र के विपरीत है? परंपरा की

उत्पत्ति क्या है? इसे किसने अधिकृत किया? लोग इसे क्यों रखते हैं? _____
_____ पाठ का बिंदु: आप जो शब्द बोलते हैं उन पर ध्यान से विचार करें। आवेदन: उन परंपराओं पर चिंतन करें जिन्हें आप धारण करते हैं और दूसरों को सिखाते हैं। क्या वे परमेश्वर के वचन का उल्लंघन करते हैं?

पाठ 29

यीशु के आइसब्रेकर को सुनें: क्या आप में भविष्य जानने की इच्छा है? _____ क्यों? _____

_____

_____ परिचय: अपनी आसन्न मृत्यु और चर्च के उदय के प्रवचन को समाप्त करने पर यीशु ने शिष्यों को एक रहस्यमय लेकिन उम्मीद के साथ छोड़ दिया। "मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कितने ऐसे हैं, कि जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देखें, तब तक मृत्यु का स्वाद न चखेंगे।" उस समय चेलों को पता नहीं था कि यीशु के कथन का क्या अर्थ है, लेकिन कुछ ही दिनों में उनमें से तीन ने इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया। यह तब हुआ जब यीशु ने पतरस, याकूब और यूहन्ना को प्रार्थना करने के लिए ऊँचे पहाड़ की चढ़ाई पर अपने साथ चलने को कहा। हम जानते हैं कि यह घटना यहूदी महीने तिशरी की शुरुआत में हुई थी, जो कि भगवान के कैलेंडर पर 7 वां महीना है। तीव्र कठिन चढ़ाई के बाद चेले थके हुए थे और सो गए। जैसे ही चेले सो रहे थे यीशु ने प्रार्थना की और प्रार्थना करते समय उनका रूप बदल गया। उसका चेहरा सूरज की तरह चमक रहा था और उसके कपड़े प्रकाश की तरह सफेद हो गए थे। परमेश्वर का राज्य शक्ति और महिमा के साथ प्रकट हुआ था। पवित्रशास्त्र पढ़ना:(मत्ती 17:1-13) (मरकुस 9:2-13) (लूका 9:28-36) आज्ञाएँ: यह मेरा पुत्र है, मेरा चुना हुआ; उसकी बात सुनो!उठो, और मत डरो। जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से जी न उठे, तब तक किसी को दर्शन न बताओ। पाठ: जब हम इस पाठ को शुरू करते हैं तो हमें याद रखना चाहिए कि शिष्यों ने जो देखा वह एक दर्शन था ... नहीं वास्तविक चीज। यह दर्शन भविष्य की घटनाओं का चित्रण था, ठीक वैसे ही जैसे कई वर्षों बाद पतमोस द्वीप पर प्रेरित यूहन्ना को दिया गया दर्शन था। और उस रहस्योद्घाटन के बिना हम अपनी समझ में सीमित होंगे जैसे कि चेले थे। माउंट ऑफ ट्रांसफिगरेशन पर जो हुआ वह हमें भविष्य के बारे में कई सुराग देता है। जब चेले नींद से जागे, तो उन्होंने मूसा और एलिय्याह को यीशु के साथ बातें करते देखा। इससे हम कई अवलोकन कर सकते हैं: मूसा और एलिय्याह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के दो गवाह हैं। "और मैं अपके दो गवाहोंको अधिकार दूंगा, और वे टाट पहिने हुए बारह सौ साठ दिन तक भविष्यद्वाणी करेंगे।" (प्रकाशितवाक्य 11:3) मूसा और एलिय्याह “जैतून के दो वृक्ष और दो दीवट हैं जो पृथ्वी के यहोवा के साम्हने खड़े रहते हैं।” (प्रकाशितवाक्य 11:4) जैतून के पेड़ों का ज़िक्र जकर्याह की किताब में किया गया है। उसने मुझसे कहा, "तुम क्या देखते हो?" और मैं ने कहा, मैं देखता हूं, और क्या देखता हूं, कि सोने का एक दीवट है, और उसके ऊपर कटोरा है, और उस पर सात दीपक हैं, और उन में से एक एक दीपक के ऊपर सात बत्ती हैं; और उसके पास जलपाई के दो वृक्ष भी हैं, एक कटोरे की दहिनी ओर, और दूसरा उसकी बाईं ओर।” तब मैं ने उस दूत से जो मुझ से बातें कर रहा था, कहा, हे मेरे प्रभु, ये क्या हैं? फिर उस ने कहा, ये वे दो अभिषिक्त जन हैं जो सारी पृथ्वी के यहोवा के पास खड़े हैं। (जकर्याह 4:2-4 और 11) मूसा और एलिय्याह, गवाहों के रूप में दीवट कहलाते हैं क्योंकि वे व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो जीने के लिए स्वर्गीय प्रकाश प्रदान करते हैं। ट्रांसफ़िगरेशन के माउंट पर हम मूसा को कानून और एलिय्याह का प्रतिनिधित्व करते हुए देखते हैं, जो भविष्यद्वक्ताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो यीशु के साथ बोलते हैं, परमेश्वर का वचन। मूसा की व्यवस्था और एलिय्याह दोनों भविष्यद्वक्ता यीशु की परमेश्वर के वचन की गवाही देते हैं। यीशु के गवाह के रूप में, मूसा और एलिय्याह भी निम्नलिखित का प्रतिनिधित्व करते हैं: मूसा एलिय्याह पिता पवित्र आत्मा सत्य आत्मा घरेलू जैतून का पेड़ जंगली जैतून का पेड़ इज़राइल, जिसे लॉ चर्च दिया गया था, जिसे आत्मा दी गई थी जो मर चुके हैं जो जीवित हैं यीशु ने चेलों से कहा था कि उनमें से कुछ तब तक नहीं मरेंगे जब तक

कि वे परमेश्वर के राज्य को उसके सत्ता में आने के बाद नहीं देख लेते। दर्शन में मूसा और एलिय्याह दोनों अपनी महिमामयी अवस्था में प्रकट हुए और प्रेरित उनकी पहचान जानते थे। यह इंगित करता है कि दर्शन का समय प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के दो गवाहों के मारे जाने और मृतकों में से जी उठने के बाद है। (प्रकाशितवाक्य 11:7) जिस प्रकार हम ने पृथ्वी की मूरत को धारण किया है, उसी प्रकार हम स्वर्ग की मूरत भी धारण करेंगे। अब हे भाइयो, मैं यह कहता हूं, कि मांस और लोहू परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं हो सकते; न ही नाशवान को अविनाशी का वारिस होता है। देख, मैं तुझे एक भेद बताता हूं; हम सब नहीं सोएंगे, लेकिन हम सब बदल जाएंगे, एक पल में, पलक झपकते, आखिरी तुरही में; क्योंकि नरसिंगा फूंकेगा, और मरे हुए अविनाशी जी उठेंगे, और हम बदल जाएंगे। इसके लिए नाशवान को अविनाशी को पहनना चाहिए, और इस नश्वर को अमरता को धारण करना चाहिए। लेकिन जब यह नाशवान अविनाशी को पहिन लेगा, और इस नश्वर ने अमरता धारण कर ली होगी, तब यह कहावत आएगी कि "विजय में मृत्यु को निगल लिया गया है। (1 कुरिन्थियों 15:49-54) चेलों में से किसी ने भी मूसा या एलिय्याह को पहले पृथ्वी पर नहीं देखा था, इसलिए वे उन्हें देखते ही नहीं जान सकते थे। हालाँकि, शिष्यों को पता था कि वे कौन थे। यह इंगित करता है कि प्रेरितों के लिए उनकी स्वर्गीय पहचान प्रकट की गई थी। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक भी दर्शन के समय का समर्थन करती है क्योंकि गवाहों की मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद होने वाली अगली बड़ी घटना सातवें और अंतिम तुरुप का बजना है। तुरही फूँकने के साथ स्वर्ग में ऊँचे शब्द घोषित करते हैं, “जगत का राज्य हमारे प्रभु का, और उसके मसीह का हो गया है; और वह सदा राज्य करेगा।” यह पृथ्वी पर मसीह के सहस्राब्दी शासन की शुरुआत है या "परमेश्वर के राज्य के सत्ता में आने के बाद।" ठीक उसी समय जब, यीशु पृथ्वी पर अपना शासन शुरू करेंगे, यह काफी बहस का विषय रहा है। यह दर्शन हमें ठीक-ठीक यह नहीं बताता कि यह घटना कब घटित होगी, लेकिन यह इसके घटित होने के लिए वर्ष का समय देती है... परमेश्वर के कैलेंडर के सातवें महीने की शुरुआत में। यह यीशु, मूसा और एलिय्याह के लिए तम्बू (सुक्का) के निर्माण के बारे में पीटर के बयान से लिया गया था। भगवान के दो महत्वपूर्ण पर्व हैं जो तिशरी के सातवें महीने की शुरुआत में होते हैं। महीने के पहले दिन योम तेरुआ, तुरही फूंकने का दिन है और यह सब्त का दिन है। इस दिन को रोश हा शन्नाह (वर्ष का प्रमुख या नए साल का दिन), योम हज़िकारोन (स्मरण का दिन) और योम हैडिन (न्याय का दिन) भी कहा जाता है। महीने के दसवें दिन योम किप्पुर, प्रायश्चित का दिन है। यह एक सब्त का दिन भी है और एकमात्र उपवास जिसे परमेश्वर ने घोषित किया था। यहोवा के इन दो पर्वों के बाद झोपड़ी है, जो महीने के पन्द्रहवें दिन से शुरू होती है। पर्व का पहला दिन और आठवां दिन भी सब्त के दिन हैं। पवित्रशास्त्र के प्रमाणों से मेरा मानना है कि "रूपांतरण" योम तेरुआ, तुरही फूंकने के दिन हुआ था। इसलिए पृथ्वी पर यीशु के शासन की शुरुआत उसी समय से शुरू होगी। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक कहती है कि उसका शासन सातवें और आखिरी तुरही के बजने से ठीक पहले शुरू होता है। योम तेरुआ पर दिन भर तुरही बजाई जाती है और जैसे-जैसे दिन करीब आता है, आखिरी तुरही को टेकियाह गोडोला के नोट के साथ बजाया जाता है ... एक विस्तारित विस्फोट। सिद्धांत रूप में यह नोट तब तक समाप्त नहीं होता जब तक कि दस दिन बाद प्रायश्चित के दिन के अंत में इसे फिर से नहीं उड़ाया जाता। मनुष्य के पुत्र के विषय में दानिय्येल की पुस्तक के सातवें अध्याय की भविष्यवाणी योम तेरुआ का भी समर्थन करती है। मैं तब तक देखता रहा जब तक कि सिंहासन स्थापित नहीं हो गए, और प्राचीन ने अपना आसन ग्रहण कर लिया; उसका वस्त्र सफेद हिम के समान और उसके सिर के बाल शुद्ध ऊन के समान थे। उसका सिंहासन लपटों से धधक रहा था, उसके पहिए जलती हुई आग थे। उसके साम्हने से आग की एक नदी बह रही थी, और निकल रही थी; उसके साम्हने हजारों की संख्या में लोग उसके साम्हने खड़े थे, और असंख्य लोग उसके साम्हने खड़े थे; दरबार में बैठा और किताबें खोली गईं। तब मैं उस

घमण्ड के शब्द के कारण जो वह सींग बोल रहा था, देखता रहा; मैं तब तक देखता रहा, जब तक वह पशु घात न हो गया, और उसकी देह नाश करके जलती हुई आग को दे दी गई। बाकी जानवरों के लिए, उनका प्रभुत्व छीन लिया गया था, लेकिन उन्हें एक निश्चित अवधि के लिए जीवन का विस्तार दिया गया था। मैं रात के दर्शनों में देखता रहा, और क्या देखा, कि आकाश के बादलों के साथ मनुष्य के पुत्र के समान एक आ रहा है, और वह अति प्राचीन के पास आया, और उसके साम्हने प्रस्तुत किया गया। और उसे प्रभुता, महिमा और एक राज्य दिया गया, कि सब जाति-जाति के लोग, और जाति-जाति के लोग, और सब भाषा के लोग उसकी उपासना करें। उसका राज्य एक चिरस्थायी राज्य है जो टलता नहीं है; और उसका राज्य वह है जो नष्ट नहीं होगा। हिब्रू शिक्षा यह है कि योम तेरुआ पर, भगवान तीन पुस्तकें खोलते हैं: जीवन की पुस्तक - जो उसमें पाए जाते हैं वे जीवन के लिए मुहरबंद हैं। मृतकों की पुस्तक - जो पाए जाते हैं उसमें दुष्ट हैं और न्याय के लिए मुहरबंद हैं। पश्चाताप की पुस्तक - इस पुस्तक में अधिकांश लोग शामिल हैं जिनके कार्य न तो अच्छे हैं और न ही बुरे हैं और उनके पास पश्चाताप करने के लिए योम किप्पुर तक है। इसे सीलिंग कहते हैं। यहूदी आने वाले वर्ष के लिए एक-दूसरे की अच्छी मुहर की कामना करते हैं, और फिर कहते हैं, "अगले साल यरूशलेम में।" परिवर्तन के माउंट पर, भगवान ने खुद जोर से कहा, "यह मेरा बेटा है, मेरा चुना हुआ है, सुनो उसे।" यह उसके पुत्र, मनुष्य के पुत्र पर प्रभुत्व, महिमा और एक राज्य प्रदान करने वाला प्राचीन काल है। चेले अगले दिन तक पहाड़ से नीचे नहीं आए थे, यह दर्शाता है कि यह सब्त हो सकता है, इसलिए आराम करने की आवश्यकता है। "रूपांतरण" शायद प्रायश्चित के दिन नहीं हुआ था क्योंकि इससे यीशु को झोपड़ियों की दावत के मध्य तक यरूशलेम पहुँचने के लिए केवल एक सप्ताह की यात्रा करनी पड़ती। माउंट हेर्मोन से यात्रा पाँच या छह दिनों की रही होगी जिससे यीशु के लिए ऐसा करना संभव हो गया। हालांकि, बीच की घटनाओं को पूरा करने के लिए यह कुछ अधिक समय का संकेत देगा। "रूपांतरण" के बाद के दिन हम देखते हैं कि शिष्य एक बच्चे में से एक राक्षस को नहीं निकाल सकते थे। यीशु उन्हें समझाते हैं कि उस तरह का दुष्टात्मा प्रार्थना और उपवास के द्वारा नहीं निकला था। यह इंगित करता है कि शिष्य पिछले दिन प्रार्थना और उपवास में नहीं थे, जो प्रायश्चित के दिन को समाप्त कर देता है क्योंकि प्रार्थना और उपवास दोनों उस पर्व के दिन की आवश्यकताएं हैं। जब यीशु, मूसा और एलिय्याह बोल रहे थे, तब एक चमकीले बादल ने पूरी पार्टी को छा लिया। बादल को हिब्रू में शकीना कहा जाता है। यह महिमा का बादल है जो स्वयं परमेश्वर को घेरे हुए है। पवित्रशास्त्र में यह बादल कई बार देखा गया है। दिन को बादल और रात को आग का खम्भा ही इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले गया। यह धुंआ और आग से ढका हुआ माउंट सिनाई था जिसमें से तुरही बजती थी और ईश्वर की आवाज दस आज्ञाओं को बोलते हुए सुनाई देती थी। और यह वह धुआँ था जिसने समर्पण समारोह में सुलैमान के मंदिर को भर दिया। जैसे ही बादल पूरे दल पर उतरना शुरू हुआ, परमेश्वर ने चेलों को एक आज्ञा दी, "यह मेरा पुत्र है, मेरा चुना हुआ है, उसकी सुनो।" चेले मुंह के बल गिरे और डर गए, पर बात समझी; उन्हें उन कामों को करने की ज़रूरत थी जो यीशु ने उन्हें करने की आज्ञा दी थी। तुरंत, पलक झपकते ही, मूसा, एलिय्याह और बादल गायब हो गए। यह हमें प्रकाशितवाक्य 11:12 में दो गवाहों के पुनरुत्थान की याद दिलाता है "और उन्होंने स्वर्ग से एक बड़े शब्द को यह कहते सुना, "यहाँ ऊपर आओ।" तब वे बादल में स्वर्ग पर चढ़ गए।" जब दर्शन समाप्त हुआ तो यीशु ने अपने शिष्यों को छुआ और उनसे कहा कि उठो और डरो मत। ग्रुप डिस्कशन: क्या आपने कभी कोई विजन देखा है? _____। यदि आपके पास है, तो वह कैसा था? पुराने नियम का पवित्रशास्त्र का भाग कैसे समाप्त होता है? अंतिम तीन पद पढ़ें। आपको क्या लगता है कि यीशु ने अपने शिष्यों से क्यों कहा कि जब तक वह मरे हुओं में से जी न उठे, तब तक किसी को दर्शन न बताएं? _____

_____ पतरस द्वारा तीन सूक्का के निर्माण के बारे में अपना बयान देने के बाद, आपको क्या लगता है कि पवित्रशास्त्र इस टिप्पणी को क्यों जोड़ता है, "वह जो कह रहा था उसे महसूस नहीं कर रहा था"? पतरस को यह नहीं पता था कि वह एक दर्शन देख रहा था लेकिन उसे लगा कि यह वास्तविक है। यह सब्त का दिन था; इसलिए उसे सूक्का बनाने की अनुमति नहीं दी जाएगी। प्रायश्चित का दिन अभी तक नहीं आया था; इसलिए परंपरा के अनुसार उसे अपना निर्माण शुरू करने से पहले उसके अगले दिन तक इंतजार करना चाहिए।एक और कारण। _____
_____ सबक का बिंदु: यीशु के लौटने से पहले अब उसकी बात सुनें और उसकी आज्ञा का पालन करें! आवेदन:मलाकी 3:16 - 4:6 पढ़ें दानिय्येल 7 पढ़ें प्रकाशितवाक्य 11

पाठ 30

नाराज़ हो जाना आइसब्रेकर: ऐसी कौन सी एक चीज़ है जो लोग करते हैं जो वास्तव में आपको ठेस पहुँचाती है? _____ _____इससे आपको कैसा लगता है? _____ _____ परिचय: रूपान्तरण के पर्वत पर उतरने के बाद, कफरनहूम की अपनी यात्रा को जारी रखने से पहले यीशु का एक दुष्टात्मा से ग्रस्त बच्चे से सामना हुआ। जब वे कफरनहूम में आए, तो जो दो-द्रैमा कर वसूल करते थे, वे पतरस के पास आकर कहने लगे, "क्या तेरा गुरु दो-द्रैमा कर नहीं देता?" उन्होंने कहा हाँ।" और जब वह घर में आया, तो यीशु ने पहले उससे कहा, “हे शमौन, तुझे क्या लगता है? पृथ्वी के राजा किस से कर या कर वसूल करते हैं, अपने पुत्रों से वा पराये लोगों से?” जब पतरस ने कहा, "अजनबियों से," यीशु ने उससे कहा, "तो पुत्र छूट गए हैं। तौभी हम उन्हें ठोकर न खिलाएं, और समुद्र के पास जाकर काँटा फेर दे, और जो पहिली मछली उठे उसे ले ले; और जब तू उसका मुंह खोलेगा, तब तुझे एक शेकेल मिलेगा। वह लो और उन्हें अपने और मेरे लिए दे दो।” यीशु ने पतरस के साथ इस बातचीत को अपने शिष्यों को अपराधों के विषय से परिचित कराने के साधन के रूप में इस्तेमाल किया। समूह चर्चा: आप उन लोगों के बारे में क्या सोचते हैं, जो हर समय अपने बारे में बात करते हैं और अपनी उपलब्धियों के बारे में डींग मारते हैं? क्या यह आपके लिए आक्रामक है? _____ क्यों? _____ _____ परिचय जारी रखा: यह जानकर कि शिष्य चर्चा कर रहे थे कि उनमें से सबसे बड़ा कौन था, यीशु इस पर नाराज नहीं होते या उन्हें डांटते नहीं हैं। इसके बजाय, वह धीरे से उन्हें महानता के विषय के बारे में निर्देश देना शुरू कर देता है। वह उनके सामने एक बच्चे को बैठाकर शुरू करता है और फिर दो गहन बयान देता है: जब तक तुम परिवर्तित नहीं हो जाते और बच्चों की तरह नहीं बन जाते, तब तक तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करोगे। जो कोई इस बच्चे के रूप में खुद को विनम्र करता है, वह राज्य में सबसे बड़ा है स्वर्ग। यीशु फिर बच्चे को अपनी बाहों में लेते हैं और तीन और बयान देते हैं: जो कोई मेरे नाम से एक बच्चे को इस तरह प्राप्त करता है, वह मुझे स्वीकार करता है। जो मुझे प्राप्त करता है वह मुझे प्राप्त नहीं करता है, लेकिन वह जिसने मुझे भेजा है। वह जो आप में सबसे छोटा है, यह है एक जो महान है। समूह चर्चा: कुछ मिनट निकाल कर इस पर विचार करें कि यीशु ने पाँचों कथनों में क्या कहा था और आपके द्वारा किए गए किसी भी अवलोकन को लिख लें। _____ _____ आपको पुनः प्राप्त करने के लिए किस बाल-समान गुण की आवश्यकता है? _____ पवित्रशास्त्र पढ़ना:(मरकुस 9:38-41) (लूका 9:49-50) आज्ञा: उसे बाधित मत करो। सबक: कई बार, ईसाई दूसरों पर नाराज हो जाते हैं जो ईसाई होने का दावा करते हैं, लेकिन वे विश्वास के सटीक रूप को धारण नहीं करते हैं। दूसरे शब्दों में ... वे रूढ़िवादी नहीं हैं। आज इस ग्रह पर मौजूद ईसाई धर्म के संप्रदायों की संख्या इसका प्रमाण है। उन सभी स्वतंत्र और घरेलू चर्चों में जोड़ें और हम देखते हैं कि इस दुनिया में बहुत सारे लोग हैं जो मसीह का अनुसरण करने का दावा करते हैं जो हमेशा सिद्धांत के मुद्दों पर एक-दूसरे से आंख मिलाकर नहीं देखते हैं। यीशु ने इसी तरह के मुद्दे को संबोधित किया जब प्रेरित यूहन्ना ने यह कहते हुए उससे संपर्क किया, "हमने देखा कि कोई तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालता है, और हमने उसे रोकने की कोशिश की, क्योंकि वह

हमारे पीछे नहीं था।" यीशु दूसरे व्यक्ति पर नाराज हो सकता था जैसे उसके शिष्यों ने किया था लेकिन नहीं चुना। इसके बजाय, उसने चेलों से कहा कि यह समझाकर नाराज न हों, "जो हमारे खिलाफ नहीं है वह हमारे लिए है।" तब उस ने उन से कहा, कि वे अपराध न करें, जब उस ने कहा, कि उसे बाधा न डालें। "बाधा" का उपयोग करके यीशु ने अपने शिष्यों को उन तरीकों पर चिंतन करने का मौका दिया, जिनसे वे दूसरों को ठेस पहुँचा सकते हैं। उदाहरण के लिए: उसके रास्ते में ठोकर मत डालो।उसे हमारे समूह का सदस्य बनाने की आवश्यकता के द्वारा।उसे दूसरों को बदनाम करके।उसे डांटकर। उसे मत रोको।सेवा के काम से।यीशु के नाम के प्रयोग से। यह पहचानने में सक्षम होना कि कोई मसीह के पक्ष में है या उसके विरुद्ध है, ईसाइयों के लिए अमूल्य है। उदाहरण के लिए, प्रेरित पौलुस ने मसीहियों को चेतावनी दी कि “अविश्वासियों के साथ न बंधे रहो; क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का कौन सा साझीदार है, वा अन्धकार के साथ उजियाले का क्या मेल है? या बेलियाल के साथ मसीह का क्या सामंजस्य है, या एक विश्वासी का एक अविश्वासी के साथ क्या समानता है?" (2 कुरिन्थियों 6:14-15) फिर ईसाई कैसे निर्धारित कर सकते हैं कि कोई ऐसा व्यक्ति जिसे वे नहीं जानते हैं, वह मसीह के पक्ष में है या उसके विरुद्ध? यीशु ने अपने शिष्यों को देखने के लिए दो संकेत दिए: 1) पवित्र आत्मा के उपहार, जो कि ईश्वर की शक्ति है, जिसका उपयोग यीशु के नाम के साथ संयोजन में किया जाता है और 2) आत्मा का फल, जो कि ईश्वर का प्रेम है, में उपयोग किया जाता है यीशु के नाम के साथ संयोजन। पहला संकेतक या संकेत है कि एक व्यक्ति यीशु मसीह में आस्तिक है, आध्यात्मिक उपहारों का उपयोग है। "ये चिन्ह उन लोगों के साथ होंगे जिन्होंने विश्वास किया है: मेरे नाम से वे दुष्टात्माओं को निकालेंगे, वे नई भाषाएँ बोलेंगे; वे साँपों को उठा लेंगे, और यदि वे कोई घातक विष पी लें, तो उस से उनकी हानि न होगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे।” (मरकुस 16:17-18) जब शिष्यों ने उस व्यक्ति को यीशु के नाम से दुष्टात्माओं को निकालते हुए देखा तो उन्हें यकीन हो गया कि यह परमेश्वर की शक्ति से था। भूत भगाने की प्रथा यीशु के समय में मौजूद थी और इसे परमेश्वर के कार्य के रूप में मान्यता दी गई थी। एक भूत भगाने को शैतान के राज्य के साथ संघर्ष में आने वाले परमेश्वर के राज्य के रूप में देखा गया था। इसे इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा का भाग माना जाता था; कि वह अपने लोगों को उनके शत्रुओं से बचाएगा या बचाएगा। इसका प्रमाण यीशु द्वारा फरीसियों को दिए गए उत्तर से मिलता है, जिन्होंने उस पर दुष्टात्माओं के शासक बील्ज़ेबूब द्वारा दुष्टात्माओं को निकालने का आरोप लगाया था। “जिस किसी राज्य में फूट पड़ती है, वह उजड़ जाता है; और जिस नगर या घर में फूट पड़ जाए, वह स्थिर न रहेगा। यदि शैतान शैतान को निकाल देता है, तो वह अपने ही विरुद्ध हो जाता है; फिर उसका राज्य कैसे टिकेगा? यदि मैं बील्ज़ेबुल के द्वारा दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो तुम्हारे पुत्र किसके द्वारा उन्हें निकालते हैं? इस कारण वे तेरे न्यायी होंगे।” (मत्ती 12:25-27) यीशु जानता था कि यह पवित्र आत्मा है जो लोगों को बचाता या बचाता है और यहाँ तक कि पवित्र आत्मा के विरुद्ध बोलना अक्षम्य पाप था। “जो मेरे साथ नहीं है, वह मेरे विरुद्ध है; और जो मेरे साथ बटोरता नहीं वह तितर-बितर करता है। इसलिथे मैं तुम से कहता हूं, कि लोगोंका सब पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी, परन्तु आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी। जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरुद्ध कुछ कहे, उसका अपराध क्षमा किया जाएगा; परन्तु जो कोई पवित्र आत्मा के विरुद्ध कुछ कहे, वह न तो इस युग में और न आने वाले युग में क्षमा किया जाएगा।” (मत्ती 12:30-32) इसलिए, जब चेले यह कहते हुए यीशु के पास आए कि उन्होंने किसी को उसके नाम से दुष्टात्माओं को निकालते हुए देखा है, तो उसने महसूस किया कि यह पवित्र आत्मा उसके द्वारा कार्य कर रहा था। कुछ लोग चमत्कार करने के लिए यीशु के नाम का उपयोग करते हैं, लेकिन यदि वे उसके नहीं हैं तो इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। लगभग 54 ईस्वी में एक घटना घटी जब प्रेरित पौलुस इफिसुस में था। लेकिन कुछ यहूदी ओझा भी, जो जगह-जगह जाते थे, उन लोगों का नाम लेने की कोशिश करते थे

जिनमें दुष्टात्माएँ थीं, प्रभु यीशु का नाम, यह कहते हुए, "मैं तुम्हें यीशु के द्वारा प्रचारित करता हूँ जिसे पॉल प्रचार करता है।" एक यहूदी महायाजक स्सेवा के सात पुत्र ऐसा कर रहे थे। और दुष्टात्मा ने उत्तर देकर उन से कहा, मैं यीशु को पहचानता हूं, और मैं पौलुस को जानता हूं, परन्तु तुम कौन हो? और जिस मनुष्य में दुष्टात्मा थी, उस ने उन पर छलांग लगाई, और उन सब को अपने वश में कर लिया, और उन्हें ऐसा वश में कर लिया, कि वे नंगे और घायल होकर उस घर से निकल भागे। यह बात इफिसुस के रहनेवाले यहूदियों और यूनानियों, सब को मालूम हो गई; और उन सब पर भय छा गया, और प्रभु यीशु के नाम की बड़ाई होने लगी। (प्रेरितों 19:13-17) दूसरा संकेतक या संकेत है कि एक व्यक्ति यीशु मसीह में एक विश्वासी है जब वह आत्मा के फल या परमेश्वर के प्रेम का प्रमाण देता है। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब मनुष्य जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।" (यूहन्ना 13:35) यह तब देखा जा सकता है जब कोई दूसरे के प्रति दयालुता का कार्य करता है क्योंकि वह एक संगी मसीही है। यीशु ने इसे इस प्रकार रखा। "क्योंकि जो कोई मसीह के चेले होने के नाते तुम्हारे नाम के कारण तुम्हें एक प्याला पानी पिलाएगा, मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि वह अपना प्रतिफल न खोएगा।" सबक की बात: संगी विश्वासियों द्वारा आसानी से नाराज़ होने से बचिए। आवेदन: यदि इस अगले सप्ताह एक संगी विश्वासी आपको ठेस पहुँचाता है, तो इस पर चिंतन करें कि आप नाराज क्यों हुए और आपने इसे कैसे संभाला। सत्रीय कार्य: अगली बैठक में एक छोटे बच्चे के रूप में अपना एक फोटोग्राफ लेकर आएं।

पाठ 31

ठोकरें खाने के कारण आइसब्रेकर: जब वे छोटे बच्चे थे तब एक-दूसरे के स्वयं के फोटोग्राफ पास करें। परिचय: यीशु ने अपने शिष्यों के सामने एक बच्चे को बैठाकर अपराधों पर अपनी शिक्षा शुरू की। उसने उनसे कहा कि स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिए लोगों को परिवर्तित होना चाहिए और फिर बच्चों की तरह बनना चाहिए। यह कहकर यीशु यह कह रहे थे कि सभी विश्वासी बच्चे हैं। फिर यीशु ने बच्चे को अपनी बाहों में लिया और यह संकेत दिया कि वह कैसे प्यार से सभी विश्वासियों को बच्चों के रूप में स्वीकार करता है और उनके अनुसार व्यवहार करता है। साथी विश्वासियों के साथ कैसे व्यवहार किया जाए, इस पर अपने पूरे प्रवचन के दौरान यीशु बच्चे को अपनी बाहों में लिए हुए हैं। यह शिष्यों के लिए एक दृश्य अनुस्मारक है कि कैसे वह उनसे एक दूसरे के साथ व्यवहार करने की अपेक्षा करता है। समूह चर्चा: क्या प्रत्येक व्यक्ति अपना स्वयं का फोटोग्राफ अपने सामने रखता है। कमरे में प्रत्येक व्यक्ति को देखो, उन्हें यीशु की गोद में बच्चों के रूप में देख रहे हैं। तुम्हारे दिमाग में क्या आता है? _____ तब आपको कैसे लगता है कि यीशु चाहता है कि आप उनके साथ व्यवहार करें? _____ पवित्रशास्त्र पढ़ना:(मत्ती 18:6-9) (मरकुस 9:42-48) आज्ञा: यदि आपका हाथ आपको ठोकर खिलाता है, तो उसे काट दें। यदि आपका पैर आपको ठोकर खिलाता है, तो उसे काट दें। आँख तुझे ठोकर खिलाती है, उसे निकाल बाहर कर देता है। सबक: यीशु ने इस कथन के साथ ठोकर खाने पर अपना पाठ शुरू किया। "जो कोई इन छोटों में से जो विश्वास करते हैं, किसी को ठोकर खिलाए, उसके लिये भला होता, कि चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और उसे समुद्र में डाल दिया जाता।" जब लोग पवित्रशास्त्र के इस मार्ग को पढ़ते हैं, तो सबसे अधिक लगता है कि यीशु बच्चों के बारे में बात कर रहे हैं, हालाँकि मार्ग को फिर से पढ़ने पर यह वास्तव में ये छोटे लोग कहते हैं जो विश्वास करते हैं। छोटे लोग जो विश्वास करते हैं उन्हें एक संकीर्ण संदर्भ में लिया जा सकता है जिसका अर्थ है वे बच्चे जो मसीह का अनुसरण करते हैं। हालाँकि, सभी ईसाइयों के लिए उचित आवेदन है क्योंकि उन्होंने अभी-अभी शिष्यों को बताया कि कोई भी स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता जब तक कि वे बच्चों की तरह नहीं बन जाते। इसी दृष्टि से पाठ पढ़ाया जाता है। यीशु ने घोषणा की कि जो कोई भी विश्वासी के सामने ठोकर खाएगा, उसे गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। वास्तव में, यह बेहतर होगा कि एक विश्वासी को ठोकर खाने के बजाय मनुष्य मर जाए। पवित्रशास्त्र से हम ऐसे लोगों का एक आदर्श उदाहरण पाते हैं जिन्होंने दूसरों को ठोकर खिलाई। साजिश में शामिल दो व्यक्ति बिलाम, एक भविष्यद्वक्ता और मोआब के राजा बालाक थे। राजा बालाक ने बिलाम को इस्राएलियों को शाप देने के लिये काम पर रखा, परन्तु परमेश्वर ने बिलाम को ऐसा करने की अनुमति नहीं दी। इसलिए धन लाभ के लिए, बिलाम ने राजा बालाक को बताया कि कैसे परमेश्वर को अपने लोगों को नष्ट करने के लिए प्राप्त करना है। मोआब की स्त्रियों को इस्राएल के पुरुषों को व्यभिचार करने के लिए बहकाना था और तब वे उन्हें मूर्तिपूजा में ले जा सकेंगी। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की सात कलीसियाओं में से एक, पेरगाम के गिरजे में वही ठोकर लगती है। 'परन्तु मेरे पास तुम्हारे विरुद्ध कुछ बातें हैं, क्योंकि तुम्हारे पास बिलाम की शिक्षा रखने वाले कुछ हैं, जो बालाक को इस्राएलियों के आगे ठोकर खाने, मूरतों के आगे बलि चढ़ाने, और अनैतिक काम करने की शिक्षा देते रहे। (प्रकाशितवाक्य 2:14) शायद हम यीशु की शिक्षा की बेहतर समझ प्राप्त कर सकते हैं जब हम इस पर विचार करते हैं कि ठोकर कैसे होती है। सबसे पहले, कोई व्यक्ति केवल तभी ठोकर खा सकता है जब वह चल रहा हो या दौड़ रहा हो। दूसरे, लोग ठोकर खाते हैं क्योंकि वे बाधा नहीं देखते हैं। यह निम्नलिखित में से किसी भी कारण से हो सकता है: 1) वे अंधे हैं 2) अंधेरा है 3) वे ध्यान नहीं दे रहे हैं कि वे कहाँ जा रहे हैं या 4) वे एक छिपे हुए जाल में कदम रखते

हैं। तीसरा, प्रत्येक ठोकर शरीर की दिशा में परिवर्तन का गठन करती है। आइए कुछ शास्त्रों को देखें जो प्रत्येक बिंदु पर लागू होते हैं। चलना और दौड़ना: क्योंकि हम विश्वास से चलते हैं, दृष्टि से नहीं। (2 कुरिन्थियों 5:7) ताकि व्यवस्था की माँग हम में पूरी हो, जो शरीर के अनुसार नहीं परन्तु आत्मा के अनुसार चलते हैं। (रोमियों 8:4) सो जब गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो हम सब प्रकार के बोझ और उस पाप को जो हमें आसानी से फँसाती है, अलग करके उस दौड़ में धीरज से दौड़ें, जो हमारे आगे दौड़ती है। विश्वास के रचयिता और सिद्ध करने वाले यीशु पर हमारी दृष्टि लगाते हैं ... (इब्रानियों 12:1-2) वे बाधा नहीं देखते: अंधा - परन्तु जो अपने भाई से बैर रखता है, वह अन्धकार में है और अन्धकार में चलता है, और करता है पता नहीं वह कहाँ जा रहा है क्योंकि अँधेरे ने उसकी आँखों को अन्धा कर दिया है। (1 यूहन्ना 2:11) यह अंधापन लौदीकिया की कलीसिया में भी होता है, जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की सात कलीसियाओं में से एक है। क्योंकि तुम कहते हो, "मैं धनी हूं, और धनवान हो गया हूं, और मुझे किसी चीज की आवश्यकता नहीं है," और तुम नहीं जानते कि तुम मनहूस और दुखी और गरीब और अंधे और नग्न हो, मैं तुम्हें सलाह देता हूं कि तुम मुझसे आग से शुद्ध सोना खरीदो ताकि तुम धनी हो जाओ, और सफेद वस्त्र धारण करो, कि तुम अपने आप को पहनो, और तुम्हारी नग्नता की शर्म प्रकट न हो; और अपनी आंखों का अभिषेक करने के लिथे आंख का लोढ़ा, कि तुम देख सको। (प्रकाशितवाक्य 3:17-18) अंधेरा है - यीशु ने उत्तर दिया, "क्या दिन में बारह घंटे नहीं होते हैं? यदि कोई दिन में चले, तो ठोकर नहीं खाता, क्योंकि वह इस जगत की ज्योति को देखता है। परन्तु यदि कोई रात को चले, तो ठोकर खाता है, क्योंकि उस में ज्योति नहीं है।" (यूहन्ना 11:9-10) ध्यान न देना कि वे कहाँ जा रहे हैं - तब यीशु ने उन से फिर कहा, “जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु उसके पास जीवन की ज्योति होगी।” (यूहन्ना 8:12) एक छिपे हुए जाल में फँस गया - तुम अच्छी तरह से भाग रहे थे; आपको सच्चाई का पालन करने से किसने रोका? (गल 5:7) दिशा में परिवर्तन: मुझे आश्चर्य है कि आप उसे इतनी जल्दी छोड़ रहे हैं जिसने आपको एक अलग सुसमाचार के लिए मसीह की कृपा से बुलाया है; (गलतियों 1:6) कोई तुम्हें किसी रीति से धोखा न दे, क्योंकि [यहोवा का आना और उसके पास हमारा इकट्ठा होना] तब तक नहीं आएगा, जब तक कि धर्मत्यागी पहिले न आए, और अधर्म का मनुष्य प्रगट न हो, जो परमेश्वर का पुत्र है। नाश, (2 थिस्सलुनीकियों 2:3) सो हे प्रियो, यह पहिले से जानकर, चौकस रहो, ऐसा न हो कि तुम सिद्धांतहीन लोगों की भूल से बहक जाओ, और अपनी ही दृढ़ता से गिर न जाओ, (2 पतरस 3:17) एक जो चीजें यीशु की शिक्षा को दिलचस्प बनाती हैं, वह यह है कि वह दो अलग-अलग दृष्टिकोणों से ठोकरें खाने के विषय पर पहुंचता है: 1) एक व्यक्ति दूसरे के साथ क्या करता है और 2) एक व्यक्ति अपने लिए क्या करता है। यह सुनने में जितना अविश्वसनीय लगता है, विश्वासी अपने आप को ऊपर उठा सकते हैं और वे उसी भाग्य को भुगतते हैं, जो दूसरों के लिए ठोकर का कारण बनते हैं। यीशु अपने श्रोताओं को सावधान करते हैं कि ठोकरें किसके द्वारा बनाई जा सकती हैं: 1) आप क्या करते हैं (हाथ) 2) आप कहाँ चलते हैं (पैर) और 3) आप क्या देखते हैं (आँखें)। समूह चर्चा:3. कुछ तरीके क्या हैं जिनसे आप एक विश्वासी को ठोकर खिला सकते हैं? सबक की बात: किसी के लिए ठोकर मत बनो। आवेदन: इस पर विचार करें कि आपके जीवन में कौन सी चीजें अन्य विश्वासियों के लिए अपमानजनक हैं। उन्हें कबूल

पाठ 32

एक विश्वासी आइसब्रेकर को सुधारना: समाज कानून तोड़ने वालों से कैसे निपटते हैं? कानून तोड़ने वालों के साथ इस तरह व्यवहार करने का प्राथमिक लक्ष्य क्या है? _____ _____ परिचय: यीशु ने अपनी बाहों में एक बच्चे को पकड़ रखा था जब उसने शिष्यों को निर्देश दिया था कि वह दूसरों के लिए या खुद के लिए ठोकर न खाए। और फिर, यह स्वीकार करते हुए कि बच्चे गलतियाँ करने के लिए प्रवृत्त होते हैं, यीशु अपनी शिक्षा को एक ऐसे विश्वासी के साथ व्यवहार करने के लिए परिवर्तित करते हैं जो पाप में लिप्त होकर सत्य से भटक रहा है। वह छोटे-मोटे अपराधों के बारे में बात नहीं कर रहा था, छोटी चीजें जो हमें इतनी आसानी से परेशान करती हैं: एक व्यक्ति की आदतें, सामाजिक कौशल, शिष्टाचार या राजनीति। पवित्रशास्त्र पढ़ना:(मत्ती 18:10-20) आज्ञाएँ:इस बात का ध्यान रखना कि तुम इन छोटों में से किसी एक को तुच्छ न समझना।जाओ और अकेले में उसे ताड़ना दो। अपने साथ एक या दो और ले जाओ। कलीसिया को बताओ। वह तुम्हारे लिए एक अन्यजाति और कर संग्रहकर्ता के रूप में हो। पाठ: यीशु ने इस कथन के साथ शिक्षण की शुरुआत की। देख, इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जाना, क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि उनके दूत स्वर्ग में मेरे पिता के, जो स्वर्ग में हैं, नित्य देखते हैं। किसी का तिरस्कार करने का अर्थ है उन्हें नीचा देखना या उनके बारे में कम सोचना। ऐसे कई कारण हैं जिनकी वजह से लोग दूसरों को तुच्छ समझते हैं। उदाहरण के लिए, वे पर्याप्त स्मार्ट नहीं हैं, वे गरीब हैं, वे किसी तरह से विफल हो गए हैं या उनके नैतिक मानक बराबर नहीं हैं। प्रत्येक मामले में, तिरस्कार करने वाला गर्व से व्यवहार कर रहा है और वास्तव में दूसरे पर निर्णय दे रहा है। यीशु ने इस विषय पर पहले चेलों को निर्देश दिया था। न्याय न करें, ऐसा न हो कि आप का न्याय किया जाए और पहले अपनी आंख से लॉग आउट करें। समूह चर्चा: आपको क्यों लगता है कि एक अपमानजनक विश्वासी से निपटने में यह पहला कदम महत्वपूर्ण है? _____ _____ सबक जारी रखा: 1 के दो मुद्दों को संबोधित करने के बाद) एक साथी विश्वासी को फटकारने से पहले अपने दिल का न्याय करना और 2) अपराधी आस्तिक को बहाल करने के लक्ष्य के रूप में, यीशु फिर अपराधी से निपटने में चार-चरण की प्रक्रिया की रूपरेखा तैयार करता है। इस प्रक्रिया का प्रत्येक चरण प्रेम के नियम पर आधारित है। "हालांकि आप चाहते हैं कि लोग आपके साथ व्यवहार करें, इसलिए उनके साथ व्यवहार करें। और इस प्रकार, प्रक्रिया के प्रत्येक चरण को अपराधी को पश्चाताप करने का अवसर देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। जिस तरह से अपराधी के साथ व्यवहार किया जाता है वह इस बात पर आधारित होता है कि वह अपने पाप का पश्चाताप करता है या नहीं। यह पाठ उन लोगों से संबंधित है जो पश्चाताप नहीं करते हैं जबकि अगला पाठ उन लोगों से संबंधित है जो ऐसा करते हैं। पहला कदम उस व्यक्ति को शामिल करता है जो एक विश्वासी को पाप करते हुए देखता है। उसे अपराधी के पास जाना है और उसे अकेले में डांटना है। इससे हम देख सकते हैं कि अपराधी को फटकारना हमेशा आहत पक्ष की जिम्मेदारी होती है। यदि वह ऐसा नहीं करता है तो वह स्वयं प्रेम के नियम का पालन न करने का दोषी है। दूसरे शब्दों में, वह अपराधी को पाप में बने रहना और परमेश्वर की ओर से दंड भुगतना और फिर उसे फटकारते हुए देखना पसंद करेगा। यह दूसरों के प्रति प्रेम और चिंता की कमी को भी दर्शाता है जो पाप से प्रभावित हो सकते हैं। अपराधी से निजी तौर पर संपर्क करने में आहत व्यक्ति यह प्रदर्शित कर रहा है कि वह अपनी शर्म को ढककर अपराधी को और अधिक शर्मिंदगी से बचाना चाहता है। दूसरे की लज्जा को ढकने के दो पुराने नियम के

उदाहरण हैं: 1) जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा को उनके पाप करने के बाद उनकी नग्नता की शर्म को ढकने के लिए जानवरों की खाल प्रदान की थी और 2) जब येपेत और शेम ने अपने पिता, नूह की नग्नता को ढका था। नीतिवचन की पुस्तक की बुद्धि भी इस क्रिया का समर्थन करती है। नफरत से कलह पैदा होती है, लेकिन प्यार सभी अपराधों को ढँक देता है और एक मूर्ख का क्रोध एक ही बार में जाना जाता है, लेकिन एक बुद्धिमान व्यक्ति अपमान को छुपाता है। यदि अपराधी पश्चाताप नहीं करता है तो यह संकेत है कि वह जिद्दी है। इसलिए, दूसरा कदम अपराधी का सामना करने के लिए एक या दो और व्यक्तियों को लेना है ताकि दो या तीन गवाहों के मुंह से हर तथ्य की पुष्टि हो सके। गवाहों की अहम भूमिका होती है। सबसे पहले, उनकी निष्पक्षता के कारण, वे यह सुनिश्चित करने में मदद करते हैं कि पार्टियों के बीच कोई गलत संचार या गलतफहमी नहीं है। दूसरे, वे शांति और मेल-मिलाप के राजदूत के रूप में कार्य करते हैं। और तीसरे वे पवित्रशास्त्र के संबंध में अपराध के बारे में तथ्यों को इकट्ठा करते हैं, नाराज पक्ष क्या कहता है और अपराधी क्या कहता है। यदि अपराधी इस बिंदु पर पश्चाताप नहीं करता है तो यह इंगित करता है कि वह विद्रोह में है। इसलिए, तीसरा कदम चर्च को बताना है। चर्च को बताने में चर्च के प्रत्येक सदस्य को तुरंत सूचित करना आवश्यक नहीं है बल्कि केवल शासक निकाय को सूचित करना आवश्यक है। गवाहों को सुनने के बाद सत्तारूढ़ निकाय चर्च की स्थिति के संबंध में कानूनी रूप से बाध्यकारी निर्णय लेता है। यीशु ने इस मुद्दे को संबोधित किया जब उसने कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूं, जो कुछ तुम [निषिद्ध] पृथ्वी पर बांधोगे वह स्वर्ग में [निषिद्ध] होगा; और जो कुछ तुम पृथ्वी पर [अनुमति] खोलोगे वह स्वर्ग में [अनुमति] दिया जाएगा। मैं तुम से फिर कहता हूं, कि यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिये जिसे वे मांगें, एक मन करें, तो वह उनके लिये मेरे पिता के द्वारा जो स्वर्ग में है, किया जाएगा। क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम से इकट्ठे हुए हैं, वहां मैं उनके बीच में हूं।" यदि सत्तारूढ़ निकाय कार्रवाई करने में विफल रहता है तो वे अपनी जिम्मेदारी से चूक जाते हैं और प्यार में काम नहीं कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में वे चाहते हैं कि अपराधी पाप में बने रहें और परमेश्वर की ओर से दंड भुगतें और फिर उसे फटकारें। यह कलीसिया के अन्य लोगों के प्रति प्रेम और चिंता की कमी को भी दर्शाता है जो पाप से प्रभावित हो सकते हैं। प्रेरित पौलुस ने इस सटीक मुद्दे पर कुरिन्थ की कलीसिया के नेतृत्व को फटकार लगाई। यह वास्तव में बताया गया है कि आप में अनैतिकता है, और इस तरह की अनैतिकता अन्यजातियों में भी मौजूद नहीं है, कि किसी के पास अपने पिता की पत्नी है। तुम अभिमानी हो गए हो और इसके बदले शोक नहीं किया है, कि जिस ने यह काम किया है वह तुम्हारे बीच से हटा दिया जाएगा। क्योंकि मैं अपनी ओर से, देह में अनुपस्थित, परन्तु आत्मा में उपस्थित होने पर भी, उस व्यक्ति का न्याय कर चुका हूँ जिसने ऐसा किया है, मानो मैं उपस्थित था। हमारे प्रभु यीशु के नाम पर, जब तुम इकट्ठे हो, और मैं तुम्हारे साथ आत्मा में, हमारे प्रभु यीशु की शक्ति के साथ, मैंने शैतान को उसके मांस के विनाश के लिए देने का फैसला किया है, ताकि उसकी आत्मा हो सके प्रभु यीशु के दिन में बचाया जा सकता है। आपका घमंड अच्छा नहीं है। क्या तुम नहीं जानते कि थोड़ा सा खमीर आटे की पूरी गांठ को खमीर कर देता है? पुराने खमीर को साफ करें ताकि आप एक नई गांठ बन सकें, जैसे आप वास्तव में अखमीरी हैं। मसीह के लिए हमारा फसह भी बलिदान किया गया है। इसलिथे आओ हम पर्ब्ब न पुराने खमीर से, और न बुराई और दुष्टता के खमीर से, परन्तु सच्चाई और सच्चाई की अखमीरी रोटी से मनाएं। एक बार जब सत्तारूढ़ निकाय ने अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी है तो अपराधी के पास पश्चाताप करने का एक आखिरी मौका है। यदि वह ऐसा नहीं करता है तो वह अनुमान के साथ या उच्च स्तर पर कार्य करने का दोषी है। यीशु ने कहा कि यदि वह इस समय पश्चाताप करने में असफल रहा, तो कलीसिया में प्रत्येक व्यक्ति को उसके साथ अन्यजातियों और कर संग्रहकर्ता के रूप में व्यवहार करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, कलीसिया को उस व्यक्ति के साथ तब तक कोई संगति नहीं रखनी थी जब तक कि वह पश्चाताप न कर ले। प्रेरित

पौलुस ने कुरिन्थियों को लिखे अपने पहले पत्र में इस स्थिति को बरकरार रखा। मैंने तुम्हें अपनी चिट्ठी में अनैतिक लोगों के साथ संगति न करने के लिए लिखा था; मेरा मतलब इस दुनिया के अनैतिक लोगों, या लालची और ठगों, या मूर्तिपूजकों के साथ बिल्कुल नहीं था, क्योंकि तब आपको दुनिया से बाहर जाना होगा। लेकिन वास्तव में, मैंने आपको किसी भी तथाकथित भाई के साथ संगति न करने के लिए लिखा था, यदि वह एक अनैतिक व्यक्ति, या लोभी, या मूर्तिपूजक, या गाली देने वाला, या पियक्कड़, या ठग है - ऐसे व्यक्ति के साथ खाने के लिए भी नहीं . बाहरी लोगों को जज करने से मेरा क्या लेना-देना है? क्या तुम उन लोगों का न्याय नहीं करते जो कलीसिया के भीतर हैं? लेकिन जो बाहर हैं, भगवान न्याय करते हैं। दुष्ट को अपने बीच से हटा दो। समूह चर्चा: आप कितने चर्चों को जानते हैं जो एक अपमानजनक विश्वासी से निपटने के लिए बाइबिल की प्रक्रिया का उपयोग करते हैं? _____ अधिकांश चर्च बाइबिल की प्रक्रिया का उपयोग क्यों नहीं करते हैं? प्रक्रिया में किस बिंदु पर जिम्मेदारी में विफलता सबसे अधिक बार होती है? _____
_____ सबक का बिंदु: भटके हुए विश्वासियों को सही करें। आवेदन: जब आप एक ईसाई पाप देखते हैं, तो सुधार प्रक्रिया में अपनी जिम्मेदारी की उपेक्षा न करें।

पाठ 33

क्षमाशील विश्वासी जो बर्फ तोड़ने वाले का पश्चाताप करते हैं: "मुझे क्षमा करें" और "मैं पश्चाताप करता हूँ" के बीच क्या अंतर है। जो हर विश्वासी के दिल में है। हे यहोवा, मेरा भाई कितनी बार मेरे विरुद्ध पाप करे, और मैं उसे क्षमा करूं? (केजेवी) इस पाठ में हम पतरस के सवालों के जवाब में यीशु के जवाब और कुछ महीने बाद उसी मुद्दे पर शिष्यों को दिए गए निर्देशों को शामिल करेंगे। पवित्रशास्त्र पढ़ना:(मत्ती 18:21-35) (मरकुस 9:49-50) (लूका 17:1-10) आज्ञाएँ: अपने आप में नमक रखो। एक दूसरे के साथ शांति से रहो। अपने पहरे पर रहो। उसे फटकारो उसे माफ कर दो।कहो। समूह चर्चा: आपने अपने खिलाफ एक ही व्यक्ति को एक ही पाप के लिए कितनी बार क्षमा किया है? _____ सबक: जब पतरस यीशु के पास अपने प्रश्न के साथ आया कि उसे कितनी बार क्षमा करनी चाहिए, तो उसने दूसरा प्रश्न जोड़ा, "सात बार तक?" (केजेवी) पीटर द्वारा इस तरह से सात नंबर का इस्तेमाल सिर्फ मनमाना नहीं था। हिब्रू में उसने जो कहा उसके लिए शब्द शबा है और किसी ऐसी चीज को संदर्भित करता है जिसे "सात" या सात से गुणा किया गया है। इसका दोहरा अर्थ है: 1) शपथ और 2) संख्या सात। शबा शब्द का शाब्दिक अर्थ है, "पूर्ण होना" और किसी ऐसी चीज को संदर्भित करता है जिसे बदला या तोड़ा नहीं जा सकता। यह इस विचार का संदर्भ देता है कि जब कोई व्यक्ति शपथ लेता है तो वह इसे सात बार दोहराता है। इसलिए जब पतरस ने "सात बार" (शबा या सात बार) शब्द का इस्तेमाल किया तो वह यीशु से स्पष्टीकरण मांग रहा था। अंग्रेजी में, पीटर ने प्रश्न को इस तरह से वाक्यांशित किया होगा, "क्या किसी ऐसे व्यक्ति को क्षमा करना ठीक है जो कहता है कि वह सात बार तक पश्चाताप करता है क्योंकि वास्तव में उसने अभी तक शपथ नहीं ली है?" यीशु ने पतरस के प्रश्न का उत्तर इस प्रकार दिया, "मैं तुझ से सात बार नहीं कहता, परन्तु सत्तर गुणा सात तक।" (KJV) अंग्रेजी में हम उसका कथन कुछ इस तरह सुनते हैं। एक व्यक्ति को चार सौ नब्बे बार माफ करना चाहिए और चूंकि संख्या इतनी बड़ी है कि वह इसे ट्रैक नहीं कर सकता ... इसलिए उसे बस क्षमा करते रहना चाहिए। सोचने का यह तरीका ठीक है, लेकिन यीशु के कुछ गूढ़ उत्तर में उससे कहीं अधिक गहराई है। इब्रानी भाषा में यीशु ने जो कहा वह है, "मैं तुझ से नहीं कहता, सात, परन्तु सत्तर सात बजे तक।" यह दानिय्येल 9:24 की भविष्यवाणी का एक स्पष्ट संदर्भ है। तेरी प्रजा और तेरे पवित्र नगर के लिये सत्तर सात ठहराए गए हैं, कि अपराध का अन्त, पाप का अन्त, अधर्म का प्रायश्चित्त, चिरकाल की धार्मिकता लाने, दर्शन और भविष्यद्वाणी पर मुहर लगाने, और परमपवित्र स्थान का अभिषेक करने की आज्ञा दी गई है। . इस मामले में, यीशु पतरस से कह रहा है कि जब तक दानिय्येल की भविष्यवाणी में कही गई बातें पूरी नहीं हो जातीं, तब तक उसे संगी विश्वासियों को क्षमा करते रहना चाहिए। अपनी बात को पुष्ट करने के लिए, यीशु ने इसे एक राज्य दृष्टान्त के साथ जोड़ा। दृष्टान्त में एक निश्चित राजा (भगवान) एक व्यक्ति को उसका कर्ज (पाप) माफ कर देता है। लेकिन वह आदमी दूसरे का कर्ज (पाप) माफ नहीं करता। क्योंकि उसने दूसरे से क्षमा को रोक दिया, राजा (भगवान) उसे कर्ज चुकाने तक यातना देने वालों के हवाले कर देता है। दृष्टांत का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि हमें दूसरों को कितना कम क्षमा करना है, इसके संबंध में भगवान ने हमें कितना क्षमा किया है। यीशु ने दृष्टान्त को इस कथन के साथ समाप्त किया, "क्योंकि हर कोई आग से नमकीन किया जाएगा।" शब्द "आग से नमकीन" भगवान के लिए किए गए बलिदानों का संदर्भ है। पुराने नियम में सभी बलिदानों को आग से जलाने से पहले नमकीन बनाना आवश्यक था। नमक ने परमेश्वर और मनुष्य दोनों के लिए एक अनुस्मारक के रूप में कार्य किया कि दोनों पक्षों के बीच एक वाचा का संबंध मौजूद था। इसलिए ईसाइयों के लिए, जो स्वयं को जीवित बलिदान के रूप में अर्पित करना चाहते हैं, आग से नमकीन होना पूरी तरह से उपयुक्त है। यह वास्तव में दूसरे के पापों को क्षमा करने के लिए एक बलिदान है,

खासकर जब हम में सब कुछ प्रतिशोध के लिए रो रहा है, आंख के लिए आंख और दांत के लिए दांत। यीशु ने इसे पहचाना और इसलिए उन्होंने नमक के दृष्टांत का इस्तेमाल किया। यह उसके शिष्यों को याद दिलाने के लिए था कि वे परमेश्वर के साथ एक वाचा के संबंध में थे। "क्योंकि यदि तुम दूसरों को उनके अपराधों के लिये क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। परन्तु यदि तुम औरोंको क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।" (मत्ती 6:14-15) वाचा के उपयोग के अलावा, नमक के दो प्राथमिक उपयोग हैं: स्वाद के लिए या स्वादिष्ट बनाने के लिए - अपने भाषण को हमेशा अनुग्रह के साथ रहने दें, जैसे कि नमक से भरा हुआ हो, ताकि आपको पता चल जाए कि आपको कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए हर व्यक्ति। (कुलुस्सियों 4:6) क्षय से बचाने या बचाने के लिए - मेरे भाइयों, यदि आप में से कोई सच्चाई से भटक जाता है और कोई उसे वापस कर देता है, तो उसे बताएं कि जो कोई पापी को उसके मार्ग की त्रुटि से बदल देता है, वह अपनी आत्मा को बचा लेगा मृत्यु और बहुत से पापों को ढांप देगा। (याकूब 5:19-20) जब यीशु ने शिष्यों को अपने आप में नमक रखने और एक-दूसरे के साथ शांति से रहने की आज्ञा दी, तो वह अनिवार्य रूप से कह रहा था, "अपमान करने वाले पक्ष से एक तरह से बात करो, जबकि उसके जीवन को संरक्षित करने के विचार के साथ। आप दोनों के बीच बेहतर संबंध स्थापित करना।" समूह चर्चा: परमेश्वर विश्वासियों से महिमा कैसे प्राप्त करता है? _____ _____ सबक जारी रहा: कुछ समय बाद यीशु ने अपने शिष्यों से फिर से एक गलती करने वाले विश्वासी को क्षमा करने की आवश्यकता के बारे में बात की। इस बार उसने अपने निर्देश की शुरुआत इन शब्दों के साथ की, "अपने पहरे पर रहो।" क्षमा की शिक्षा शुरू करने के लिए वे अजीब शब्दों की तरह लगते हैं। हालांकि, यह संक्षिप्त वाक्यांश बहुत शक्तिशाली है और इसका अर्थ निम्न में से किसी भी अर्थ में किया जा सकता है: 1) सतर्क रहें, 2) सतर्क रहें, 3) ध्यान दें, 4) सतर्क रहें, 5) मूर्ख मत बनो, 6) उचित रक्षात्मक रुख अपनाएं, 7) खुद पर हमला न होने दें। वाक्यांश और सभी व्याख्याएं एक रक्षात्मक मुद्रा का संकेत देती हैं। उनमें से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देने के लिए भीख माँगता है, "किससे बचाव करें?" उत्तर दुगना है। सबसे पहले अपने आप को पाप से बचाने के लिए सबसे पहले है ... सांपों के रूप में बुद्धिमान। और दूसरा यह है कि अपने हृदय को कठोर न किया जाए, कि उस विश्वासी को क्षमा न करें जो पाप करता है, परन्तु फिर पश्चाताप करता है... कबूतरों की नाईं निर्दोष। निर्देश, "अपने गार्ड पर रहें" चिंतनशील और शिक्षाप्रद दोनों होने के लिए है। एक मसीही विश्वासी द्वारा एक संगी विश्वासी द्वारा पाप किए जाने के बाद, उसे इस बात पर विचार करना चाहिए कि घटनाएँ कैसे घटित हुईं। दूसरे शब्दों में, "मैंने खुद को इस स्थिति में कैसे लाया?" दूसरे, उसे भविष्य में पाप किए जाने से बचने के लिए आवश्यक कदमों की खोज के लिए समय निकालना चाहिए। कई बार ईसाई भोलेपन से खुद को बार-बार पाप किए जाने की स्थिति में रखते हैं। कुछ इसे पागल व्यवहार के रूप में वर्णित करेंगे। समूह चर्चा: इस पुरानी कहावत का क्या अर्थ है? फिर से मुझे बेवकूफ़ बनाया, शर्म आनी चाहिए तुम्हें। दो बार बेवकूफ़ बना, यह शर्म की बात है। एक आस्तिक को दूसरे आस्तिक के पाप से आहत करने का एक तरीका बताएं? _____ _____ नाराज आस्तिक ने ऐसा क्या किया जिससे खुद को पाप करने की अनुमति मिली? भविष्य में पाप किए जाने से बचने के लिए वह कौन-से कदम उठा सकता है? _____ _____

_____ सबक जारी: तेजी से आग उत्तराधिकार में, यीशु उन कदमों को सूचीबद्ध करता है जो एक विश्वासी को तब उठाना चाहिए जब कोई अन्य विश्वासी उसके खिलाफ पाप करता है। “उसे ताड़ना; और यदि वह पछताए, तो उसे क्षमा कर।” एक पापी विश्वासी के खिलाफ पहली फटकार लाना हमेशा आहत आस्तिक की जिम्मेदारी है! आस्तिक की यह भी जिम्मेदारी है कि अपराधी को क्षमा कर दे यदि वह कहता है कि वह पश्चाताप करता है। ऐसा न हो कि शिष्यों को उनके पहले के कथन को गलत समझ लेना चाहिए कि उन्हें कितनी बार क्षमा करना है, यीशु ने अपनी बात को पुष्ट किया। मात्र 490 बार नहीं, जैसा कि कुछ लोग सोचते हैं, लेकिन, "यदि वह दिन में सात बार तुम्हारे विरुद्ध पाप करे, और सात बार तुम्हारे पास यह कहे, 'मैं पश्चाताप करता हूं, तो उसे क्षमा कर दो।" इस आदेश पर शिष्य चकित रह जाते हैं। सत्तर साल की अवधि में यह कुल 178,850 गुना होगा। लेकिन यीशु इस आदेश को अनुचित नहीं मानते। उसके लिए यह नहीं है कि एक आस्तिक कितनी बार क्षमा करता है, ठीक वैसे ही जैसे उसके शिष्यों को... दयालु होना चाहिए जैसे कि स्वर्ग में उनके पिता दयालु हैं। इस विचार का समर्थन करने के लिए उन्होंने इस कथन के साथ शिक्षण समाप्त किया। तो तुम भी, जब तुम उन सब कामों को करो जिनकी आज्ञा तुम्हें दी गई है, तो कहो, “हम अयोग्य दास हैं; हमने वही किया है जो हमें करना चाहिए था।" सबक का बिंदु: क्षमा करने के लिए तैयार रहें। आवेदन: अगर कोई आपके खिलाफ पाप करता है तो इस पर चिंतन करने के लिए समय निकालें कि यह कैसे हुआ और आप भविष्य में फिर से अनुभव से बचने के लिए क्या कदम उठाएंगे।

पाठ 34

आइसब्रेकर को आनन्दित करने का कारण: कुछ चीजों के नाम बताइए जो आपको बहुत खुशी देती हैं। _____

_____

_____ परिचय: यीशु द्वारा अपराधों के संबंध में अपने निर्देशों को समाप्त करने के बाद उन्होंने यरूशलेम में तम्बू के पर्व में भाग लिया जहां उन्होंने व्यभिचार में पकड़ी गई एक महिला को माफ कर दिया। दावत के दौरान उन्होंने खुद को दुनिया का प्रकाश घोषित किया, एक ऐसे व्यक्ति को चंगा किया जो अंधा पैदा हुआ था और फिर खुद को अच्छा चरवाहा घोषित करके समाप्त कर दिया। थोड़े समय बाद उसने सत्तर अन्य शिष्यों को उन शहरों और कस्बों में सुसमाचार प्रचार करने के लिए भेजा जहाँ वह जा रहा था। जो निर्देश उसने उन्हें दिए वह पाठ 21-24 में पाए जा सकते हैं। पवित्रशास्त्र पढ़ना:(मत्ती 11:25-30) (लूका 10:17-24) आज्ञाएँ: निहारना, मैंने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को रौंदने, और शत्रु की सारी शक्ति पर अधिकार दिया है, और कुछ भी घायल नहीं होगा तुम।परन्तु इस से आनन्दित मत होओ कि आत्मा तुम्हारे अधीन है।पर इस बात से आनन्दित रहो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में दर्ज हैं।मेरे पास आओ।मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो, मुझसे सीखो। सबक: जब सत्तर बाहर गए, तो उन्हें यकीन नहीं था कि क्या होने वाला है या वे क्या परिणाम प्राप्त करेंगे। उन्होंने बस यीशु की आज्ञाओं का पालन किया! अपने सुसमाचार प्रचार के दौरे से लौटने पर वे बहुत खुश हुए और उन्होंने यीशु को बताया कि उनके नाम पर दुष्टात्माएँ भी उनके अधीन हो गई हैं। जवाब में, यीशु ने उन्हें याद दिलाया कि उसने उन्हें शत्रु की सारी शक्ति पर अधिकार दिया है। यह अधिकार यीशु के सभी शिष्यों को दिया गया है क्योंकि सुसमाचार का प्रचार करने में वे प्रेम में सच बोल रहे हैं, सीधे तौर पर आध्यात्मिक शक्तियों का विरोध कर रहे हैं। वास्तव में, जब पुन्तियुस पीलातुस ने यीशु का सामना किया, तो उसने कहा कि सत्य की गवाही देना ही वह उद्देश्य था जिसके लिए वह पृथ्वी पर आया था। "आप ठीक कहते हैं कि मैं एक राजा हूँ। इसके लिए मैं पैदा हुआ हूं, और इसके लिए मैं दुनिया में आया हूं, ताकि सच्चाई की गवाही दी जा सके। जो कोई सत्य का है, वह मेरा शब्द सुनता है।" (यूहन्ना 18:37) और प्रेरित यूहन्ना ने इसे इस प्रकार रखा, "परमेश्वर का पुत्र शैतान के कामों को नाश करने के लिये इसी लिये प्रकट हुआ।" (1 यूहन्ना 3:8) सत्तर को भेजने से पहले झोंपड़ियों की दावत में यीशु ने शैतान के कार्यों का वर्णन किया और अपने स्वयं के कार्यों के साथ इसकी तुलना की। चोर केवल चोरी करने और मारने और नष्ट करने के लिए आता है; मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं। (यूहन्ना 10:10) शत्रु की शक्ति धोखे के माध्यम से झूठ है, जो पाप को जन्म देती है जिसके परिणामस्वरूप मृत्यु होती है और मसीह की शक्ति प्रेम में बोली जाने वाली सच्चाई है, जो जीवन के परिणामस्वरूप आज्ञाकारिता लाती है। यीशु ने अपने शत्रुओं का वर्णन करने के लिए दो प्रतीकात्मक प्राणियों का उपयोग किया और वे मानव जाति को कैसे प्रभावित करते हैं: सर्प और बिच्छू। सर्प झूठ और धोखे का प्रतिनिधित्व करता है। अब सर्प उस मैदान के सब पशुओं से जिसे यहोवा परमेश्वर ने बनाया था, अधिक धूर्त था। ; वह भूमि पर गिरा दिया गया, और उसके दूत उसके साथ नीचे फेंक दिए गए। (प्रकाशितवाक्य 12:9) बिच्छू पाप और मृत्यु का प्रतिनिधित्व करता है। हे मृत्यु, तुम्हारी जीत कहाँ है? हे मृत्यु, तुम्हारा डंक कहाँ है? मृत्यु का दंश पाप है, और पाप की शक्ति व्यवस्था है; परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है। (1 कुरिन्थियों 15:55-57) हालाँकि यह उचित लगा कि सत्तर चेलों को उस अधिकार से आनन्दित होना चाहिए जो उन्हें दिया गया था, यीशु ने उन्हें ऐसा नहीं करने के लिए कहा। इसके बजाय उन्हें इस बात से आनन्दित होना था कि उनके नाम स्वर्ग में लिखे गए थे। यह कहकर यीशु उन्हें बता रहे थे कि उनके नाम जीवन की पुस्तक में अंकित हैं। इससे

उसके शिष्यों को आनन्दित होने के लिए कुछ मिलता! यहूदी शिक्षा यह मानती है कि जीवन की पुस्तक में केवल सच्चे धर्मी ही अंकित हैं। हम उन्हें "संत" या उनके बारे में सोच सकते हैं जिनके लिए शर्मिंदा होने की कोई बात नहीं थी। यहूदी यह भी मानते हैं कि अधिकांश लोग पश्चाताप की पुस्तक में लिखे गए हैं और उनके भाग्य को अभी तक सील नहीं किया गया है, जबकि वास्तव में अपश्चातापी दुष्ट लोगों को मृतकों की पुस्तक में अंकित किया गया है। यीशु को यह कहते हुए सुनना कि उनके नाम पहले ही स्वर्ग में अंकित हो चुके थे, वास्तव में एक अच्छी खबर होती। तब यीशु ने अपने आनन्द के बीच में आज्ञा दी, कि हे सब थके हुओं और बोझ से दबे लोगों मेरे पास आओ, और मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और हृदय में दीन हूं, और तुम अपनी आत्माओं के लिए विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है। उसकी अपील मनुष्य के हर हिस्से तक पहुँचती है: आत्मा, आत्मा और शरीर और जो उसने झोपड़ियों के पर्व में कहा था उसका सीधा संदर्भ है। मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं। लोग जो बोझ उठाते हैं वह अलग हो सकता है। कुछ जीवन के भौतिक बोझ से संघर्ष करते हैं। अन्य लोग पाप और मृत्यु के आत्मिक बोझ से संघर्ष करते हैं। और फिर भी अन्य लोग व्यवस्था का पालन करने के आत्मिक बोझ से संघर्ष करते हैं। यीशु ने इस आखिरी बोझ को भी संबोधित किया जब उन्होंने शास्त्रियों और फरीसियों के साथ बात की। आप वकीलों को भी धिक्कार है! क्योंकि तू तो मनुष्यों को ऐसे भारी बोझ से तौलता है, जिसे उठाना कठिन है, और तू अपक्की एक उँगली से भी उन बोझोंको छुएगा भी नहीं। (लूका 11:46) प्रेरित पतरस ने भी 50 ईस्वी के आसपास यरूशलेम में पहली चर्च परिषद में इस मुद्दे को संबोधित किया। उसने कहा, "इसलिये अब तुम चेलों की गर्दन पर ऐसा जूआ रखकर परमेश्वर की परीक्षा क्यों करते हो, जिसे न हमारे पूर्वज और न हम सह सकते थे?" (प्रेरितों के काम 15:10) इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि क्या बोझ है, इसे ढोने वाले सभी एक ही चीज की तलाश में हैं। जो लोग यीशु के पास आते हैं, उन्हें वह आराम, एक साझा भार और एक हल्का भार प्रदान करता है। आइए विस्तार से देखें कि उन्होंने क्या कहा। ज्यादातर लोग जो भारी बोझ उठाकर थके हुए हैं, आराम करने के अवसर की तलाश में हैं। वे अपना भार कम करना चाहते हैं, थोड़ी देर के लिए बैठना या लेटना और तरोताजा होना चाहते हैं। यीशु ने कहा, “हे सब थके हुओं और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ, और मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।” भविष्यद्वक्ता यशायाह ने इस विश्राम के बारे में कहा, जब उसने कहा, "वह इन लोगों से होठों और विदेशी जीभ से बात करेगा, जिसने उनसे कहा था, 'यहाँ विश्राम है, थके हुए को विश्राम दो,' और, 'यहाँ विश्राम है ,' लेकिन वे नहीं माने।” (यशायाह 28:11-12) प्रेरितों के काम की पुस्तक अपनी स्वयं की टिप्पणी जोड़ती है। इसलिथे मन फिराओ और लौट आओ, कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएं, जिस से प्रभु के साम्हने से विश्राम के दिन आ जाएं। (प्रेरितों 3:19) यीशु लोगों को न केवल आराम की पेशकश करता है, वह उनके बोझ को बाकी हिस्सों में ले जाने में मदद करने की पेशकश करता है। मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और हृदय में दीन हूं, और तुम अपनी आत्माओं के लिए विश्राम पाओगे। यह कहते हुए, "मेरा जूआ अपने ऊपर ले लो", यीशु अपने श्रोताओं को एक कार्य को पूरा करने के लिए एक साथ काम करने वाले जानवरों के जोड़े का एक सामान्य उदाहरण देते हैं। और वह ऐसे बोल रहा है मानो वह जानवरों में से एक हो। जब एक युवा जानवर को पहली बार जुए के नीचे रखा जाता है, तो उसे एक बड़े जानवर के साथ जोड़ा जाता है, जो काम के लिए उपयोग किया जाता है। बड़ा जानवर वास्तव में छोटे जानवर को कुशलता से और दूसरों के साथ मिलकर काम करना सिखा रहा है। यह कहते हुए कि वह दिल से नम्र और विनम्र था, यीशु अपने स्वभाव पर विचार कर रहा है और दूसरों को बता रहा है कि वह उनके साथ कैसा व्यवहार करेगा जो उसके साथ जोड़े गए हैं। इस अवधारणा का उल्लेख यूहन्ना 6:45 में किया गया है। "भविष्यद्वक्ताओं में लिखा है, 'और वे सब परमेश्वर की शिक्षा पाएंगे।' जो कोई पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे

पास आता है।" यीशु न केवल लोगों को आराम और उनके भार को बांटने की पेशकश करता है, बल्कि वह वादा करता है कि उनके पास एक हल्का भार भी होगा। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है। यीशु के कथन को सुनकर हमें याद दिलाया जाना चाहिए कि जानवरों को कुछ खींचने के लिए एक साथ जोड़ा जाता है। यीशु के दृष्टांत में यह एक वैगन है। क्यों, क्योंकि वैगनों को भार ढोने के लिए डिज़ाइन किया गया है! इसकी कल्पना करने का प्रयास करें। तुम अपनी पीठ पर लकड़ी का एक बड़ा बोझ ढो रहे हो। आराम और ताज़गी के बिना आप कितनी दूर जा सकते हैं? फिर कल्पना करें कि कोई आपके साथ आता है और आपकी लकड़ी को बाकी हिस्सों में ले जाने में आपकी मदद करने की पेशकश करता है। तबियत पहले से कैसी है? अब वह तुमसे कहता है, "चलो इसे मेरी छोटी गाड़ी में डाल दो और हम इसे एक साथ खींच लेंगे। इससे आपको कैसा महसुस हो रहा है? ओह, और वैसे, जो आदमी वैगन खींचने में आपकी मदद कर रहा है वह भगवान है। क्या यह आपको आनन्दित करने का कारण देता है? यह वही अवधारणा है जिसे यशायाह भविष्यद्वक्ता लोगों को बता रहा था। क्या आप नहीं जानते? क्या आपने नहीं सुना? अनन्त परमेश्वर यहोवा, जो पृथ्वी की छोर तक का सृष्टिकर्ता है, थकता या थकता नहीं है। उसकी समझ अनिर्वचनीय है। वह थके हुए को बल देता है, और जिसके पास पराक्रम की कमी है, वह शक्ति बढ़ाता है। यद्यपि युवा थके हुए और थके हुए हो जाते हैं, और बलवान जवान बुरी तरह ठोकर खाते हैं, तौभी जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करेंगे; वे उकाबों की नाईं उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और न थकेंगे, वे चलेंगे, और थकेंगे नहीं। (यशायाह 40:28-31) समूह चर्चा: आप स्वयं कौन-से बोझ उठा रहे हैं? क्या आप विश्वास से प्रभु को बोझ के साथ आपकी सहायता कर सकते हैं? _____ यदि आप कर सकते हैं, तो वह मदद आपको कैसी दिखती है एक दूसरे का भार उठायें और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरा करें। _____ _____ सबक का बिंदु: स्वर्ग में हमारे पिता ने हमें बहुत सी चीजें दी हैं जिनके बारे में हम आनन्दित हो सकते हैं। आवेदन: जब बोझ बहुत बढ़ जाता है, तो भगवान और भगवान के बच्चों को आपकी सहायता के लिए देखें।

सबक 35

विश्वास के साथ प्रार्थना आइसब्रेकर: कुछ चीजों का नाम दें, जिन्हें आपने प्रार्थना की है, जो इसे पूरा कर चुके थे।

_____

_____

परिचय: यीशु ने उन शहरों और गांवों का दौरा करना शुरू किया जिसमें उन्होंने सत्तर शिष्यों को भेजा था। 30 ईस्वी के नवंबर में वह बेथानी पहुंचे और मार्था, मैरी और लाजर के घर पर रहे। वहां से यह गेटशसेमेन के बगीचे में थोड़ी पैदल दूरी पर था जहां उसे प्रार्थना करना पसंद था। किसी बिंदु पर शिष्यों ने प्रार्थना करने के लिए सीखने के लिए उससे संपर्क किया। यीशु ने उन्हें बाध्य किया और जो हम अब भगवान की प्रार्थना को बुलाते हैं, उसकी प्रतिपादन के साथ शुरू हुआ, जिसे उसने पहले दो साल पहले माउंट पर उपदेश के दौरान उन्हें सिखाया था। पवित्रशास्त्र पढ़ना: (लूका 11: 1-13) आदेश: जब आप प्रार्थना करते हैं। ऐस्केकेक्लॉक समूह चर्चा: आशा और विश्वास के बीच क्या अंतर है? आशा है कि कुछ की इच्छा है। फाईथ की उम्मीद है कि चीजों की उम्मीद है। इसलिए मैं तुमसे कहता हूं सबक: प्रार्थना करने में पहला महत्वपूर्ण तत्व शिष्यों की तरह बनना है, भगवान से पूछें। "फिर हमें और इस तरह के बारे में प्रार्थना कैसे करनी चाहिए?" जैसा कि यह लिखा गया है, "यदि आप में से किसी को ज्ञान की कमी है, तो उसे भगवान से पूछने दो, जो सभी लोगों को उदारतापूर्वक मिलते हैं, और अपब्राइदैथे नहीं; और उसे दिया जाएगा। लेकिन उसे विश्वास में पूछने दो, कुछ भी नहीं। क्योंकि वह वावरथ हवा के साथ संचालित समुद्र की लहर की तरह है और फेंक दिया गया है। जाने के लिए वह आदमी सोचता है कि वह भगवान की कोई चीज़ प्राप्त करेगा। " यीशु अपने शिष्यों को प्रार्थना शुरू करने का आदेश देता है, भगवान की प्रार्थना के साथ। फिर वह एक उदाहरण का उपयोग करता है, जिसमें भगवान से प्रार्थना के अनुरोध करने के सभी तीन पहलुओं को शामिल किया गया है: पूछना, मांगना और दस्तक देना। चित्रण एक दृष्टांत के रूप में आता है, जिसे मैं "नींद के दोस्त के दृष्टांत" को बुलाऊंगा। यह इस तरह पढ़ता है। मान लीजिए कि आप में से एक का मित्र है, और उसके पास आधी रात (दस्तक) में जाता है और उससे कहता है (पूछता है), 'दोस्त, मुझे तीन रोटी उधार देते हैं; मेरे एक दोस्त के लिए एक यात्रा से मेरे पास आया है, और मेरे पास उसके सामने सेट करने के लिए कुछ भी नहीं है '; और अंदर से वह जवाब देता है और कहता है, 'मुझे परेशान मत करो; दरवाजा पहले से ही बंद हो चुका है और मेरे बच्चे और मैं बिस्तर पर हैं; मैं उठ नहीं सकता और आपको कुछ भी दे सकता हूं। 'मैं आपको बताता हूं, भले ही वह उठेगा और उसे कुछ भी दे देगा क्योंकि वह उसका मित्र है, फिर भी उसकी दृढ़ता के कारण वह उठेगा और उसे जितना भी चाहिए उतना ही उसे दे देंगे। इस दृष्टांत को पढ़ने पर अधिकांश ईसाई इस विचार को प्राप्त करते हैं कि यीशु चाहता है कि वे एक ही मुद्दे के बारे में भगवान से प्रार्थना में बने रहें। बस सच नहीं है! कई चित्र जो यीशु का उपयोग तुलनात्मक दृष्टांत थे। दूसरे शब्दों में, "कुछ और कुछ जैसा है।" उदाहरण के लिए, स्वर्ग का राज्य समुद्र में एक ड्रैगनेट की तरह है। हालांकि, "स्लीपिंग फ्रेंड का दृष्टांत" एक विपरीत दृष्टांत है। दूसरे शब्दों में, कुछ और के विपरीत कुछ है। इस दृष्टांत में एक आदमी अपने दोस्त के घर जाता है जबकि वह कुछ रोटी के ऋण की मांग कर रहा है। दृष्टांत में दोस्त ईश्वर के विपरीत खड़ा है, जो हमारे दोस्तों की तुलना में करीब है। नीतिवचन 18:24 कहता है, "बहुत से दोस्तों का एक आदमी बर्बाद हो जाता है, लेकिन एक दोस्त है जो एक भाई की तुलना में करीब रहता है।" दूसरा, भगवान सो नहीं है। भजन 121: 3-4 कहता है, "वह आपके पैर को पर्ची करने की अनुमति नहीं देगा; वह जो आपको रखता है वह नहीं करेगा। देखो, जो इस्राएल रखता है वह न तो नींद करेगा और न ही सो जाएगा। " और तीसरा, आदमी अपने दोस्त से एक हजार पहाड़ियों पर मवेशियों के मालिक, भगवान बनाम ब्रेड के तीन रोटी को ऋण देने के लिए कहता है, जिन्हें चुकाया नहीं जा सकता है। तो दृष्टांत का

बिंदु यह है कि 1) यदि कोई मित्र आपको वह दे देगा यदि आप दृढ़ता से हैं यदि आप दृढ़ता से हैं चाहे दिन या रात का समय क्या है, 2) आपकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भगवान कितना करेंगे। वास्तव में, यीशु चाहता है कि उसके शिष्य बिंदु को याद न करें! तो वह तब तक भी दूर दो और तरीकों के अर्थ को पुन: स्थापित करने के लिए जाता है। इसे ध्यान से पढ़ें! तो मैं आपसे कहता हूं, पूछो, और यह आपको दिया जाएगा; तलाश करें, और आप पाएंगे; दस्तक, और यह आपके लिए खोला जाएगा। उन सभी के लिए जो पूछता है, प्राप्त करता है; और वह जो चाहता है, पाता है; और उसके लिए जो दस्तक देता है, यह खोला जाएगा। समूह चर्चा: जब आप प्रार्थना करते हैं तो आप आशा करते हैं कि आप किस प्रार्थना के लिए प्रार्थना करेंगे या क्या आप सुनिश्चित हैं कि यह पास हो जाएगा? _____ क्या आप भगवान के वचन को पढ़ रहे हैं और विश्वास करते हैं या आप अन्य शब्दों को प्रतिस्थापित कर रहे हैं, जैसे ईव ने ईडन के बगीचे में किया था। _____ सबक जारी रहा: यीशु अधिक विरोधाभासों का उपयोग करके बिंदु जारी रखता है। "अब मान लीजिए कि आप में से एक पिता को एक मछली के लिए अपने बेटे से पूछा जाता है; वह उसे मछली के बजाय सांप नहीं देगा, क्या वह? या अगर उसे अंडे के लिए कहा जाता है, तो वह उसे बिच्छू नहीं देगा, क्या वह? यदि आप फिर, बुराई होने के बारे में जानते हैं, तो अपने बच्चों को अच्छे उपहार देने के बारे में जानें, आपके स्वर्गीय पिता ने उन लोगों को पवित्र आत्मा को कितना और पूछा जो उससे पूछते हैं? " ऐसा करने में वह समझा रहा है कि यदि आप विशेष रूप से एक चीज के लिए भगवान से पूछते हैं, तो वह आपको जो कुछ भी पूछा गया था उसके अलावा कुछ और नहीं देगा। और दूसरी बात, यदि आप कुछ अच्छे के लिए पूछते हैं तो वह आपको वह नहीं देगा जो बुराई है। दो आध्यात्मिक अनुप्रयोग भी हैं जिन्हें उनके बयान से भी बनाया जा सकता है। यीशु ने इन विचारों को व्यक्त करने के लिए एक मछली, एक सांप, एक अंडे और एक बिच्छू युक्त प्रतीकात्मक इमेजरी का उपयोग किया। पिछले पाठ में यीशु ने सांप का इस्तेमाल किया जो उस के संबंध में धोखाधड़ी और बिच्छू का उपयोग करता था, जो मृत्यु लाता है। यहां वह उन्हें मछली और अंडे के साथ विरोधाभास करता है। ऐसा करने में मार्ग को निम्नानुसार पढ़ा जा सकता है: "अब मान लीजिए कि आप में से एक पिता अपने बेटे ने सत्य के लिए कहा है; वह उसे सत्य के बजाय धोखे नहीं देगा, क्या वह? या अगर उसे जीवन के लिए कहा जाता है, तो वह उसे मौत नहीं देगा, क्या वह? यदि आप फिर, बुराई होने के बारे में जानते हैं, तो अपने बच्चों को अच्छे उपहार देने के बारे में जानें, आपके स्वर्गीय पिता ने उन लोगों को पवित्र आत्मा को कितना और पूछा जो उससे पूछते हैं? " विरोधाभास चित्रण का उपयोग करने में यीशु इस तथ्य को इंगित करता है कि भगवान से पूछने के लिए एक अच्छी बात पवित्र आत्मा है, जो वह किसी से इनकार नहीं करेगा। पवित्र आत्मा सभी पुरुषों के लिए सच्चाई और जीवन दोनों को लाती है। इतना कीमती यह उपहार है कि प्रेषित पौलुस ने पवित्र आत्मा से संबंधित इन चीजों को लिखा था। इस कारण से मैं पिता के सामने अपने घुटनों को झुकाता हूं, जिनसे स्वर्ग और पृथ्वी में हर परिवार का नाम होता है, कि वह आपको अपनी महिमा के धन के अनुसार, आंतरिक व्यक्ति में अपनी आत्मा के माध्यम से शक्ति के साथ मजबूत होने के लिए अनुदान देगा, ताकि मसीह विश्वास के माध्यम से आपके दिल में रह सकें; और आप, प्यार में जड़ वाले और जमीन के साथ, सभी संतों को समझने में सक्षम हो सकते हैं, चौड़ाई और लंबाई और ऊंचाई और गहराई क्या है, और मसीह के प्यार को जानने के लिए जो ज्ञान को पार करता है, कि आप भगवान की सभी पूर्णता को भर सकते हैं। अब जो हमारे भीतर काम करते हैं या सोचते हैं, उसके अनुसार, हम जो भी अधिक प्रचुर मात्रा में अधिक प्रचुर मात्रा में काम करते हैं, वह हमारे भीतर काम करता है और मसीह यीशु में सभी पीढ़ियों में हमेशा और हमेशा के लिए। आमीन। (इफिसियों 3: 14-21) इस कारण से, जिस दिन हमने इसके बारे में सुना था, हमने आपके लिए प्रार्थना करने और यह

पूछने के लिए नहीं छोड़ा है कि आप सभी आध्यात्मिक ज्ञान और समझ में अपनी इच्छा के ज्ञान से भरे हुए हैं, ताकि आप प्रभु के योग्य तरीके से चले जाएंगे, सभी दृढ़ता और धैर्य प्राप्त करने के लिए, सभी शक्तियों के अनुसार, सभी शक्तियों के साथ मजबूत; खुशी से पिता को धन्यवाद देते हुए, जिन्होंने हमें प्रकाश में संतों की विरासत में साझा करने के लिए अर्हता प्राप्त की है। (कुलुस्सियों 1: 9-12) और दाखरस के साथ नशे में न हो, क्योंकि वह अपव्यय है, लेकिन आत्मा से भरा हुआ है, भजन और भजन और आध्यात्मिक गीतों में एक दूसरे से बात करते हुए, गायन और अपने दिल से आपके दिल से मेलोडी बनाना; हमेशा हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम पर सभी चीजों के लिए धन्यवाद देना, यहां तक कि पिता भी; (इफिसियों 5: 18-20) बस सोचो! एक ईसाई को पवित्र आत्मा को प्राप्त करने के लिए क्या करना है, यह पूछना है कि उसने इसे प्राप्त किया है। चूंकि यीशु ने इस विचार के साथ अपने भाषण को पूरा किया है कि भगवान से पूछने के लिए वास्तव में एक अच्छा उपहार पवित्र आत्मा के अधिक है, यह हमें "स्लीपिंग फ्रेंड के दृष्टांत" पर पुनर्विचार करने के लिए रोक देता है। ध्यान दें कि आदमी ने अपने सोने के दोस्त से रोटी के तीन रोटी के लिए पूछा। सिर्फ एक यात्रा मित्र के लिए तीन रोटी क्यों? यीशु ने क्या कहा कि हम इस बारे में एक अलग तरीके से सोच सकते हैं। चूंकि मनुष्य एक तीन भाग है, इसलिए यात्रा करने वाले दोस्त की सभी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तीन रोटियों की आवश्यकता थी: प्रत्येक अपनी आत्मा, आत्मा और शरीर के लिए एक। तीन रोटी, खुद को उन जरूरतों को पूरा करने के लिए पवित्र आत्मा के माध्यम से भगवान के उपहार के प्रतिनिधि हैं: भगवान का वचन, भगवान का प्यार और भगवान की शक्ति। यह भी ध्यान दें कि आदमी मध्यरात्रि में सोए हुए दोस्त के घर आया था। वह सुबह तक इंतजार क्यों नहीं किया? इससे पता चलता है कि पवित्र आत्मा किसी भी समय किसी व्यक्ति की जरूरतों को पूरा कर सकती है। और उस आदमी के पास पहली जगह पर अपने यात्रा करने के लिए कुछ भी क्यों नहीं था? यह इंगित करता है कि हम अपने आप से हमेशा दूसरों की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम नहीं होते हैं, लेकिन हमारे पास उस व्यक्ति के लिए तत्काल पहुंच होती है जो कर सकते हैं। हमें बस इतना करना है, तलाश और दस्तक देना है। एक अंतिम आध्यात्मिक अनुप्रयोग है जिसे "नींद के दोस्त के दृष्टांत" से खींचा जा सकता है। और यह अनुक्रम है: तलाश, दस्तक और पूछें। आदमी ने अपने दोस्त को पहले मांगा। "लेकिन पहले अपने राज्य और उसकी धार्मिकता की तलाश करें, और इन सभी चीजों को आप में जोड़ा जाएगा।" तब आदमी ने उसे रौजने के लिए अपने दरवाजे पर दस्तक दी। "धन्यवाद और प्रशंसा के साथ अपने अदालतों के साथ अपने द्वार दर्ज करें। उसे धन्यवाद दें, उसका नाम आशीर्वाद दें। और आखिरकार उसने पूछा कि वह क्या चाहता था। "आपने मुझे नहीं चुना लेकिन मैंने आपको चुना, और आपको नियुक्त किया कि आप आगे बढ़ेंगे और फल लेते हैं, और आपका फल रहेगा, ताकि आप मेरे नाम पर पिता से पूछें कि वह आपको दे सकता है।" पाठ का बिंदु: विश्वास से प्रार्थना करें। आवेदन: निम्नलिखित प्रार्थना अभ्यास के माध्यम से काम करते हैं। (उदाहरण के लिए) भगवान की प्रार्थना प्रार्थना करें। प्रभु की इच्छा को ध्यान दें - (पिता, हम आपके ज्ञान और दिशा की तलाश में हैं।) नॉक (उसे प्रशंसा और धन्यवाद के साथ rose) - (आप अद्भुत और दयालु हैं।) उसे जो चाहिए उसके लिए हमसे पूछें

पाठ 36

पाखंड आइसब्रेकर: अमेरिकी संस्कृति के कुछ हिस्सों में क्यों लोग कहते हैं कि वास्तव में क्या अच्छा है ... "बुरा"।

परिचय: जब यीशु ने प्रार्थना करने के तरीके पर अपने निर्देश का निष्कर्ष निकाला, तो उसने सूचित किया कि शिष्यों को सबसे अच्छी बात यह है कि अधिकतर होगा फिर, जैसे पवित्र आत्मा के महत्व को प्रदर्शित करने के लिए, यीशु ने एक ऐसे व्यक्ति से एक राक्षस डाला जो दोनों अंधे और गूंगा थे। उस बिंदु पर फरीसियों ने उन्हें राक्षसों के शासक बेलेज़बब द्वारा चमत्कार करने का आरोप लगाया। यीशु ने अपने आरोप का जवाब दिलाईं और फरीसियों से विपक्ष के एक सतत आग्नेयोजन शुरू कर दिया जो छह महीने बाद उनके क्रूस पर चढ़ने तक चलेगा। यह बेहतर समझने के लिए कि यीशु शिष्यों को सिखाने की तैयारी कर रहा था, यह सबक की ओर बढ़ने वाली घटनाओं और उनके विरोध में रहने वाले व्यक्तियों पर कुछ पृष्ठभूमि जानकारी विकसित करने में मददगार होगा। यीशु के विरोध में इस्राएल के भीतर तीन प्रमुख समूहों से उभरा: शास्त्री, सदूकी और फरीसियां। आइए प्रत्येक समूह पर एक संक्षिप्त नज़र डालें। शास्त्री उन व्यक्तियों का एक समूह थे जो मूसा के कानून में विशेषज्ञ थे। पवित्रशास्त्र कभी-कभी उन्हें "वकील" के रूप में संदर्भित करता है क्योंकि उनके प्राथमिक कार्य थे: 1) कानून के सैद्धांतिक विकास, 2) कानून के शिक्षक और 3) न्यायविभार या न्यायाधीश जिन्होंने कानून के अनुसार वाक्य पारित किए। यीशु के समय के दौरान उन्हें तानाम (दोहराने वाले) कहा जाता था क्योंकि उन्होंने अपने छात्रों को कानून सिखाया था। जब तक वे इसे नहीं जानते थे तब तक उन्होंने उन्हें मौखिक रूप से बार-बार दोहराया था। कई शास्त्री इज़राइल के सत्तारूढ़ निकाय, सैनहेड्रिन और सबसे अधिक, दृढ़ता से फरीसियों का समर्थन करते थे। तानाम की तानाम अवधि 300 ईसा पूर्व से 220 ईस्वी से पांच सौ से अधिक वर्षों तक चली गई। सदूकी एक धार्मिक पार्टी थी जो मैककैबी के शासनकाल के दौरान दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान इज़राइल में उत्पन्न हुई थी। नाम ही मूल रूप से इसका मतलब है, "धर्मी"। सदूकी संख्याओं में कुछ थे लेकिन मुख्य रूप से एक अभिजात वर्ग से बने थे जिन्होंने खुद को पुजारी के साथ जुड़ा हुआ था। उन्होंने मनुष्यों की स्वतंत्र इच्छा को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध किया, जबकि फरीसियों ने मनुष्य के पूर्वनिर्धारितता को बढ़ाया। उनका प्रभाव राजनीति के माध्यम से आया था। 70 ईस्वी में यरूशलेम में मंदिर को नष्ट कर दिया गया था, तब तक सद्ब्यून पार्टी 70 ईस्वी में नष्ट हो गई थी, फरीसियां भी एक धार्मिक पार्टी थीं जो मैककैबी के शासनकाल के दौरान दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान इज़राइल में उत्पन्न होती थीं। नाम मूल रूप से इसका मतलब है, "अलग"। यह शब्द इस विचार से लिया गया था कि इसके सदस्यों ने खुद को "आम" लोगों से अलग कर दिया और खुद को मूसा के कानून में अलग कर दिया। फरीसियों ने यीशु के समय लगभग 6000 की संख्या की और आम तौर पर लोगों द्वारा उच्च सम्मान में आयोजित किया गया। जबकि सैडूसीस शक्ति और प्रभाव राजनीति के माध्यम से आया फरीसियों ने धर्म से उनके साथ लिया। यद्यपि यह पार्टी अब मौजूद नहीं है, हम अल्ट्रा-रूढ़िवादी यहूदियों को आज के साथ निकटता से जुड़े होने पर विचार कर सकते हैं। फरीसियों के पास यहूदियों के बीच तारकीय रिकॉर्ड नहीं था जैसा कि कई लोग सोचते हैं। यद्यपि वे अपने लिए एक उच्च नैतिक मानक स्थापित करते हैं, लेकिन सभी इसे नहीं रहते थे। यरूशलेम और बेबीलोनियन तलमूद के अनुसार आठ प्रकार के फरीसियां थीं: कंधे फरीसी, जो ओस्टेंटेट रूप से अपने कंधे पर अपने अच्छे कर्मों को ले जाती हैं, इसलिए उन्हें देख सकते हैं। प्रतीक्षा-एक पल फरीसी, जो आपको चाहती है सबक की ओर बढ़ने वाली घटनाएं तब शुरू हुईं जब फरीसियों ने यीशु ने बील्ज़ेबब द्वारा राक्षसों को बाहर निकालने का आरोप लगाया। फिर प्रतिक्रियाओं की एक श्रृंखला के माध्यम से यीशु ने अपने विपक्ष के पाखंड का पर्दाफाश करना शुरू कर दिया। उन्होंने ईश्वरीय पुरुष होने का

दावा किया लेकिन उनके शब्द और कार्य अन्यथा साबित हुए। यीशु की पहली प्रतिक्रिया निन्दा के मुद्दे से निपटा या पवित्र आत्मा के खिलाफ बोलते हुए, अकार्डनबल पाप। अनिवार्य रूप से इस पाप में कॉलिंग शामिल है जो अच्छा है ... बुराई या बुराई क्या है ... अच्छा है और यशायाह 5:20 में सीधे संदर्भित है। उन लोगों के लिए दुःख, जो बुराई को अच्छा कहते हैं, और अच्छी बुराई; अंधेरे के लिए प्रकाश और प्रकाश के लिए अंधेरे को प्रतिस्थापित करना; कड़वा के लिए मीठे और मीठे के लिए कड़वा विकल्प! एक बाइबिल की मानसिकता से "क्या अच्छा है ... बुराई" को बुलाए जाने का विचार बहुत अधिक महत्व लेता है, जो कि हमारे आधुनिक समाज में सोचने के लिए बहुत अधिक महत्व लेता है। पवित्रशास्त्र के अनुसार केवल एक ही है जो वास्तव में अच्छा है ... भगवान। यीशु ने अमीर युवा शासक के साथ अपनी बातचीत में इसका उल्लेख किया। और कोई उसके पास आया और कहा, "शिक्षक, मैं क्या अच्छी बात करूंगा कि मैं अनन्त जीवन प्राप्त कर सकता हूं?" और उसने उससे कहा, "तुम मुझसे क्यों पूछ रहे हो कि क्या अच्छा है? केवल एक ही है जो अच्छा है; लेकिन अगर आप जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं, तो आदेशों को रखें। " (मत्ती 1 9: 16-17) तो जब फरीसियों ने यीशु ने बेलेज़बूब (एक अच्छी चीज जो केवल भगवान की शक्ति से किया जा सकता है) द्वारा एक राक्षस को बाहर निकालने का आरोप लगाया था, तो वास्तव में उन्होंने कहा था, "पवित्र आत्मा बुराई है और beelzebub अच्छा है। इसके द्वारा यह यीशु के प्रति स्पष्ट था कि उनके विरोधी भगवान के नहीं थे। अगर वे तब होते, तो वे पवित्र आत्मा के खिलाफ बात करने में सक्षम नहीं होते क्योंकि एक घर अपने आप के खिलाफ विभाजित नहीं हो सकता। यीशु ने एक ही परिचित मुहावरा को एक ही बिंदु बनाने के लिए उद्धृत किया, एक पेड़ अपने फल से जाना जाता है। यीशु ने कहा कि फरीसी वाइपर का एक ब्रूड था। इसके द्वारा वह कई चीजों का अर्थ था: कि उनके पिता शैतान थे, बूढ़े के नागिन थे। शैतान की संतान होने के कारण वे झूठ बोल रहे थे और उसके जैसे झूठे थे। और न केवल वे सांप थे, बल्कि वाइपर, जो घातक साँप हैं। इसलिए वे अपने झूठ और धोखे के माध्यम से लोगों के विनाश का कारण बनते हैं। सत्य को भगवान के विरूद्ध गर्व से उठाया गया था और इसलिए वे थे। सत्य ने भगवान के विरूद्ध निंदा की और उन्होंने भी किया। जैसे कि वे शैतान की संतान हैं जो वे बुराई हैं। और जब से वे बुराई हैं उसके बाद, फरीसियों ने यीशु से उन्हें एक संकेत दिखाने के लिए कहा, पूरी तरह से इस तथ्य को अनदेखा कर दिया कि वह सिर्फ एक बड़ा चमत्कार करने के माध्यम से मिला था; एक राक्षस को बाहर निकालना और किसी व्यक्ति की दृष्टि और भाषण को बहाल करना। यीशु ने अपने अनुरोध को अस्वीकार कर दिया, उन्हें एक बुरा और व्यभिचारी पीढ़ी कहा और उन्हें बताया कि तब एकमात्र संकेत जिसे तब दिया जाएगा जोना का संकेत था। फिर फरीसियों में से एक ने यीशु को दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित किया। जबकि उनके साथ भोजन करते हुए यीशु ने फरीसियों पर तीन दुष्टों और शास्त्रियों पर तीन दुष्टों का उच्चारण किया। कई ईसाई सोचते हैं कि जब यीशु ने दुःख की बात की थी कि वह शास्त्रियों और फरीसियों की निंदा कर रहा था, लेकिन वह नहीं था। शब्द "दुःख" का अर्थ है शोक या दुःख। तो यीशु बस यह बताता था कि उनके कार्यों के कारण, दुखों का रास्ता आ जाएगा। पवित्रशास्त्र पढ़ना: (लूका 12: 1-3) द ऑर्डर: फरीसियों के खमीर से सावधान रहें। सबक: शास्त्री और फरीसियों को तोड़ने के कुछ ही समय बाद, यीशु ने शिष्यों को पढ़ाने का अपना कर्तव्य फिर से शुरू किया। उन्होंने इस आदेश के साथ सबक शुरू किया, "फरीसियों के खमीर से सावधान रहें जो पाखंड है।" पहले खाते में यीशु ने फरीसियों और सदूकी की शिक्षाओं के बारे में शिष्यों को चेतावनी दी थी। उस अवसर पर यह भगवान के वचन से पहले पुरुषों की परंपराओं को रखने से जुड़ा हुआ था। लेकिन व्यर्थ में क्या वे मेरी पूजा करते हैं, सिद्धांतों के नियमों के रूप में शिक्षण करते हैं। भगवान के आदेश की उपेक्षा, आप पुरुषों की परंपरा को पकड़ते हैं। इस बार वह अपने पाखंड के मुद्दे से संबंधित है। यद्यपि फरीसियों के शास्त्र थे और उनके द्वारा रहते थे, वे भगवान की आत्मा से रहित थे। यीशु ने उन शब्दों से यह जानता था कि उन्होंने बात

की थी। फरीसियों ने उन्हें भगवान से होने या उनके द्वारा किए गए चमत्कारों को स्वीकार नहीं किया और यहां तक कि पवित्र आत्मा को निंदा करने के लिए भी इतना दूर चला गया। एक मौके पर यीशु ने भी फरीसियों को बताया कि, आप शास्त्रों की खोज करते हैं क्योंकि आप सोचते हैं कि उनमें आपके पास शाश्वत जीवन है; यह ये है जो मेरे बारे में गवाही देता है; और आप मेरे पास आने के लिए तैयार नहीं हैं ताकि आपके पास जीवन हो। (यूहन्ना 5: 3 9-40) और बाद में उन्होंने उन्हें बताया, "अगर भगवान आपके पिता थे, तो आप मुझसे प्यार करेंगे, क्योंकि मैं आगे बढ़ गया और भगवान से आया, क्योंकि मैं भी अपनी पहल पर नहीं आया हूं, लेकिन उसने मुझे भेजा। आप क्यों नहीं समझते कि मैं क्या कह रहा हूं? ऐसा इसलिए है क्योंकि आप मेरा शब्द नहीं सुन सकते। आप अपने पिता के पिता के हैं, और आप अपने पिता की इच्छाओं को करना चाहते हैं। वह शुरुआत से एक हत्यारा था, और सच्चाई में खड़ा नहीं होता क्योंकि उसके अंदर कोई सच नहीं है। जब भी वह झूठ बोलता है, वह अपनी प्रकृति से बोलता है, क्योंकि वह झूठा और झूठ है। लेकिन क्योंकि मैं सच बोलता हूं, तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते। आप में से कौन सा मुझे पाप के लिए दोषी ठहराता है? अगर मैं सत्य बोलता हूं, तो आप मुझ पर विश्वास क्यों नहीं करते? वह जो ईश्वर का है वह भगवान के शब्दों को सुनता है; इस कारण से आप उन्हें नहीं सुनते, क्योंकि आप भगवान के नहीं हैं। " (यूहन्ना 8: 42-47) यीशु ने मान्यता दी कि फरीसियां धर्म के रूप का अभ्यास कर रही थीं लेकिन इसे जीने की शक्ति के बिना, जो पवित्र आत्मा थी। बाहर पर वे धर्मी दिखाई दिए लेकिन अंदर वे नहीं थे। इसलिए उन्होंने इन पुरुषों जैसे पुरुषों के बारे में शिष्यों को चेताव्यों को चेतावनी दी और उनकी शिक्षाओं पर ध्यान दिया। इसका कारण यह है कि लोगों को जीवन भर के लिए उन्हें सिखाया जाता है। चूंकि लीवन उस पदार्थ के हर हिस्से में प्रवेश करता है जिसमें इसे रखा जाता है, तो भी शिक्षण करता है। यह जरूरी है कि हम, जैसा कि ईसाईयों ने यीशु के निर्देशों को ध्यान में रखते हुए, जो इस तरह के लोगों से संबंधित हैं, जो धार्मिकता के बारे में सिखाते हैं लेकिन पवित्र आत्मा से रहित हैं। कई लोगों के लिए यह कल्पना करना मुश्किल है कि इस तरह के लोग वास्तव में चर्च के भीतर अधिकार के स्थानों को पकड़ते हैं। लेकिन हमें आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए। प्रेषित पौलुस ने क्या कहा, सुनें। लेकिन इसका एहसास है, कि आखिरी दिनों में मुश्किल समय आएंगे। पुरुषों के लिए स्वयं के प्रेमी होंगे, पैसे के प्रेमी, घमंडी, अभिमानी, रहस्योद्घाटन, माता-पिता के प्रति अवज्ञाकारी, असभ्य, अपवित्र, अनलॉकिंग, असहनीय, दुर्भावनापूर्ण गपशप, आत्म-नियंत्रण के बिना, क्रूर, अच्छे के नफरत इन पुरुषों से बचें। (2Timothy 3: 1-5) उन्हें छोड़ने से पहले, पौलुस ने इफिसियों को एक ही मुद्दे के बारे में चेतावनी दी। मुझे पता है कि मेरे प्रस्थान के बाद जंगली भेड़िये आपके बीच आएंगे, झुंड को नहीं छोड़ेंगे; और अपने स्वयं के खुद के बीच से पुरुषों के बाद शिष्यों को दूर करने के लिए, विकृत चीजें बोलते हुए उत्पन्न होंगे। इसलिए सतर्क रहें। (प्रेरितों 20: 2 9 -31) और यदि यह पर्याप्त नहीं है, तो हमारे प्रभु यीशु मसीह के भाई जुदे ने उस विषय को पूरी किताब समर्पित की। यीशु दो sobering बयानों के साथ पाखंड के विषय को बंद कर देता है। लेकिन इसमें कुछ भी शामिल नहीं है जो प्रकट नहीं किया जाएगा, और छुपाया जाएगा जो ज्ञात नहीं होगा। तदनुसार, जो भी आपने अंधेरे में कहा है, वह प्रकाश में सुना जाएगा, और जो भी आपने भीतर के कमरों में फुसफुसाया है, उन्हें हाउसएटॉप पर घोषित किया जाएगा। पाखंड भगवान से छिपा नहीं जा सकता! समूह चर्चा: ईसाई किस तरह से पाखंड का दोषी हो सकता है?

_____

_____Do आपको लगता है कि एक ईसाई पवित्र आत्मा के खिलाफ बात कर सकता है?
_____ क्यों या क्यों नहीं?

_____

_____ पाठ का बिंदु: आत्माओं का परीक्षण करें।

आवेदन: 1 जॉन पर ध्यान करें 3:23 - 4: 7 यह उसका आदेश है, कि हम अपने पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करते हैं, और एक दूसरे से प्यार करते हैं, जैसे उसने हमें आज्ञा दी थी। जो अपनी आज्ञाओं को रखता है वह उसके अंदर रहता है, और वह उसके अंदर रहता है। हम इस बात से जानते हैं कि वह उस आत्मा द्वारा, जिसने हमें दिया है, उससे वह हमारे अंदर रहता है। प्रिय, हर आत्मा पर विश्वास न करें, लेकिन आत्माओं का परीक्षण करें कि वे भगवान से हैं या नहीं, क्योंकि कई झूठे भविष्यवक्ता दुनिया में बाहर निकल गए हैं। इसके द्वारा आप भगवान की भावना को जानते हैं: हर आत्मा जो स्वीकार करती है कि यीशु मसीह मांस में आया है, वह भगवान से है; और हर आत्मा जो यीशु को स्वीकार नहीं करती है वह भगवान से नहीं है; यह एंटीक्रिस्ट की भावना है, जिसमें से आपने सुना है कि यह आ रहा है, और अब यह पहले से ही दुनिया में है। आप भगवान, छोटे बच्चों से हैं, और उन्हें दूर कर चुके हैं; क्योंकि वह दुनिया में है जो आपके पास है, जो दुनिया में है। वे दुनिया से हैं; इसलिए वे दुनिया से बात करते हैं, और दुनिया उन्हें सुनती है। हम भगवान से हैं; वह जो जानता है कि भगवान हमें सुनता है; वह जो भगवान से नहीं है वह हमें नहीं सुनता है। इसके द्वारा हम सत्य की भावना और त्रुटि की भावना को जानते हैं।

पाठ 37

डर से आइसब्रेकर से स्वतंत्रता: आपके पास कुछ डर है। _____ परिचय: यीशु ने अभी शिष्यों को फरीसियों के शिक्षण से सावधान रहना शुरू कर दिया है, जो पाखंड है। जब उन्होंने पवित्र आत्मा के खिलाफ निंदा की तो उन्होंने अपने पाखंड को पहचाना। जबकि फरीसियों ने बाहर धार्मिक दिखाई दिए, वे वास्तव में पवित्र आत्मा से रहित थे। वे धर्म के मुखौटा के पीछे अपने बुरे, अपरिपक्व और अविश्वासी दिल छुपा रहे थे। यीशु ने कहा कि एक व्यक्ति जो कुछ भी छिपाने का प्रयास करता है, चाहे पाखंड या कुछ और प्रकट होगा। और उस पर उन्होंने कहा कि एक व्यक्ति ने जो भी कहा था, एक रहस्य या दिल के रूप में जो कुछ भी कहा गया था, वह भी प्रकट किया जाएगा। समूह चर्चा: लोग जो कुछ भी करते हैं या ने कहा है, छिपाने की कोशिश क्यों करते हैं?

_____

_____ क्या आपने किया है या अभी भी ऐसा कर रहे हैं कि आप दूसरों से छिपाने का प्रयास कर रहे हैं? _____ क्या बुराई या अपमानजनक चीजें आपने या तो गुप्त रूप से दूसरों के लिए या अपने दिल में कहा है? _____ कुछ मिनट ले लो और एक सूची संकलित करें। फिर अपनी सूची लें और सार्वजनिक रूप से इसे प्रभु यीशु मसीह को स्वीकार करें। इसके लिए लिखा गया है, "अगर हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सभी अधर्मों से शुद्ध करने के लिए वफादार और धार्मिक है। अगर हम कहते हैं कि हमने पाप नहीं किया है, तो हम उसे झूठा बनाते हैं और उसका वचन हमारे अंदर नहीं है। " (1 यूहन्ना 1: 9-10) पवित्रशास्त्र पढ़ना: (लूका 12: 4-12) आदेश: उन लोगों से डरो मत जो शरीर को मारते हैं। एक व्यक्ति को मारने के बाद, जिसने उसे मारने के बाद नरक में डालने का अधिकार है। हाँ, मैं तुम्हें बताता हूं। सबक: जब यीशु ने शिष्यों से कहा कि एक व्यक्ति जो भी व्यक्ति कहता है या करता है, वह प्रकट होगा यह एक डरावनी संभावना थी। पाप के बिना कौन है और अपने जीवन के कुछ पहलू से शर्मिंदा नहीं है? सौभाग्य से उनके सभी शिष्यों के लिए, और अब, यीशु ने अपने शिष्यों को फोन करके इस सबक की शुरुआत की ... दोस्तों। यह उनके लिए एक शक्तिशाली और आश्वस्त संदेश है। जब कोई व्यक्ति स्वेच्छा से एक दोस्त के रूप में दूसरे के साथ संबंध में प्रवेश करता है, तो उसने खुद को अपने दोस्त के कल्याण की निगरानी करने के लिए प्रतिबद्ध किया है। और यीशु के लिए, जीवित भगवान का पुत्र, आपको एक दोस्त कहने के लिए वास्तव में एक सर्वोच्च आशीर्वाद है। समूह चर्चा: एक सच्चे दोस्त के कुछ लक्षणों की सूची बनाएं।

_____

_____

_____

_____ The Lesson Continued:Jesus knows that His disciples will face persecution and death because of the message they will bring so he prepares them for this eventuality. चूंकि मृत्यु मनुष्य का एक प्राकृतिक डर है, इसलिए यीशु ने शिष्यों को कुछ सच्चाइयों को पेश करने के लिए इसका उपयोग किया है। सबसे पहले, वह उन्हें मनुष्यों, यहां तक कि अपने दुश्मनों से डरने का आदेश नहीं देता, क्योंकि उनका अधिकार और शक्ति शरीर की हत्या तक ही सीमित है। इसके बजाय वे अकेले भगवान से डरने के लिए हैं, क्योंकि उनके पास शरीर को मारने और नरक में डालने के लिए अधिकार और शक्ति दोनों हैं। अगला

यीशु उन्हें डरने के लिए कहकर शिष्यों को आश्वस्त करता है क्योंकि वे भगवान के लिए बहुत मूल्यवान हैं। वह उन्हें दो कारण देता है कि उन्हें डरना क्यों नहीं होना चाहिए। 1) वे उस पर विश्वास करते हैं और उसे कबूल करते हैं और 2) उन्होंने पवित्र आत्मा के खिलाफ निंदा नहीं की है। हालांकि यह शिष्यों के लिए आश्वासन देता है, यह उन लोगों में डर का कारण देता है जो उसके पीछे नहीं कर रहे हैं। सुनें कि यीशु को यह क्यों कहना था कि लोगों को भगवान से डरने का क्या कारण होना चाहिए। और मैं आपसे कहता हूं, हर कोई जो मुझे मनुष्यों के सामने स्वीकार करता है, मनुष्य का पुत्र उसे भगवान के स्वर्गदूतों के सामने भी कबूल करेगा; लेकिन जो लोग मुझसे इनकार करते हैं, वे भगवान के स्वर्गदूतों के सामने इनकार कर दिए जाएंगे। अपने दूसरे पत्र में टिमोथी में, प्रेषित पौलुस ने इस कारण से बात की कि जब उन्होंने लिखा था: यह एक वफादार कह रहा है: अगर हम उसके साथ मर चुके हैं, तो हम उसके साथ भी रहेंगे: अगर हम पीड़ित हैं, तो हम भी उसके साथ शासन करेंगे: अगर हम उससे इनकार करेंगे, तो वह भी डेन करेगा (2 टिम 2: 11-13) और हर कोई जो मनुष्य के पुत्र के खिलाफ निंदा करता है (एक शब्द बोलता है), उसे क्षमा किया जाएगा; लेकिन वह जो पवित्र आत्मा के खिलाफ निंदा करता है (एक शब्द बोलता है), उसे उसे क्षमा नहीं किया जाएगा। प्रेषित पौलुस ने उस समय के बारे में तीमुथियुस को भी लिखा जब वह मनुष्य के पुत्र यीशु के खिलाफ निंदा करते थे। जो एक निन्दाकर्ता, और एक सताभीक, और हानिकारक था, लेकिन मैंने दया प्राप्त की, क्योंकि मैंने इसे अविश्वास में अज्ञानता से किया था। और हमारे भगवान की कृपा विश्वास और प्रेम के साथ प्रचुर मात्रा में थी जो मसीह यीशु में है। यह एक वफादार कहानियां है, और सभी स्वीकृति के योग्य है, कि पापियों को बचाने के लिए मसीह यीशु दुनिया में आया; जिनमें से मैं प्रमुख हूं। (1 तीमुथियुस 1: 13-15) पवित्रशास्त्र से ऐसा प्रतीत होता है कि दो कारण हैं कि परमेश्वर एक आदमी को नरक में डाल सकता है: 1) जानबूझकर यीशु मसीह है और 2) निश्चित रूप से पवित्र आत्मा के खिलाफ बोलते हुए। दूसरे शब्दों में जो उसे बुला रहा है ... बुराई या उसे बुलावा कौन बुरा है ... अच्छा। सबक की शुरुआत में यीशु ने शिष्यों से कहा था कि वे पुरुषों से डरने के लिए नहीं थे और उन्होंने उन्हें बताकर सबक का निष्कर्ष निकाला कि जब पुरुष शासकों और अधिकारियों के सामने उन्हें लाते हैं तो वे खुद को बचाने के बारे में चिंतित नहीं हैं। क्योंकि पवित्र आत्मा उन्हें बताएगी कि जब उन्हें बोलने की आवश्यकता होती है। सबक का मुद्दा: यीशु के अनुयायियों के पास भगवान से डरने का कोई कारण नहीं है। आवेदन: चूंकि आप जो कुछ भी कहते हैं या करते हैं, वे प्रकट होंगे, उन चीजों को स्वीकार करें, जिन्हें आप उन चीजों से स्वीकार करते हैं, जिन्हें आप शर्मिंदा हैं, अब यीशु के लिए उन्हें अपने खून से ढकाया जा सकता है।

पाठ 38

जीवन की चिंताओं से स्वतंत्रता आइसब्रेकर: आप किस तरह की चीजें चिंता करते हैं?

_____

_____

_____ क्यों आप चिंता करते हैं?

_____

_____ परिचय: यीशु ने अभी अपने शिष्यों को बता दिया है कि उनके पास भगवान से डरने का कोई कारण नहीं है क्योंकि वे अपने दोस्त थे। और उनकी दोस्ती के साथ पुरुषों, मौत और सार्वजनिक बोलने के डर से स्वतंत्रता आती है। पवित्रशास्त्र पढ़ना: (मत्ती 6: 24-34) (लूका 12: 21-31) आदेश: अपने जीवन के लिए उत्सुक मत बनो। रैवेन्स को सुरक्षित रखें। लिली। क्या आप खाएंगे, और आप क्या पीएंगे, और क्या आप पीते हैं, और क्या आप पीते हैं सबक: वह एक दृष्टांत को बताकर सबक शुरू करता है। "एक अमीर आदमी की भूमि बहुत ही उत्पादक थी। और उसने खुद को तर्क देना शुरू किया, 'मैं क्या करूँगा, क्योंकि मेरे पास अपनी फसलों को स्टोर करने के लिए कोई जगह नहीं है?' तब उसने कहा, 'यही वह है जो मैं करूंगा: मैं अपने खलिहानों को फाड़ दूंगा और बड़े लोगों को बनाऊंगा, और वहां मैं अपने सभी अनाज और मेरे सामानों को स्टोर करूंगा। और मैं अपनी आत्मा से कहूंगा, "आत्मा, आपके पास आने वाले कई वर्षों तक कई सामान रखे गए हैं; अपनी आसानी करो, खाओ, पीएं और आनंद लें। "'लेकिन भगवान ने उससे कहा,' तुम मूर्ख हो! यह बहुत रात आपकी आत्मा की आवश्यकता है; और अब आपके द्वारा तैयार किए गए हैं? 'वह वह व्यक्ति है जो अपने लिए खजाने को स्टोर करता है, और भगवान की ओर समृद्ध नहीं है। " यह दृष्टांत से स्पष्ट है कि पुरुष विकल्प बनाते हैं। वे या तो भगवान या खुद की सेवा करना चुनते हैं। यीशु ने इसे एक और तरीका रखा। "कोई भी दो स्वामी की सेवा नहीं कर सकता; या तो वह एक से नफरत करेगा और दूसरे से प्यार करेगा, या वह एक के लिए समर्पित होगा और दूसरे को घृणा करेगा। आप भगवान और धन की सेवा नहीं कर सकते। "समूह चर्चा: क्या आप भगवान या धन की सेवा कर रहे हैं? _____ क्या आप जानते हैं?

_____

_____ सबक जारी रहा: सबक ने सोचा के साथ सबक शुरू किया कि पुरुष दो स्वामी में से एक को सेवा देने के लिए चुन सकते हैं, यीशु के शिष्यों को आश्वस्त करता है कि वे हैं वह उन्हें एक आज्ञा जारी करके करता है। "इस कारण से मैं आपसे कहता हूं, अपने जीवन के बारे में चिंता न करें, जैसा कि आप क्या खाएंगे; और न ही आपके शरीर के लिए, आप क्या करेंगे। जीवन के लिए भोजन से अधिक है, और शरीर के कपड़े से अधिक है। " दूसरे शब्दों में, "चूंकि मैंने आपको मित्र कहा है और आप मेरे पीछे कर रहे हैं; आपको भोजन और कपड़ों के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि भगवान उन्हें आपके लिए प्रदान करेंगे। " यह अवधारणा जो भगवान उन लोगों के लिए प्रदान करती है जो उनके अनुसरणों के लिए एक नया नहीं था। उनके पूर्वजों ने मिस्र के बाद मूसा के पीछे और चालीस वर्षों के दौरान जंगल में घूमने के दौरान उन्हें भोजन या कपड़ों की कमी नहीं थी। इसके अलावा लेवियों ने इजरायल में पुजारी के रूप में कार्य करने की आवश्यकता नहीं थी, लेकिन भगवान ने उनके लिए बलिदान और लोगों के फ्रीविल प्रसाद के माध्यम से प्रदान किए। कई सालों बाद प्रेषित पीटर इस विशेष वाचा के रिश्ते का संदर्भ देगा कि ईसाईयों के पास जो उन्होंने घोषित किया था, "लेकिन आप एक चुनी हुई दौड़, एक शाही पुजारी, एक पवित्र राष्ट्र, भगवान के अपने कब्जे के लिए एक व्यक्ति हैं, ताकि आप महामहिम की घोषणा कर सकें यह हर ईसाई पर निर्भर है कि वह मिस्र से बाहर

आने वाले इस्राएलियों की कहानी को समझता है क्योंकि यह सभी ईसाइयों के जीवन को समानांतर करता है। प्रेषित पौलुस ने कुरिंथियों को अपना पहला पत्र लिखते समय इस सलाह का इस्तेमाल किया। अब ये चीजें उनके साथ एक उदाहरण के रूप में हुईं, और वे हमारे निर्देश के लिए लिखे गए थे, जिन पर युग के अंत आए हैं। (मैं कुरिन्थियों 10:11) आइए समानांतर की याद दिलाए गए: मिस्र में रहते हुए इस्राएली बंधन में थे। दुनिया में रहने के दौरान शैक्षिक पाप के बंधन में थे। उनके उद्धार की रात को इस्राएलियों ने संयुक्त राष्ट्र के खून को लागू किया फिर वे दरवाजे के माध्यम से प्रवेश करते थे और जब उन्होंने अपने दरवाजे पर खून को मान्यता दी, तो मौत के दूत से बचाया गया। (निर्गमन 12) यीशु मसीह भगवान का एक बेकार मेमड़ा है। इस्राएली लोगों ने इसे लागू करने के समान पैटर्न में कैल्वेरी के क्रॉस पर उसका खून धब्बा लगाया था। लिंटेल वह जगह है जहां कांटों का मुकुट उसके सिर और दरवाजे से खून बहने के कारण होता है जहां नाखून ने अपने हाथों को छेड़छाड़ की थी। यीशु ने कहा, "मैं दरवाजा हूं, अगर कोई मेरे माध्यम से प्रवेश करता है, तो उसे बचाया जाएगा। (यूहन्ना 10: 9) इस्राएली सभी बादल के नीचे थे और सभी समुद्र के माध्यम से पारित हुए थे। और सभी को बादल और समुद्र में मूसा में बपतिस्मा दिया गया था। (मैं कुरिन्थियों 10: 1-2) ईसाई सभी पवित्र आत्मा और पानी में यीशु मसीह में बपतिस्मा लेते हैं। क्योंकि तीन हैं जो गवाही देते हैं: आत्मा और पानी और रक्त; और तीन समझौते में हैं। (1john 5: 7-8) इस्राएलियों को माउंट सिनाई में पत्थर की गोलियों पर लिखे गए मूसा का कानून मिला। क्रिस्टियंस ने मसीह के कानून को माउंट ज़ियोन में अपने दिल पर लिखा था। इस्राएलियों ने सभी एक ही आध्यात्मिक भोजन खाया ... मन्ना और चट्टान मसीह था। क्रिस्टियन सभी एक ही आध्यात्मिक पेय पीते थे ... कम्युनियन वाइन, जो मसीह का खून है। गोड अधिकांश इस्राएली लोगों से प्रसन्न नहीं था और वे जंगल में मर गए। ये लोग 1) बुरी बातों को लालसा करते हैं, 2) मूर्तिपूजक थे, 3) अनौपचारिक रूप से कार्य किया, 4) भगवान ने कोशिश की, और 5) उसके खिलाफ गुस्से में। उन्होंने अपने अविश्वास (विश्वास की कमी) की वजह से वादा किए गए देश में प्रवेश नहीं किया। आरिस्टियन को इन चीजों को करने के खिलाफ चेतावनी दी जाती है। इस्राएली लोगों को अपनी यात्रा पर भोजन, कपड़ों या आश्रय की कमी नहीं हुई। श्राविस्तानों को उनके जीवन में भोजन, कपड़े या आश्रय की कमी नहीं होगी .Wh जो अपने युवाओं को भगवान के लिए रोते हैं और बिना भोजन के घूमते हैं, उसके पोषण के लिए कौन तैयार करता है? (नौकरी 38:41) रावन्स को अपने दैनिक प्रावधान के लिए भगवान पर भरोसा करना है। यिर्मयाह ने भी भगवान के लोगों से संबंधित एक ही बिंदु बनाया। भगवान की लविंगकिंडनेस वास्तव में कभी भी समाप्त नहीं होती, क्योंकि उनके करुणा कभी असफल नहीं होतीं। वे हर सुबह नए हैं; महान आपकी वफादारी है। (विलाप 3: 22-23) और याद रखें कि भगवान ने एक अकाल के बीच पैगंबर एलिय्याह को खिलाने के लिए रैवेन्स (अशुद्ध पक्षियों ... वे और उनके भोजन गैर कोशेर हैं) का उपयोग भी किया। (1Kings 17: 1-9) अपने अगले बिंदु पर जाने से यीशु ने शिष्यों को बताया, "लिली पर विचार करें।" वे कैसे बढ़ते हैं ... वे भगवान को बीज, मिट्टी में पोषक तत्व, धूप और बारिश की आपूर्ति करने की अनुमति देते हैं। वे न तो टिलर और न ही स्पिन ... वे नहीं करते हैं यिर्मयाह ने भी भगवान के लोगों से संबंधित एक ही बिंदु बनाया। यहोवा मेरा हिस्सा है, मेरी आत्मा कहती है, इसलिए मुझे उसकी उम्मीद है। यहोवा उन लोगों के लिए अच्छा है जो उसकी प्रतीक्षा करते हैं, जो उसे चाहता है। (विलाप 3: 24-25) और याद रखें कि यह भगवान था जिसने आदम और हव्वा के बारे में काफी ध्यान दिया, भले ही उन्होंने पाप किया, उन्हें कपड़े पहनने के लिए। जैसा कि यीशु को करीब से सबक तैयार करना शुरू होता है, वह शिष्यों को फिर से भोजन, पानी और कपड़ों जैसी आवश्यक चीजों के बारे में चिंतित नहीं करता है। अगर वे केवल अपने जीवन में अपना शासन स्थापित करना चाहते हैं तो भगवान उन्हें प्रदान करेंगे। फिर इसके लिए वह कहते हैं, कि शिष्यों को कल के लिए कोई विचार नहीं देना चाहिए क्योंकि मन्ना उनके आशीर्वाद हर दिन नए हैं। और

कैसे चिंतित या चिंता होने से कोई भी व्यक्ति अपने जीवनकाल को बढ़ाने की उम्मीद कर सकता है? समूह चर्चा: अच्छी सरकारें लोगों को प्रदान करने की कोशिश करती हैं?

_____

__ ईश्वर अपने लोगों के लिए क्या करता है?

_____

_____ सबक का बिंदु: भगवान आपकी आवश्यकताओं का ख्याल रखेंगे। आवेदन: भजन 103 पढ़ें

पाठ 39

नौकर-हुड आइसब्रेकर्स: एक अमीर व्यक्ति के रूप में, आप व्यक्तिगत नौकर में क्या गुण चाहते हैं? _____

_____

_____ कौन अपने व्यक्तिगत नौकर की देखभाल के लिए जिम्मेदार है? _____ परिचय: जब यीशु ने पिछले पाठ को करीब से आकर्षित किया, तो उसने अपने शिष्यों को भगवान के राज्य की तलाश करने के लिए कहा। यह कहने के बराबर था, "सबसे पहले, अपने जीवन पर भगवान के शासन की स्थापना करें।" एक बार एक शिष्य उस प्रतिबद्धता को बनाता है तो भगवान उसके लिए जीवन की आवश्यकताओं को प्रदान करने की ज़िम्मेदारी स्वीकार करता है। इस तरह उसके पास चिंता का कोई कारण नहीं होगा और भगवान की सेवा करने के लिए अपना समय और ध्यान देने में सक्षम होगा। पवित्रशास्त्र पढ़ना: (लूका 12: 32-59) समूह चर्चा: क्या आप भगवान के नौकर हैं? _____ क्या आप मानते हैं कि भगवान आपके लिए जीवन की आवश्यकताएं प्रदान करेगा? _____ आदेश: डरो मत, थोड़ा झुंड। अपनी संपत्ति को बताओ। चैरिटी के लिए भरोसा करें। अपने आप को पर्स के लिए करें, जो बाहर नहीं पहनते हैं। अपने लैंप को तत्परता में कपड़े पहने हुए। उन लोगों की तरह। आप भी अपने गुरु की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आप भी सबक: गॉडजेसस द्वारा नियोजित नौकर-हुड पर अपने शिष्यों को आश्वस्त करके सबक शुरू करता है कि भगवान ने उन्हें नियोजित किया है। उन्होंने खुशी से उन्हें भगवान का राज्य देने के लिए चुना है, इसलिए उन्हें डरने की जरूरत नहीं है। वह अपनी जरूरतों के लिए प्रदान करेगा। और चूंकि ईश्वर ने शिष्यों को रोजगार देने के लिए स्वतंत्र रूप से चुना है, इसलिए वे अपनी संपत्ति बेचने और गरीबों को प्राप्त करने और आवश्यक को बेचने के लिए स्वतंत्र महसूस कर सकते हैं। प्रारंभिक चर्च में दान के ये कृत्य काफी प्रचलित थे क्योंकि अधिनियमों की पुस्तक की याद आती है। और जो लोग मानते थे वे एक साथ थे और सभी चीजें आम थीं; और उन्होंने अपनी संपत्ति और संपत्ति बेचने शुरू कर दिया और उन्हें सभी के साथ साझा कर रहे थे, क्योंकि किसी को भी आवश्यकता हो सकती है। (प्रेरितों 2: 44-45) और जो लोग मानते थे उन लोगों की मंडली एक दिल और आत्मा थी; और उनमें से एक ने दावा नहीं किया कि उनके बारे में कुछ भी स्वयं था, लेकिन सभी चीजें उनके लिए आम संपत्ति थीं। और महान शक्ति के साथ प्रेरित भगवान यीशु के पुनरुत्थान के लिए गवाही दे रहे थे, और प्रचुर मात्रा में अनुग्रह उन सभी पर था। क्योंकि उनके बीच एक जरूरतमंद व्यक्ति नहीं था, क्योंकि जो लोग भूमि या घर के मालिक थे वे उन्हें बेच देंगे और बिक्री की आय लाएंगे और उन्हें प्रेरितों के चरणों में रखेंगे, और उन्हें किसी को भी आवश्यकता के अनुसार वितरित किया जाएगा। (प्रेरितों 4: 32-35) सबक: नौकरी विवरण अगली बात यह है कि यीशु अपने शिष्यों को करने के लिए कहता है कि वे खुद के लिए पर्स बनाना है, जो स्वर्ग में एक अयोग्य खजाना नहीं पहनता है। इस आदेश को सुनने पर शिष्यों को कुछ हद तक परेशान किया जा सकता था लेकिन थोड़ा सा विचार के साथ हम यह पता लगा सकते हैं कि यीशु क्या कह रहा था। आइए इसे तोड़ दें। शास्त्रों के अनुसार, केवल तीन चीजें (खजाने) हैं जिनमें शाश्वत मूल्य या मूल्य है। वे विश्वास आशा और प्रेम हैं। (1 कोरिंथियों 13:13) ये तीन स्वर्ग और पृथ्वी दोनों में अमूल्य खजाने हैं। कोई चोर उन्हें चुरा सकता है और कोई पतंग या जंग उन्हें नष्ट नहीं कर सकता है। पर्स बनाने के लिए सामग्री की सामग्री जो विश्वास को पकड़ सकती है और प्यार हमेशा के लिए अगले कदम है। केवल एक ही चीज जो अर्हता प्राप्त करती है वह मनुष्य हैं। उन्हें यीशु मसीह के शिष्यों में बनाया जा सकता है जो बदले में स्वर्ग में उन में संग्रहित खजाने के साथ जाएगा। और यीशु आया और उनसे बात की, "सभी अधिकार मुझे स्वर्ग और पृथ्वी पर दिए गए हैं। इसलिए जाओ और सभी राष्ट्रों के शिष्य बनाएं, उन्हें पिता

और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दें, उन्हें उन सभी को देखने के लिए सिखाएं जो मैंने आपको आज्ञा दी थी; और लो, मैं हमेशा आपके साथ, उम्र के अंत तक भी हूं। " (मत्ती 28: 18-20) सबक: दैनिक जिम्मेदारियों को सबक का अंतिम हिस्सा यीशु शिष्यों को दैनिक जिम्मेदारियों को संबोधित करता है। सबसे पहले, वे तत्परता में तैयार हैं। इसका तात्पर्य है कि शिष्यों को हर समय तैयार किया जाना चाहिए और पवित्रशास्त्र के एक प्रसिद्ध मार्ग को इंगित किया जाना है। इसलिए, भगवान के पूर्ण कवच को उठाएं, ताकि आप बुराई दिवस में विरोध करने में सक्षम हो सकें, और दृढ़ रह सकें, दृढ़ता से खड़े हो सकें। इसलिए दृढ़ रहें, सच्चाई के साथ अपने लापरवाही के साथ, और धार्मिकता के छाती पर डाल दिया, और शांति की सुसमाचार की तैयारी के साथ अपने पैरों को झुकाएं; सभी के अलावा, विश्वास की ढाल लेना जिसके साथ आप बुराई के सभी ज्वलंत तीरों को बुझाने में सक्षम होंगे। और मोक्ष का हेलमेट लें, और आत्मा की तलवार, जो भगवान का वचन है। (इफिसियों 6: 13-18) दूसरी बात, वह उन्हें अपने दीपक को दूर रखने के लिए कहता है। पाठ में 04 हमने पाया कि शिष्यों की रोशनी चमकती है जब वे दूसरों को यीशु की गवाही लाते हैं। तेल की निरंतर आपूर्ति को चमकाने के लिए प्रकाश को रखने के लिए आवश्यक है। पवित्रशास्त्र के तेल का उपयोग पवित्र आत्मा का प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रतीकात्मक रूप से किया जाता है। उदाहरण के लिए, जकर्याह अध्याय चार में हम दो जैतून के पेड़ों की छवि को दो जैतून के पेड़ों से घिरे हुए पाइपों से घेरने के साथ एक सात शाखा वाले गोल्डन दीपक की छवि देखते हैं, जो इसे तेल की निरंतर आपूर्ति प्रदान करते हैं। फिर हम सुनते हैं कि भगवान घोषित करते हैं, "शक्ति से और न ही शक्ति से, लेकिन मेरी आत्मा द्वारा।" अपने दीपक को दूर रखने के लिए शिष्यों को भगवान की भावना से लगातार भरने की आवश्यकता है। दिलचस्प बात यह है कि, कई महीनों बाद यीशु ने चेले को चेतावनी दी कि जब उन्होंने उन्हें पांच बुद्धिमान और पांच मूर्ख कुंवारी के दृष्टांत से कहा था। तीसरा, यीशु शिष्यों को उन पुरुषों की तरह कहता है जो अपने मालिक की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस आदेश के भीतर दो अवधारणाएं हैं: अपेक्षा और प्राथमिकता। शिष्यों को प्रतिदिन शिष्यों को बनाने के व्यवसाय के बारे में जाना है। हालांकि वे अपने गुरु के आगमन के लिए सतर्क रहना चाहते हैं जो उन्हें अतिरिक्त निर्देश दे सकते हैं जो वर्तमान में क्या कर रहे थे ओवरराइड करें। जैसा कि ईसाईयों के रूप में हम लगातार अपने भगवान की आवाज़ सुन रहे हैं और तुरंत हम जो कर रहे हैं उसे रोकें और इसका जवाब दें। यीशु ने उनसे जो कहा उससे एक अतिरिक्त संकेत खींचा जा सकता है, "उन पुरुषों की तरह बनें जो अपने मालिक की प्रतीक्षा कर रहे हैं जब वह शादी के दावत से लौटते हैं, ताकि जब वे आते हैं और दस्तक देते हैं तो वे तुरंत उसके दरवाजे को खोल सकते हैं।" प्रकाशन की पुस्तक में यीशु की वापसी से पहले चर्च को दिया गया अंतिम संदेश इस मुद्दे से संबंधित है। चर्च अमीर, उदासीन और आत्म-संतुष्ट हो गया है। फिर भी भगवान अपने दास-हुड से नाराज हैं और उन्हें जरूरतमंद पाते हैं। क्या वे अब उसकी आवाज सुनते हैं? क्या वे उनके बीच में उनका स्वागत करेंगे? चर्च के चर्च को संदेश कैसे पढ़ता है, सुनें। "देखो, मैं दरवाजे पर खड़ा हूं और दस्तक देता हूं; अगर कोई मेरी आवाज़ सुनता है और दरवाजा खोलता है, तो मैं उसके पास आऊंगा और उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ होगा। वह जो खत्म हो जाता है, मैं उसे अपने सिंहासन पर बैठने के लिए अनुदान दूंगा, क्योंकि मैं भी अपने पिता के साथ अपने पिता के साथ बैठ गया और बैठ गया। जो कान है, उसे सुनने दो, आत्मा चर्चों से क्या कहती है। "(प्रकाशितवाक्य 3: 20-22) समूह चर्चा: आप क्यों सोचते हैं कि यीशु अपने शिष्यों को अपनी संपत्ति बेचने और दान देने के लिए क्यों चाहते हैं? _____ _____ क्या आप पर्स बनाने में अधिक प्रभावी हो सकते हैं जो बाहर नहीं पहनते हैं (शिष्य)? _____ _____

_____ क्या आप अपने शब्द को प्राथमिकता देने के लिए तैयार हैं जो आप कर रहे हैं?
_____ पाठ का बिंदु: एक अच्छा नौकर बनना सीखें। आवेदन: प्रकाशितवाक्य 3: 14-22 पढ़ें

किंगडम आइसब्रेकर का पाठ 40 फोरेस्टर:

यदि आप जानते थे कि आपदा आ रही थी तो आपके घर में तीन चीजें क्या आप परिवार के सदस्यों के बगल में बचाने की कोशिश करेंगे?

_____ परिचय: दिसंबर 30 ईस्वी में, यीशु ने यरूशलेम में समर्पण (हनुक्का) के त्यौहार में भाग लिया, फिर के क्षेत्र में लौट आया शायद 31 ईस्वी के आरंभ में, यीशु ने यहूदिया और पेरे के क्षेत्रों के लिए आखिरी बार अपने घर छोड़ दिया। वहां पहुंचने के बाद फरीसियों के एक समूह ने यीशु से पूछताछ की कि जब भगवान का राज्य आ रहा था। पवित्रशास्त्र पढ़ना: (लूका 17: 20-37) आदेश: दूर मत जाओ। उनके बाद नहीं चलते हैं। उस दिन। उस दिन के लिए, जो घर में है और घर में घर में उन्हें दूर करने के लिए नीचे जाने के लिए नीचे जाने के लिए नीचे जाना है। सबक: फरीसियों ने जो यीशु पर सवाल उठाने वाले राज्य के आने से पूछा कि उन्हें एक वैध सवाल पूछा गया। यीशु ने लगातार अपने आप को मनुष्यों के पुत्र के रूप में संदर्भित किया था और इन फरीसियों ने मान्यता दी कि संक्षेप में वह मसीहा होने का दावा कर रहा था। वे डैनियल की पुस्तक में मसीही भविष्यवाणी के आधार पर उनके निष्कर्ष पर पहुंचे। मैं रात के दृष्टांतों में देख रहा था, और देखो, मनुष्य के पुत्र की तरह स्वर्ग के बादलों के साथ आ रहा था, और वह प्राचीन दिनों तक आया और उसके सामने प्रस्तुत किया गया। और उनके लिए प्रभुत्व, महिमा और एक राज्य दिया गया था, कि हर भाषा के सभी लोग, राष्ट्र और पुरुष उसकी सेवा कर सकते हैं। उनका प्रभुत्व एक अनन्त प्रभुत्व है जो पास नहीं होगा; और उसका राज्य वह है जो नष्ट नहीं किया जाएगा। अनिवार्य रूप से फरीसी जानना चाहती थी कि यीशु इस्राएल के राजा के रूप में शासन करने और सभी देशों पर अपना शासन स्थापित करना शुरू कर देगा। वे एक भौतिक साम्राज्य की उम्मीद कर रहे थे, जिसकी शुरुआत कुछ सटीकता के साथ दिनांकित हो सकती थी। लेकिन यीशु का जवाब कुछ हद तक क्रिप्टिक था। भगवान का राज्य संकेतों के साथ नहीं आ रहा है; न ही वे कहते हैं, "देखो, यहाँ यह है!" या, "यह है!" देखो, भगवान का राज्य आपके बीच में है। " अपने गुप्त जवाब को सुलझाने के लिए हमें भगवान के राज्य के विचार के बारे में कुछ समझ हासिल करने की आवश्यकता होगी। सरल शब्दों में "भगवान का राज्य" का अर्थ है "भगवान का शासन।" भगवान का राज्य स्थापित किया जाता है जब भगवान अपने लोगों पर शासन करना शुरू कर देते हैं। जब यीशु ने फरीसियों से कहा कि भगवान का राज्य आपके बीच में है, तो वह इस तथ्य से चिंतित था कि भगवान नियम तब शासन करते हैं जब लोग उसे भगवान के रूप में स्वीकार करते हैं और अपने नियमों का पालन करते हैं और मानते हैं। यही कारण है कि यीशु ने फरीसियों को बताया कि भगवान का राज्य संकेतों के साथ नहीं आ रहा था। फिर अपने शिष्यों की ओर मुड़ते हुए, यीशु ने उन्हें चेतावनी दी कि वे उन लोगों को ध्यान न दें जो कहेंगे कि परमेश्वर का राज्य या तो यहां था या वहां से भगवान के राज्य के संकेतों के साथ नहीं आते हैं। लेकिन अपने शिष्यों को अधिक जानकारी देने की इच्छा रखते हुए, यीशु ने वार्तालाप को वापस मनुष्य के पुत्र में बदल दिया, इस प्रकार खुद को अपने भविष्य के शासनकाल के साथ मसीहा के रूप में जोड़ दिया। उन्होंने उनसे कहा कि वे उस दिन को देखना चाहते हैं जब वह मनुष्य के पुत्र, पृथ्वी पर शासन कर रहे थे, लेकिन वे इसे अपने जीवनकाल में नहीं देख पाएंगे क्योंकि उन्हें कई चीजों का सामना करना होगा और वर्तमान पीढ़ी से खारिज कर दिया जाएगा। हालांकि, उन्होंने उन्हें बताया कि वह भविष्य में पृथ्वी पर वापस आ जाएगा। और उसने उस दिन को एक प्रकाश फ्लैश की तुलना की: अचानक, आकाश में, जल्दी और इसके लिए देख रहे सभी लोगों के लिए ध्यान देने योग्य। जैसे कि अपने मुद्दे पर बल देने के लिए, यीशु ने उस दिन की वापसी की तुलना की, जिस दिन नूह ने सन्दूक और उस दिन में प्रवेश किया था जब इब्राहीम के भतीजे ने सोडोम छोड़ दिया था।

जैसा कि ऐसे समय में लोगों के दो समूह होंगे, एक ही समय में ग्रह पृथ्वी पर सह-अस्तित्व: जो लोग भगवान के राज्य से संबंधित हैं और जो नहीं करते हैं। ईश्वर उन लोगों को वितरित करेगा जो उनके हैं और उन लोगों पर क्रोध को शासन करते हैं जो नहीं हैं। जो लोग भगवान से संबंधित हैं, उनकी आवाज़ सुनेंगे और उसका पालन करेंगे। नूह ने सुना कि भगवान समय से पहले बोलते हैं और एक सन्दूक तैयार करते हैं। तब वह सन्दूक में प्रवेश किया जब भगवान ने उससे कहा। लॉट ने पहले से तैयार नहीं किया था, लेकिन उन स्वर्गदूतों के माध्यम से भगवान के संदेश को सुना जो उन्हें देने और उनकी आज्ञा मानने के लिए भेजे गए थे। दोनों मामलों में जो लोग भगवान के क्रोध से पहुंचे थे, उन्होंने अपने जीवन में भगवान के शासन में जमा कर दिया था। उन लोगों के लिए जो भगवान के राज्य के सदस्य हैं यीशु ने चेतावनी दी है कि उनके उद्धार के दिन वे उनके साथ किसी भी सांसारिक कब्जे को लेने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। फिर वह उन्हें बहुत सारी पत्नी को याद करने का निर्देश देता है। समूह चर्चा: लूत की पत्नी के साथ क्या हुआ? _____ क्यों बहुत से पत्नी वापस मुड़ गई?

_____

_____ क्या पीछे की ओर देखकर गलत था?

_____

_____ सबक जारी रखा: उन लोगों के लिए जो दिन भगवान के राज्य से संबंधित नहीं हैं उस दिन किसी अन्य की तरह होंगे। वे खा रहे हैं, पी रहे हैं, शादी कर रहे हैं, खरीद, बेच रहे हैं, रोपण और इमारत करेंगे। वे अनसुना रहेगा! तब उस रात भगवान का क्रोध उन पर गिर जाएगा। पवित्रशास्त्र से ऐसा प्रतीत होता है कि शेष लोगों में से एक-आधा नष्ट हो जाएगा। पाठ का बिंदु: जो लोग भगवान की आवाज़ सुनते हैं और पालन करते हैं उन्हें बचाया जाएगा।

पाठ 41

हार्ट हिमब्रेकर न खोएं: आखिरी बार कब आपके पास प्रार्थना का जवाब था? _____ क्या आप किसके लिए प्रार्थना करते थे? _____ परिचय: जब यीशु ने पृथ्वी पर भगवान के क्रोध से संतों को देने के लिए अपने दूसरे के बारे में शिष्यों को बताया, तो उन्होंने अन्याय के न्यायाधीश के दृष्टांत के साथ इसका पालन किया। दृष्टांत उनके सभी शिष्यों को प्रोत्साहित करने के लिए है और इसका उद्देश्य उन्हें दिखाना है कि हर समय उन्हें प्रार्थना करनी चाहिए और दिल नहीं खोना चाहिए। यह सभी ईसाइयों के जीवन में एक व्यावहारिक रोजमर्रा का आवेदन है। और अधिक स्पष्ट रूप से उन लोगों के लिए जो अपने दूसरे आने से पहले जीवित हैं, क्योंकि यीशु ने बयान के साथ दृष्टांत का निष्कर्ष निकाला है, "हालांकि, जब मनुष्य का पुत्र आता है, तो क्या उसे पृथ्वी पर विश्वास मिलेगा?" पवित्रशास्त्र को पढ़ना: (लूका 18: 1-8) आदेश: सुनें कि अधर्म न्यायाधीश ने क्या कहा। पाठ: ध्यान से सुनने के लिए ध्यान से सुनने के लिए ध्यान से सुनने के लिए कि हम इसके बारे में कोई अवलोकन करने या इससे कोई निष्कर्ष निकालने का प्रयास करने से पहले। अब वह उन्हें यह दिखाने के लिए एक दृष्टांत बता रहा था कि हर समय उन्हें प्रार्थना करना चाहिए और दिल खोना नहीं है, "एक निश्चित शहर में एक न्यायाधीश था जो भगवान से डरता नहीं था और मनुष्य का सम्मान नहीं करता था। उस शहर में एक विधवा थी, और वह उसके पास आ रही थी, 'मुझे अपने प्रतिद्वंद्वी से कानूनी सुरक्षा दें।' थोड़ी देर के लिए वह अनिच्छुक था; लेकिन बाद में उसने खुद से कहा, 'भले ही मैं भगवान से डरता न हो और न ही मनुष्य का सम्मान करता हूं, फिर भी क्योंकि यह विधवा मुझे परेशान करती है, मैं उसे कानूनी सुरक्षा दूंगा, अन्यथा यह लगातार आ रही है कि वह मुझे पहन जाएगी। "और यहोवा ने कहा," अनजान न्यायाधीश ने क्या कहा। अब, क्या ईश्वर अपने चुनाव के लिए न्याय नहीं लाएगा जो दिन और रात उसे रोता है, और क्या वह उन पर लंबे समय तक देरी करेगा? मैं आपको बताता हूं कि वह उनके लिए जल्दी से न्याय लाएगा। हालांकि, जब मनुष्य का पुत्र आता है, तो क्या उसे पृथ्वी पर विश्वास मिलेगा? " यीशु ने अक्सर लोगों को सिखाने के लिए दृष्टांतों को सिखाने के लिए सिखाए जाने के लिए किया। इनमें से कई दृष्टांतों को तुलनात्मक माना जाता है। दूसरे शब्दों में, "कुछ और कुछ जैसा है।" उदाहरण के लिए, स्वर्ग का राज्य समुद्र में एक ड्रैगनेट की तरह है। और उन्होंने कहा कि कुछ दृष्टांत विपरीत हैं। दूसरे शब्दों में, कुछ और के विपरीत कुछ है। अन्याय न्यायाधीश के दृष्टांत एक विपरीत दृष्टांत है, क्योंकि ईश्वर जो सिर्फ न्याय है, अन्याय न्यायाधीश के विपरीत है। समूह चर्चा: दृष्टांत में महिलाओं की तुलना भगवान के चुनेता या पहचान की जाती है। (यानी ईसाई) क्या महिला को पता चले कि न्याय कहाँ जाना है? आप इसे कैसे जानते हैं? हां। वह न्याय के लिए जिम्मेदार व्यक्ति के पास गया, न्यायाधीश। क्या वह न्यायाधीश से डरती थी? आप इसे कैसे जानते हैं? नहीं। उसने मूल रूप से उसे बाहर निकाला और फिर बस उसे परेशान रखा। क्या उसके इरादे गलत थे? आप इसे कैसे जानते हैं? नहीं। उसने केवल उन सुरक्षा की मांग की जो उसके कारण स्थानीय कानूनों के अनुसार थी। क्या महिला को न्यायाधीश में विश्वास है? आप इसे कैसे जानते हैं? नहीं। दृष्टांत में कहा गया है कि वह विश्वास के योग्य नहीं था क्योंकि वह न तो भगवान से डरता था और न ही मनुष्य के लिए कोई सम्मान था। यही कारण है कि उसे अपने मामले को उसके पास रखना पड़ा। सबक जारी रहा: चूंकि दृष्टांत विपरीत है, इसलिए विरोध सिर्फ न्याय के साथ सच है। इसलिए दृष्टांत यह दर्शाता है कि भगवान के साथ आपको एक ही अनुरोध के साथ आने की ज़रूरत नहीं है; उसने आपको पहली बार सुना। आपको भगवान को बाहर पहनने की ज़रूरत नहीं है; वह आपके पक्ष में निर्णय लेने के लिए तैयार है और इतनी जल्दी कर देगा। लेकिन यीशु के उद्घाटन और समापन विवरणों से "प्रार्थना करना और दिल खोना नहीं" और "क्या उसे धरती पर विश्वास मिलेगा" ऐसा

प्रतीत होता है कि कुछ ईसाई विश्वास से प्रार्थना नहीं कर रहे हैं लेकिन केवल आशा करते हैं। समूह चर्चा: संदेह विश्वास का दुश्मन है। प्रार्थना करते समय आपके पास कुछ संदेह क्या हैं?

_____

_____

_____

_____ हालांकि, कई ईसाई यह इंगित करने के लिए जल्दी हैं कि प्रेषित पौलुस के पास "मांस में कांटा" था, जिससे वह बार-बार भगवान से इसे दूर करने के लिए कहने के बाद वितरित नहीं किया गया था। प्रेषित पौलुस अपने दूसरे पत्र में अपने दूसरे पत्र में 56 या 57 ईस्वी के लिए अपने "कांटा में" की कहानी से संबंधित है। इस तरह यह पढ़ता है। घमंड जरूरी है, हालांकि यह लाभदायक नहीं है; लेकिन मैं भगवान के दृष्टांत और रहस्योद्घाटन पर जाऊंगा। मैं मसीह में एक आदमी को जानता हूं कि चौदह साल पहले - चाहे मैं शरीर में नहीं जानता, या शरीर से बाहर मुझे नहीं पता, भगवान जानता है कि एक आदमी को तीसरे स्वर्ग में पकड़ा गया था। और मुझे पता है कि कैसे एक आदमी-शरीर में या शरीर के अलावा मुझे नहीं पता, भगवान जानता है- स्वर्ग में पकड़ा गया था और एकजुट शब्दों को सुना, जिसे एक आदमी को बोलने की अनुमति नहीं है। ऐसे आदमी की ओर से मैं घमंड करूंगा; लेकिन मेरी अपनी ओर से मैं अपनी कमजोरियों के संबंध में छोड़कर घमंड नहीं करूंगा। अगर मैं दावा करना चाहता हूं कि मैं मूर्ख नहीं होगा, क्योंकि मैं सच बोल रहा हूं; लेकिन मैं इससे बचता हूं, ताकि कोई भी मुझे मुझसे ज्यादा क्रेडिट नहीं करेगा या मुझसे सुनता है। रहस्योद्घाटन की महानता को पार करने के कारण, इस कारण से, मुझे खुद को निकालने से रोकने के लिए, मुझे मांस में कांटा दिया गया था, ए इस बात से संबंधित मैंने तीन बार यहोवा को लगाया जो कि यह मुझे छोड़ सकता है। और उसने मुझसे कहा है, "मेरी कृपा आपके लिए पर्याप्त है, क्योंकि शक्ति कमजोरी में परिपूर्ण है।" सबसे खुशी से, इसलिए, मैं अपनी कमजोरियों के बारे में दावा करूंगा, ताकि मसीह की शक्ति मेरे अंदर रह सके। (2 कुरिन्थियों 12: 1-9) पौलुस की गवाही के मुताबिक उन्हें "मांस में कांटा" दिया गया था, जो ईश्वर द्वारा उसे उपहार के रूप में या कम से कम भगवान की अनुमति के साथ दिया गया था। कारण उन्हें "मांस में कांटा" दिया गया था, उसे खुद को निकालने या गर्व से बनने से रोकना था। यह 42 या 43 ईस्वी में भगवान के महान दृश्य और रहस्योद्घाटन को देखा गया था, जबकि वह एंटीऑच के क्षेत्र में था। इसलिए, उसे 42 या 43 ईस्वी के बाद कभी "मांस में कांटा" दिया जाना चाहिए। रिकॉर्ड के मामले में, पॉल को 37 ईस्वी में ईसाई धर्म में परिवर्तित कर दिया गया और 45 ईस्वी में अपनी पहली मिशनरी यात्रा शुरू हुई। विद्वानों के बीच बहुत सारी अटकलें हुई हैं कि मांस में पौलुस का कांटा क्या था। "मांस में कांटा" से संबंधित पांच प्रचलित विचार हैं: शारीरिक बीमारियों के साथ दो सौदे और आध्यात्मिक विपत्ति के साथ तीन सौदे। भौतिक बात यह सोचते हैं कि दमिश्क रोड पर अपने रूपांतरण के परिणामस्वरूप पौलुस की आंखों की रोशनी थी जब वह अंधा हो गया था। शाऊल जमीन से उठ गया, और यद्यपि उसकी आंखें खुली थीं, वह कुछ भी नहीं देख सकता था; और हाथ से उसे ले जाया, वे उसे दमिश्क में लाए। और वह बिना दृष्टि के तीन दिन था, और न ही खा लिया और न ही पिया। हालांकि, वह इस से ठीक हो गया था। और यहोवा ने उससे कहा, "उठो और सीधे बुलाए गए सड़क पर जाएं, और शाऊल नाम के एक व्यक्ति के लिए यहूदा के घर में पूछें, क्योंकि वह प्रार्थना कर रहा है, और उसने एक दृष्टि में देखा है कि एक व्यक्ति ने इनानियास नामक एक व्यक्ति को उस पर हाथ रख दिया, ताकि वह उस पर अपना हाथ रखो, ताकि वह उस पर अपना हाथ रखो, ताकि वह उस पर अपना हाथ रखो, ताकि वह उस पर अपना हाथ रखो, तो कृपया ध्यान दें कि यह घटना 37 ईस्वी में हुई, पौलुस ने अपने रहस्योद्घाटन प्राप्त करने से कई साल पहले। कुछ सोचते हैं कि पौलुस की उपस्थिति को पत्थर

मारने के परिणामस्वरूप मारा गया था। लेकिन यहूदी एंटीऑच और प्रतीक से आए, और भीड़ पर जीत हासिल की, उन्होंने पौलुस को पत्थर मार दिया और उसे मरने के लिए उन्हें शहर से बाहर खींच लिया। लेकिन जब शिष्य उसके चारों ओर खड़े थे, तो वह उठकर शहर में प्रवेश कर गया। अगले दिन वह बरनबास से डरने के लिए चला गया। चूंकि 46 ईस्वी में पौलुस की पत्थरबाजी हुई थी, यह एक संभावना है। आध्यात्मिक मानते हैं कि उनके संदेश के लिए यहूदी विरोध मांस में उसका कांटा था। लेकिन शाऊल ने ताकत में वृद्धि और यहूदियों को भ्रमित कर दिया जो दमिश्क में रहते थे, यह साबित करके कि यह यीशु मसीह है। जब कई दिन बीत चुके थे, यहूदियों ने उसके साथ दूर करने के लिए एक साथ प्लॉट किया था। यह बेहद असंभव लगता है क्योंकि यीशु मसीह के सुसमाचार का हमेशा विरोध किया गया है और इस विशेष मामले में यह 37 ईस्वी में पौलुस के रूपांतरण के कुछ ही समय बाद हुआ। कुछ सोचते हैं कि पौलुस को शैतान के राक्षसों में से एक ने लगातार पीड़ा दी जा रही थी। यह एक संभावना है क्योंकि भगवान ने एक दानव को राजा शाऊल को पीड़ा देने की इजाजत दी थी। हालांकि, पौलुस निश्चित रूप से किसी भी राक्षस के पास नहीं था क्योंकि पवित्र आत्मा उसे निवास कर रही थी। दुष्ट आत्माओं ने कुछ ईसाईयों को पीड़ित किया है, लेकिन आम तौर पर उन्हें उन्हें दूर करके निपटाया जा सकता है। कुछ सोचते हैं कि पौलुस को लगातार जुडियाज़र से निपटना पड़ा, जो लोग, जो कि यहूदी मसीहियों को मूसा के कानून का पालन करने की कोशिश कर रहे थे। यह एक अलग संभावना है क्योंकि 45 ईस्वी में अपनी पहली मिशनरी यात्रा के बाद समस्याएं शुरू नहीं हुई हैं। इसमें बाइबिल का आधार भी है। लेकिन यदि आप भूमि के निवासियों को आपके सामने से बाहर नहीं निकालते हैं, तो यह उन लोगों के बारे में आएगा जिन्हें आप उनमें से बने रहने देते हैं, आपकी आंखों में और आपके पक्षों में कांटों के रूप में बन जाएंगे, और वे आपको उस देश में परेशान करेंगे जहां आप रहते हैं। (संख्या 33:55) पौलुस ने भगवान से कानूनी राहत मांगी थी क्योंकि नीतिवचन 16: 7 कहते हैं, "जब मनुष्य के मार्ग भगवान को प्रसन्न करते हैं, तो वह भी अपने दुश्मनों को उसके साथ शांति में बना देता है।" हालांकि हम कभी नहीं जानते कि मांस में पौलुस का कांटा क्या था, हम पौलुस की प्रार्थना जीवन के बारे में कुछ निष्कर्ष निकाल सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि पौलुस का मानना था कि अगर उसने सही मकसद से प्रार्थना की तो उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया जाएगा, परिस्थितियों से डर नहीं था और माना जाता था कि उसने जो प्रार्थना की थी, वह पास हो जाएगी। उन्होंने अपने विश्वासों से अपना विश्वास प्रदर्शित किया। वह सिर्फ लोगों के उद्धार के लिए प्रार्थना नहीं करता था लेकिन वास्तव में उनसे प्रचारित था। चूंकि पौलुस कहता है कि उन्होंने एक ही चीज़ के लिए तीन बार प्रार्थना की कि यह लगातार एक ही चीज़ के लिए भगवान से पूछने के लिए सामान्य नहीं है। "मांस में कांटा" पर संभावित शुरुआत के बीच सबसे बड़ा समय बीत गया और कुरिंथियों को उनकी रिपोर्टिंग चौदह साल थी। तो ऐसा प्रतीत होता है कि जब पौलुस ने प्रार्थना की तो उसने भगवान को अपनी प्रार्थना का जवाब देने के लिए पर्याप्त समय दिया। लेकिन जब तक परमेश्वर ने उसे जवाब नहीं दिया, तब तक उन्होंने हार नहीं ठहराया। सबक का मुद्दा: प्रार्थना करें और दिल न खोएं ... भगवान में विश्वास रखें जो दोनों बस है और आपसे प्यार करता है। आवेदन: प्रार्थना की तारीख को रिकॉर्ड करने वाली अपनी प्रमुख प्रार्थनाओं के लिए प्रार्थना पत्रिका शुरू करें, भगवान और जिस तारीख को आपने पहली पूर्ति को देखा था, उससे पूछा गया था। कई पूर्ति या अधिक और कम पूर्ति हो सकती हैं।

बच्चे आइसब्रेकर: यीशु के साथ आपके रिश्ते का गठन होने पर आप कितने साल के थे? _____

परिचय: यीशु ने अधर्मी न्यायाधीश के दृष्टांत से कहा था, लोगों ने अपने बच्चों को उनके लिए लाने शुरू कर दिया कि वह उन्हें छू सकता है और उन पर एक आशीर्वाद प्रार्थना कर सकता है। जब शिष्यों ने देखा कि उन्होंने लोगों को दंडित किया। हालांकि, यीशु शिष्यों के साथ क्रोधित था और जवाब दिया, "बच्चों को मेरे पास आने की अनुमति दें; उन्हें बाधा मत बनो: क्योंकि भगवान के राज्य इन जैसे हैं। " यह जवाब अंततः शिशु बपतिस्मा के लिए महान सबूत ग्रंथों में से एक बन जाएगा और जिसके परिणामस्वरूप मोक्ष का परिणाम होगा। यद्यपि शिशु बपतिस्मा और मोक्ष इस पाठ में चर्चा के तहत विषय नहीं हैं, लेकिन यह अच्छी तरह से हो सकता है कि आपके पास इस विषय पर कुछ बुनियादी जानकारी है। ईसाई धर्म के भीतर विचारों की दो मुख्य धाराएं हैं जो जल बपतिस्मा प्राप्त कर सकती हैं। बैपटिस्टों की अध्यक्षता में कट्टरपंथी समूह, धारण करते हैं कि व्यक्तियों को बपतिस्मा लेने से पहले "फिर से जन्मा" अनुभव होना चाहिए। वे अपने बपतिस्मा के रूप, "आस्तिक के बपतिस्मा" कहते हैं। सुसमाचार प्रचारित सुनने के बाद "फिर से जन्मा" अनुभव मसीह में विश्वास (विश्वास) के आने वाले व्यक्ति का परिणाम है। वे वाचा में प्रवेश करने के लिए उपयोग करते हैं यीशु में एक व्यक्ति का विश्वास है। इसलिए शिशुओं और छोटे बच्चों (आमतौर पर सात साल से कम उम्र के) वाचा में प्रवेश नहीं कर सकते क्योंकि उन्हें अभी भी विश्वास की अवधारणा की समझ की कमी है। कट्टरपंथी यह नहीं मानते कि भगवान ने उत्तरदायित्व की उम्र तक पहुंचने से पहले बच्चों को अनन्त लानत की निंदा की होगी, जो कई बारह या तेरह वर्ष की आयु के बारे में सोचते हैं। और इनमें से अधिकतर समूह युवाओं को एक छोटी उम्र में अपने बच्चों को समर्पित करते हैं। बच्चे के माता-पिता आमतौर पर यह बताते हुए ऐसा करते हैं कि वे अपने बच्चे को भगवान के डर और अभिव्यक्ति में उठाएंगे। शामिल, किसी के उद्धार अनुभव के हिस्से के रूप में मसीह में किसी के विश्वास के सार्वजनिक पेशे की आवश्यकता होती है। अगर आप अपने मुंह से कबूल करते हैं, "यीशु भगवान है," और अपने दिल में विश्वास करते हैं कि भगवान ने उसे मृतकों से उठाया, तो आप बचाएंगे। क्योंकि यह आपके दिल से है कि आप विश्वास करते हैं और उचित हैं, और यह आपके मुंह से है जिसे आप कबूल करते हैं और सहेजे जाते हैं। (रोमियों 10: 9-10) यह या तो व्यक्ति के बपतिस्मा के साथ या तो किया जाता है। बपतिस्मा, जिसे मसीह द्वारा नियुक्त किया गया था, चर्च में शामिल होने की एक शर्त है। जब कट्टरपंथियों ने यीशु के जवाब को पढ़ा, "बच्चों को मेरे पास आने की अनुमति दें; उन्हें बाधित न करें: क्योंकि भगवान के राज्य में ऐसा लगता है कि "वे इस तरह से कुछ मतलब समझते हैं: बच्चे, जो अपनी शक्ति से हैं और जो समझने में सक्षम हैं, वे समझने में सक्षम हैं, यीशु मसीह में बचत के लिए आते हैं और किसी को भी उन्हें रोकना नहीं चाहिए, क्योंकि भगवान का राज्य उन लोगों से संबंधित है जो प्रदर्शन करते हैं। हालांकि, जब यीशु के उत्तर उन्हें ल्यूक के पाठ से पढ़ा जाता है, तो वे आमतौर पर इससे निपटने के लिए नहीं चाहते हैं क्योंकि पाठ पढ़ता है, "इन्फैंट्टो मेरे पास आने की अनुमति दें; उन्हें बाधा मत बनो: क्योंकि भगवान के राज्य में इनका है, "यह हमें बाकी ईसाई धर्म में लाता है, जो शिशु बपतिस्मा में विश्वास करते हैं। मैं इस समूह को ऐतिहासिक ईसाई धर्म के रूप में संदर्भित करूंगा, जिसका नेतृत्व रोमन कैथोलिक, ग्रीक रूढ़िवादी और लूथरन्स की है। ऐतिहासिक ईसाई धर्म भी एक व्यक्ति के उद्धार अनुभव के समान तीन तत्वों को पहचानता है जो कट्टरपंथी करते हैं: विश्वास, सार्वजनिक पेशे और बपतिस्मा। बपतिस्मा को चर्च में शामिल होने की शर्त के रूप में देखा जाता है और यह व्यक्ति के लिए मोक्ष प्रदान करता है। ऐतिहासिक ईसाई धर्म दो निम्नलिखित शास्त्रों को दर्शाता है। वह जिसने विश्वास किया है और बपतिस्मा लिया गया है उसे बचाया जाएगा। (मरकुस 16:16) इसके अनुरूप, बपतिस्मा अब आपको बचाता है- मांस से गंदगी को हटाने, लेकिन यीशु मसीह के पुनरुत्थान के माध्यम से एक अच्छी विवेक के लिए भगवान को

अपील। (1 पतरस 3:21) शिशु बपतिस्मा के लिए ऐतिहासिक ईसाई धर्म का आधार और वाचा में प्रवेश करने वाला पुराना नियम मोज़ेक वाचा मॉडल है। यह बपतिस्मा को खतना के अनुरूप मानता है। और उसमें आपको मसीह की खतना से मांस के शरीर को हटाने में हाथों के बिना खतना के साथ भी खतना की गई थी; बपतिस्मा में उसके साथ दफनाया गया, जिसमें आप परमेश्वर के काम में विश्वास के माध्यम से भी उसके साथ उठे थे, जिन्होंने उन्हें मृतकों से उठाया। (कुलुस्सियों 2: 11-12) बपतिस्मा लेने वाले शिशुओं सहित बच्चे इस प्रकार मसीह के साथ वाचा में प्रवेश कर चुके हैं, इस प्रकार उन्हें अनन्त विनाश की निंदा करने से रोकते हैं। यहूदी लड़कों को आठवें दिन की सुंता हुई, जिससे मोज़ेक वाचा में प्रवेश किया गया और भगवान के लोगों का हिस्सा बन गया। जो लोग बच्चे के रूप में बपतिस्मा के माध्यम से चर्च में प्रवेश करते हैं, उन्हें कैटचिज्म या पुष्टिकरण वर्ग लेने की आवश्यकता होती है ताकि वे उस विश्वास को समझ सकें जो उन्होंने दर्ज किया है। जब वे उत्तरदायित्व की आयु प्राप्त करते हैं, बारह साल या तेरह वर्ष की आयु के आसपास, वे अपनी पुष्टि पर उनके विश्वास का सार्वजनिक पेशे बनाते हैं। यह एक यहूदी लड़के के अनुरूप होगा जब तक वह बारह वर्ष या तेरह वर्ष की आयु तक नहीं पहुंचा जब वह बार मित्ज़वाह (आज्ञा का पुत्र), विश्वास के अपने सार्वजनिक पेशे बने। वयस्कों, चाहे यहूदी धर्म या ऐतिहासिक ईसाई धर्म में, पर विश्वास करना और उनकी खतना या बपतिस्मा लेने से पहले अपने विश्वास का सार्वजनिक पेशा करना पड़ा। कि शिशुओं का बपतिस्मा प्रारंभिक चर्च का अभ्यास नहीं किया जा सकता है। पवित्रशास्त्र संदर्भ है कि व्यक्तियों और उनके पूरे घरों को बपतिस्मा दिया गया था। ओरिजेन ने तीसरी शताब्दी में लिखा कि "चर्च के उपयोग के मुताबिक, बपतिस्मा भी शिशुओं को दिया जाता है" (लेविटीस पर होलीली, 8: 3: 11 [एडी 244])। 253 में कार्थेज परिषद ने राय की निंदा की कि जन्म के बाद आठवें दिन तक बपतिस्मा को शिशुओं से रोक दिया जाना चाहिए। बाद में, ऑगस्टाइन ने सिखाया, "शिशुओं को बपतिस्मा देने में मां चर्च का रिवाज निश्चित रूप से घृणित नहीं होना चाहिए। .. न ही यह माना जाता है कि यह परंपरा अपोस्टोलिक को छोड़कर कुछ भी है" (उत्पत्ति की शाब्दिक व्याख्या 10:23:39 [ए पवित्रशास्त्र पढ़ना: (मत्ती 1 9: 13-15) (मार्क 10: 13-16) (लूका 18: 15-17) आदेश: शिशुओं को मेरे पास आने की अनुमति दें। उन्हें बाधा न दें। सबक: हम कभी भी वास्तविक कारण नहीं जान सकते हैं कि लोग अपने बच्चों को यीशु के पास लाएंगे या शिष्यों ने उन्हें इसके लिए क्यों दंडित किया। लेकिन हम अपने कार्यों और मौखिक प्रतिक्रिया से बता सकते हैं कि यीशु ने बच्चों को प्यार किया और उन्हें अपने समय और ध्यान देने के लिए पर्याप्त मूल्यवान माना। शायद उसने याद किया कि उसकी मां ने उसे मंदिर में शिमोन के बारे में क्या बताया था। उसने यीशु को अपनी बाहों में एक बच्चे के रूप में कैसे लिया और उसके ऊपर एक आशीर्वाद दिया। "अब भगवान, आप अपने शब्द के अनुसार, शांति में प्रस्थान करने के लिए अपने बंधन-नौकर को जारी कर रहे हैं; मेरी आंखों के लिए आपने अपने उद्धार को देखा है, जिसे आपने सभी लोगों की उपस्थिति में तैयार किया है, अन्यजातियों को रहस्योद्घाटन की रोशनी, और अपने लोगों की महिमा इज़राइल की महिमा। " (लूका 2: 2 9 -32) शास्त्रों से, हम अपने बच्चों को यीशु के लिए लाने के लिए माता-पिता के दृढ़ संकल्प और विश्वास का पालन कर सकते हैं। तो ऐसा लगता है कि हम जो युवा बच्चों के माता-पिता हैं, उन्हें अपने व्यवहार को मॉडल करना चाहिए क्योंकि यीशु ने इसे स्वीकार्य पाया। और चर्च के रूप में, हमें किसी भी बच्चे को उसके साथ रिश्ते में प्रवेश करने से रोकने के लिए यीशु के दृष्टिकोण को लेना चाहिए। समूह चर्चा: "हाथों पर बिछाने" हमेशा किसी ऐसे व्यक्ति को एक आध्यात्मिक निषेध को दर्शाता है जिस पर हाथ रखे जाते हैं। कुछ चीजों का नाम दें जो हाथों पर बिछाने के माध्यम से प्रदान किए जाते हैं। पुजारी, मंत्रियों, बुजुर्गों, डेकॉन्स और अन्य अधिकारियों के आध्यात्मिक गिफ्टशेलिंगबैप्टिज्म 'के पवित्र आत्माओं का आनंद लेना

सबक 43

यरूशलेम के लिए परिचय: यीशु जानता है कि उसका समय छोटा है और आगे के दिनों के लिए शिष्यों को तैयार करना शुरू कर देता है। वे यरूशलेम जा रहे हैं जहां वह पीड़ित होगा, मर जाएगा और मृतकों से उठाए जाएंगे क्योंकि शास्त्रों ने भविष्यवाणी की है। वह अपने शिष्यों को "निहारना" देने का आदेश देता है। शब्द, "देख" का अर्थ है "समझने के साथ देखने के लिए"। दूसरे शब्दों में यीशु उन्हें बता रहा है कि उन्हें उन घटनाओं की पूरी समझ हासिल करनी चाहिए जिनके बारे में वे यरूशलेम में देख सकते हैं। शिष्यों की तरह हम घटनाओं पर एक नज़र डालेंगे क्योंकि उन्होंने इस अवधि के दौरान अपने शिष्यों को अपने शिष्यों को दिए गए विशिष्ट निर्देशों का अध्ययन करने से पहले पार किया था। पवित्रशास्त्र पढ़ना: देखो (मत्ती 20: 17-19) (मार्क 10: 32-34) (लूका 18: 31-34) कमांड: देखो, हम यरूशलेम के पास जा रहे हैं। सबक: इस पाठ में हम यीशु की मृत्यु, दफन और पुनरुत्थान के आसपास और आसपास की घटनाओं के समय और ऐतिहासिक महत्व पर ध्यान केंद्रित करेंगे। पहला मुद्दा जिसे हमें सौदा करने की आवश्यकता है। हम पश्चिमी संस्कृतियों में ग्रेगोरियन कैलेंडर पर अपना समय आधार देते हैं। यह कैलेंडर जूलियन कैलेंडर से 46 ईसा पूर्व में जूलियस सीज़र द्वारा विकसित किया गया था और 1582 ईस्वी में पोप ग्रेगरी XIII द्वारा संशोधित किया गया था। ग्रेगोरियन कैलेंडर एक सौर कैलेंडर है, जो सूर्य के चारों ओर पृथ्वी के आंदोलन पर अपनी गणनाओं को आधारित करता है, जो हर 365 दिनों के बारे में एक पूर्ण चक्र बनाता है। कैलेंडर में बारह महीने होते हैं: 31 दिनों के 7, 4 में से 4 और 28 दिनों में से 1। प्रत्येक चौथे वर्ष और हर 100 वें वर्ष में इसे सटीक रखने के लिए एक अतिरिक्त दिन जोड़ा जाता है। ग्रेगोरियन कैलेंडर में तारीखों का पुनरावर्ती चक्र नहीं है। हिब्रू या यहूदी कैलेंडर एक चंद्र कैलेंडर है। यह पृथ्वी के चारों ओर चंद्रमा के आंदोलन पर आधारित है, जो हर 29-1 / 2 दिनों के बारे में एक पूर्ण चक्र बनाता है। इस कैलेंडर में बारह महीने भी शामिल हैं, लेकिन प्रत्येक महीने की शुरुआत एक नए चंद्रमा के दृश्य अवलोकन द्वारा निर्धारित की जाती है। सौर वर्ष के साथ सटीकता को बनाए रखने के लिए, एक अतिरिक्त (13 वां) महीने को उन्नीस वर्ष की अवधि के भीतर सात गुना जोड़ा जाता है। यह अतिरिक्त महीना बारहवें महीने, एडर का अनुसरण करता है और उन्हें एडी एडर या "सेकेंड" एडर कहा जाता है। हिब्रू या यहूदी कैलेंडर में हर उन्नीस वर्षों की तारीखों का एक आवर्ती चक्र है। 1 जनवरी 1 ग्रेगोरियन कैलेंडर पर नए साल का दिन है लेकिन हिब्रू वर्ष में दो नए साल के दिन शामिल हैं। निर्गमन 12: 2 में, ईश्वर ने ठहराया कि इस्राएलियों के लिए वर्ष का पहला महीना अबिब होगा। एबीआईबी नाम का अर्थ "हरा कान" है और इसका उपयोग साल के समय को इंगित करने के लिए किया जाता था जब अनाज का मकई पहली बार गेहूं और जौ के सिर में दिखाई देता है। यह एबीआईबी के नए चंद्रमा से है कि लॉर्ड के सभी उत्सव ("यीशु मसीह के नियुक्त समय") लेविट्यूस 23 में भगवान द्वारा नियुक्त किए गए हैं, निर्धारित हैं। यहूदी लोग वर्तमान में इस महीने निसान कहते हैं और यह हमारे मार्च / अप्रैल टाइम फ्रेम से मेल खाता है। यहूदी लोगों के पास सिविल कैलेंडर भी है, जो एथेनिम के नए चंद्रमा, एडम की जन्म तिथि से शुरू होता है। हम इस तारीख को रोश हाशनाह के रूप में जानते हैं जिसका अर्थ है "साल का मुखिया"। वे राजाओं, प्रसव और अनुबंधों के लिए वर्ष की शुरुआत को चिह्नित करने के लिए इस नए साल की तारीख का उपयोग करते हैं। इथेनिम नाम का अर्थ है "स्थायी" और ईश्वर का सातवें महीने साल का वर्षा है। यहूदी लोग वर्तमान में इस महीने तिशरी कहते हैं और यह हमारे सितंबर / अक्टूबर के समय के फ्रेम से मेल खाता है। पश्चिमी संस्कृतियों में हमारा दिन 12:00 बजे या आधी रात तक शुरू होता है। हिब्रू या यहूदी संस्कृति में दिन शाम को तीन सितारों की उपस्थिति (लगभग 6:00 बजे) की उपस्थिति से शुरू होता है, जो हमारे मुकाबले छह घंटे पहले होता है। ग्रेगोरियन कैलेंडर पर सप्ताह के दिनों में विभिन्न देवताओं के नाम पर रखा गया है। इब्रानियों ने बस अपने दिनों की संख्या दी ... 1, दूसरा, तीसरा, आदि। सप्ताह का 7 वां दिन सब्त

("आराम") है; यह शुक्रवार की रात लगभग 6:00 बजे शुरू होता है और शनिवार की रात लगभग 6:00 बजे समाप्त होता है। साप्ताहिक सब्त के अलावा ("बाकी") भगवान के सात उत्सवों ("यीशु मसीह के नियुक्त समय") में स्थित सात अन्य वार्षिक सब्त ("आराम") दिन हैं। 1. अखमीरी रोटी का पहला दिन - फसह (ABIB15) 2। अखमीरी रोटी का सातवें दिन (2 21) 3। सात सेवन (सप्ताह) का पर्व - पेंटेकोस्ट (50 वां दिन) 4। उड़ाने का दिन - रोश हशनाह (एथानिम 1) 5। प्रायश्चिता का दिन - योम किप्पुर (इथेनिम 10) 6। Tabernacles का पहला दिन (इथेनिम 15) 7। आठवीं दिन (एथेनिम 22) घटनाओं की समयरेखा: घटनाओं की निम्नलिखित समयरेखा 1) बाइबिल की कालक्रम, 2) यहूदी कैलेंडर अपने उन्नीस वर्ष के पुनरावर्ती चक्रों के साथ, 3) खगोलीय विचार, और 4) एक विस्तृत टाइमलाइन प्रत्येक कार्यक्रम की हिब्रू तिथियों पर आधारित है, लेकिन मैंने घटनाओं को समझने में मदद करने के लिए सप्ताह के ग्रेगोरियन दिवस को शामिल किया है। राजा आ रहा है "और जब आपके दिन पूरा हो जाए तो यह आ जाएगा कि आपको अपने पूर्वजों के साथ रहना चाहिए, कि मैं आपके बाद आपके एक वंशजों को स्थापित करूंगा, जो आपके बेटों का होगा; और मैं उसका राज्य स्थापित करूंगा। वह मेरे लिए एक घर का निर्माण करेगा, और मैं अपने सिंहासन को हमेशा के लिए स्थापित करूंगा। मैं उसका पिता बनूंगा, और वह मेरा पुत्र होगा; और मैं अपनी प्रेमपूर्ण दयालुता को उससे दूर नहीं ले जाऊंगा, जैसा कि मैंने इसे उससे लिया था जो आपके सामने था। लेकिन मैं उसे अपने घर में और अपने राज्य में हमेशा के लिए बस दूंगा, और उसका सिंहासन हमेशा के लिए स्थापित किया जाएगा। "1 इतिहास 17: 11-14 31 ईस्वी, 17 अप्रैल, गुरुवार, अबीब 8 दिन (सप्ताह का 5 वां दिन) यीशु अपने शिष्यों को बताता है कि वे जेर के लिए जा रहे हैं गुरुवार, अबीब 9 नाइटटाइम (सप्ताह का 6 वां दिन) यीशु रात को जेक्यूस के घर में खर्च करता है। शुक्रवार, अबीब 9 दिन का समय (सप्ताह का 6 वां दिन) JESJESUS ने जेरिको में जेकचियस के घर को छोड़ दिया। जेसुस जेरिको से बाहर अपने रास्ते पर अंधेरे बार्टीमेमियस को ठीक करता है। जेसस लगभग 20 मील से चलता है शुक्रवार, अबीब 10 नाइटटाइम (सप्ताह का 7 वां दिन) साप्ताहिक सब्त का दिन (आराम) शुरू होता है। रोगी के साथ यीशु के पैर यीशु के पैर। जेसस लाजर के घर में रात बिताता है। शनिवार, अबीब 10 दिन का समय (सप्ताह का 7 वां दिन) शब्बत हागाडोलजेसस बेथानी छोड़ देता है, जो यरूशलेम से लगभग 2 मील दूर है। बेथफेज (अंजीर का घर) यीशु एक गधे को घुमा देता है और यरूशलेम में बाकी रास्ते की सवारी करता है। जेरूसलम में विजयी प्रविष्टि। प्रत्येक परिवार एक फसह लैम्ब हथेली शाखाओं का चयन करता है .ोसनास। स्टोन्स रोइंग आउट। जेसुस पूरे दिन यरूशलेम में खर्च करता है। भगवान के स्पॉटलेस लैम्ब वे बिना दोष के होंगे - संख्या 28:31 शनिवार, अबीब 11 नाइटटाइम (सप्ताह का पहला दिन) यीशु रात के लिए बेथानी लौट आया। रविवार, एबीआईबी 11 दिन का समय (सप्ताह का पहला दिन) यीशु दूसरी बार यरूशलेम लौटता है और अंजीर के पेड़ को शाप देता है। वह दूसरी बार मंदिर से मनीचेंजर्स को बाहर निकालता है। रविवार, अबीब 12 नाइटटाइम (सप्ताह का दूसरा दिन) यीशु ने बेथानी में रात को बिताया। सोमवार, अबीब 12 दिन का समय (सप्ताह का दूसरा दिन) यीशु तीसरी बार यरूशलेम लौटता है। अंजीर का पेड़ सूख गया है सोमवार, एबीआईबी 13 रात का दिन (सप्ताह का तीसरा दिन) jejesus बेथानी लौट आया और शिमोन, कुपर के घर में रात को खर्च करता है। एक महिला इत्र के साथ यीशु के सिर को अभिषेक करती है और यहूदास क्रोधित हो जाते हैं। मंगलवार, अबीब 13 दिन का दिन (सप्ताह का तीसरा दिन) यहूदियों ने यहूदी नेताओं के साथ संघर्ष किया और सिल्वर के तीस टुकड़ों का भुगतान किया जाता है। जेसस अपने शिष्यों के साथ दिन बिताता है लेकिन यरूशलेम में वापस नहीं आता है। हमारे पासओवर मेमने के बाद मूसा ने इस्राएल के सभी बुजुर्गों को बुलाया, और उनसे कहा, "जाओ और अपने परिवारों के अनुसार अपने भेड़ के बच्चे को ले जाओ, और फसह मेम्ने को मार डालो। और तुम hyssop का एक गुच्छा लोगे और उस रक्त में डुबकी लगाओ - निर्गमन 12: 21-22 मंगलवार, एबीआईबी 14 नाइटटाइम

(सप्ताह का चौथा दिन) - भगवान के पासओवर लॉर्ड के फसह को अखमीरी रोटी के पर्व की तैयारी के दिन भी जाना जाता है, जो अगले शाम को शुरू होता है। 14 वें (6 की शुरुआत में (6) Gethsemane.judas के बगीचे में jesus.jesus ने annas से पहले कोशिश की। पीटर मसीह के अपने इनकार शुरू करता है। मुर्गा पहली बार कौवे करता है। यीशु को Caiafas से पहले करने की कोशिश की जाती है। पीटर तीसरी बार भगवान से इनकार करता है। मुर्गा दूसरी बार कौवा करता है। यीशु को Sanhedrin से पहले की कोशिश की जाती है। बुधवार, एबीआईबी 14 दिन का समय (सप्ताह का 4 वां दिन) जुदास खुद को लटका देता है। जेसुस को पिलात से पहले कोशिश की जाती है। जेसस हेरोद एंटीपास से पहले की कोशिश की जाती है। वाक्य jesus.jesus को 9:00 बजे क्रूस पर चढ़ाया गया है। वह जीवित है "इस्राएल के पुत्रों से बात करो, और उनसे कहो, 'जब आप उस भूमि में प्रवेश करते हैं जो मैं आपको देने जा रहा हूं और अपनी फसल काटूंगा, तो आप अपनी फसल के पहले फल पुजारी को पुजारी में लाएंगे। और वह लहर करेगा शुक्रवार, एबीआईबी 17 रात (सप्ताह का 7 वां दिन) साप्ताहिक सब्त शुरू होता है। जेसुस अपनी तीसरी रात कब्र में बिताता है। शनिवार, अबीब 17 दिन का समय (सप्ताह का 7 वां दिन) साप्ताहिक सब्त का दिन। जेसस अपने तीसरे दिन कब्र में बिताता है। शनिवार, एबीआईबी 18 नाइटटाइम (सप्ताह का पहला दिन) सप्ताह का पहला दिन शुरू होता है। पहले फलों का पर्व शुरू होता है। पुजारी खेतों से कटाई वाले अनाज के पहले शेवों को काटता है और भगवान के सामने इसकी लहर की पेशकश करता है। रात को पूरा करना एक भूकंप रात के दौरान होता है, जब परी यीशु के मकबरे से पत्थर को दूर करता है। यीशु मरे हुओं में से उगता है। रविवार, एबीआईबी 18 दिन का समय (सप्ताह का पहला दिन) महिलाएं सब्त के बाद खरीदी गई मसालों के साथ यीशु के शरीर को अभिषेक करने के लिए कब्र पर पहुंचती हैं लेकिन वह वहां नहीं है ... मकबरा खाली है। पीटर और जॉन खाली मकबरे में जाते हैं। मासी मुठभेड़ यह पहले फलों की पेशकश है। इस समय तक इस्राएल में किसी भी व्यक्ति को अनाज से बना कुछ भी खाने की अनुमति नहीं है। अखमीरी रोटी की पेशकश की पेशकश। वह दोपहर यीशु अपने दो शिष्यों के साथ सड़क पर एम्मास के लिए चलता है। उनमें से एक यूसुफ के भाई यीशु के अंकल क्लोपस है। न तो शिष्य यीशु को तब तक मान्यता देते हैं जब तक कि वह उनके साथ रोटी को तोड़ नहीं देता। ईसाई धर्म के महान रहस्यों में से एक में तीन का रहस्य ट्रिनिटी की अवधारणा है। दूसरे शब्दों में, भगवान जो एक है, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में भी अलग हो सकता है। फिर भी इस रहस्य का अनावरण पहले फल के दावत में किया गया है और यीशु ने इसे पूरी तरह से प्रदर्शित किया है। पहले फलों के पर्व के दौरान, पुजारियों ने भगवान को तीन अलग-अलग लहर की पेशकश की: पहले फल के शुरुआती शाम के समय के दौरान, संहेडरिम एक पूर्व-चयनित जौ क्षेत्र में चले गए और उस क्षेत्र के तीन पूर्व-चयनित क्षेत्रों के भीतर जौ की शेव काट दिए। तब उन्होंने जौ की शेव वापस मंदिर में ले लिया जहां पुजारियों ने उन्हें भगवान के लिए एक लहर की पेशकश की। इसके बाद, जौ शेव्स के प्रमुखों को अनाज को हटाने के लिए डिब्बे के साथ पीटा गया, जिसे फिर आग और जमीन के साथ भुना हुआ था। उस आटा से जो उत्पादित किया गया था, एक ओमर को एक कंटेनर में भगवान की पेशकश के रूप में अलग कर दिया गया था। पहले फलों की सुबह की सेवा में, पुजारी ने अपने कंटेनर में आटे के भगवान को लहर की पेशकश की। कोई भी इजरायल ओमर की लहर की पेशकश पूरी होने से पहले अनाज से बने किसी भी भोजन का हिस्सा नहीं ले सकता था। उस दिन बाद में, पुजारी आटे से बने अखमीरी रोटी की लहर की पेशकश करेंगे। की लहर की पेशकश से: 1) शेव्स, 2) आटा, और 3) अखमीरी रोटी हम देखते हैं कि ट्रिनिटी की अवधारणा को चित्रित किया जा सकता है। वे सभी एक पदार्थ (जौ) के थे लेकिन विभिन्न रूपों में दिखाई देते हैं। यीशु मसीह, पहला फल भी तीन अलग-अलग रूपों में दिखाई दिया। 1) मरने से पहले (कटौती की गई थी) यीशु के पास एक उपस्थिति थी (शेफ)। 2) मृतकों से उठाए जाने के बाद उनके पास एक और उपस्थिति थी। मैरी

मैग्डालेन जो उसे जानता था उसे अच्छी तरह से बगीचे के मकबरे में नहीं पहचाना, सोच रहा था कि वह माली थी। जब तक उसने उसके साथ बात नहीं की, तब तक उसने उसे नहीं पहचाना। वह उसे आटा के उमर की पेशकश के रूप में दिखाई दिया था। यह इस तथ्य से प्रमाणित है कि यीशु ने उसे उनसे चिपकने के लिए नहीं बताया था, क्योंकि वह अभी तक पिता के पास नहीं जा चुके थे (महिलाएं दिन में जल्दी मकबरे में आई थीं और आटा के उमर की लहर की पेशकश अभी तक मंदिर में नहीं हुई थी)। जब तक ओमर की पेशकश नहीं की गई तब तक किसी को अनाज से बने किसी भी चीज़ का हिस्सा लेने की अनुमति नहीं थी। 3) यीशु अलग-अलग दिखाई दिया, इस बार अखमीरी रोटी की पेशकश के रूप में, एम्मास के लिए सड़क पर दोनों शिष्यों को। उन शिष्यों में से एक भी यीशु के चाचा क्लोप्स था, जिन्होंने उन्हें तब तक नहीं पहचाना था जब तक कि वह उनके साथ रोटी तोड़ नहीं लेता।

पाठ 44

विश्वास का मामला परिचय: यरूशलेम में प्रवेश करने के लिए यरूशलेम में प्रवेश करने के लिए यीशु ने अपने क्रूस पर चढ़ाई के दो दिन पहले लाजर, मैरी और मार्था का घर छोड़ दिया था, जहां वह दिन शिक्षण बिताएगा। वैसे, शिष्यों ने देखा कि यीशु ने पिछले दिन शापित अंजीर का पेड़ जड़ों से सूख गया था। वे आश्चर्यचकित थे और यीशु से पूछा कि यह इतनी जल्दी क्यों सूख गया था। उसने जवाब दिया, "भगवान में विश्वास है।" पवित्रशास्त्र पढ़ना: (मत्ती 21-20-22) (मार्क 11: 20-26) समूह चर्चा: विश्वास कहां से आता है? यह भगवान से एक उपहार है। आपको विश्वास कैसे मिलता है? भगवान के वचन को सुनकर। आदेश: भगवान में विश्वास रखें। आप उन्हें प्राप्त कर चुके हैं। Forgive, अगर आपके पास किसी के खिलाफ कुछ भी है। सबक: इस संक्षिप्त शिक्षण सत्र में यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि उन्हें विश्वास में विश्वास और तीन स्थितियों को पुरस्कृत किया जाना चाहिए। यह दिलचस्प है कि यीशु ने इस सबक को बयान के साथ शुरू किया, "भगवान में विश्वास है"। जैसे ही उनके शिष्यों में से अधिकांश कहेंगे, "निश्चित रूप से, किसके बारे में या हम किस पर विश्वास करेंगे?" हालांकि, हमारे चर्चों और दुनिया में बड़े भगवान के भीतर बहुत प्रतिस्पर्धा है। सच्चा बाइबिल विश्वास उन चीजों की आश्वासन है, जो चीजों को नहीं देखा गया है। यह भगवान और उसके वचन की प्रतिक्रिया है, क्योंकि विश्वास भगवान के वचन से सुनने और सुनने से आता है। यह दिल में उठता है, क्योंकि दिल के साथ एक व्यक्ति का मानना है। एक बार भगवान के वचन को सुना जाता है और माना जाता है कि इसे बोली जाने की जरूरत है, जिसके लिए वह कबूल करता है। और अंत में भगवान के वचन पर कार्य किया जाना चाहिए क्योंकि बिना काम किए विश्वास मर चुका है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि एक व्यक्ति के पास सच्चे बाइबिल के विश्वास होते हैं जब वह भगवान के वचन को सुनता है, उसके दिल में आश्वासन देता है कि यह भगवान का वचन है, इसे स्वीकार करता है और इस पर कार्य करता है। इस पर कार्य करता है .blical विश्वास हमेशा इसके स्रोत, भगवान और उसके शब्द के रूप में होता है। यह इस पैटर्न का पालन करता है: भगवान के वचन पर विश्वास करना। भगवान के वचन का उल्लेख। भगवान के वचन पर कार्य करना। फाउथ पूरा नहीं होता है जब तक कि सभी तीन भाग नहीं होते! इस पैटर्न को पूरे पवित्रशास्त्र में प्रदर्शित किया गया है और इसका एक उदाहरण अब्राहम के जीवन में देखा जा सकता है .ब्राहम ने भगवान के वचन को सुना और विश्वास किया। (भूमि पर जाएं, जो मैं आपको दिखाऊंगा।) इब्राहीम ने भगवान के वचन की बात की। (उसने अपने परिवार से कहा क्योंकि वे उसके साथ चले गए।) इब्राहीम ने ऐसा किया जो उसे भगवान द्वारा करने के लिए कहा गया था। (अब्राहम शारीरिक रूप से चले गए।) आज, हम चर्च के भीतर तीन प्राथमिक क्षेत्रों में सच्चे बाइबिल विश्वास को चुनौती दी। इस विचार के साथ पहला सौदा कि विश्वास मानसिक सहमति या समझौता है। इस मामले में एक धारणा है लेकिन यह कोई काम नहीं करता है। सुनो, जेम्स के भाई हमारे प्रभु यीशु के भाई को क्या कहना था। मेरे भाइयों, अगर कोई कहता है कि उसे विश्वास है लेकिन उसके पास कोई काम नहीं है? क्या वह विश्वास उसे बचा सकता है? यदि कोई भाई या बहन कपड़ों के बिना और दैनिक भोजन की आवश्यकता होती है, और आप में से एक उनसे कहता है, "शांति में जाओ, गर्म हो जाओ और भरें," और फिर भी आप उन्हें नहीं देते हैं कि उनके शरीर के लिए क्या आवश्यक है, इसका उपयोग क्या है? यहां तक कि आस्था, अगर इसका कोई काम नहीं है, तो वह मर चुका है, खुद से। लेकिन कोई भी कह सकता है, "आपके पास विश्वास है और मेरे पास काम करता है; मुझे कामों के बिना अपना विश्वास दिखाएं, और मैं आपको अपने कामों से अपना विश्वास दिखाऊंगा। " आप मानते हैं कि भगवान एक है। आप अच्छा करते हैं; राक्षस भी विश्वास करते हैं, और कंपकंपी। लेकिन क्या आप पहचानने के इच्छुक हैं, आप मूर्खतापूर्ण साथी, काम के बिना विश्वास बेकार है? (जेम्स 2: 14-20) यीशु ने इस मुद्दे को भी संबोधित किया जब उसने कहा, "हर कोई जो मुझसे कहता है, 'हे प्रभु,

भगवान, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेगा, लेकिन वह जो मेरे पिता की इच्छा है जो स्वर्ग में है, वह प्रवेश करेगा।" (मत्ती 7:21) दूसरी चुनौती इस विचार से संबंधित है कि विश्वास कारण है। इस मामले में विश्वास यह है कि चूंकि भगवान ने हमें इसका कारण दिया है कि हमें उस पर भरोसा करना चाहिए। हालांकि कारणों के कई तरीके हैं और वे सभी व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य के आधार पर हैं। उदाहरण के लिए कारण कुछ ही नाम के लिए अवलोकन डेटा, ऐतिहासिक संदर्भ, या लोकप्रिय राय पर आधारित हो सकता है। जब कारण नियोजित होता है तो उसका स्रोत व्यक्ति के दिमाग से दिल नहीं आता है, इसलिए यह बाइबिल विश्वास नहीं है। तीसरी चुनौती स्वीकारोक्ति के विचार से संबंधित है या दूसरे शब्दों में "आप जो भी कहते हैं वह हो सकता है।" यह अवधारणा मुख्य रूप से विश्वास आंदोलन के वचन से प्रचारित की जा रही है, जिसकी शुरुआत संयुक्त राज्य अमेरिका में थी। यहां की पतन इस तथ्य में निहित है कि "शब्द" का स्रोत स्वयं व्यक्ति है और उसकी भावना, आत्मा, मन, इच्छा, भावनाओं या मांस की इच्छाओं से उत्पन्न हो सकता है। इसकी जड़ पर यह विचार है कि व्यक्ति स्वयं भगवान है, इसलिए भगवान की तरह वह विश्वास से जो कुछ भी बोलता है उसे बना सकता है। इस योजना में व्यक्ति का विश्वास भगवान या उसके वचन में नहीं है बल्कि व्यक्ति की अपनी क्षमता में विश्वास से जो कुछ भी बोलता है वह है। विश्वास आंदोलन के शब्द के चार प्राथमिक किरायेदार हैं: चरण संख्या एक "इसे कहो।" "सकारात्मक या नकारात्मक, यह व्यक्ति पर निर्भर है। व्यक्ति क्या कहता है, उसके अनुसार, वह प्राप्त करेगा।" चरण संख्या दो "ऐसा करें।" "आपकी कार्रवाई आपको पराजित करती है या आपको खत्म कर देती है। आपकी कार्रवाई के अनुसार, आप प्राप्त करते हैं या आपको प्राप्त करने से रोकते हैं।" चरण संख्या तीन "इसे प्राप्त करें" है। हम "स्वर्ग के पावरहाउस" में प्लग करना चाहते हैं। "विश्वास प्लग है, भगवान की स्तुति करो! बस प्लग इन करें।" चरण संख्या चार "इसे बताएं ताकि अन्य विश्वास कर सकें।" इस अंतिम चरण को विश्वास आंदोलन के आउटरीच कार्यक्रम का शब्द माना जा सकता है। हालांकि ये चार किरायेदार अन्य बाइबिल के विश्वास सिद्धांतों का उपयोग करते हैं, लेकिन व्यक्ति की धारणा का स्रोत अनिवार्य रूप से भगवान का वचन नहीं है। और सच्चा विश्वास भगवान के वचन से सुनकर और सुनकर नहीं आ सकता है। इसलिए, जो लोग चाहते हैं उन्हें प्राप्त करने के लिए ये लोग क्या उपयोग कर रहे हैं, उन्हें विश्वास नहीं कहा जा सकता है। ईश्वर का एकमात्र पुत्र यीशु ने कहा, "वास्तव में, वास्तव में, मैं तुमसे कहता हूं, बेटा खुद के बारे में कुछ भी नहीं कर सकता, जब तक कि वह कुछ ऐसा नहीं है जो वह पिता को देखता है; जो भी पिता करता है, उसके लिए ये चीजें भी इसी तरह से करती हैं। " (यूहन्ना 5:19) अपने शिक्षण के दूसरे भाग में यीशु ने कहा, "वास्तव में मैं तुमसे कहता हूं, जो भी इस पहाड़ से कहता है, 'उठाया और समुद्र में डाला,' और उसके दिल में संदेह नहीं करता है, लेकिन यह मानता है कि वह जो कहता है वह उसे दिया जाएगा, यह उन्हें दिया जाएगा इसलिए मैं आपसे कहता हूं, जिन चीजों के लिए आप प्रार्थना करते हैं और पूछते हैं, विश्वास करते हैं कि आपने उन्हें प्राप्त किया है, और उन्हें आपको दिया जाएगा। " कई ईसाईयों के लिए यह कथन एक समस्या प्रस्तुत करता है और यह उत्पन्न होता है क्योंकि उनके पास इसकी उचित समझ नहीं है। यीशु ने वाक्यांश का इस्तेमाल किया, शिष्य के विश्वास को पुरस्कृत करने के लिए शर्तों में से एक के रूप में अपने दिल में संदेह नहीं करता है। यह मानते हुए कि आप जो कहते हैं वह पास आएगा, हमेशा संदेह के अधीन होगा यदि आपके पास आश्वासन नहीं है। यदि आप अपने आप पर भरोसा कर रहे हैं कि आप क्या कहते हैं कि आप कभी आश्वासन नहीं ले सकते हैं। वह आश्वासन केवल भगवान और उसके वचन से ही आ सकता है। चूंकि विश्वास भगवान के वचन से सुनने और सुनने से आता है, तो अगर भगवान आपको पहाड़ को स्थानांतरित करने के लिए नहीं बताता है, तो आप अपने दिल में संदेह करेंगे और पहाड़ को स्थानांतरित नहीं किया जाएगा। यीशु ने इसलिए शब्द के साथ अपना अगला बयान शुरू किया। शब्द इसलिए "उस कारण के लिए" का अर्थ है। दूसरे शब्दों में यीशु कह रहा था, "मैंने जो कुछ आपको बताया,

उसे देखते हुए, उसके दिल में संदेह नहीं होता है, तो विश्वास है कि आपने उन्हें प्राप्त किया है, और उन्हें आपको दिया जाएगा।" इसका कारण यह है कि यदि आपके पास किसी चीज़ पर भगवान का जवाब है कि आप प्रार्थना कर रहे हैं या उससे पूछ रहे हैं, तो आप विश्वास कर सकते हैं कि आपको अपना अनुरोध प्राप्त हुआ है क्योंकि विश्वास भगवान के वचन से सुनवाई और सुनवाई से आता है, यह विश्वासियों पर निर्भर करता है कि भगवान के वचन को सुनने के लिए यह विश्वास करने वालों पर विश्वास करने के लिए है। भगवान का वचन विश्वासियों द्वारा तीन अलग-अलग तरीकों से सुना जाता है: भगवान का लिखित शब्द - शास्त्रों का लिखितता - गवाही, प्रचार, शिक्षण, भाषाएं और भविष्यवाणी। अभी भी छोटी आवाज़ - आपकी आत्मा में सुनवाई। जब एक आस्तिक भगवान का एक शब्द नहीं मिल सकता है जो उसकी अनूठी स्थिति पर लागू होता है तो उसे प्रार्थना करने से पहले ज्ञान के लिए भगवान से पूछना चाहिए। जेम्स कहते हैं, "लेकिन अगर आपके किसी भी ज्ञान की कमी है, तो उसे भगवान से पूछने दो, जो सभी उदारतापूर्वक और अपमान के बिना देता है, और यह उन्हें दिया जाएगा। लेकिन उन्हें बिना किसी संदेह के विश्वास में पूछना चाहिए, जिसके लिए संदेह समुद्र के सर्फ की तरह है, हवा से प्रेरित और फेंक दिया गया है। उस आदमी के लिए यह उम्मीद नहीं करना चाहिए कि वह भगवान से कुछ भी प्राप्त करेगा, एक दो दिमाग वाला व्यक्ति है, जो उसके सभी तरीकों से अस्थिर है। " (याकूब 1: 5-8) अंतिम स्थिति दूसरों की क्षमा थी। अगर किसी भी शिष्य को उनके विश्वास को पुरस्कृत करने की उम्मीद है तो उसे दूसरों को माफ करना पड़ा। पापों की क्षमा सुसमाचार के केंद्र में खड़ी होगी, जो आने वाला था: मसीह पापियों के लिए मर गया और वह अपने शिष्यों के माध्यम से मनुष्य को समीर कर रहा है। यीशु चाहता था कि शिष्यों को क्षमा के महत्व की दृढ़ समझ हो ताकि उसने घोषणा की, "जब भी आप प्रार्थना करते हैं, क्षमा करें, अगर आपके पास किसी के खिलाफ कुछ भी है, ताकि आपके पिता स्वर्ग में हों, तो आपको अपने अपराधों को भी माफ कर दिया जाएगा। लेकिन अगर आप क्षमा नहीं करते हैं, तो न ही आपके पिता जो स्वर्ग में हैं, अपने अपराधों को क्षमा करेंगे। " चूंकि यह ईसाईयों के रूप में भगवान का वचन है, इसलिए हमें विश्वास करना चाहिए, इसे स्वीकार करें और उस पर कार्य करें। दूसरों को क्षमा न करने का परिणाम गंभीर है। पाठ का मुद्दा: विश्वास से रहना आवश्यकताएं हैं आवेदन: इन सिद्धांतों का उपयोग करके अपनी प्रार्थना जीवन का अभ्यास करें।

पाठ 45

मूसा की कुर्सी आइसब्रेकर: आपके चर्च में आप पर अधिकार में कौन है? _____ क्या आपके पास अपने चर्च में अधिकार है? _____ परिचय: यीशु ने सूखे अंजीर के पेड़ को छोड़ दिया जहां उसने शिष्यों को विश्वास के बारे में सिखाया और यरूशलेम शहर में प्रवेश किया। वहां से वह मंदिर में आगे बढ़ता है जहां उन्होंने अधिकार के विषय पर पढ़ाना शुरू किया। उसने कहकर शुरुआत की; "शास्त्री और फरीसियों ने मूसा की कुर्सी में खुद को बैठाया है।" जब यीशु ने मूसा की कुर्सी के बारे में बात की, तो शायद वह सचमुच और प्रतीकात्मक दोनों का जिक्र कर रहा था। कुर्सी खुद एक उठाए गए मंच पर एक पत्थर की सीट थी। यह सारांश के सामने सारांश के सामने रखा गया था जिसमें टोरा स्क्रॉल होता है, मंडली का सामना करना पड़ रहा था। आम तौर पर सबसे प्रमुख बुजुर्ग या नेता उस पर बैठेंगे जबकि उन्होंने कानून और भविष्यवक्ताओं पर विस्तार किया था। निस्संदेह यही वह वही है जो यीशु ने शास्त्री और फरीसियों के बारे में जिक्र कर रहे थे जब उन्होंने कहा, "वे भोज और मुख्य सीटों पर सभास्थलों में मुख्य सीटों और बाजार के स्थानों में सम्मानजनक बधाई, और पुरुषों द्वारा रब्बी कहा जाता है। प्रतीकात्मक रूप से, मूसा की कुर्सी ने फैसले की जगह का प्रतिनिधित्व किया। कानून के संबंध में लोगों के लिए कानूनी रूप से बाध्यकारी निर्णय किए गए थे। यह अवधारणा निर्गमन 18: 13-16 से ली गई थी। यह अगले दिन आया कि मूसा लोगों का न्याय करने के लिए बैठे, और लोग सुबह से शाम तक मूसा के बारे में खड़े थे। अब जब मूसा के ससुर ने देखा कि वह लोगों के लिए कर रहे थे, तो उन्होंने कहा, "यह बात क्या है कि आप लोगों के लिए क्या कर रहे हैं? आप अकेले न्यायाधीश के रूप में क्यों बैठते हैं और सभी लोग आपके बारे में सुबह तक सुबह तक खड़े होते हैं? " मूसा ने अपने ससुर से कहा, "क्योंकि लोग भगवान से पूछताछ करने के लिए मेरे पास आते हैं। "जब उनके पास विवाद होता है, तो यह मेरे पास आता है, और मैं एक आदमी और उसके पड़ोसी के बीच न्याय करता हूं और भगवान और उसके कानूनों के नियमों को जानता हूं।" मिशना (मौखिक परंपरा) के अनुसार, यह अधिकार मूसा से, यहोशू से, न्यायाधीशों के लिए, भविष्यद्वक्ताओं और अंत में सैनहेड्रिन के लिए पारित किया गया। दिलचस्प बात यह है कि कैथोलिक चर्च ने 4 वीं शताब्दी में कुछ समय में "कुर्सी" या "कैथेड्रा" के विचार को विकसित करना शुरू किया। इसे पीटर की अध्यक्ष कहा जाता था। कैथोलिक परंपरा के अनुसार, पीटर को भगवान के राज्य को चाबियाँ दी गई थी इसलिए उन्हें चर्च के संबंध में बाध्य या ढीला करने का अधिकार था (कानूनी रूप से बाध्यकारी निर्णयों को पारित करना)। आखिरकार, रोम के हर बिशप ने पीटर की कुर्सी के अधिकार का दावा किया और बाद में वह पोप (पिताजी या पिता) के शीर्षक से ज्ञात हो गया। रोम में सेंट जॉन लेटरन पहली बेसिलिका बनाया गया था। बाद में एक कुर्सी को इसे पहला कैथेड्रल बना दिया गया। एक कैथेड्रल बस एक कुर्सी के साथ एक चर्च है। पोप ने मूसा से एक सुराग लेने के लिए दूसरों को कानूनी रूप से बाध्यकारी निर्णय लेने में मदद करने के लिए नियुक्त किया। अब, हर बिशप में एक बिशप है और उसके बदले में एक कुर्सी है, जो एक चर्च की इमारत में रखे जाने पर इसे कैथेड्रल बनाता है। पवित्रशास्त्र पढ़ना: (मत्ती 23: 1-12) (मार्क 12: 38-40) (लूका 20: 45-47) आदेश: इसलिए वे जो भी वे आपको बताते हैं, करते हैं और निरीक्षण करते हैं, लेकिन उनके कर्मों के अनुसार नहीं करते हैं। रब्बी नहीं कहा जाता है। अपने पिता को पृथ्वी पर किसी को भी मत बुलाओ। नेताओं को नहीं कहा जाता है। सबक: जब यीशु ने अपनी शिक्षा शुरू की, तो उसने कहा, "शास्त्री और फरीसी ने मूसा की कुर्सी में खुद को बैठाया है।" इसके द्वारा वह कह रहा था कि उन्होंने खुद को इस उच्च स्थिति में नियुक्त किया, उन्हें भगवान द्वारा उन्हें नहीं दिया गया था। मूसा से मूसा के कुर्सी के लिए उत्तराधिकार की लाइन में सभी व्यक्ति, आखिरी पैगंबर के माध्यम से, मलाची के साथ भगवान के साथ व्यक्तिगत संबंध था और उनका

अधिकार उनसे लिया गया था क्योंकि उन्होंने अपनी आवाज़ सुनाई और पालन किया। उस समय से पुरुषों को उनके ज्ञान और कानून की समझ के आधार पर अन्य पुरुषों द्वारा नियुक्त किया गया था। ईश्वर हमेशा अपने लोगों के साथ व्यक्तिगत संबंध चाहता था, जहां उन्होंने अपनी आवाज सुनी और उसके साथ सहसंबंधी। तब यह कभी भी स्पष्ट नहीं था जब भगवान ने मिस्रियों को इस्राएलियों को बंधन से बाहर कर दिया था। मूसा ने इस्राएलियों को मिस्र से माउंट होरेब (सिनाई) को ले लिया जहां वे भगवान से मिलकर बात कर सकते थे। हालांकि, दुःख की एक कहानी सामने आई। चलो क्या हुआ है। भगवान ने मूसा को इस्राएलियों को बताने के लिए कहा, 'अब, यदि आप वास्तव में मेरी आवाज़ का पालन करेंगे और मेरे वाचा को बनाए रखेंगे, तो आप सभी लोगों के बीच अपना खुद का अधिकार होगा, क्योंकि सभी पृथ्वी मेरे हैं; और तुम मेरे लिए पुजारी और एक पवित्र राष्ट्र का राज्य हो। 'लोगों ने जवाब दिया, "जो कुछ भगवान ने कहा है, वह हम करेंगे।" वाचा की पुष्टि हुई। तीन दिन बाद इस्राएल के पूरे राष्ट्र ने इकट्ठा किया और भगवान को दस आज्ञाओं को जोर से बोलते हुए सुना। और जब उन्होंने पवित्रशास्त्र बोलना शुरू किया तो इसकी रिपोर्ट करें। सभी लोगों ने थंडर और बिजली की चमक और तुरही की आवाज और पहाड़ धूम्रपान की आवाज की; और जब लोगों ने इसे देखा, तो वे चिल्लाते हुए और एक दूरी पर खड़े थे। फिर उन्होंने मूसा से कहा, "हमारे आप से बात करो और हम सुनेंगे; लेकिन भगवान को हमसे बात न करें, या हम मर जाएंगे। " जल्द ही भगवान ने अपने लोगों से बात नहीं की थी, उन्होंने उनके साथ अपना वाचा तोड़ दी। वे दूसरे सबसे अच्छे के लिए बस रहे थे, जो इसके बजाय मूसा की आवाज़ सुनना चाहते थे। भगवान ने उनका अनुरोध दिया। इस बिंदु पर सबराइल राष्ट्र के लिए सबकुछ बदल गया। चूंकि वे उसे बोलना नहीं चाहते थे, क्योंकि भगवान ने लोगों को लोगों का पालन करने के लिए कानूनों का एक सेट दिया और वह अपना पहला मध्यस्थ बन गया। यह मूसा का कानून बन गया और पिछले 3,400 वर्षों में इन लोगों का नेतृत्व किया है। पाप के कारण मूसा का कानून जोड़ा गया था, भगवान को सुनने और पालन करने से इनकार किया गया था। और इसका उद्देश्य पुरुषों को मसीह के लिए नेतृत्व करना था। भगवान अपने लोगों पर दया करने वाले भगवान एक आदमी की समानता में उनके पास आए ... यीशु, मसीह। इस तरह, वह अपने लोगों को डरा नहीं देगा और उन्हें दिखा सकता है कि वह वास्तव में क्या था। यह यीशु के फिलिप की पूछताछ के जवाब में देखा जाता है, "हमें पिता दिखाओ"। यीशु ने कहा, "क्या मैं तुम्हारे साथ बहुत लंबा रहा हूं, और फिर भी आपको मुझे नहीं पता है, फिलिप? जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को देखा है; आप कैसे कह सकते हैं, 'हमें पिता दिखाओ'? भले ही भगवान अपने लोगों के लिए नीच, विनम्र और सौम्य तरीके से आए, उनमें से ज्यादातर ने अभी भी उसे सुनने से इनकार कर दिया ... उनके लिए अपने तरीके पसंद करते हैं। शास्त्री और फरीसियों ने अध्ययन के माध्यम से मूसा के कानून के बारे में कौशल और ज्ञान विकसित किया था, लेकिन यीशु ने लगातार उन पर प्रचार करने का आरोप लगाया था। उन्होंने कानून को खुद को लागू नहीं किया और न ही उन्होंने इसे लोगों को सही तरीके से लागू किया। इसका कारण यह था कि उनके पास भगवान के साथ व्यक्तिगत संबंध नहीं था जिसमें वे ठीक से सुन सकते थे और उनका पालन कर सकते थे। बाहरी रूप से वे लोगों के लिए धर्मी दिखाई दिए लेकिन अंदरूनी रूप से वे भ्रष्ट थे। यद्यपि शास्त्री और फरीसियों ने भगवान को जानने और प्यार करने का फैसला किया, जब वह वास्तविक रूप से उन लोगों के लिए आया, जब वे उससे नफरत करते थे। सुनें कि यीशु के बारे में उनके बारे में क्या कहना है। "आप शास्त्रों की खोज करते हैं क्योंकि आप सोचते हैं कि उनमें से आपके पास अनन्त जीवन है; यह ये है जो मेरे बारे में गवाही देता है; और आप मेरे पास आने के लिए तैयार नहीं हैं ताकि आपके पास जीवन हो। " (यूहन्ना 5: 3 9-40) "आप कैसे विश्वास कर सकते हैं, जब आप एक दूसरे से महिमा प्राप्त करते हैं और आप उस महिमा की तलाश नहीं करते हैं जो एक और केवल भगवान से है? ऐसा मत सोचो कि मैं पिता से पहले आपका आरोप लगाऊंगा; जो आपका आरोप लगाता है

वह मूसा है, जिसमें आपने अपनी आशा निर्धारित की है। यदि आप मूसा पर विश्वास करते हैं, तो आप मेरे बारे में लिखे गए हैं, क्योंकि आप मुझ पर विश्वास करेंगे। लेकिन अगर आप अपने लेखन पर विश्वास नहीं करते हैं, तो आप मेरे शब्दों पर विश्वास कैसे करेंगे? " (यूहन्ना 5: 44-47) "लेकिन आप विश्वास नहीं करते क्योंकि आप मेरी भेड़ों के नहीं हैं। मेरी भेड़ मेरी आवाज़ सुनती है, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे आते हैं। (यूहन्ना 10: 26-27) यीशु के शिष्य अलग-अलग थे, शास्त्री और फरीसियों, वे भगवान की आवाज़ सुन सकते थे क्योंकि उन्होंने यीशु की बात सुनी और उसका पालन किया। यीशु ने अधिकार के बारे में उनके लिए तीन महत्वपूर्ण निर्देश जारी किए। सबसे पहले उन्होंने उन्हें करने के लिए कहा कि शास्त्री और फरीसियों ने मूसा के कानून के संबंध में कहा था। दूसरे शब्दों में, चूंकि शास्त्री और फरीसी कानून पर विस्तार कर रहे हैं, जो पवित्र और अच्छे हैं, फिर कानून के प्रति सम्मान करते हैं और उन पर ध्यान देते हैं क्योंकि वे इसके संबंध में विशेषज्ञ हैं। यह पवित्रशास्त्र के अधिकार में जमा हो रहा है। दूसरा, यीशु ने उन्हें आज्ञा दी कि वे या तो शास्त्री या फरीसियों की तरह व्यवहार न करें, क्योंकि वे मनुष्यों की प्रशंसा के लिए अपने जीवन जीने वाले पाखंड थे। शिष्य शास्त्रीय और फरीसियों के विपरीत अपने जीवन जीना था। वे लोगों के सेवक बनने और अधिकार की ऊंचाई पद नहीं ले रहे थे। अंत में, यीशु ने उन्हें तीन खिताबों का उपयोग करके उचित अधिकार पर निर्देश दिया जो पुरुष खुद को लेते हैं। उनके शिष्य पुरुषों को उन पर अधिकार में नहीं रखते थे और न ही वे दूसरों पर अधिकार में रहते थे। इसके बजाय वे लगातार लोगों को परमेश्वर की ओर इशारा करते थे। यीशु ने यही कहा है। उनके शिष्य लोगों को उन्हें बुलाए जाने नहीं देते हैं, रब्बी ... वह शिक्षक है। क्यों? रब्बी शब्द इंगित करता है कि वह एक मास्टर है जो रहने के लिए निर्देश देने के लिए योग्य है ... एक गाइड। यीशु ने कहा कि केवल "एक" है जो आपके शिक्षक होने के लिए योग्य है। जब यीशु "एक" शब्द का उपयोग करता है तो वह भगवान और अधिक विशेष रूप से पवित्र आत्मा का जिक्र कर रहा है। आपके लिए, आपके द्वारा प्राप्त अभिषेक को आपके पास किया गया है, और आपको किसी को भी आपको सिखाने की आवश्यकता नहीं है; लेकिन जैसा कि उसका अभिषेक आपको सभी चीजों के बारे में सिखाता है, और सच है और झूठ नहीं है, और जैसा कि उसने आपको सिखाया है, आप उसका पालन करते हैं। (1 जॉन 2:27) लेकिन जब वह, सत्य की आत्मा आती है, तो वह आपको सच्चाई में मार्गदर्शन करेगा; क्योंकि वह अपनी पहल पर बात नहीं करेगा, लेकिन जो भी वह सुनता है, वह बोलेंगे; और वह आपको खुलासा करेगा कि क्या आना है। (यूहन्ना 16:13) उनके शिष्य पृथ्वी पर किसी को भी अपने पिता को नहीं बुलाते हैं। क्यों? पिता शब्द जो जीवन देता है उसे दर्शाता है। यीशु ने कहा कि केवल "एक" है जो जीवन देता है, वह तुम्हारा पिता स्वर्ग में है, निर्माता। आप मसीह यीशु में विश्वास के माध्यम से भगवान के सभी पुत्र हैं। (गलतियों 3:26) मैंने कहा, 'आप "देवता" हैं; आप सबसे ज्यादा सबसे ज्यादा बेटे हैं। '(भजन 82: 6) उसके शिष्य लोगों को उन्हें, नेताओं को बुलाने नहीं देते हैं। क्यों? एक नेता कोई है जो लोग अनुसरण करते हैं। यीशु ने कहा कि केवल "एक" है जिसे नेतृत्व करने के लिए नियुक्त किया जाता है, वह मसीह है। "इसलिए इस्राएल के सभी घरों को यह जानने दें कि भगवान ने उन्हें भगवान और मसीह दोनों को बनाया है - इस यीशु ने यह यीशु जिसे आपने क्रूस पर चढ़ाया है।" (प्रेरितों 2:36) यीशु ने शिष्यों से कहा, "मेरा अनुसरण करें।" (मत्ती 4:19) समूह चर्चा: क्या कुछ चर्चों में लोग शास्त्री और फरीसियों जैसे हैं? _____ क्यों मसीहाई मंडलियों के पादरी लोगों को उन्हें रब्बी को बुलाने की अनुमति देते हैं? _____ कैथोलिक चर्चों के पादरी क्यों पूछते हैं कि उनके लोग उन्हें पिता या पोप (पापा) के रूप में संदर्भित करने के लिए कहते हैं? _____ चर्चों में कुछ लोगों को नौकरों के बजाय नेताओं के रूप में जाना जाना चाहते हैं? _____

क्यों कई पादरी जहां विशेष कपड़े हैं? _____ क्यों कुछ चर्चों में ऊंचा मंच या मंडली के सामने मंच पर कुर्सियां हैं? _____ पाठ का बिंदु: एक आस्तिक का सच्चा अधिकार भगवान से आता है और वे अपने सेवकों के रूप में व्यवहार करना चाहते हैं: आज, चर्च एक चुनी हुई दौड़, एक शाही पुजारी, एक पवित्र राष्ट्र और एक व्यक्ति बन गया है फिर हमें कैसे रहना चाहिए?

भविष्य के परिचय को देखकर: अपने क्रूस पर चढ़ने से पहले यीशु ने शिष्यों को अलग कर लिया और उनकी मृत्यु के बाद होने वाली कई चीजों की भविष्यवाणी की। बाइबिल धर्मविज्ञानी इसे ओलिवेट प्रवचन के रूप में संदर्भित करते हैं। भविष्यवाणियों के साथ, यीशु ने आने वाले भविष्य की घटनाओं के बारे में उनके शिष्यों का पालन करना उनके शिष्यों को कई आदेश जारी किए। हम में से किसी, जैसा कि यीशु के शिष्यों के रूप में, उनका पालन कर सकते हैं, हमें इन घटनाओं के बारे में क्या बात कर रहे हैं, इसकी बुनियादी समझ होनी चाहिए। भविष्य की बात आने पर आज की दुनिया में कई ईसाई उलझन में हैं ताकि हम उन पाठों को स्पष्ट करने के लिए इस पाठ का उपयोग करेंगे जिनमें यीशु ने बात की और जो कुछ भी कहा, उसके करीब देखी। तो चलो शुरू करते हैं। भ्रम शुरू होता है क्योंकि सबसे लोकप्रिय ईसाई शिक्षकों और लेखकों ने आज घोषणा की कि उनके शिष्यों ने उनसे पूछा कि दो सवालों के जवाब में यीशु के भाषण को जैतून के माउंट पर दिया गया था। लेकिन पवित्रशास्त्र के मार्गों के सावधानीपूर्वक अध्ययन के बाद हम देख सकते हैं कि शिष्यों ने उन्हें कुल पांच प्रश्न पूछे। 1) यीशु ने अपने शिष्यों द्वारा पूछे जाने वाले दो प्रश्नों का जवाब दिया क्योंकि वे मंदिर छोड़ रहे हैं। और किट्रॉन घाटी को पार करने के बाद) यीशु ने पीटर, जेम्स, जॉन और एंड्रयू द्वारा पूछे जाने वाले तीन और प्रश्नों का जवाब दिया जब वे अपने लिए निजी तौर पर उनके पास आए थे, जबकि वह जैतून के पहाड़ पर बैठे थे। ओलिवेट प्रवचन के कुछ हिस्सों में सभी तीनों synoptic gospels में निहित हैं: मैथ्यू, मार्क और ल्यूक। व्यक्तिगत रूप से पढ़ते समय ग्रंथ समान लेकिन अलग-अलग चीजें कह रहे हैं ताकि पाठक भ्रमित हो सके। हालांकि, साइड-बाय-साइड तुलना में अलग ग्रंथों का अध्ययन करके भविष्य की घटनाओं की एक स्पष्ट तस्वीर सामने आती है। भविष्य की घटनाओं के आसपास भ्रम भी तब होता है जब पाठक व्यक्तिगत सर्वनामों पर विचार करने में विफल रहता है। यीशु किससे या उसके बारे में बात कर रहा है? क्या यह है: 1) हम, हम, हमारे और हमारे, 2) आप, आपका और आपका या 3) वे, उन्हें, उनके और उनके। इस भ्रम को जोड़ना पाठक के ऐतिहासिक संदर्भों और हेब्रिक (यहूदी) नियमों और अवधारणाओं से संबंधित ज्ञान की कमी है। आपके लिए यह समझने के लिए कि यह समझने के लिए कि यीशु क्या कह रहा है कि मैंने ओलिवेट के तीन सुसमाचार खातों को एक अनुक्रमिक पढ़ने में संयोजित करने की स्वतंत्रता ली है। यह दो दृश्यों में बांटा गया है: 1) मंदिर माउंट छोड़कर 2) जैतून के पहाड़ पर बैठे। अपने शिष्यों द्वारा यीशु से पूछे जाने वाले पांच प्रश्नों को संबोधित किया गया है, पाठ के भीतर व्यक्तिगत सर्वनाम बोल्ड प्रिंट और ऐतिहासिक नोट्स या स्पष्टीकरण के बिंदुओं में फुटनोटेड हैं। भविष्य की घटनाओं के बारे में यीशु को क्या कहना है, मैंने इन घटनाओं पर प्रेषित पौलुस की टिप्पणी को शामिल किया है। इस अध्ययन का अंतिम पृष्ठ यीशु और पौलुस की तुलना प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के साथ समाप्तकालिक घटनाओं का अनुक्रम है। पवित्रशास्त्र संदर्भ: (मत्ती 24: 1-25: 46) (मार्क 13: 1-37) (ल्यूक 21: 5-36) दृश्य 1: मंदिर माउंटथोस वर्तमानजा। उनके सभी शिष्यों। मंदिर से बाहर निकलने के बाद, विधवा को खजाने में दो पतंग डालने के बाद। शिष्य के सवाल क्या मंदिर को फाड़ा जाएगा? मंदिर कब गिरने वाला है जब वह क्या होगा? यरूशलेम में मंदिर टूट जाएगा (एमटी 24: 1-2, एमके 13: 1-2 और एलके 21: 5-7) यीशु मंदिर से बाहर आया और जब उसके शिष्य मंदिर की इमारतों को इंगित करने के लिए आए तो दूर जा रहा था। और कुछ लोग मंदिर के बारे में बात कर रहे थे, कि इसे सुंदर पत्थरों और मतदाताओं के उपहारों से सजाया गया था, उन्होंने कहा, "इन चीजों के लिए जो आप देख रहे हैं, वे दिन आएंगे जिसमें एक पत्थर नहीं छोड़ा जाएगा जो एक दूसरे पर नहीं छोड़ा जाएगा।" और उन्होंने उनसे सवाल किया, "शिक्षक, जब ये चीजें होंगी? और ये बातें क्या होगी जब ये चीजें होने वाली हैं? " चेतावनी (एलके 21: 8-11) और उसने कहा, "इसे देखें कि आपको गुमराह नहीं किया जाता है; कई लोगों के लिए मेरे नाम पर आएंगे, 'मैं वह हूं' और, 'समय निकट है।' उनके पीछे मत

जाओ। जब आप युद्धों और गड़बड़ी के बारे में सुनते हैं, तो डरो मत; इन चीजों के लिए पहले होना चाहिए, लेकिन अंत तुरंत पालन नहीं करता है। फिर वह उनसे कहकर जारी रहा, "राष्ट्र देश के खिलाफ राष्ट्र और साम्राज्य के खिलाफ बढ़ेगा, और महान भूकंप होंगे, और विभिन्न स्थानों में विपत्तियां और अकाल होंगे; और वहां आर्द्र और महान संकेत होंगे। " कब? - अपोस्टोलिक गवाह (एमके 13: 9-11 और एलके 21: 12-19) लेकिन इन सभी चीजों से पहले, वे आपके हाथ रखेंगे और आपको सभापित करेंगे, आपको सभाओं और जेलों में पहुंचाएंगे, जिससे आप मेरे नाम के लिए राजाओं और गवर्नरों के सामने लाएंगे इससे आपकी गवाही का मौका मिलेगा। तो अपने दिमाग को अपने बचाव के लिए पहले से तैयार न करें; क्योंकि मैं आपको वंश और ज्ञान दूंगा जो आपके विरोधियों में से कोई भी विरोध या खंडन करने में सक्षम नहीं होगा। लेकिन आप माता-पिता और भाइयों और रिश्तेदारों और दोस्तों द्वारा भी वितरित किए जाएंगे, और वे आप में से कुछ को मौत के लिए डाल देंगे, और आपको मेरे नाम के कारण सभी से नफरत होगी। फिर भी आपके सिर का कोई बाल नहीं होगा। आपके धीरज से आप अपने जीवन प्राप्त करेंगे। " संकेत क्या होगा? - यरूशलेम (एलके 21: 20-24) का विनाश "लेकिन जब आप यरूशलेम को सेनाओं से घिरे देखते हैं, तो यह मानते हैं कि उसकी विनाश हाथ में है। फिर यहूदिया में रहने वाले लोगों को पहाड़ों पर भागने दें, और जो लोग बीच में हैं, उन्हें दें दृश्य 2: ओलिवेस्टहोस प्रेजेंशनसस का माउंट। केवल पीटर, जेम्स, जॉन और एंड्रयू। मंदिर के विपरीत जैतून के पहाड़ पर केवल पीटर, जेम्स, जॉन और एंड्रयू। प्रश्नों के विपरीत यह समय झूठे भविष्यद्वक्ताओं और जन्म के कारण क्या होगा? आपका संकेत क्या होगा जन्म की शुरुआत (एमटी 24: 4-8 और एमके 13: 5-8) और यीशु ने उत्तर दिया और उनसे कहा, "यह देखो कि कोई भी आपको गुमराह करता है। कई लोग मेरे नाम पर आएंगे, 'मैं मसीह हूं,' और कई लोगों को गुमराह करेगा कब? - धर्मत्याग (एमटी 24: 9-14, एमके 13: 12-13) "फिर वे आपको विपत्ति के लिए पहुंचाएंगे, और आपको मार देंगे, और आप मेरे नाम के कारण सभी राष्ट्रों से नफरत करेंगे। और उस समय कई लोग गिर जाएंगे और एक दूसरे को वितरित करेंगे और एक दूसरे से नफरत करेंगे। और कई झूठे भविष्यद्वक्ताओं उत्पन्न होंगे, और कई गुमराह करेंगे। और क्योंकि कानूनहीनता में वृद्धि हुई है, ज्यादातर लोगों का प्यार ठंडा हो जाएगा। लेकिन जो अंत तक समाप्त होता है, वह बचाया जाएगा। और राज्य के इस सुसमाचार को सभी राष्ट्रों के गवाह के लिए पूरी दुनिया में प्रचार किया जाएगा, और फिर अंत आ जाएगा। " विनाश और महान विपत्ति का घृणा (एमटी 24: 15-22 और एमके 13: 14-20) "इसलिए जब आप डैनियल द पैगंबर के माध्यम से बोली जाने वाली विनाश के घृणा को देखते हैं, तो पवित्र स्थान में खड़े हो जाते हैं (पाठक को समझते हैं), फिर उन लोगों को छोड़ दें मनुष्य के पुत्र (एमटी 24: 23-28 और एमके 13: 21-23) "फिर अगर कोई तुमसे कहता है, 'देखो, यहां मसीह है,' या 'वहां वह है,' उस पर विश्वास मत करो। झूठे क्रिस्टी और झूठे भविष्यवक्ताओं के लिए बहुत अच्छा संकेत होगा जब ये चीजें होने लगती हैं, तो सीधे अपने सिर उठाएं और उठाएं, क्योंकि आपका रिडेम्प्शन निकट आ रहा है। और वह अपने स्वर्गदूतों को एक महान तुरही के साथ भेज देगा और वे पृथ्वी के सबसे दूर के अंत से, पृथ्वी के सबसे दूर के अंत तक, चार हवाओं से अपने चुने हुए एक साथ इकट्ठे होंगे। " अंजीर के पेड़ (एमटी 24: 32-34, एमके 13: 28-30 और एलके 21: 21-32) के दृष्टांत) "अब अंजीर के पेड़ से दृष्टांत सीखें: जब इसकी शाखा पहले से ही निविदा हो गई है, और अपनी पत्तियों को आगे बढ़ाती है, तो आप जानते हैं कि गर्मी भी है; यहां तक कि जब भी आप, तब भी, जब भी आप उम्र के अंत का संकेत क्या होगा? जब स्वर्ग और पृथ्वी पास हो जाए (एमटी 24: 35-36, एमके 13: 31-32 और एलके 21:33) "स्वर्ग और पृथ्वी गुजर जाएगी, लेकिन मेरे शब्द दूर नहीं होंगे। लेकिन उस दिन या घंटा में कोई भी नहीं जानता, स्वर्ग में स्वर्गदूत भी नहीं, न ही पुत्र, लेकिन अकेले पिता। "नूह के दिनों की तरह (एमटी 24: 37-41)" मनुष्य के पुत्र के आने के लिए नूह के दिनों की तरह ही होगा। के लिए बाढ़ से पहले वे खाने और पीने, शादी करने और शादी में दे रहे

थे, जब तक नूह ने तब तक जब तक नूह तब तक प्रवेश नहीं किया, और जब तक बाढ़ आ गई और उन्हें दूर ले जाया गया, तब तक उन्हें समझ में नहीं आया; तो मनुष्य के पुत्र का आना होगा। फिर क्षेत्र में दो पुरुष होंगे; एक लिया जाएगा और एक छोड़ दिया जाएगा। मिल में दो महिलाएं पीस रहेगी; एक लिया जाएगा और एक छोड़ दिया जाएगा। " सावधान रहें (एमटी 24: 42-44) "इसलिए अलर्ट पर रहें, क्योंकि आप नहीं जानते कि आपका भगवान किस दिन आ रहा है। लेकिन इस बारे में सुनिश्चित करें कि अगर घर के मुखिया को पता था कि चोर आ रहा था कि वह चोर आ रहा था, वह चेतावनी पर होता और उसके घर को तोड़ने की अनुमति नहीं होगी। इस कारण से आपको भी तैयार होना चाहिए; आदमी के पुत्र के लिए एक घंटे में आ रहा है जब आपको नहीं लगता कि वह होगा। " गार्ड पर रहें (एलके 21: 34-36) "गार्ड पर रहें, कि आपके दिल को अपव्यय और शराबीपन और जीवन की चिंताओं के साथ भारित नहीं किया जा सकता है, और वह दिन आपको अचानक एक जाल की तरह आते हैं; क्योंकि यह उन सभी पर आ जाएगा जो सभी पृथ्वी के चेहरे पर रहते हैं। लेकिन हर समय सतर्क रहें, प्रार्थना करें कि आपके पास इन सभी चीजों से बचने की ताकत हो जो कि होने वाले हैं, और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े हैं। " सतर्क रहें (एमके 13: 33-37) "ध्यान रखें, सतर्क रहें; क्योंकि आप को नियुक्त समय कब नहीं पता है। यह एक आदमी की तरह है, एक यात्रा पर, जो अपने घर को छोड़कर और अपने दासों को प्रभारी रखता है, प्रत्येक व्यक्ति को उनके कार्य को भी सौंपता है धन्य यह है कि दासता है जिसे उसके स्वामी को ऐसा लगता है जब वह आता है। वास्तव में मैं तुमसे कहता हूं कि वह उसे अपनी सभी संपत्ति के प्रभारी रखेगा। लेकिन अगर वह बुरा दास अपने दिल में कहता है, तो 'मेरा स्वामी लंबे समय तक नहीं आ रहा है,' और अपने साथी दासों को हराकर पीना शुरू कर देता है और शराबी के साथ खा जाता है; उस दास का स्वामी एक दिन में आएगा जब वह उसकी उम्मीद नहीं करता है और एक घंटे में जो वह नहीं जानता है, और उसे टुकड़ों में काट देगा और उसे पाखंडियों के साथ एक जगह सौंप देगा; उस स्थान पर रोते और दांतों को कुतरना होगा। " दस कुंवारी (एमटी 25: 1-13) के दृष्टांत "फिर स्वर्ग का राज्य दस कुंवारी के लिए तुलनीय होगा, जिन्होंने अपनी दीपक ली, और दुल्हन से मिलने के लिए बाहर निकल गए। और उनमें से पांच मूर्ख थे, और पांच विवेकपूर्ण थे। के लिए तब उन सभी कुंवारी गुलाब, और अपनी दीपक छंटनी की। और मूर्खता ने समझदार से कहा, 'हमें अपने कुछ तेल दें, क्योंकि हमारे दीपक बाहर जा रहे हैं।' लेकिन समझदार ने कहा, 'नहीं, नहीं, हमारे लिए पर्याप्त नहीं होगा और आप भी; डीलरों के लिए जाओ और अपने लिए कुछ खरीदें।' और जब वे खरीदारी करने के लिए दूर जा रहे थे, दुल्हन आया, और जो लोग तैयार थे वे उनके साथ शादी के दावत में गए; और दरवाजा बंद हो गया। और बाद में अन्य कुंवारी भी आए, और कहा, 'हे प्रभु, भगवान, हमारे लिए खुला।' लेकिन उसने उत्तर दिया और कहा, 'वास्तव में मैं तुमसे कहता हूं, मैं तुम्हें नहीं जानता।' चेतावनी पर रहें, क्योंकि आप दिन और न ही घंटे नहीं जानते हैं। " प्रतिभाओं की दृष्टांत (एमटी 25: 14-30) "क्योंकि यह एक आदमी की तरह एक यात्रा पर जाने के बारे में है, जिसने अपने दासों को बुलाया, और उन्हें अपनी संपत्ति सौंपी। और एक के लिए उसने पांच प्रतिभा, दूसरे, दो, और दूसरे, एक, प्रत्येक को अपनी क्षमता के अनुसार दिया; और वह अपनी यात्रा पर चला गया। तुरंत जिसने पांच प्रतिभा प्राप्त की थी और उनके साथ कारोबार किया, और पांच और प्रतिभा प्राप्त की। उसी तरह जिसने दो प्रतिभा प्राप्त की थी, उन्होंने दो और प्राप्त किए। लेकिन जिसने एक प्रतिभा प्राप्त की और जमीन में खोला और खोला, और अपने मालिक के पैसे को छुपाया। अब लंबे समय के बाद उन दासों का स्वामी आए और उनके साथ खातों का निपटारा किया। और जिसने पांच प्रतिभा प्राप्त की थी और पांच और प्रतिभाओं को लाया, और कहा, 'मास्टर, आपने मेरे लिए पांच प्रतिभा सौंपी; देखें, मैंने पांच और प्रतिभा प्राप्त की हैं। ' उनके गुरु ने उससे कहा, 'अच्छा किया, अच्छा और वफादार दास; आप कुछ चीजों के साथ वफादार थे, मैं आपको कई चीजों के प्रभारी रखूंगा, अपने स्वामी की खुशी में प्रवेश करूंगा। ' जिसने

दो प्रतिभा प्राप्त की थी, उन्होंने कहा, 'मास्टर, आपने मुझे दो प्रतिभा सौंपी; देखें, मैंने दो और प्रतिभा प्राप्त की हैं। ' उनके गुरु ने उससे कहा, 'अच्छा किया, अच्छा और वफादार दास; आप कुछ चीजों के साथ वफादार थे, मैं आपको कई चीजों के प्रभारी रखूंगा; अपने स्वामी की खुशी में प्रवेश करें। ' और जिसने एक प्रतिभा प्राप्त की थी, उसने कहा, 'मास्टर, मैं तुम्हें एक कठिन आदमी बनने के लिए जानता था, जहां आप बोते थे, और इकट्ठा नहीं करते थे, जहां आपने कोई बीज नहीं बिखराया था। और मैं डर गया था, और चले गए और जमीन में अपनी प्रतिभा को छुपाया; देखो, तुम्हारे पास तुम्हारा क्या है। ' परन्तु उसके स्वामी ने उत्तर दिया और कहा, 'तुम दुष्ट, आलसी दास, आप जानते थे कि मैं तब तक काटता हूं जहां मैंने नहीं बोला, और इकट्ठा नहीं हुआ जहां मैंने कोई बीज नहीं बिखराया। फिर आपको अपना पैसा बैंक में रखना चाहिए, और मेरे आगमन पर मुझे ब्याज के साथ मेरा पैसा वापस मिला होगा। इसलिए उससे प्रतिभा को दूर करें, और इसे उस व्यक्ति को दें जिसकी दस प्रतिभा है। ' हर किसी के लिए जो अधिक दिया जा सकता है, और उसके पास एक बहुतायत होगी; लेकिन जो एक के पास नहीं है, यहां तक कि वह जो भी करता है उसे दूर ले जाया जाएगा। और बाहरी अंधेरे में बेकार दास बाहर निकाल दिया; उस जगह में दांतों की रोना और कुतरना होगा। अपनी महिमा में मनुष्य का पुत्र (एमटी 25: 31-46) "लेकिन जब मनुष्य का पुत्र उसकी महिमा में आता है, और उसके साथ सभी स्वर्गदूतों, तो वह अपने गौरवशाली सिंहासन पर बैठेगा। और सभी राष्ट्रों के सामने इकट्ठे होंगे; और वह उन्हें एक दूसरे से अलग कर देगा; तब धर्मी ने उसे जवाब दूंगा, 'हे प्रभु, जब हमने आपको भूखा देखा, और तुम्हें खाना, या प्यासा को खिलाया, और तुम्हें पीता हूँ? और हमने आपको एक अजनबी कब देखा, और आपको आमंत्रित किया, या नग्न, और तुमने तुम को धोया? और राजा जवाब देगा और उनसे कहेंगे, 'वास्तव में मैं तुमसे कहता हूं, इस हद तक कि आपने इसे अपने भाइयों में से एक में किया है, यहां तक कि उनमें से कम से कम, आपने मेरे साथ किया।' फिर वह अपने बाएं लोगों से भी कहेंगे, 'शापित लोगों ने शापित लोगों को शाश्वित आग में जो शैतान और उसके स्वर्गदूतों के लिए तैयार किया गया है; क्योंकि मैं भूख लगी थी, और तुमने मुझे खाने के लिए कुछ भी नहीं दिया; मैं प्यासा था; मैं था तब वे खुद भी जवाब देंगे, 'हे प्रभु, हमने आपको भूखे, या प्यास, या अजनबी, या नग्न, या बीमार, या जेल में देखा, और तुम्हारी देखभाल नहीं की?' तब वह उनका जवाब देगा, 'सचमुच मैं तुमसे कहता हूं, इस हद तक कि आपने इसे कम से कम में से एक में नहीं किया है, आपने ऐसा नहीं किया है।' और ये अनन्त सजा में चले जाएंगे, लेकिन शाश्वत जीवन में धर्मी हो जाएंगे। " प्रेषित पौलुस के लेखन भगवान के दिन (1 थिस्सलुनीकियों 5: 1-10) अब के समय और युग के रूप में, भाइयों, आपको अपने लिए लिखी जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। आपके लिए खुद को पूरी तरह से पता है कि भगवान का दिन रात में चोर की तरह आएगा। जबकि वे कह रहे हैं, "शांति और सुरक्षा!" तब विनाश उन पर आ जाएगा जो अचानक बच्चे के साथ एक महिला पर जन्म पांग की तरह आएगा; और वे बच नहीं पाएंगे। लेकिन आप, भाइयों, अंधेरे में नहीं हैं, कि दिन आपको चोर की तरह आगे ले जाना चाहिए; आप के लिए प्रकाश और दिन के पुत्रों के सभी बेटे हैं। हम रात के नहीं हैं और न ही अंधेरे; तो फिर हमें दूसरों के रूप में नींद न लें, लेकिन हम सतर्क रहें और शांत रहें। उन लोगों के लिए जो रात में अपनी नींद लेते हैं, और जो लोग नशे में आते हैं, वे रात में नशे में पड़ जाते हैं। लेकिन चूंकि हम दिन के हैं, हम शांत रहें, विश्वास और प्रेम के छाती पर और एक हेलमेट के रूप में, मोक्ष की आशा। क्योंकि ईश्वर ने हमें क्रोध के लिए नियुक्त नहीं किया है, लेकिन हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से मोक्ष प्राप्त करने के लिए, जो हमारे लिए मर गए, कि क्या हम जागते हैं या सोते हैं, हम उसके साथ मिलकर रह सकते हैं। भगवान के आने (2 थिस्सलुनिकियों 2: 1-2) अब हम आपसे अनुरोध करते हैं, धर्मत्याग (2 थिस्सलुनिकियों 2: 3) किसी भी तरह से आपको धोखा देने दें, क्योंकि यह तब तक नहीं आएगा जब तक धर्मत्याग पहले नहीं आती है, और अभियोजन के व्यक्ति को पता चला है, विनाश का पुत्र, विनाश का घृणित (2

थिस्सलुनिकियों 2) कानूनहीनता का रहस्य (2 थिस्सलुनिकियों 2: 5-12) क्या आपको याद नहीं है कि जब भी मैं तुम्हारे साथ था, तो मैं आपको ये बातें बता रहा था? और आप जानते हैं कि अब उसे रोक दिया गया है, ताकि उसके समय में वह प्रकट हो सके। कानूनहीनता के रहस्य के लिए पहले से ही काम पर है; केवल वह जो अब रोकता है वह तब तक ऐसा करेगा जब तक कि उसे रास्ते से बाहर नहीं निकाला जाता है। और फिर वह कानूनहीन व्यक्ति प्रकट होगा जिसे भगवान उसके मुंह की सांस के साथ मारेगा और उसके आने की उपस्थिति से खत्म हो जाएगा; यही वह है, जिसका आ रहा है शैतान की गतिविधि के साथ, सभी शक्तियों और संकेतों और झूठे चमत्कारों के साथ, और उन लोगों के लिए दुष्टता के सभी धोखे के साथ, क्योंकि उन्हें सत्य का प्यार नहीं मिला, ताकि उन्हें बचाया जा सके। और इसी कारण से भगवान उन्हें एक भ्रमपूर्ण प्रभाव पर भेज देंगे ताकि वे विश्वास कर सकें कि झूठा क्या है, ताकि वे सभी का न्याय किया जा सके कि सत्य पर विश्वास नहीं किया गया, लेकिन दुष्टता में आनंद लिया। रैप्चर (1 कुरिन्थियों 15: 51-53) देखो, मैं तुम्हें एक रहस्य बताता हूं; हम सभी सो नहीं होंगे, लेकिन हम सभी को एक पल में, एक आंख की चमक में, आखिरी तुरही में बदल दिया जाएगा; तुरही के लिए आवाज लगेगी, और मृतकों को अपूर्ण रूप से उठाया जाएगा, और हम बदल दिए जाएंगे। इस विनाश के लिए अक्षांश पर रखना चाहिए, और इस प्राणघातक को अमरता पर रखना होगा। मसीह में मृत (1 थिस्सलुनीकियों 4: 13-18) लेकिन हम नहीं चाहते कि आप भयानक, भाइयों, सोए हुए लोगों के बारे में, जो आप शोक नहीं कर सकते, के रूप में आप कोई उम्मीद नहीं कर सकते हैं। अगर हम मानते हैं कि यीशु की मृत्यु हो गई और फिर से गुलाब, फिर भी भगवान उसके साथ लाएंगे जो यीशु में सो गए हैं। इसके लिए हम आपको यहोवा के वचन से कहते हैं, कि हम जीवित हैं, और यहोवा के आने तक बने रहे हैं, उनसे पहले नहीं होंगे जो सो गए हैं। क्योंकि यहोवा के लिए स्वर्ग से एक चिल्लाहट के साथ उतर जाएगा, महादूत की आवाज़ के साथ, और भगवान के तुरही के साथ; और मसीह में मृत पहले उठेंगे। तब हम जीवित हैं और जीवित हैं, जो बादलों में हवा में भगवान से मिलने के लिए बादलों में पकड़े जाएंगे, और इस प्रकार हम हमेशा प्रभु के साथ रहेंगे। इसलिए इन शब्दों के साथ एक दूसरे को आराम दें। अंत समय घटनाक्रम घटना का अनुक्रम घटना यीशु पॉल प्रकाशितवाक्य अपोस्टोलिक गवाह एक्स मंदिर फटे x

पाठ 47

आइसब्रेकर के बहकावे में न आएं: क्या आपको पहले कभी किसी ने गुमराह किया है? _____ गुमराह होने से बचाने के लिए आप क्या कर सकते थे? परिचय: ओलिवेट प्रवचन का मुख्य उद्देश्य भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी करना प्रतीत होता है। लेकिन वास्तव में, यीशु इसका उपयोग अपने शिष्यों को भविष्य के बारे में गुमराह होने से बचाने के लिए करता है, विशेष रूप से उसके दूसरे आगमन के आसपास की घटनाओं के बारे में। टेंपल माउंट और ओलिवेट दोनों प्रवचनों में यीशु चेले के प्रश्नों का उत्तर उन्हें चेतावनी के द्वारा देना शुरू करते हैं, "सावधान रहें कि आप गुमराह न हों।" यह जानते हुए कि धोखा आएगा और अपने शिष्यों को गुमराह होने से बचाने के लिए, यीशु उनके लिए बहुत विशिष्ट निर्देश छोड़ते हैं जब वे कुछ घटनाओं का पालन करते हैं। समूह चर्चा: आप कैसे जानते हैं कि आपको पहले से ही अंतिम समय की घटनाओं के बारे में गुमराह नहीं किया गया है? पवित्रशास्त्र पढ़ना:(मत्ती 24:4-14, मरकुस 13:5-13 और लूका 21:8-11) आज्ञाएँ: यह देखें कि कोई आपको गुमराह न करे। इसलिए अपना बचाव करने के लिए पहले से तैयारी न करने का मन बना लें। अपने आप को।पहचानें कि उसका उजाड़ निकट है।यह ध्यान रखना कि तुम भयभीत न हो। सबक: गुमराह होना नेतृत्व के मुद्दे से संबंधित है। एक व्यक्ति को गुमराह किया जाता है जब वह किसी ऐसे व्यक्ति का अनुसरण करता है या सुनता है जो उसका नेता नहीं है। पिछले दिन यीशु ने अपने शिष्यों को नेतृत्व के बारे में एक पाठ पढ़ाया। उसने उन्हें निर्देश दिया कि वे नेता, रब्बी (शिक्षक) या पिता न कहलाएं। उनमें से प्रत्येक 1) यीशु का अनुसरण करने, परमेश्वर के वचन का पालन करने, 2) पवित्र आत्मा द्वारा सिखाया जाना और 3) अकेले स्वर्ग में अपने पिता के सेवक बनने के लिए जिम्मेदार था। अपने प्रवचनों की शुरुआत "ध्यान रहे कि आप गुमराह न हों" शब्दों के साथ शुरू करने के बाद, यीशु इस बात से अच्छी तरह वाकिफ हैं कि उनके कथन ने शिष्यों के मन में कुछ सामान्य प्रश्न उठाए हैं। जब वे प्रवचन जारी रखते हैं तो यीशु उनके प्रत्याशित प्रश्नों का उत्तर देते हैं। कौन हमें गुमराह करने की कोशिश करेगा? पिछली शिक्षाओं में यीशु ने अपने अनुयायियों को धोखेबाजों के बारे में चेतावनी दी थी: भेड़ के कपड़ों में भेड़िये। उसने झूठे नबियों और झूठे शिक्षकों को संबोधित किया था, लेकिन अब आने वाले एक नए खतरे का खुलासा करता है: झूठे मसीहा। हम उनका अनुसरण क्यों करेंगे? यीशु बताते हैं कि बहुत से लोग मसीह होने का दावा करते हुए आएंगे, जिन्हें परमेश्वर ने भेजा है। यीशु की मृत्यु के एक सौ वर्षों के भीतर लोगों के एक समूह, सिसरी और तीन व्यक्तियों ने मसीहा की उपाधि के लिए दावा किया। और 1500 ईस्वी से 2000 ईस्वी तक 500 साल की अवधि में चालीस से अधिक लोगों ने मसीहा होने का दावा किया है। वे हमें कैसे प्रभावित करने की कोशिश करेंगे? चूँकि लोग हमेशा भविष्य के बारे में चिंतित रहते हैं, यीशु ने कहा कि ये झूठे मसीहा घोषणा कर रहे होंगे, "समय निकट है।" दूसरे शब्दों में, अंत निकट है और न्याय आ रहा है। क्या करे? यीशु ने कहा, "उनके पीछे मत जाओ।" जीसस, चूंकि आप चिंतित हैं कि हम गुमराह होने में सक्षम हैं, तो हम वास्तविक चीज़ को कैसे पहचानेंगे? यह इस मामले की जड़ है इसलिए वह बाकी के प्रवचन को यह बताते हुए खर्च करते हैं कि वे कैसे जानेंगे। यीशु भविष्य का एक रोड मैप तैयार करता है और रास्ते में निशान लगाता है ताकि उसके चेले उस मार्ग के बारे में भ्रमित न हों जिसे वह लेने जा रहा है। इस तरह वे गुमराह नहीं होंगे। मार्ग मार्कर #1 - प्रेरितों को यीशु की गवाही देने के लिए बाहर भेजा जाएगा। वह उन्हें आज्ञा देता है, “इसलिये यह ठान लो कि अपने बचाव के लिये पहिले से तैयारी न करना; क्योंकि मैं तुझे ऐसी बातें और बुद्धि दूंगा, जिनका न तो कोई विरोध कर सकेगा और न ही झुठला सकेगा।” मार्ग मार्कर #2 - यरूशलेम पर कुछ समय के लिए अन्यजातियों द्वारा कब्जा कर लिया जाएगा। यीशु ने कहा, “जब तू यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखे, तब जान लेना, कि उसका उजाड़ निकट है।” मार्ग मार्कर #3

- युद्धों की सुनवाई और युद्ध की अफवाहें। यीशु ने कहा, “देख, तू भयभीत न हो, क्योंकि वे बातें अवश्य होंगी, परन्तु वह अन्त नहीं है।” मार्ग मार्कर #4 - राष्ट्र राष्ट्र के विरुद्ध, और राज्य राज्य के विरुद्ध उठेगा, और विभिन्न स्थानों में अकाल और भूकंप होंगे। यीशु ने कहा, "परन्तु ये सब बातें तो जन्म के दुखों का आरम्भ मात्र हैं।" जैसे-जैसे अंत निकट आता है, यीशु अपने प्रवचन का ध्यान एक व्यापक विश्व दृष्टिकोण से उन चीजों तक सीमित कर देता है जो सीधे उसके शिष्यों (ईसाइयों) को प्रभावित करती हैं। मार्ग मार्कर #5 - यीशु के शिष्यों को उसके नाम (प्रभु यीशु मसीह) के कारण सभी राष्ट्रों द्वारा क्लेश, मार डाला और नफरत किया जाएगा। मार्ग मार्कर #6 - कई शिष्य अपने विश्वास से दूर हो जाएंगे, नफरत करेंगे और एक दूसरे को धोखा देंगे। मार्ग मार्कर #7 - झूठे भविष्यद्वक्ता उठेंगे और बहुतों को गुमराह करेंगे। रूट मार्कर #8 - क्योंकि अराजकता बढ़ी है, ज्यादातर लोगों का प्यार ठंडा हो जाएगा। यीशु ने कहा, "परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसका उद्धार होगा।" मार्ग चिह्नक #9 - राज्य का सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो। यीशु ने कहा, "तब अंत आ जाएगा।" पाठ का बिंदु: यीशु के निर्देशों का पालन करें और आप गुमराह नहीं होंगे। आवेदन: 1600 ईस्वी के आसपास, जॉन केल्विन ने धर्मशास्त्र की एक प्रणाली विकसित की जिसे कई इंजील ईसाइयों द्वारा इस्तेमाल किए गए एक ही कथन के लिए संघनित किया गया है: "एक बार बचाया गया, हमेशा बचाया गया।" यदि ऐसा है, तो यीशु को अपने शिष्यों के गुमराह होने की चिंता क्यों थी? अधिकांश शिक्षाएँ यीशु की कही हुई बातों को नज़रअंदाज़ कर देती हैं या इसे गौण महत्व दे दिया जाता है। याद रखें, गुमराह किया जाना नेतृत्व से संबंधित है। आप किस पर विश्वास करते हैं या आप किसका अनुसरण करते हैं या आप भविष्य की घटनाओं के बारे में किसको सुनते हैं? _____

पाठ 48

संकेत परिचय: यीशु अपने शिष्यों के अनुसरण के लिए एक अंतिम समय का रोडमैप तैयार कर रहा है ताकि वे गुमराह न हों। बाकी दुनिया अपनी अंदरूनी जानकारी के लिए गुप्त नहीं है और अंत आने पर आश्चर्य होगा। यह जानते हुए कि उनकी वापसी अभी दूर है, यीशु ने मार्ग चिन्हों को रखना शुरू किया जिन्हें प्रेरित अपने जीवनकाल में पहचानने में सक्षम थे। उसने उन्हें भयभीत न होने का आश्वासन दिया, क्योंकि अंत निकट नहीं था। फिर उसने मार्करों का एक और सेट रखा ताकि भविष्य के शिष्यों को पता चले कि अंत निकट आ रहा है। उसने उन्हें जन्म के कष्टों की शुरुआत कहा। मार्करों का अगला सेट उनके शिष्य के ध्यान को उन चीजों की ओर निर्देशित करता है जो उनकी वापसी से पहले उनके साथ हो रही होंगी: क्लेश, धर्मत्याग, झूठे भविष्यद्वक्ता और अधर्म। जबकि संकेत कठिन समय की ओर संकेत करते हैं, वे उसके शीघ्र आने की आशा भी प्रदान करते हैं। जीसस डेट सेटर नहीं थे। वह जानता था कि उसकी वापसी के समय कई अलग-अलग कैलेंडर उपयोग में होंगे। वह यह भी जानता था कि पृथ्वी गोल है और किसी भी समय ग्रह पर चौबीस घंटे और दो दिन सहअस्तित्व में थे। इसलिए यीशु अपने आने के संबंध में अपने शिष्यों को जो चिन्ह छोड़ते हैं, उनमें तारीखें शामिल नहीं हैं, लेकिन वे अचूक हैं! स्क्रिप्चर पढ़ना: संकेत (मत्ती 24:15-31, मरकुस 13:14-27 और लूका 21:25-28) समूह चर्चा: एक रोड मैप को समझने के लिए आपको क्या करना होगा? _____ (मानचित्र पर उपयोग किए जा रहे प्रतीकों की व्याख्या करने वाली मानचित्र कुंजी खोजें) भविष्य के लिए यीशु के रोडमैप को समझने के लिए आपको क्या करना होगा? _____ (पुराने नियम से प्रतीकों की व्याख्या प्राप्त करें।) आज्ञाएँ: पाठक को समझने दें। जो यहूदिया में हैं वे पहाड़ों पर भाग जाएँ। जो घर की छत पर है उसे बाहर न जाने दें। अपने घर में।जो मैदान में हो, वह अपना वस्त्र लेने के लिए वापस न जाए।प्रार्थना करो कि तुम्हारी उड़ान सर्दियों में या सब्त के दिन न हो।उस पर विश्वास मत करो।देखो, मैंने तुम्हें पहले ही बता दिया है।मत करो उन पर विश्वास करो।सीधे हो जाओ और अपने सिर उठाओ। पाठ: मार्ग मार्कर # 10 - वीरानी का घृणा। यीशु ने कहा, "पाठक को समझने दो।" इस समय तक यीशु जिन चिन्हों का प्रयोग करते थे वे स्वभाव से सामान्य थे। हालाँकि वीरानी का घृणा बहुत विशिष्ट है और जब ऐसा होता है तो यह सर्वनाश की घटनाओं की एक श्रृंखला को चिह्नित करता है जो प्रभु यीशु मसीह की वापसी की ओर ले जाती है। यीशु के अनुसार, इस एकल घटना को समझना चाहिए। पवित्रशास्त्र के अंश जो वीरानी के घृणा का जिक्र करते हैं, दानिय्येल 9:27, 11:31 और 12:11 हैं। वे इस प्रकार पढ़ते हैं: “और वह एक सप्ताह (सात की अवधि) के लिए बहुतों के साथ अनुबंध करेगा, लेकिन सप्ताह के मध्य में (सात की अवधि) वह बलिदान और अनाज की भेंट को रोक देगा; और जो उजाड़ करता है, वह घिनौने कामोंके पंख पर चढ़ेगा, और जब तक उजाड़ करनेवाले पर उसका पूरा नाश, अर्थात जो ठहराया जाता है, उण्डेला न जाए।” (9:27) “उसके पास से बल उठेंगे, और पवित्रस्थान के गढ़ को अपवित्र करोगे, और नित्य बलिदान को दूर कर दोगे। और वे उजाड़ने की घृणित वस्तु को स्थापित करेंगे।” (11:31) “जिस समय से नित्य यज्ञ का लोप हो जाएगा और उजाड़ने का वास होगा, उस समय से 1,290 दिन होंगे। (12:11) उजाड़ने के लिए या तो एक तम्बू (तम्बू) या मंदिर अस्तित्व में होना चाहिए। घृणा तब होती है जब उसके भीतर कुछ रखा, खड़ा या स्थापित किया जाता है। मूल तम्बू (तम्बू) में केवल पाँच साज-सज्जा की अनुमति थी: सोने की वेदी (धूप की वेदी), सात शाखाओं वाली सोने की दीवट, रोटी की बारह रोटियों के साथ शोब्रेड की मेज, वाचा का सन्दूक और दया सीट। दानिय्येल 11:31 और 12:11 की भविष्यवाणियाँ यह भी संकेत करती हैं कि परमेश्वर के लिए नियमित बलिदान और भेंट बंद कर दी जाएंगी। इस प्रकार का घृणित कार्य एक बार पहले भी हुआ था, लेकिन दानिय्येल (8:9-14 और 12:11-12) की भविष्यवाणियों में इंगित पूरी अवधि के लिए

नहीं। 167 ईसा पूर्व में, एंटिओकस IV - एपिफेन्स (भगवान प्रकट) ने मंदिर में खुद की एक समानता स्थापित की, बलिदानों को रोक दिया और होमबलि की वेदी पर एक सुअर की बलि दी। मंदिर को साफ किया गया और तीन साल बाद 164 ईसा पूर्व में भगवान को समर्पित किया गया। मूल कहानी 1 मैकाबीज 4:36-61 की पुस्तक में मिलती है। हनुक्का का आठ दिवसीय यहूदी पर्व मंदिर के पुनर्समर्पण का जश्न मनाता है। प्रेरित पौलुस ने 2 थिस्सलुनीकियों 2:3-4 में वीरानी की घृणा को भी संदर्भित किया है। "कोई तुम्हें किसी रीति से धोखा न दे, क्योंकि वह [प्रभु का दिन] तब तक नहीं आएगा, जब तक कि धर्मत्याग पहले न आ जाए, और अधर्मी मनुष्य प्रगट न हो, जो विनाश का पुत्र है, जो विरोध करता और अपने आप को सब से ऊपर रखता है। भगवान या पूजा की वस्तु कहा जाता है, ताकि वह भगवान के मंदिर में अपना स्थान ले, खुद को भगवान के रूप में प्रदर्शित करें" यीशु के शिष्यों को पहले से ही पता चल जाएगा कि वीरानी का घृणा होने वाला है क्योंकि यीशु ने उन्हें प्रार्थना करने की आज्ञा दी है कि यह नहीं होगा सर्दियों में या सब्त के दिन होता है। और एक बार ऐसा होने पर वह आज्ञा देता है कि यहूदिया में रहने वाले चेले तुरन्त पहाड़ों पर भाग जाएं। वीरानी का घृणा महान क्लेश की अवधि की शुरुआत का प्रतीक है, जिसे पुराने नियम में याकूब की परेशानी के समय के रूप में जाना जाता है। मसीहाई उत्साह प्रचलन में रहेगा, क्योंकि बहुत से लोग मसीहा की प्रतीक्षा कर रहे होंगे। इसलिए यीशु ने अपने शिष्यों को चेतावनी दी है कि इस अवधि के दौरान झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता प्रकट होंगे। और वे बड़े बड़े चिन्ह और अद्भुत काम भी करेंगे। यीशु ने अपने शिष्यों को उनके पीछे न जाने की चेतावनी दी क्योंकि उनका आना सभी के लिए स्पष्ट होगा। मार्ग मार्कर #11 - स्वर्ग में संकेत। यीशु ने कहा, “परन्तु जब ये बातें होने लगें, तो सीधा हो जाना और अपने सिर ऊपर उठाना, क्योंकि तेरा छुटकारा निकट है।” यीशु के अनुसार ये स्वर्गीय चिन्ह बड़े क्लेश के बाद आने लगते हैं। वे उन घटनाओं को चिह्नित करते हैं जो तुरंत प्रभु के दिन से पहले होती हैं, पुराने नियम में अच्छी तरह से प्रलेखित हैं और इसमें शामिल हैं: सूर्य को काला कर दिया जाएगा। चाँद अपना प्रकाश नहीं देगा।आसमान से तारे गिरेंगे।स्वर्ग की शक्तियाँ हिल जाएँगी। “देखो, यहोवा का वह दिन आ रहा है, जब वह देश को उजाड़ देने के लिये क्रूर, और जलजलाहट और कोप का दिन है; और वह उसके पापियोंको उस में से नाश करेगा। क्योंकि आकाश के तारे और उनके नक्षत्र अपना प्रकाश नहीं चमकाएंगे; जब सूर्य उदय होगा तब वह अन्धकारमय होगा और चन्द्रमा अपना प्रकाश न बहाएगा। इस प्रकार मैं जगत को उसकी बुराई का, और दुष्टों को उनके अधर्म का दण्ड दूंगा; मैं अभिमानियों के अहंकार को भी समाप्त करूंगा और निर्दयी लोगों के अभिमान को दूर करूंगा। मैं नश्वर मनुष्य को चोखे सोने से और मनुष्यों को ओपीर के सोने से दुर्लभ बनाऊंगा। इस कारण मैं आकाश को थरथराऊंगा, और पृथ्वी अपने स्थान से हिल उठेगी, क्योंकि सेनाओं के यहोवा के कोप के दिन उसके जलजलाहट होगी।” (यशायाह 13:9-13) “मैं आकाश और पृथ्वी पर अद्भुत काम, लोहू, आग और धुएँ के स्तंभ दिखाऊँगा। यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले सूर्य अन्धियारा और चन्द्रमा लोहू हो जाएगा।” (योएल 2:30-31) रूट मार्कर #12 - मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा। मनुष्य के पुत्र का चिन्ह अंतिम चिन्ह है जिसे यीशु के चेले ढूंढ रहे हैं। हम जानते हैं कि वे इस चिन्ह की तलाश में होंगे क्योंकि यीशु ने उन्हें आज्ञा दी थी कि जब स्वर्ग के चिन्ह प्रकट होने लगें, तब वे सीधे (तैयार रहें) और अपने सिर ऊपर उठाएँ (आकाश की ओर देखें)। बहुत से लोग भ्रमित हैं कि यह चिन्ह क्या है लेकिन पवित्रशास्त्र से यह बिल्कुल स्पष्ट है। शब्द "मनुष्य का पुत्र" दानिय्येल 7:13-14 से लिया गया है। यह मसीहा के लिए एक सीधा हिब्रू संदर्भ है और यीशु ने लगातार इसका इस्तेमाल खुद के संदर्भ में किया है। "मैं रात के दर्शन में देखता रहा, और क्या देखा, कि आकाश के बादलों के साथ मनुष्य के पुत्र के समान एक आ रहा है, और वह अति प्राचीन के पास आया, और उसके साम्हने प्रस्तुत किया गया। और उसे प्रभुता, महिमा और एक राज्य दिया गया, कि सब जाति-

जाति के लोग, और जाति-जाति के लोग, और सब भाषा के लोग उसकी उपासना करें। उसका राज्य एक चिरस्थायी राज्य है जो टलता नहीं है; और उसका राज्य वह है जो नाश न होगा।" यीशु के चेले जिस चिन्ह की तलाश कर रहे हैं वह है "स्वर्ग के बादल"। ईसाइयों के रूप में हमें इसके बारे में पता होना चाहिए क्योंकि यह प्रेरितों के काम 1:9-11 की पुस्तक में यीशु के स्वर्गारोहण के विषय में लिखा गया था। "और ये बातें कहने के बाद, जब वे देखते थे तब वह ऊंचा हो गया, और एक बादल ने उसे उन के साम्हने से हटा लिया। और जब वे उसके जाते समय आकाश की ओर टकटकी लगाए देख रहे थे, तो क्या देखा, कि श्वेत वस्त्र पहिने हुए दो मनुष्य उनके पास खड़े हैं। उन्होंने यह भी कहा, "हे गलील के लोगों, तुम क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यह यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, ठीक वैसे ही आएगा जैसे तुमने उसे स्वर्ग में जाते देखा है।" यह कोई साधारण बादल नहीं है। यह शेखीना या महिमा का बादल है। यह वही बादल है जो इस्राएलियों को उनके जंगल में भटकने के लिए प्रेरित करता था, रात में आग का खंभा बन गया और परमेश्वर के मंदिर में भर गया। यह हमेशा ईश्वर की उपस्थिति का संकेत देता है। यीशु ने कहा कि इस समय पृथ्वी पर अन्धेरा हो जाएगा। तो इस बादल की उपस्थिति को किसी अन्य के लिए गलत नहीं माना जा सकता क्योंकि यह प्रकाश से भरा है। यीशु ने यह भी कहा कि उनका आगमन आकाश में एक प्रकाश की चमक के रूप में प्रकट होगा। यह स्पष्ट होने जा रहा है! तब यहोवा अपने दूतों को एक बड़ी तुरही के साथ भेजेगा और वे उसके चुने हुओं को आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक चारों दिशाओं से इकट्ठा करेंगे। 1 थिस्सलुनीकियों 4:16 में महान तुरही को "परमेश्वर की तुरही" और 1 कुरिन्थियों 15:52 में "आखिरी तुरही" भी कहा गया है। तुरही अपने आप में एक शोफर है। यह एक मेढ़े के सींगों से बनाया गया है क्योंकि परमेश्वर ने इसहाक के स्थान पर एक मेढ़ा प्रदान किया था जब इब्राहीम उसे बलिदान के रूप में पेश करने वाला था। इसलिए जब यह सुनाया जाता है, तो परमेश्वर के लोगों को उनके लिए उसके प्रावधान की याद दिलाई जाती है। शोफ़र को प्रभु के दो पर्वों (नियुक्त समय) में बजाया जाता है। योम तेरुआ - फूंकने का दिन (सींग) या चेतावनी का दिन पहली दावत का बाइबिल नाम है। यहूदी भी इस दिन को रोश हशनाह या "वर्ष का प्रमुख" कहते हैं क्योंकि यह सातवें महीने का पहला दिन है। वे इसे योम हज़िकारोन - स्मरण का दिन और योम हैडिन - न्याय के दिन के रूप में भी संदर्भित करते हैं। (देखें योएल 2:1-14) योम किप्पुर - प्रायश्चित का दिन दूसरा पर्व है। (देखें योएल 2:15-17) ये दो पर्व यमीम नोरैम - द डेज़ ऑफ़ अवे नामक परमेश्वर के प्रति लोगों के पश्चाताप की दस-दिवसीय अवधि की शुरुआत और अंत को चिह्नित करते हैं। जब यीशु ने महान तुरही का उल्लेख किया तो कुछ लोग उन शब्दों का अनुवाद "तुरही की बड़ी ध्वनि के साथ" के रूप में करते हैं। "महान ध्वनि" अनुवाद अच्छी तरह से काम करता है क्योंकि यह आखिरी नोट को संदर्भित करता है जो शोफर पर खेला जाता है: "तकिया गेडोला" - विस्तारित विस्फोट। नोट उड़ाने के दिन के अंत में शुरू होता है। यह जुबली वर्ष में प्रायश्चित के दिन के अंत में "द्वार के समापन" समारोह के दौरान पूरा होता है। इस ट्रम्प को लंबे समय तक यह सुनिश्चित करने के लिए उड़ाया जाता है कि जो कोई भी अपने पापों का पश्चाताप करना चाहता है उसे ऐसा करने का अवसर दिया जाएगा। चूँकि कोई भी व्यक्ति इतने लंबे समय (10 दिन) तक एक नोट नहीं बजा सकता है, इसे भगवान का तुरही भी माना जाता है। जब प्रेरित पौलुस "आखिरी तुरुप" का उल्लेख करता है तो उसके मन में तीन बातें होती हैं। आखिरी नोट खेला जा रहा है। आखिरी जुबली: जब लोगों को बंधन से मुक्त किया जाता है, तो उनके कर्ज रद्द कर दिए जाते हैं और उनकी जमीन वापस कर दी जाती है। हिब्रू परंपरा: भगवान ने दो सींगों को इसहाक के स्थान पर दिए गए बलिदान से संरक्षित किया। उसने एक सींग (पहला) सिनाई पर्वत पर बजाया और दूसरा (आखिरी) तब बजेगा जब वह युग के अंत में मसीहा के आने से अपने लोगों को छुड़ाएगा। सबक का बिंदु: समय के संकेतों को समझें।

सतर्क रहें परिचय:यीशु भविष्य के बारे में चिंतित है। वह चाहता है कि उसके शिष्य उसकी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहें। इसलिए वह अपने शिष्यों को गुमराह न होने की चेतावनी देते हुए ओलिवेट प्रवचन शुरू करते हैं, फिर उन्हें रास्ते में रोड मार्करों के साथ भविष्य का नक्शा देते हैं और उन्हें सतर्क रहने के लिए कहकर समाप्त करते हैं। इसकी तुलना कैम्पिंग ट्रिप के आधुनिक रूपक से की जा सकती है। जॉन सप्ताहांत के लिए पसंदीदा कैंपसाइट में जा रहा है और शुक्रवार की रात को अपने दोस्त टेड से मिलने का इरादा रखता है। जॉन कहते हैं, "टेड, मुझे बहुत खुशी है कि आप मेरे पसंदीदा कैंपसाइट में मेरे साथ समय बिताना चाहते हैं, लेकिन चूंकि हम अलग-अलग समय पर जा रहे हैं, इसलिए मैं आपको निर्देश देता हूं। सबसे पहले, यह मेरे कैंपसाइट के लिए मुश्किल हो रहा है, इसलिए मैं आपको जो बताने जा रहा हूं, उस पर पूरा ध्यान दें। किसी और से यह पूछना आपके लिए अच्छा नहीं होगा कि मेरा शिविर कहाँ है क्योंकि वे नहीं जानते। अगर आप उनकी बात सुनते हैं तो आप गुमराह हो जाएंगे। शहर के ठीक उत्तर में पुरानी गंदगी वाली सड़क लें ... शुरुआत में इसकी तरह की ऊबड़-खाबड़ फिर आप सड़क पर एक कांटे पर आ जाएंगे ... सुनिश्चित करें कि आप सही कांटा लेते हैं। यह सड़क आपको जंगल में ले जाएगी। जब आप जंगल में जाते हैं तो मार्ग कठिन हो जाता है, क्योंकि कई अलग-अलग अचिह्नित वन सड़कें हैं जो एक व्यक्ति ले सकता है। जैसे ही आप जंगल में प्रवेश करते हैं, अपनी बाईं ओर तीसरी सड़क लें। झील पर केबिन में दाएँ मुड़ें। फिर लगभग दो मील चलें और आप सड़क के बाईं ओर एक बड़े शिलाखंड पर आएँगे... अगली सड़क को दाईं ओर ले जाएँ। यह यहाँ से एक कठिन सवारी है और आप सोच सकते हैं कि आप गलत रास्ते पर हैं। लेकिन बस चलते रहो और थोड़ी देर बाद सड़क एक विस्तृत घास के मैदान में चली जाएगी जहाँ बहुत सारे लोग डेरा डाले हुए होंगे। अगर आप उनसे पूछें कि मैं कहां हूं, तो वे आपको गलत दिशा में इंगित करेंगे और आप खो जाएंगे। घास के मैदान से दूर की ओर ड्राइव करें। वहां आपको सड़क के उस पार एक बड़ा गिरा हुआ पेड़ दिखाई देगा। इसके चारों ओर दाईं ओर घूमें और जारी रखें। तब तक अंधेरा हो जाएगा। तब तक गाड़ी चलाना जारी रखें जब तक कि आप एक ऐसे समाशोधन तक नहीं पहुंच जाते, जहां से चट्टान दिखाई देती है। उस समय आप अपने सभी सितारों के साथ आकाश का एक व्यापक दृश्य प्राप्त कर सकते हैं। और वहाँ से भी तुम मेरे कैम्प फायर की रोशनी देख सकते हो। आप यात्रा में थके हुए होंगे लेकिन सतर्क रहें, क्योंकि यदि आप नहीं हैं: आप सड़क से भाग सकते हैं या एक मार्कर को याद कर सकते हैं और आप कैंपसाइट पर कभी नहीं पहुंचेंगे। यीशु सतर्क रहने के लिए अडिग है। ओलिवेट प्रवचन के दौरान वह बीस निर्देश जारी करता है कि उसके शिष्यों को पालन करना चाहिए। अंतिम दस सतर्कता के मुद्दे से संबंधित हैं। पवित्रशास्त्र पढ़ना: सतर्क रहें (मत्ती 24:32-25:13) (मरकुस 13:28-37) (लूका 21:29-36) समूह चर्चा: वर्तमान में संयुक्त राज्य अमेरिका के भीतर युगांतशास्त्र का एक प्रचलित दृष्टिकोण है (का अध्ययन) समाप्ति समय की घटनाएँ)। इसे लोकप्रिय रूप से "पूर्व-जनजाति उत्साह" कहा जाता है और यह धर्मशास्त्र की एक प्रणाली से उत्पन्न होता है जिसे युगवाद के रूप में जाना जाता है। 1827 के वसंत में मार्गरेट मैकडोनाल्ड द्वारा दी गई भविष्यवाणी को सुनने के बाद, उन्होंने 1827 में इंग्लैंड के जॉन नेल्सन डार्बी द्वारा धर्मशास्त्र की डिस्पेंसेशनल प्रणाली विकसित की। राज्य जब सीआई स्कोफिल्ड ने इसे 1917 की अपनी संदर्भ बाइबिल में शामिल किया। उसके बाद, इसे डलास थियोलॉजिकल सेमिनरी और इसके एक छात्र में पढ़ाया जाने लगा; हाल लिंडसे ने अपनी पुस्तक द लेट ग्रेट प्लैनेट अर्थ (1970) से इसे लोकप्रिय बनाया। पूर्व-क्लेश-पूर्व मेघारोहण स्थिति के चार प्रमुख घटक हैं: सात साल के क्लेश काल से पहले ईसाइयों का स्वर्गारोहण (हवा में प्रभु से मिलने के लिए पकड़ा गया) किया जाएगा। कि मेघारोहण यीशु मसीह के दूसरे आगमन से पहले होता है। रहस्योद्घाटन "गुप्त" है। (यह किसी को दिखाई नहीं देगा।

जो बचे हैं वे या तो यहूदी हैं या अविश्वासी हैं और वे पाएंगे कि सभी ईसाई पलक झपकते ही गायब हो गए हैं।) कि मेघारोहण निकट है। (यह किसी भी समय हो सकता है। इसके घटित होने से पहले कोई संकेत नहीं होना चाहिए।) पूर्व-क्लेश उत्साह की स्थिति के आधार पर जैसा कि ऊपर कहा गया है, कृपया निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। यदि यीशु की वापसी आसन्न थी (किसी भी समय हो सकती है) क्यों' टी वह ऐसा कहते हैं? _____ उसने अपने शिष्यों को भविष्य की विशिष्ट घटनाओं के बारे में बताने की जहमत क्यों उठाई? _____ उसने उन्हें गुमराह न होने के लिए सावधान क्यों किया? _____ जब शिष्यों ने घटनाओं को होते हुए देखा तो उन्होंने उन्हें विशिष्ट आदेश क्यों जारी किए? _____ चूंकि इस योजना के अनुसार मेघारोहण से पहले किसी चिन्ह की आवश्यकता नहीं है, प्रेरित पौलुस ने यह क्यों कहा कि यीशु के साथ हमारा एकत्र होना तब तक नहीं होगा जब तक कि धर्मत्याग और अधर्म के व्यक्ति का खुलासा नहीं हो जाता? _____ यीशु ने अपने शिष्यों को सतर्क रहने की आज्ञा दी।क्यों? _____ यदि आस्तिक सतर्क है या नहीं, इससे क्या फर्क पड़ता है, क्योंकि मेघारोहण एक रहस्य है? _____ उन्हें किसके लिए सतर्क रहना है? _____ यदि ईसाइयों का मेघारोहण मसीह के आने से पहले होता है तो यीशु या किसी प्रेरित या भविष्यद्वक्ता ने किसी को क्यों नहीं बताया या इसे लिख क्यों नहीं दिया? _____

_____ आज्ञाएँ: अब अंजीर के पेड़ के दृष्टांत को सीखो। पहचानो कि वह पास है, ठीक दरवाजे पर। इसलिए सतर्क रहो।लेकिन इस पर ध्यान रखना। इस कारण से तुम भी तैयार रहो।सावधान रहो, सतर्क रहो इसलिए सतर्क रहें।सतर्क रहें।सावधान रहें।लेकिन हर समय सतर्क रहें, प्रार्थना करते रहें। सबक: अपने शिष्यों को यह बताने के तुरंत बाद कि वह पृथ्वी पर कैसे लौटेंगे, यीशु ने उन्हें अंजीर के पेड़ के दृष्टांत को सीखने का निर्देश दिया। प्रभाव के लिए एक दृष्टांत का उपयोग करने के बारे में बात करें! कुछ ही घंटे पहले, चेले एक अंजीर के पेड़ के पास चले थे जिसे यीशु ने एक दिन पहले शाप दिया था और देखा कि वह एक दिन में पूरी तरह से जड़ से सूख गया था। यीशु ने अंजीर के पेड़ को शाप देने का कारण यह था कि उसने एक झूठा चिन्ह दिया था। वर्ष का समय अप्रैल था। आम तौर पर, अंजीर के पेड़ जुलाई या अगस्त तक अपने पत्ते नहीं छोड़ते हैं और फल अक्टूबर में पक जाते हैं। हालाँकि, इसके पत्तों के आने के साथ ही अंजीर का पेड़ भी उसी समय अपना फल देता है। इसलिए यीशु पेड़ के पास गया और देखने लगा कि क्या उस पर कोई फल है। चूँकि पेड़ पर कोई फल नहीं था, यीशु जानता था कि यह एक विपथन है और उसने उसे श्राप दिया। यहूदी संस्कृति में यह सामान्य ज्ञान था कि एक अंजीर का पेड़ गर्मी के समय में निकल जाता है। इसलिए यह सभी लोगों के लिए एक व्यावहारिक संकेत के रूप में कार्य करता था कि गर्मी निकट थी, हाथ में या दरवाजे पर। उसी तरह यीशु चाहते हैं कि उनके शिष्यों को उनके आने के समय के बारे में सामान्य ज्ञान हो। आकाश में चिन्ह: सूर्य और चंद्रमा अपना प्रकाश नहीं दे रहे हैं और आकाश से गिरने वाले तारे, उनके शीघ्र लौटने के अंजीर के पेड़ की तरह एक संकेत के रूप में काम

करेंगे। यह दरवाजे के पास, हाथ में या दाहिनी ओर है। इन स्वर्गीय चिन्हों की वैधता मसीह की वापसी के अग्रदूत होने के बारे में कोई संदेह नहीं होना चाहिए, क्योंकि सभी तीन समदर्शी सुसमाचार स्वर्ग में संकेतों को तुरंत दर्ज करते हैं जिसके बाद अंजीर के पेड़ का दृष्टान्त आता है। सतर्कता का मुद्दा अंजीर के पेड़ के दृष्टांत के इर्द-गिर्द घूमता है। जीसस जानते हैं कि एक व्यक्ति दिन के 24 घंटे, सप्ताह के 7 दिन सतर्क नहीं हो सकता और वह अपने शिष्यों को भी ऐसा करने के लिए नहीं कह रहा है। हालांकि, वह उन्हें बता रहा है कि कब सतर्क होना है। अंजीर के पेड़ की तरह, जब आप देखते हैं कि आकाश में चिन्ह आने लगे हैं, तो सावधान हो जाना, आपका मोचन निकट आ रहा है। वास्तव में, यीशु ने कहा था कि जब से स्वर्गीय चिन्हों का आना शुरू होता है, तब तक जब तक उनका आगमन एक पीढ़ी के भीतर नहीं होगा। सतर्क होने की अवधारणा को मत्ती (24:37-41) द्वारा पुष्ट किया जाता है जब वह मनुष्य के पुत्र के आने की तुलना नूह के दिनों से करता है। अधिकांश ईसाई इस बात से अवगत नहीं हैं कि नूह को एक भविष्यवाणी का संकेत दिया गया था कि कब सतर्क होना चाहिए या सन्दूक में प्रवेश करने के लिए तैयार होना चाहिए। आइए उसकी कहानी पर करीब से नज़र डालें। इसकी शुरुआत नूह के परदादा हनोक से होती है, जो आदम से सातवीं पीढ़ी है। यहूदा 14 के अनुसार हनोक एक नबी था और वह परमेश्वर के साथ चलता था। अपने 365वें वर्ष में वे बिना मरे भगवान के पास गए। हनोक भविष्यद्वक्ता होने के कारण अपने पुत्र का नाम मतूशेलह रखा। मतूशेलह नाम का मूल अर्थ "उसकी मृत्यु लाएगा" या उस विषय का कुछ प्रकार है। यहूदी संतों के अनुसार मतूशेलह नूह के सन्दूक में प्रवेश करने के लिए परमेश्वर का वचन प्राप्त करने से सात दिन पहले मर गया। फिर वह बाढ़ शुरू होने से सात दिन पहले सन्दूक में रहा (उत्पत्ति 7:4)। यद्यपि नूह ने सन्दूक का निर्माण पूरा कर लिया था, लेकिन मतूशेलह की मृत्यु तक उसे "सचेत" या "तैयार" होने की आवश्यकता नहीं थी, जो कि उसका भविष्यसूचक संकेत था कि बाढ़ आ रही थी। तब नूह के सन्दूक में प्रवेश करने के लिए परमेश्वर का वचन आया, जिसके द्वारा वह और उसका परिवार आने वाले परमेश्वर के क्रोध से बच जाएगा। इसी तरह, ईसाइयों को स्वर्गीय संकेतों को देखने पर "सचेत" या "तैयार" होना है, यह पहचानते हुए कि भगवान का न्याय निकट आ रहा है। तब परमेश्वर का वचन (यीशु मसीह) उसके घराने को आने वाले परमेश्वर के क्रोध से बचाने के लिए आएगा। अंजीर के पेड़ के दृष्टांत से शुरू करते हुए, यीशु अपने शिष्यों को सतर्क रहने के लिए प्रोत्साहित करना शुरू करते हैं। जैसा कि वह ऐसा करता है, यीशु अपनी पूरी टिप्पणी में सतर्कता के साथ तीन अन्य अवधारणाओं को भी बुनते हैं: 1) जो उसके शिष्य नहीं हैं, वे नहीं जानेंगे कि क्या होने वाला है। 2) दिन और घंटे किसी को पता नहीं चलेगा। 3) अँधेरा हो या रात। चूँकि जो लोग यीशु के शिष्य नहीं हैं, वे उसके प्रकट होने की तलाश में नहीं होंगे, स्वर्ग में चिन्हों के महत्व का उनके लिए समान अर्थ नहीं होगा। यीशु की वापसी के दिन या घंटे के बारे में किसी को पता नहीं चलेगा क्योंकि ग्रह पृथ्वी पर किसी भी समय हमेशा दो दिन और चौबीस घंटे मौजूद होते हैं। हिब्रू परंपरा के अनुसार पुरुषों का न्याय योम तेरुआ नामक प्रभु के पर्व पर शुरू होता है, जो उड़ाने का दिन (सींग) होता है। इस पर्व की एक अनूठी विशेषता यह है कि यह दो दिनों तक मनाया जाता है क्योंकि यह सातवें महीने की अमावस्या के प्रकाश के दृश्य दर्शन पर आधारित था। यीशु के अनुसार जब वह आएगा तो अंधेरा हो जाएगा और यह प्रभु के दिन के बारे में पुराने नियम के कई शास्त्रों के माध्यम से सामने आया है। “देखो, यहोवा का वह दिन आ रहा है, जब वह देश को उजाड़ देने के लिये क्रूर, और जलजलाहट और कोप का दिन है; और वह उसके पापियोंको उस में से नाश करेगा। क्योंकि आकाश के तारे और उनके नक्षत्र अपना प्रकाश नहीं चमकाएंगे; सूर्य के उदय होते ही अन्धेरा हो जाएगा, और चन्द्रमा अपना प्रकाश न बहाएगा।” (यशायाह 13:9-10) “क्योंकि दिन निकट है, यहोवा का दिन निकट है; वह बादलों का दिन होगा, और जाति जाति के लिये विनाश का समय होगा।” (यहेजकेल 30:3) सिय्योन में नरसिंगा फूंकना, और मेरे पवित्र पर्वत पर

ललकारना! यहोवा का दिन आने के कारण देश के सब निवासी कांप उठें; निश्चय वह निकट है, अन्धकार और अन्धकार का दिन, और बादलों का और घोर अन्धकार का दिन। (योएल 2:1-2) “क्योंकि निर्णय की तराई में यहोवा का दिन निकट है। सूरज और चाँद काले हो जाते हैं और तारे अपनी चमक खो देते हैं। यहोवा सिय्योन से गरजता है, और यरूशलेम से अपना शब्द सुनाता है, और आकाश और पृथ्वी थरथराते हैं। परन्तु यहोवा अपनी प्रजा का गढ़ और इस्राएलियों का गढ़ है।” (योएल 3:14-16) "क्या यहोवा का दिन उजियाले की सन्ती अन्धकार और अन्धकार का न होगा, और उस में कोई उजियाला न होगा?" (आमोस 5:20) हे भाइयो, अब समय और युगों के विषय में तुझे कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं। क्योंकि तुम आप ही भली भांति जानते हो, कि यहोवा का दिन ऐसा आएगा, जैसे रात में चोर आता है। जबकि वे कह रहे हैं, "शांति और सुरक्षा!" तब उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा, जैसे गर्भवती स्त्री को प्रसव पीड़ा होती है, और वे बच न सकेंगी। परन्तु हे भाइयो, तुम अन्धकार में नहीं हो, कि वह दिन चोर की नाईं तुम पर छा जाए; क्योंकि तुम सब ज्योति के पुत्र और दिन के पुत्र हो। हम न रात के हैं, न अन्धकार के; सो हम औरों की नाईं न सोएं, वरन चौकस और सचेत रहें। क्योंकि जो सोते हैं, वे रात को सोते हैं, और जो पियक्कड़ होते हैं, वे रात को पियक्कड़ हो जाते हैं। परन्तु जब से हम दिन के हैं, हम विश्वास और प्रेम की झिलम पहिने, और उद्धार की आशा का टोप पहिने हुए, सचेत रहें। क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिए नहीं, परन्तु हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करने के लिए नियत किया है, जो हमारे लिए मर गया, कि हम जाग रहे हों या सोए हुए, हम उसके साथ एक साथ रहेंगे। (1 थिस्सलुनीकियों 5:1-10) सबक का बिंदु: जब आप आकाश में चिन्ह देखें तो सतर्क हो जाएं।

पाठ 50

प्रभु की मेज पर फसह का दृश्य परिचय: “और जब समय आया तो वह भोजन करने के लिए, और प्रेरित उसके साथ लेटे रहे। और उस ने उन से कहा, मैं ने बड़ी लालसा से यह चाहा है, कि दुख भोगने से पहिले तुम्हारे साथ यह फसह खाऊं, क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जब तक यह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो जाए, तब तक मैं इसे फिर कभी न खाऊंगा। "द लास्ट सपर" के रूप में। यह उसी के समान एक अनुष्ठान का पालन करता है जिसे यहूदी लोग आज भी उपयोग करते हैं। इस अनुष्ठान भोजन के लिए शब्द "सेडर" है, जिसका अर्थ है, "आदेश"। इसे इसलिए कहा जाता है क्योंकि एक विशिष्ट आदेश है भोजन में भाग लेने के बाद होने वाली घटनाओं के बारे में। मैंने इस पाठ को एक फसह की पालकी के व्यक्तिगत तत्वों को दिखाने के लिए समर्पित करने का फैसला किया है जो उन्हें अंतिम भोज में हुई घटनाओं के साथ ओवरले कर रहा है। पाठ कुछ पृष्ठभूमि की जानकारी के साथ छात्र को प्रदान करके शुरू होता है और फिर फसह के भोजन के वास्तविक क्रम के लिए आगे बढ़ता है। फसह सेडर के प्रत्येक तत्व को उसके हिब्रू नाम और अंग्रेजी व्याख्या द्वारा पहचाना जाता है। इसके बाद सेडर में उस बिंदु पर क्या होता है, इसका विवरण दिया जाता है और फिर घटना को किस के साथ ओवरले करता है हे अंतिम भोज में हुआ। स्क्रिप्चर पढ़ना:(मैथ्यू 26:20-30) (मरकुस 14:17-26) (लूका 22:14-30) (यूहन्ना 13:1-17:26) द लास्ट सपर की साइट: द लास्ट सपर हुआ। ऊपरी कक्ष में। यह यरूशलेम के दक्षिण-पश्चिमी भाग में सिय्योन पर्वत नामक पहाड़ी की चोटी पर स्थित है। ऊपरी कक्ष सीधे किंग डेविड के मकबरे के ऊपर बैठता है। दाखरस के प्याले: शास्त्रों में दाखरस खुशी का प्रतीक है। फसह के दिन, प्रतिभागी चार कप दाखरस पीते हैं। प्रत्येक प्याला उनके लिए भगवान के उद्धार के एक पहलू को दर्शाता है। अखमीरी रोटी: रोटी पवित्रशास्त्र में भोजन का प्रतीक है, शरीर में जीवन को बनाए रखने का स्रोत है। फसह के दिन प्रतिभागी भोजन के दौरान अखमीरी रोटी खाते हैं। ट्राइक्लिनियम: (अंतिम भोज बैठने की व्यवस्था आरेख देखें) जिस मेज पर यीशु और उनके शिष्यों ने अंतिम भोज खाया, उसे ट्राइक्लिनियम या लेटने की मेज कहा जाता है। भोजन के दौरान, अपनी बाईं कोहनी पर आराम करने

और दाहिने हाथ से खाने का रिवाज था। मेज का बाईं ओर का पंख सबसे महत्वपूर्ण था। मेजबान अपने दाहिने और बाएं हाथों (# 2 - जूडस और # 3 - जॉन) पर सम्मान की स्थिति के साथ अंत (# 1 - यीशु) से दूसरे स्थान पर स्थित था। लास्ट सपर से कुछ समय पहले सम्मान के ये पद बातचीत का विषय थे। तब जब्दी के पुत्रों की माता अपके पुत्रों समेत यीशु के पास दण्डवत् और बिनती करने आई। और उस ने उस से कहा, तू क्या चाहती है? उसने उस से कहा, आज्ञा दे, कि तेरे राज्य में मेरे ये दोनों पुत्र एक तेरे दाहिनी ओर और एक तेरी बाईं ओर बैठें। परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, “तुम नहीं जानते कि तुम क्या पूछ रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जो मैं पीने जा रहा हूँ?” उन्होंने उससे कहा, "हम सक्षम हैं।" उस ने उन से कहा, मेरा प्याला तुम पीना; परन्तु मेरे दाहिनी ओर और मेरी बायीं ओर बैठना, यह देने को मेरा नहीं, परन्तु उनके लिये है जिनके लिये यह मेरे पिता ने तैयार किया है।” (मत्ती 20:20-23) सम्मान का अतिथि स्थिति (#2 - यहूदा) पर स्थित था और कम से कम महत्व की स्थिति दक्षिणपंथी (#4 - पीटर) के अंत में स्थित थी। "और वह निमंत्रित अतिथियों से दृष्टान्त कहने लगा, जब उस ने देखा, कि वे किस रीति से खाने की मेज पर से आदर के स्थान चुन रहे हैं, और उन से कहा, जब कोई तुम्हें ब्याह के भोज में बुलाए, तो आदर का स्थान न लेना। , क्योंकि तुझ से अधिक प्रतिष्ठित किसी को उसके द्वारा निमन्त्रित किया गया हो सकता है, और वह जिसने तुम दोनों को आमंत्रित किया है, वह आकर तुमसे कहेगा, 'इस आदमी को अपना स्थान दो,' और फिर अपमान में आप अंतिम स्थान पर कब्जा करने के लिए आगे बढ़ते हैं। परन्तु जब तुम बुलाए जाते हो, तो जाकर अन्तिम स्थान पर जा बैठो, कि जिस ने तुम्हें निमंत्रित किया है, वह आए, तो तुम से कहे, हे मित्र, ऊपर जा; तब जितने तेरे साय भोजन करनेवाले हों, उन सभोंके साम्हने तेरा आदर होगा। क्योंकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाता है, वह छोटा किया जाएगा, और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वह ऊंचा किया जाएगा।” (लूका 14:7-11) अंतिम भोज बैठने की व्यवस्था (ट्रिक्लिमियम) मेज़बान - यीशु मसीहअतिथि सम्मान - यहूदा इस्करियोतीजॉन पीटर द सेडर कादेश: पवित्रीकरण की प्रार्थना या त्योहार के दिन का आशीर्वाद। दाखरस का पहला प्याला धन्य है। और जब उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, तब कहा, इसे लो और आपस में बांटो; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि अब से जब तक परमेश्वर का राज्य न आए, तब तक मैं दाख का फल नहीं पीऊंगा। (लूका 22:17-18) उर-हत्ज़: धोने से शुद्धिकरण। भोजन में भाग लेने से पहले प्रतिभागी अपने हाथ और पैर धोते हैं। यीशु, यह जानते हुए कि पिता ने सब कुछ अपने हाथों में दे दिया था, और वह बाहर आया था और परमेश्वर की ओर से लौटकर परमेश्वर के पास जा रहा था, और भोजन पर से उठकर अपके वस्त्र पहिनाए, और एक तौलिये लेकर कमर बान्धकर हौले में जल उंडेल दिया, और चेलोंके पांव धोकर उन से पोंछने लगा और जिस तौलिये से उसकी कमर पक्की हुई थी, वह शमौन पतरस के पास आया, और उस से कहा, हे प्रभु, क्या तू मेरे पांव धोता है? यीशु ने उत्तर दिया और उससे कहा, "मैं जो कुछ करता हूं, वह अब तुम नहीं समझते, परन्तु तुम आगे चलकर समझोगे।" पतरस ने उससे कहा, “तू मेरे पांव कभी न धोएगा!” यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि यदि मैं तुझे न धोऊं, तो मुझ में तेरा कुछ भाग नहीं। शमौन पतरस ने उस से कहा, हे प्रभु, तो मेरे पांव ही नहीं, वरन मेरे हाथ और मेरा सिर भी धो ले। यीशु ने उससे कहा, “जो स्नान कर चुका है, उसे केवल अपने पांव धोने की आवश्यकता है, परन्तु वह पूरी तरह से शुद्ध है; और तुम शुद्ध हो, परन्तु तुम सब के सब नहीं।” क्योंकि वह उसे जानता था जो उसे पकड़वा रहा था, इस कारण उसने कहा, "तुम सब शुद्ध नहीं हो।" सो जब उस ने उनके पांव धोए, और अपके वस्त्र लिये, और फिर मेज पर लेटा, तब उस ने उन से कहा, क्या तुम जानते हो कि मैं ने तुम्हारे साथ क्या किया है? तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो, और तुम ठीक कहते हो, क्योंकि मैं यदि मैं यहोवा और गुरु ने तुम्हारे पांव धोए, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना चाहिए। क्योंकि मैं ने तुम को उदाहरण दिया, कि जैसा मैं ने तुम से किया वैसा ही तुम भी करो। मैं तुम से सच सच कहता हूं दास अपने स्वामी से

बड़ा नहीं होता, और न भेजने वाला अपने भेजनेवाले से बड़ा होता है। यदि तुम ये बातें जानते हो, तो धन्य हो, यदि तुम उन पर चलते हो, तो मैं तुम सब की चर्चा नहीं करता। जिन्हें मैं ने चुना है, परन्तु यह है कि पवित्रशास्त्र का वचन पूरा हो, 'जो मेरी रोटी खाता है, उसने मेरे विरुद्ध अपनी एड़ी उठाई है।' अब से मैं तुम्हें इसके आने से पहले बताता हूं, ताकि जब यह हो, तुम विश्वास करो कि मैं वही हूं। मैं तुम से सच सच कहता हूं, जो मेरे भेजे हुए को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है, और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजने वाले को ग्रहण करता है। (यूहन्ना 13:3-20) कार्पस: सब्जी - पहली सूई। एक हरी सब्जी को खारे पानी में डुबोया जाता है और फिर प्रतिभागियों द्वारा खाया जाता है। यह यहूदी लोगों को याद दिलाता है कि फसह से पहले मिस्र में जीवन (हरी सब्जी) भरा हुआ था आँसू (नमक का पानी)। यीशु ने कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूं कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा।" वे बहुत दुखी हुए, और वे सब उससे कहने लगे, “हे प्रभु, निश्चय मैं नहीं?” और उसने उत्तर दिया, "जिसने मेरे साथ कटोरे में अपना हाथ डुबोया वह वही है जो मुझे पकड़वाएगा। मनुष्य का पुत्र जाने के लिए है, जैसा कि उसके बारे में लिखा गया है; परन्तु हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र धोखा दिया गया है! यह उस आदमी के लिए अच्छा होता अगर वह पैदा नहीं हुआ होता। और यहूदा, जो उसे पकड़वा रहा था, ने कहा, “हे रब्बी, निश्चय ही यह मैं नहीं हूँ?” यीशु ने *उससे कहा, "तूने ही कहा है।" (मत्ती 26:21-25) मरोर: कड़वी जड़ी-बूटियाँ - दूसरी सूई। कड़वी जड़ी-बूटियाँ (रोमेन लेट्यूस या ताज़ी पिसी हुई सहिजन) को मीठे हरोसेट में डुबोया जाता है और फिर प्रतिभागियों द्वारा खाया जाता है। यीशु के स्तन पर उनका एक लेटा हुआ था। चेले, जिन से यीशु प्रेम रखता था: शमौन पतरस ने उस की ओर इशारा करके कहा, "हमें बता, कि वह किसके विषय में कह रहा है।" उस ने यीशु की छाती पर यों ही झुककर उस से कहा, हे प्रभु, कौन है यीशु ने उत्तर दिया, "यही वह है जिसके लिए मैं निवाला डुबोकर उसे दूंगा।" तब उस ने निवाला डुबोकर शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा को दिया। और उसके बाद तब शैतान ने उस में प्रवेश किया। तब यीशु ने उस से कहा, जो कुछ तू करता है, वह फुर्ती से कर। अब जो भोजन करने बैठे थे उन में से कोई न जानता था कि उस ने उस से यह किस प्रयोजन से कहा है। यहूदा के पास पैसे का डिब्बा था, जो यीशु ने उस से कहा था, "भोज के लिथे जो कुछ हमें चाहिए वह मोल ले लो"; वरना वह गरीबों को कुछ दे। सो वह निवाला पाकर तुरन्त निकल गया; और रात हो गई थी। (यूहन्ना 13:23-30) याचत्ज़: रोटी तोड़ना। सफेद लिनेन में लपेटकर अखमीरी रोटी के तीन टुकड़े (मत्जा) तैयार किए जाते हैं और बीच वाले को दो टुकड़ों में तोड़ दिया जाता है। भोजन समाप्त होने के बाद तक इन दो टुकड़ों में से बड़ा छिपा हुआ है। इसे मिठाई (afikomen) के रूप में खाया जाता है। टूटे हुए टुकड़ों में से छोटे टुकड़े अन्य दो मूल टुकड़ों के साथ फिर से सफेद लिनन में संलग्न हैं। उन्हें मोत्ज़ी, मात्ज़ह के नाम से जानी जाने वाली सेवा के दौरान खाया जाएगा, जो मुख्य भोजन का हिस्सा है। और जब उस ने कुछ रोटी ली, और धन्यवाद किया, तो उसे तोड़ी, और यह कहकर उन्हें दी, कि यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिथे दी गई है; मेरे स्मरण में ऐसा ही करो। (लूका 22:19) मैगीड: फसह की कहानी सुनाना। फसह की कहानी निर्गमन की पुस्तक में पाई जाती है और बताती है कि कैसे परमेश्वर ने अपने लोगों को बंधन से छुड़ाया और उन्हें वादा किए हुए देश में ले गए। दाखरस का दूसरा प्याला। मह निश्ताना: चार प्रश्न। चार प्रश्न मैगीड (फसह की कहानी) का हिस्सा हैं और आमतौर पर बच्चों द्वारा पूछे जाते हैं। प्रश्न इस तरह से पूछे जाते हैं कि उत्तर फसह की कहानी बताते हैं। चार प्रश्न, शिष्यों ने यीशु से पूछा: साइमन पीटर - "भगवान, आप कहाँ जा रहे हैं?" थॉमस - "भगवान, हम नहीं जानते कि आप कहाँ जा रहे हैं, हम रास्ता कैसे जानते हैं?" फिलिप - "भगवान, हमें पिता दिखाओ, और यह हमारे लिए पर्याप्त है।" यहूदा (इस्करियोती नहीं) - "हे प्रभु, तब क्या हुआ कि तू अपने आप को हम पर प्रगट करने जा रहा है, न कि संसार पर?" जब वह बाहर चला गया, तो यीशु ने कहा, "अब मनुष्य के पुत्र की महिमा हुई है, और परमेश्वर की महिमा उस में हुई है;

यदि परमेश्वर उस में महिमा करता है, तो परमेश्वर भी अपने आप में उसकी महिमा करेगा, और तुरंत उसकी महिमा करेगा। छोटे बच्चों, और मैं तेरे संग कुछ दिन और हूं: तू मुझे ढूंढ़ेगा, और जैसा मैं ने यहूदियोंसे कहा था, वैसा ही अब तुम से भी कहता हूं, कि जहां मैं जाता हूं वहां तुम नहीं आ सकते। मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो, कि तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि एक दूसरे से प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो।" शमौन पतरस ने उस से कहा, हे प्रभु, तू कहां जा रहा है? यीशु ने उत्तर दिया, "जहाँ मैं जाता हूँ, वहाँ तुम अभी मेरे पीछे नहीं हो सकते, परन्तु बाद में तुम्हारे पीछे हो लेना।" पतरस ने उस से कहा, हे प्रभु, मैं अभी तेरे पीछे क्यों नहीं चल सकता? मैं तेरे लिथे अपना प्राण दूंगा। यीशु ने उत्तर दिया, क्या तू मेरे लिये अपना प्राण देगा? मैं तुझ से सच सच कहता हूं, कि जब तक तू तीन बार मेरा इन्कार न करे तब तक मुर्गा बांग नहीं देगा। तेरा मन व्याकुल न हो; परमेश्वर पर विश्वास कर, मुझ पर भी विश्वास कर। . मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुम से कह देता, क्योंकि मैं तुम्हारे लिथे स्थान तैयार करने को जाता हूं, और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिथे स्थान तैयार करूं, तो फिर आकर ग्रहण करूंगा तुम मेरी ओर, कि जहां मैं हूं वहां तुम भी रहो। और जहां मैं जाता हूं वहां का मार्ग भी तुम जानते हो।" थोमा ने उस से कहा, हे प्रभु, हम नहीं जानते कि तू किधर जाता है, हम मार्ग कैसे जाने? यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; केवल मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता। यदि तुम मुझे जानते तो मेरे पिता को भी जानते; अब से तुम उसे जानते हो , और उसे देखा है।" फिलिप्पुस ने उस से कहा, हे प्रभु, पिता को हमें दिखा, और यह हमारे लिये काफी है। यीशु ने उस से कहा, हे फिलिप्पुस, क्या मैं तेरे साथ इतने दिन तक रहा, तौभी तू ने मुझे जाना नहीं? जिस ने मुझे देखा है, उस ने पिता को देखा है; तू कैसे कहता है, कि पिता को हमें दिखा? विश्वास नहीं करते कि मैं पिता में हूं, और पिता मुझ में है? जो बातें मैं तुम से कहता हूं, मैं अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में बना रहता है, वह अपना काम करता है। मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूं , और मुझ में पिता; नहीं तो कर्मों के कारण स्वयं विश्वास करो। मैं तुम से सच सच कहता हूं, जो मुझ पर विश्वास करता है, जो काम मैं करता हूं वह भी करेगा; और इन से भी बड़े काम वह करेगा; क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं। और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वह मैं करूंगा, कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो। यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं करूंगा। यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो तुम मेरी आज्ञाओं को मानेगा, और मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सदा तुम्हारे संग रहे; वह सत्य का आत्मा है, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह उसे देखो या उसे जानो, परन्तु तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और तुम में रहेगा। मैं तुझे अनाथ नहीं छोड़ूंगा; मैं आपके पास आऊंगा। थोड़ी देर के बाद दुनिया मुझे और नहीं देखेगी; परन्तु तुम मुझे देखोगे; क्योंकि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे। "उस समय तुम जान लोगे कि मैं अपने पिता में हूं, और तुम मुझ में, और मैं तुम में। जिस के पास मेरी आज्ञाएं हैं और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है, और जो मुझ से प्रेम रखता है, वह मेरे द्वारा प्रेम किया जाएगा। पिता, और मैं उस से प्रेम रखूंगा, और अपने आप को उस पर प्रगट करूंगा।" यहूदा (इस्करियोती नहीं) ने उससे कहा, "हे प्रभु, तब क्या हुआ कि तू अपने आप को हम पर प्रगट करने जा रहा है, न कि संसार पर?" यीशु ने उत्तर दिया और उस से कहा, "यदि कोई मुझ से प्रेम रखता है, तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ निवास करेंगे। जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरी रक्षा नहीं करता। वचन; और जो वचन तुम सुनते हो वह मेरा नहीं, परन्तु पिता का है जिस ने मुझे भेजा है। ये बातें मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कही हैं। परन्तु सहायक पवित्र आत्मा, जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुझे सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुझ से कहा, वह सब तुझे स्मरण दिलाएगा।" Motzi, Matzah:

अखमीरी रोटी बांटना। मुख्य भोजन की शुरुआत में याचत्ज़ में सफेद लिनन में वापस रखी गई अखमीरी रोटी को फिर से बाहर लाया जाता है, तोड़ा जाता है, और सभी को वितरित किया जाता है। दाखरस का तीसरा कप। और जब वे खा रहे थे, यीशु ने कुछ रोटी ली, और आशीर्वाद पाकर उसे तोड़ी और चेलों को दी, और कहा, लो, खा; यह मेरा शरीर है।" और जब उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद दिया, तब उन्हें यह कहकर दिया, कि तुम सब इसमें से पीओ; क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतोंके पापोंकी क्षमा के लिथे बहाया जाता है। परन्तु मैं तुम से कहो, कि अब से उस दिन तक जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊं, मैं इस दाख की बारी का फल न पीऊंगा।" (मैथ्यू 26:26-29) शुलहान ओरिख: मुख्य भोजन। मुख्य भोजन करते समय, प्रतिभागी इसे सामाजिक समय के रूप में या सेडर विषयों की आगे की चर्चा के लिए उपयोग कर सकते हैं। और उनके बीच एक विवाद भी पैदा हुआ कि कौन सा एक उनमें से महान समझे गए, और उस ने उन से कहा, अन्यजातियोंके राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिकार रखते हैं वे 'उपकारी' कहलाते हैं। "परन्तु तुम्हारे साथ ऐसा न हो, परन्तु जो तुम में बड़ा है, वह सबसे छोटा, और प्रधान सेवक हो जाए। क्योंकि बड़ा कौन है, वह जो भोजन करने के लिए बैठा है, या वह जो सेवा करता है? क्या ऐसा नहीं है वह जो भोजन करने के लिए लेटा हुआ है? परन्तु सेवा करने वाले के समान मैं तुम्हारे बीच में हूं। और तुम वे हो जो मेरी परीक्षाओं में मेरे साथ खड़े रहे, और जैसे मेरे पिता ने मुझे राज्य दिया है, वैसे ही मैं तुम्हें देता हूं कि तुम खाओ और मेरे राज्य में मेरी मेज पर पीओ, और तुम सिंहासनों पर विराजमान होकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे।" "हे शमौन, शमौन, देख, शैतान ने तुझे गेहूँ की नाईं छानने की आज्ञा दी है; परन्तु मैं ने तेरे लिथे बिनती की है, कि तेरा विश्वास टूट न जाए; और जब तू फिरकर फिरे, तो अपने भाइयों को दृढ़ करना।" उस ने उस से कहा, “हे प्रभु, मैं तेरे साथ बन्दीगृह और घात करने को भी तैयार हूं!” और उसने कहा, “हे पतरस, मैं तुझ से कहता हूं। , मुर्गा आज तब तक बांग नहीं देगा जब तक कि आप तीन बार इनकार नहीं करते कि आप मुझे जानते हैं। "तज़फुन: अफिकोमेन को फिरौती देना (एक ग्रीक शब्द जिसका अर्थ है "मिठाई")। अखमीरी रोटी का बड़ा टुकड़ा जो रोटी के पहले तोड़ने के दौरान प्राप्त किया गया था (याचत्ज़) और छिपा हुआ खोजा और बच्चों द्वारा पाया गया। फिर उसे फिरौती दी जाती है, तोड़ा जाता है, और सभी को वितरित किया जाता है। और जब उसने कुछ रोटी ली और धन्यवाद दिया, तो उसने उसे तोड़ा, और उन्हें यह कहते हुए दिया, "यह मेरा शरीर है जो तुम्हारे लिए दिया गया है; मेरे स्मरण में ऐसा करो।" (लूका 22:19) बारीख: भोजन के बाद की कृपा। "मैं तुम्हारे साथ शांति छोड़ता हूं; अपनी शांति मैं तुम्हें देता हूं; जैसा संसार देता है, वैसा नहीं, मैं तुम्हें देता हूं। न तो तुम्हारा हृदय व्याकुल हो, न ही रहने दो। तुम ने सुना, कि मैं ने तुम से कहा, मैं चला जाता हूं, और मैं तुम्हारे पास आऊंगा। यदि तू ने मुझ से प्रेम रखा होता, तो आनन्दित होते, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं, क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है। और अब मैं ने तुम से कहा है, कि जब यह हो, तब तुम विश्वास करो। तुम से अधिक बातें न करना, क्योंकि जगत का सरदार आ रहा है, और उसका मुझ में कुछ भी नहीं, पर इसलिये कि जगत जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूं, और जैसा पिता ने मुझे आज्ञा दी, वैसा ही मैं भी करता हूं। सच्ची दाखलता हूँ, और मेरा पिता दाख की बारी है। मुझ में हर उस डाली को जो फल नहीं देती, वह ले लेता है; और हर एक डाली जो फलती है, वह उसे छांटता है, कि वह अधिक फल लाए। जो वचन मैं ने तुझ से कहा है, उसके कारण तू अब तक शुद्ध है। आप मुझे बर्दाश्त करें और मैं आपको। जैसे डाली अपने आप फल नहीं ले सकती, जब तक कि वह दाखलता में न रहे, वैसे ही तुम भी नहीं हो सकते, जब तक कि तुम मुझ में नहीं रहते। मैं दाखलता हूँ, तू डालियाँ हैं; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल लाता है; क्योंकि मेरे सिवा तुम कुछ नहीं कर सकते। यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो डाली की नाईं फेंका जाता और सूख जाता है; और वे उन्हें बटोर कर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं। यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें

तुम में बनी रहें, तो जो चाहो मांगो, तो वह तुम्हारे लिथे हो जाएगा। इसी से मेरे पिता की महिमा होती है, कि तुम बहुत फल लाते हो, और इस प्रकार मेरे चेले ठहरते हो। जैसे पिता ने मुझ से प्रेम रखा है, वैसे ही मैं ने भी तुम से प्रेम रखा है; मेरे प्यार में रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे; जैसा मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं। ये बातें मैं ने तुम से इसलिये कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।" "मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपके मित्रोंके लिथे अपना प्राण दे। अब से मैं तुझे दास न कहूंगा, क्योंकि दास नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या करता है, परन्तु मैं ने तुझे मित्र कहा है, क्योंकि जो कुछ मैं ने अपने पिता से सुना है, वह सब तुझे बता दिया है। तू ने मुझे नहीं चुना। परन्तु मैं ने तुझे चुन लिया, और तुझे ठहराया, कि तू जाकर फल लाए, और तेरा फल बना रहे, कि जो कुछ तू मेरे नाम से पिता से मांगे, वह तुझे दे। "यदि संसार तुझ से बैर रखता है, तो तू जानता है कि उस ने तुझ से पहिले मुझ से भी बैर रखा। तुम दुनिया के होते तो दुनिया अपनों से मुहब्बत करती। परन्तु इस कारण कि तुम संसार के नहीं, वरन मैं ने तुम्हें जगत में से चुन लिया है, इस कारण संसार तुम से बैर रखता है। उस वचन को स्मरण रखो जो मैं ने तुम से कहा था, 'दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता।' यदि उन्होंने मुझे सताया, तो वे भी तुम्हें सताएंगे; यदि उन्होंने मेरे वचन को माना, तो वे तुम्हारा भी मानेंगे। परन्तु ये सब काम वे मेरे नाम के निमित्त तुझ से करेंगे, क्योंकि वे मेरे भेजनेवाले को नहीं जानते। यदि मैं आकर उन से बातें न करता, तो उन पर पाप न होता, परन्तु अब उनके पास अपने पाप का कोई बहाना नहीं। जो मुझ से बैर रखता है, वह मेरे पिता से भी बैर रखता है। यदि मैं उनके बीच वे काम न करता जो और किसी ने न किए होते, तो वे पापी न होते; परन्तु अब तो उन्होंने मुझे और मेरे पिता को भी देख लिया, और उन से बैर भी कर लिया। परन्तु उन्होंने ऐसा इसलिये किया है कि वह वचन पूरा हो, जो उनकी व्यवस्था में लिखा है, 'उन्होंने बिना किसी कारण के मुझ से बैर रखा।' "जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूंगा, वह सत्य का आत्मा है, जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा, और तुम भी गवाही दोगे, क्योंकि तुम उस समय से मेरे साथ रहे हो। शुरुवात। ये बातें मैं ने तुम से इसलिये कही हैं, कि तुम ठोकर खाने से बचे रहो। वे तुम्हें आराधनालय से बहिष्कृत कर देंगे, लेकिन एक समय आ रहा है कि जो कोई तुम्हें मार डाले, वह यह समझे कि वह ईश्वर की सेवा कर रहा है। और ये काम वे करेंगे, क्योंकि उन्होंने न तो पिता को जाना, और न ही मुझे। परन्तु ये बातें मैं ने तुम से इसलिये कही हैं, कि जब उनका समय आए, तब तुम स्मरण करो कि मैं ने उन के विषय में तुम से कहा था। और ये बातें मैं ने तुम से आरम्भ में नहीं कही, क्योंकि मैं तुम्हारे संग था। परन्तु अब मैं उसके पास जाता हूं जिस ने मुझे भेजा है; और तुम में से कोई मुझ से नहीं पूछता, 'कहां जा रहे हो?' परन्तु मैं ने तुम से ये बातें कहीं, इसलिये कि तुम्हारा मन दु:ख से भर गया है। परन्तु मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि मैं तुम्हारे ही हित में हूं; क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तेरे पास न आने पाएगा; परन्तु यदि मैं जाऊं, तो उसे तुम्हारे पास भेजूंगा। और जब वह आएगा, तो जगत को पाप, और धर्म, और न्याय के विषय में दोषी ठहराएगा; पाप के विषय में, क्योंकि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते; और धर्म के विषय में, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं, और तुम मुझे फिर कभी नहीं देखते; औ

पाठ 51

रोटी तोड़ना परिचय: पिछले पाठ में हमने पाया कि यीशु ने वास्तव में अंतिम भोज के दौरान तीन बार रोटी तोड़ी और चार कप दाखरस पी ली। इस पूरे पाठ में हम रोटी और दाखरस के महत्व को देखेंगे। नए नियम में शब्द "रोटी तोड़ना" का प्रयोग उस संस्कार के संदर्भ में किया जाता है जिसे ईसाई आमतौर पर पवित्र भोज के रूप में जानते हैं ... रोटी और दाखरस का सेवन। परंपरागत रूप से, इस अध्यादेश के साथ कई नाम जुड़े रहे हैं। वे हैं: ब्रेड कम्युनियन को तोड़ना - लोगों के बीच एक सामान्य संबंध या संगति। पवित्र भोज - ईश्वर और विश्वासियों के बीच एक सामान्य संबंध या संगति। "क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे हुए हैं, वहां मैं उनके बीच में हूं।" प्रभु भोज वादा। अगापे - प्यार या प्यार दावत। यूलोगिया - आशीर्वाद या अच्छी तरह से बोलना। यूचरिस्ट - एक ग्रीक शब्द जिसका अर्थ है: मैं आनन्दित, धन्यवाद या कृतज्ञता। शब्द का प्रयोग यीशु द्वारा "अंतिम भोज" पर धन्यवाद देने वाली प्रार्थना से लिया गया था। पवित्रशास्त्र पढ़ना:(मत्ती 26:26-29) (मरकुस 14:22-25) (लूका 22:14-20) आज्ञाएँ: इसे लो और आपस में बाँट लो, मी के स्मरण में यह करो लो, खाओ, यह मेरा शरीर है इससे पियो, तुम सब सबक - बाइबिल की जड़ें:रोटी और दाखरस के उपयोग का पता अब्राहम से लगाया जा सकता है। फिर कदोर्लाओमेर और उसके साथ के राजाओं की हार से उसके (अब्राहम) लौटने के बाद, सदोम का राजा उससे मिलने के लिए शावे की घाटी (अर्थात राजा की घाटी) में गया। और शालेम का राजा मल्कीसेदेक रोटी और दाखमधु ले आया; अब वह परमप्रधान परमेश्वर का याजक था। और उस ने उसे आशीर्वाद दिया और कहा, परमप्रधान परमेश्वर का अब्राम धन्य है, जो स्वर्ग और पृथ्वी का अधिकारी है; और धन्य है परमप्रधान परमेश्वर, जिसने तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हारे हाथ में कर दिया है। और उस ने (इब्राहीम ने) उसे सब का दसवां अंश दिया" (उत्पत्ति 14:17-20)। समूह चर्चा:रोटी किसका प्रतीक है? (भोजन) (शरीर) (शिक्षण)_____ दाखरस किसका प्रतीक है? (पियो) (खून) (आनंद) _____ आपको क्या लगता है कि मलिकिसिदक इब्राहीम के लिए रोटी और दाखरस क्यों लाया? _____

_____ आपको क्यों लगता है कि इब्राहीम ने मलिकिसिदक को दशमांश (उस सारी लूट का दसवां हिस्सा) देकर जवाब दिया था? पवित्रशास्त्र के अनुसार, मलिकिसिदक "धार्मिकता का राजा" और "शांति का राजा" दोनों था (इब्रानियों 7:2)। यह उनके नाम और उनके शीर्षक से लिया गया है। उसका नाम मल्कीसेदेक था (मेल्की का अर्थ राजा और ज़ेडेक का अर्थ धार्मिकता है)। उसका शीर्षक सलेम (शालोम) का राजा था, जिसका अर्थ है "शांति"। चूँकि वह “धार्मिकता और शांति का राजा” था, इसका मतलब था कि उसके पास उन दो चीज़ों पर अधिकार था। इसलिए, उसके पास अपनी इच्छानुसार किसी को भी धार्मिकता और शांति प्रदान करने की शक्ति थी। मलिकिसिदक ने इब्राहीम को रोटी (धार्मिकता) और दाखरस (शांति) के उपहारों के माध्यम से अपनी धार्मिकता और शांति प्रदान की। फिर, उसने इब्राहीम को आशीर्वाद दिया। इब्राहीम मलिकिसिदक के उपहारों और आशीषों से इतना सम्मानित हुआ कि उसने मलिकिसिदक को परमेश्वर द्वारा उसे (विजित सांसारिक राजाओं की लूट) का दशमांश (दसवां) दिया। भजन 110:4 और इब्रानियों के अध्याय 5 और 6 के अनुसार, यीशु मलिकिसिदक के आदेश के बाद हमेशा के लिए एक पुजारी है। और इब्रानियों की पुस्तक में, यीशु को पंद्रह बार उस क्रम के महायाजक के रूप में संदर्भित किया गया है। रोटी और दाखरस के संबंध में इसका गहरा प्रभाव पड़ता है। मलिकिसिदक का आदेश एक "शाही पौरोहित्य" है क्योंकि आदेश का मुखिया एक राजा था (मेल्कीसेदेक धार्मिकता का राजा और शांति का राजा था)। यीशु, उस क्रम का महायाजक होने के नाते, रोटी और दाखमधु के माध्यम से उसी तरह से धार्मिकता और शांति प्रदान करने में सक्षम है जैसे मलिकिसिदक ने किया था। अंतिम

भोज में यीशु मसीह ने संकेत दिया कि रोटी उनके शरीर और दाखरस, उनके रक्त का प्रतिनिधित्व करती है। इन तत्वों के सहभागी के रूप में ईसाई, मसीह की धार्मिकता और शांति में भाग लेने में सक्षम हैं। मलिकिसिदक के साथ इब्राहीम की मुलाकात के चार सौ साल बाद हम फिर से रोटी और दाखमधु की सतह देखते हैं। इस बार, मूसा, परमेश्वर के निर्देशन में, इसे लेवीय पौरोहित्य द्वारा परमेश्वर के लिए एक भोज की भेंट बनाता है। इज़राइल में संपूर्ण बलिदान प्रणाली भगवान के साथ एकता (रिश्ता या संगति) में होने के उद्देश्य से थी। भेंटें दो श्रेणियों में गिरीं: 1) वे जिन्होंने परमेश्वर के साथ एकता बहाल की और 2) वे जो परमेश्वर के साथ सहभागिता में ली गईं। क्योंकि पाप ने लोगों को परमेश्वर के साथ संबंध रखने से अलग कर दिया था, इसलिए पहले परमेश्वर के साथ एकता (रिश्ता या संगति) बहाल करने वाली भेंटें दी गई थीं। दो प्रसाद ने भगवान के साथ एकता बहाल की। पाप - अज्ञानता के माध्यम से भगवान के खिलाफ अपराधों के लिए। (यीशु हमारे महायाजक ने मानव जाति के लिए एकमात्र स्थायी पापबलि बनाया) अतिचार - दूसरों के खिलाफ अपराधों के लिए। (पुनर्स्थापना करनी पड़ती है) भगवान के सान्निध्य में पांच प्रसाद लिए गए। जला हुआ - यह भक्ति या सेवा का बलिदान है और प्रत्येक दिन दो बार किया जाता है, एक बार सुबह और एक बार शाम को। शांति - यह बलिदान है धन्यवाद और स्तुति और भेंट कभी भी लाई जा सकती है।मांस - हालांकि इस भेंट को मांसबलि कहा जाता है, यह वास्तव में एक अनाज की भेंट है और इसमें आमतौर पर अखमीरी रोटी का हिस्सा होता है। इसे होमबलि और शांति प्रसाद के साथ लाया गया था। पियो - यह एक भेंट के रूप में दाखरस को बाहर निकालने से संबंधित है। इसे होमबलि और शांति प्रसाद के साथ लाया गया था। अगरबत्ती - यह प्रार्थना का बलिदान है और प्रत्येक दिन दो बार, एक बार सुबह और एक बार शाम को किया जाता है। समूह चर्चा: प्रथम पतरस 2:9 के अनुसार, ईसाई मेल्कीसेदेक पौरोहित्य के सदस्य हैं, जिनमें से यीशु महायाजक हैं। "परन्तु तुम एक चुनी हुई जाति, और राज-पदधारी याजकों का समाज, पवित्र जाति, और परमेश्वर की निज प्रजा हो, कि जिस ने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके महान् गुणों का प्रचार करो। याजकों के रूप में, हमें अपने पद की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए क्या करना चाहिए? परमेश्वर और मनुष्यों के बीच धार्मिकता और शांति लाने के लिए मध्यस्थ के रूप में सेवा करें। दैनिक प्रसाद लाओ: पाप - 1 यूहन्ना 1:9 अतिचार - याकूब 5:16 और मैथ्यू 5:23-24 जले हुए - रोमियों 12:1 शांति - भजन 100:4 मांस और पेय (रोटी और दाखमधु) - 1 कुरिन्थियों 11:23-26 धूप - प्रकाशितवाक्य 8:3-4। पाठ - शरीर और रक्त: यीशु ने अपने शिष्यों को परमेश्वर के साथ संवाद करने के आध्यात्मिक निहितार्थों के बारे में सिखाया। उनके निर्देश इतने विवादास्पद थे कि उनके कई शिष्यों ने विश्वास को त्याग दिया। जो शेष बचे थे वे भ्रमित थे और उनके सूली पर चढ़ने के बाद तक इसका अर्थ समझने में असफल रहे। यीशु ने कहा, जीवन की रोटी मैं हूं। तुम्हारे पुरखा जंगल में मन्ना खाकर मर गए। यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है, कि कोई उस में से खाए और न मरे। मैं जीवित हूं। रोटी जो स्वर्ग से उतरी है, यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो वह सदा जीवित रहेगा, और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा वह मेरा मांस है।" इस पर यहूदी आपस में यह कहकर वाद-विवाद करने लगे, कि यह मनुष्य अपना मांस हम को खाने को कैसे दे सकता है? (यूहन्ना 6:48-52) उनके तर्कों को सुनने के बाद यीशु ने अपनी बात पर जोर दिया। "मैं तुम से सच सच सच कहता हूं, कि जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ और उसका लोहू न पीओ, तब तक तुम में जीवन नहीं। क्योंकि मेरा मांस सच्चा भोजन है, और मेरा लोहू सच्चा पेय है। जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहू पीता है, वह मुझ में बना रहता है, और मैं उस में। (यूहन्ना 6:53-56) यीशु के उपदेशों को सुनने के बाद उनके कई शिष्यों ने विश्वास को त्याग दिया। "जैसा जीवित पिता ने मुझे भेजा है, और मैं पिता के कारण जीवित हूं, वैसे ही वह जो मुझे खाता है, वह भी मेरे कारण जीवित रहेगा . यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरी है; जैसा पितरों ने खाया, और मर गया, वैसा नहीं, जो कोई इस रोटी

को खाए वह सर्वदा जीवित रहेगा।" ये बातें उसने आराधनालय में कही, जैसा कि उसने कफरनहूम में सिखाया था। सो उसके चेलों में से बहुतों ने यह सुनकर कहा, "यह तो कठिन बात है; इसे कौन सुन सकता है?" परन्तु यीशु ने यह जानकर कि उसके चेले इस पर कुड़कुड़ाए, उन से कहा, क्या इस कारण तुम ठोकर खाते हो? तब क्या होगा यदि आप मनुष्य के पुत्र को ऊपर जाते हुए देखें जहां वह पहले था? वह आत्मा है जो जीवन देती है; मांस कुछ भी नहीं लाभ; जो बातें मैं ने तुम से कही हैं वे आत्मा हैं, और जीवन हैं। पर तुम में से कुछ ऐसे भी हैं जो विश्वास नहीं करते।" क्योंकि यीशु शुरू से जानता था कि वे कौन हैं जो विश्वास नहीं करते थे, और वह कौन था जो उसे पकड़वाएगा। और वह कह रहा था, "इस कारण मैं ने तुम से कहा है, कि कोई मेरे पास तब तक नहीं आ सकता, जब तक कि उसे पिता की ओर से न दी गई हो।" इसके परिणामस्वरूप उसके बहुत से शिष्य पीछे हट गए, और अब उसके साथ नहीं चल रहे थे। (यूहन्ना 6:57-66) सबक - मजबूत आदमी बनाना यीशु के कई शिष्य नाराज थे और उनके सुझाव पर ठुकरा दिया था कि उन्हें खाने की जरूरत है अनन्त जीवन में भाग लेने के लिए उसका शरीर और उसका लहू पीना। यहूदी नहीं, अन्यजातियों ने नरभक्षण का अभ्यास किया। यह तथ्य कि मूसा की व्यवस्था में लहू खाने का निषेध था, उनके द्वारा दिए जा रहे आध्यात्मिक निहितार्थों की उनकी समझ में बाधा उत्पन्न करता था। नरभक्षण की एक कामकाजी परिभाषा है "मजबूत आदमी बनाने की प्रथा या प्रक्रिया।" पूर्वजों ने अपनी ताकत, पवित्रता, ज्ञान और चरित्र में साझा करने के लिए एक मृत व्यक्ति का मांस खाया और उसका खून पी लिया। उनकी मृत्यु के बाद खाए जाने की सबसे अधिक संभावना योद्धा, पवित्र पुरुष, कुंवारी और माता-पिता थे। भोजन में शामिल थे केवल थोड़ी मात्रा में मांस और रक्त, पूरे शरीर का उपभोग नहीं। मृतक के साथ पवित्र तरीके से संवाद करने का भी अभ्यास किया गया था। ये अवधारणाएं इतनी प्रचलित थीं कि बहुत से लोग मानते थे कि ईसाई नरभक्षी थे क्योंकि उन्होंने मांस खाया और उनके प्रभु यीशु मसीह का खून। और एक आध्यात्मिक अर्थ में वे सही थे। प्रारंभिक चर्च विश्वास से विश्वास करता था कि मसीह के शरीर (रोटी) और रक्त (दाखरस) का हिस्सा उन्हें आध्यात्मिक रूप से मजबूत बनाता है। उनका यह भी मानना था कि वे भाग ले रहे थे उनके प्रभु की शक्ति, पवित्रता, ज्ञान और चरित्र में। वास्तव में उनका उनके साथ परस्पर संबंध पवित्र भोज के माध्यम से था; उनका मांस खाने और उनका खून पीने से वे उसमें और वह उनमें निवास कर रहे थे। दोनों उनके विश्वास और प्रार्थना के जीवन को वैसा ही मजबूत किया गया जैसा कि यीशु ने कहा था, "मुझ में बने रहो, और मैं तुम में। जैसे डाली अपने आप फल नहीं ले सकती, जब तक कि वह दाखलता में न रहे, वैसे ही तुम भी नहीं हो सकते, जब तक कि तुम मुझ में नहीं रहते। मैं दाखलता हूँ, तू डालियाँ हैं; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उस में, वह बहुत फल लाता है; क्योंकि मेरे सिवा तुम कुछ नहीं कर सकते। यदि कोई मुझ में बना न रहे, तो डाली की नाईं फेंका जाता और सूख जाता है; और वे उन्हें बटोर कर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं। यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें, तो जो चाहो मांगो, तो वह तुम्हारे लिथे हो जाएगा। इसी से मेरे पिता की महिमा होती है, कि तुम बहुत फल लाओ, और इस रीति से मेरे चेले ठहरो" (यूहन्ना 15:4-8)। पाठ - आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि यीशु जानता था कि वह अपने शिष्यों को क्या करने के लिए कह रहा था और वे क्यों नाराज थे। मूसा की व्यवस्था में स्पष्ट रूप से कहा गया था कि एक व्यक्ति इस्राएल की संगति से काट दिया जाएगा और परमेश्वर उसके विरुद्ध होगा यदि वे कोई लहू खा लें। "क्योंकि शरीर का प्राण लोहू में है, और मैं ने वह वेदी पर तुझे दिया है, कि तेरे प्राणोंके लिथे प्रायश्चित्त करे; क्योंकि जीवन के कारण लहू ही प्रायश्चित्त करता है। इसलिथे मैं ने इस्राएलियोंसे कहा, कि तुम में से कोई लोहू न खाए, और न कोई परदेशी जो तुम्हारे बीच में रहकर लोहू खाए। शिकार किसी पशु वा पक्षी को पकड़ता है, जो खाया जा सकता है, वह उसका लोहू उंडेलकर उसे पृथ्वी से ढांप दे। क्योंकि सब प्राणियों के प्राण के लिथे उसका लहू उसके प्राण से पहचाना जाता है। इसलिथे मैं ने इस्राएलियोंसे

कहा, किसी मांस का लोहू न खाना, क्योंकि सब प्राणियोंका प्राण उसका लोहू है; जो कोई उसे खाए वह काटा जाए" (लैव्यव्यवस्था 17:11-14)। यीशु अच्छी तरह जानते थे कि परमेश्वर ने क्या कहा: कि जीवन लहू में था और कि जीवन लहू खाने के द्वारा स्थानांतरित किया जा सकता है। इसलिए परमेश्वर ने लहू खाने पर प्रतिबंध लगा दिया, क्योंकि मनुष्य इसके द्वारा दिए गए गुणों को ग्रहण करेगा। हालाँकि, यीशु कोई पक्षी या जानवर नहीं है बल्कि जीवित परमेश्वर का पुत्र है। वह मसीह है; पवित्र और सब बातों में अपने पिता को भाता है, यहां तक कि मृत्यु तक आज्ञाकारी है। यही वह जीवन है जो वह हमें देना चाहता है। यीशु ने अपना मांस खाना और अपना लहू पीना एक अध्यादेश बनाया, यह जानते हुए कि वह तत्वों के माध्यम से आत्मा और जीवन प्रदान कर रहा था। प्रतिभागी उनके जीवन की विशेषताओं पर विचार करेंगे। पाठ - बदला हुआ जीवन यीशु ने अपनी सेवकाई की शुरुआत में एकता के आध्यात्मिक मुद्दों से निपटा जब उसने काना में शादी में पानी को दाखरस में बदल दिया। यह उसके संकेतों में से पहला था और उसने इसका उपयोग पानी को दाखरस (रक्त) में बदलने के द्वारा एक बदले हुए जीवन की मूल अवधारणा को व्यक्त करने के लिए किया। यीशु ने छह बड़े पानी के बर्तनों का उपयोग किया जिन्हें शुद्धिकरण के लिए अलग रखा गया था। एक बर्तन किसी चीज़ के लिए एक कंटेनर का प्रतिनिधित्व करता है। पूरे पवित्रशास्त्र में, पुरुषों को कंटेनर के रूप में संदर्भित किया गया है। (बर्तन, बर्तन, घर, मंदिर, दाखरस की खाल, सफेद धुली हुई कब्रें, आदि) कंटेनर महत्वपूर्ण है लेकिन किसी भी तरह से उस सामग्री की तुलना नहीं करता है जिसके लिए कंटेनर को डिजाइन और बनाया गया था। जब एक शुद्धिकरण बर्तन में पानी भर दिया जाता था (उसमें डुबोया जाता था या बपतिस्मा लिया जाता था) तो वह दूसरों की शुद्धि के लिए उपयोगी हो जाता था। हालाँकि यीशु ने पानी को दाखरस में बदल दिया। दाखरस रक्त, जीवन, पवित्र आत्मा और आनंद के लिए एक प्रतीक है (देखें विल्सन्स डिक्शनरी ऑफ बाइबिल टाइप्स एक पूर्ण स्पष्टीकरण के लिए)। यीशु संकेत दे रहा था कि सच्ची शुद्धि रक्त, एक आदान-प्रदान जीवन, पवित्र आत्मा को भरने और वह परिणाम बहुत खुशी देगा। शुद्धिकरण बर्तन की सामग्री में परिवर्तन व्यक्ति की प्रकृति में बदलाव को इंगित करता है। अब से जल न बहाया जाएगा, परन्तु पवित्र आत्मा। अब पर्ब्ब के बड़े दिन के अन्तिम दिन यीशु खड़ा हुआ और चिल्लाकर कहा, “यदि कोई प्यासा हो, तो मेरे पास आए और पीए। वह जो मुझ पर विश्वास करता है, जैसा कि पवित्रशास्त्र में कहा गया है, 'उसके अंतरतम में से जीवन के जल की नदियाँ बहेंगी।' ”परन्तु उसने यह उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवालों को ग्रहण करना था; क्योंकि आत्मा अब तक न दिया गया, क्योंकि यीशु की अब तक महिमा नहीं हुई" (यूहन्ना 7:37-39)। दाखरस व्यक्ति के व्यवहार में बदलाव लाती है। मादक पेय पदार्थों को कभी-कभी "आत्माओं" के रूप में संदर्भित किया जाता है क्योंकि यह किसी के व्यवहार में उत्पन्न होने वाले परिवर्तन के कारण होता है। जब शिष्य पवित्र आत्मा से भरे हुए थे तो उन पर नशे में होने का आरोप लगाया गया था। शुद्धिकरण के बर्तन (पुरुष) जो भरे हुए थे (डुबकी हुई या बपतिस्मा) शुद्धिकरण के साथ पानी को भीतर (आत्मा से भरा) बदल दिया जाएगा और फिर दूसरों में बदलाव लाने के लिए डाला जाएगा। पाठ - पवित्र भोज के तीन प्रमुख दृश्य - रोटी और दाखरस मसीह के शरीर और रक्त के भौतिक पदार्थ में बदल जाते हैं, हालांकि रोटी और दाखरस की वास्तविक उपस्थिति बनी रहती है। यह चर्च का ऐतिहासिक दृष्टिकोण है और प्रोटेस्टेंट सुधार तक पहले 1500 वर्षों तक ऐसा ही रहा। यह इस दृष्टिकोण के कारण था कि रोमनों ने प्रारंभिक ईसाइयों पर नरभक्षण का आरोप लगाया। संगति - रोटी रोटी बनी रहती है, और दाखरस दाखरस बनी रहती है, लेकिन यीशु का शरीर और खून रोटी और दाखरस के साथ और नीचे है। दूसरे शब्दों में, रोटी, दाखरस, शरीर और रक्त एक साथ मिल जाते हैं। (मार्टिन लूथर द्वारा 1519 ई. में प्रस्तुत)। केवल स्मारक - रोटी और दाखरस केवल प्रतीक हैं; वाक्यांश के आधार पर, "मेरे स्मरण में ऐसा करो।" उलरिच ज़िंगली ने अपने कुछ समकालीनों के जवाब में 1520 ईस्वी के बारे में

इस विचार की शुरुआत की, जिन्होंने मांस खाने और खून पीने के विचार को आक्रामक पाया। पाठ - संस्कार का विकासमूल रूप से भोज प्रतिदिन परोसा जाता था। कैथोलिक चर्च अभी भी इसे सप्ताह में सातों दिन सुबह और शाम प्रदान करता है। भोज प्राप्त करने में भाग लेने के लिए तीन आवश्यकताएं हैं।बपतिस्मा।विश्वास।यीशु मसीह की इच्छा के अनुरूप जीवन। यह आमतौर पर आत्म-प्रतिबिंब और किसी के पापों के स्वीकारोक्ति के माध्यम से पूरा किया जाता है। "क्योंकि जितनी बार तुम इस रोटी को खाते और उस प्याले को पीते हो, तुम प्रभु की मृत्यु का प्रचार उसके आने तक करते हो। इसलिए जो कोई अयोग्य रीति से रोटी खाता या यहोवा का प्याला पीता है, वह यहोवा की देह और लोहू का दोषी ठहरेगा। परन्तु मनुष्य अपने आप को जांचे, और इस प्रकार रोटी में से खाए और प्याले में से पीए। क्योंकि जो खाता और पीता है, वह अपके लिथे न्याय करता और पीता है, यदि वह देह का ठीक से न्याय न करे। इस कारण तुम में से बहुत से लोग निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से लोग सोते हैं। लेकिन अगर हमने खुद को सही तरीके से आंका है, तो हमें नहीं आंका जाना चाहिए। परन्तु जब हम पर दोष लगाया जाता है, तो प्रभु के द्वारा हमें ताड़ना दी जाती है, कि संसार के साथ-साथ हम पर भी दोष न लगाया जाए। इसलिथे हे मेरे भाइयो, जब तुम खाने के लिथे इकट्ठे होओ, तो एक दूसरे की बाट जोहते रहो। यदि कोई भूखा हो, तो वह घर में ही खाए, कि तुम न्याय के लिये इकट्ठे न होओ" (1 कुरिन्थियों 11:26-34)। संगति विश्वासियों को एक दूसरे से जोड़ती है। "क्या आशीष का प्याला जिसे हम आशीष देते हैं, वह मसीह के लहू में सहभागी नहीं है? क्या वह रोटी नहीं जिसे हम तोड़ते हैं, मसीह की देह में सहभागी नहीं है? चूँकि एक ही रोटी है, इसलिए हम जो बहुत हैं, एक शरीर हैं; क्योंकि हम सब एक ही रोटी में भागी होते हैं" (1 कुरिन्थियों 10:16-17)। भजन 34 का गायन 4वीं शताब्दी में शुरू हुए संस्कार के साथ हुआ। “मैं हर समय यहोवा को धन्य कहूँगा; उसकी स्तुति मेरे मुंह में नित्य बनी रहेगी। मेरा मन यहोवा पर घमण्ड करेगा; नम्र लोग इसे सुनेंगे और आनन्दित होंगे। हे मेरे साथ यहोवा की बड़ाई करो, और हम सब मिलकर उसके नाम की स्तुति करें। मैं ने यहोवा को ढूंढ़ा, और उस ने मेरी सुन ली, और मेरे सब भयोंसे मुझे छुड़ाया। उन्होंने उस की ओर देखा, और वे दीप्तिमान थे, और उनके मुख पर कभी भी लज्जित न होगी। इस कंगाल ने दोहाई दी, और यहोवा ने उसकी सुन ली, और उसको उसके सब विपत्तियोंसे छुड़ाया। यहोवा का दूत उसके डरवैयोंके चारोंओर छावनी करके उनको छुड़ाता है। हे चख कर देख कि यहोवा भला है; क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो उसकी शरण लेता है! हे उसके पवित्र लोगों, यहोवा का भय मान; क्योंकि जो उस से डरते हैं, उनकी कोई घटी नहीं। जवान सिंहों की कमी होती है और वे भूख से तड़पते हैं; परन्तु जो यहोवा के खोजी हैं उन्हें किसी भली वस्तु की घटी न होगी। आओ, बच्चों, मेरी बात सुनो; मैं तुम्हें यहोवा का भय मानना सिखाऊंगा। वह मनुष्य कौन है जो जीवन की अभिलाषा रखता है, और बहुत दिनों तक प्रेम रखता है, कि भलाई देखे? अपनी जीभ को बुराई से, और अपने होठों को छल की बातें बोलने से रोके। बुराई से दूर रहो, और भलाई करो; शांति की तलाश करो, और उसका पीछा करो। यहोवा की आंखें धर्मियों की ओर लगी रहती हैं, और उसके कान उनकी दोहाई की ओर लगे रहते हैं। यहोवा का मुख कुकर्मियों के विरुद्ध है, कि उनका स्मरण पृथ्वी पर से नाश करे। धर्मी दोहाई देते हैं और यहोवा सुनता है, और उन्हें उनके सब विपत्तियों से छुड़ाता है। यहोवा टूटे मनवालों के निकट रहता है, और पिसे हुओं का उद्धार करता है। धर्मी के दु:ख बहुत हैं; लेकिन भगवान उन सब में से उसे बचाता है। वह अपनी सारी हड्डियों को रखता है; उनमें से एक भी नहीं टूटा है। बुराई दुष्ट को मार डालेगी; और जो धर्मी से बैर रखते हैं, वे दण्डित किए जाएंगे। यहोवा अपके दासोंके प्राण छुड़ाता है; और जो उसकी शरण में हैं, उन में से कोई दोषी न ठहराया जाएगा।” मेल-मिलाप में प्रयुक्त दाखमधु लाल रंग का होता है, जो उसे लोहू का रूप देता है। मूल रूप से दाखरस किण्वित थी। प्रोटेस्टेंट सुधार में देर तक अंगूर के रस का उपयोग करने का चलन फैशन में नहीं आया। यीशु ने दाखरस पिया, अंगूर का रस नहीं,

हालाँकि अंगूर का रस अभी भी दाखलता का फल है। कभी-कभी दाखरस में पानी मिलाया जाता था क्योंकि पानी और लहू यीशु के सूली पर चढ़ाये जाने के समय उनके पक्ष से निकला था। रोटी आम तौर पर अखमीरी थी। यह इस तथ्य का प्रतिनिधित्व करता है कि मसीह यीशु में कोई भ्रष्ट करने वाला प्रभाव नहीं है। अखमीरी रोटी आमतौर पर धारीदार और छेदी जाती है। "वह हमारे अपराधों के कारण छेदा गया, और उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो गए" (यशायाह 54:5)। कभी-कभी खमीरी रोटी का उपयोग किया जाता है क्योंकि यह सुविधाजनक और स्वादिष्ट होती है। रोटी को "होस्ट" कहा जाता था क्योंकि इसमें मसीह की उपस्थिति थी . ग्रीक शब्द होस्तिया का अर्थ है "बलिदान" जो मसीह को हमारे बलिदान के रूप में पहचानता है। आम तौर पर भोज को घुटने टेकने की स्थिति में लिया जाता था, दासता की मुद्रा। समय बीतने के साथ ईसाई बैठकें अधिक औपचारिक और कर्मकांड बन गईं। भोज में भाग लेना सभाओं का केंद्र बिंदु बन गया, जो आमतौर पर संगति, प्रार्थना और शिक्षण से पहले होते थे। चूंकि सभाओं के अंत के निकट भोज दिया गया था, इसलिए "मास" शब्द का प्रयोग छठी शताब्दी तक किया जाने लगा। यह शब्द मिसा से लिया गया है, जिसका अर्थ है, "खारिज करना" (उदाहरण के लिए एक सेवा के अंत में)। "मध्य युग" की शुरुआत से हाल तक, कैथोलिक पादरियों ने संचारकों की जीभ पर रोटी रखी। यह प्रथा तब शुरू हुई जब कुछ संचारक रोटी के हिस्से को खाने के बजाय सौभाग्य के आकर्षण के रूप में सहेज रहे थे। समूह चर्चा: आपके शरीर को अपने जीवन को बनाए रखने के लिए शक्ति और शक्ति क्या देता है? (भोजन और पानी) आपको इसकी कितनी बार आवश्यकता है? (दैनिक) आपकी आत्मा को अपने जीवन को बनाए रखने के लिए शक्ति और शक्ति क्या देता है? (यीशु मसीह का शरीर और लहू) आपको कितनी बार इसकी आवश्यकता है?

पाठ 52

एक दूसरे से प्यार करें आइसब्रेकर: अपने किसी मित्र का नाम बताएं? _____ क्या उन्हें आपका दोस्त बनाता है? दोस्ती की शुरुआत कैसे हुई? _____

_____ परिचय: जब यीशु ने अपने शिष्यों के साथ अंतिम भोज में बातचीत की तो उन्होंने एक दूसरे से प्यार करने के महत्व पर जोर दिया। एक दूसरे का संदर्भ केवल यीशु के अन्य शिष्यों को संदर्भित करता है क्योंकि वह केवल अपने शिष्यों से बात कर रहा था। पवित्रशास्त्र पढ़ना:(यूहन्ना 13:12-17 और 34-35 और 15:12-17) आज्ञाएँ: तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना चाहिए। मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि तुम एक दूसरे से प्रेम रखो, जैसा मैं भी करता हूं। तुमसे प्यार किया है।एक दूसरे से प्यार करो, जैसे मैंने तुमसे प्यार किया है।एक दूसरे से प्यार करो। पाठ: भोज की शुरुआत के निकट यीशु उठे, अपने बाहरी वस्त्र अलग किए और शिष्य के पैर धोने लगे। उन दिनों यह एक गंदा काम होता, क्योंकि लोग सैंडल पहनकर अपना दिन खेतों में काम करने, मिट्टी के फर्श पर खड़े होने या धूल भरी सड़कों पर चलने में बिताते थे। प्रथागत रूप से पैर धोने का कार्य मेजबान के नौकरों में से एक द्वारा किया जाता। हालाँकि, यीशु मेजबान था और उसके पास कोई सेवक नहीं था ... इसलिए वह स्वयं सेवक बन गया। समूह चर्चा: क्या समूह के प्रत्येक सदस्य दूसरे के पैर धोते हैं। आपको ऐसा क्यों लगता है कि यीशु चाहते हैं कि हम एक दूसरे के पैर धो लें? हमें विनम्र बनाए रखने के लिए जीवन में हमारी भूमिका की याद दिलाने के लिए, एक नौकर कि हमारी जिम्मेदारियों में से एक एक दूसरे की मदद करना है शुद्ध और स्वच्छ रहें। सबक: जारी रखा शिष्य के पैर धोते हुए यीशु ने फसह के भोज के साथ जारी रखा जब तक कि उसने दूसरी बार डुबकी नहीं लगाई और यहूदा को निवाला दे दिया। उसी समय शैतान यहूदा में प्रवेश कर गया, वह मेज से उठा और रात में बाहर चला गया और यीशु को चांदी के तीस सिक्कों के लिए पकड़वाने की अपनी योजना को पूरा करने के लिए निकला। यहूदा के जाने के बाद, यीशु ने प्रेम के विषय पर बोलना शुरू किया। पहले अपनी सेवकाई में, पहाड़ी उपदेश के दौरान, यीशु ने चेलों को "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखने" की आज्ञा दी थी, लेकिन अब उसने उन्हें एक नई आज्ञा जारी की। उसने कहा, "मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो, कि तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।" यह उनके अपने पड़ोसियों से प्रेम करने के तरीके में परिवर्तन नहीं था, बल्कि उस विशेष तरीके से एक अतिरिक्त आज्ञा थी जिसमें वे मसीह के अन्य शिष्यों से प्रेम करते थे। समूह चर्चा: यीशु ने अपने शिष्यों के प्रति अपने प्रेम को किन तरीकों से प्रदर्शित किया था? उन्हें सूचीबद्ध करें।उन्हें शिष्य बनाना सिखाया।गलत होने पर उन्हें फटकार लगाई।उन्हें माफ कर दिया।उनके लिए प्रार्थना की।उनके पैर धोए।पिता की आज्ञा मानी।अपना समय दिया।उनकी सेवा की।उन्हें सिखाया।उनके जीवन को महत्वपूर्ण बनाया।उन्हें दिया। शक्ति और अधिकार।उन्हें एक संदेश दिया।उन्हें आध्यात्मिक उपहार दिए।उन्हें निर्देश दिए।उनके डर को शांत किया।यीशु क्यों चाहते थे कि वे एक दूसरे से प्यार करें जैसा उसने उनसे प्यार किया था? ताकि सब लोग जान लें कि वे उसके चेले हैं। क्यों? लोगों के लिए प्रदर्शित करने के लिए कि भगवान कैसा था। क्यों? शैतान के कामों को नष्ट करने के लिए। (1 यूहन्ना 3:7-8) सबक: जारी भोजन के बाद यीशु फिर से प्रेम के मुद्दे पर बोलने के लिए लौटे, इस बार शिष्यों को इसके बारे में और भी गहराई से सोचने के लिए उकसाया। उसने उन्हें बताया कि प्रेम की सबसे गहरी अभिव्यक्ति यह है कि एक व्यक्ति अपने मित्रों के लिए अपना जीवन दे देता है। यूहन्ना 15:14 और 16 पर समूह चर्चा: यीशु के मित्र कौन हैं? जो वह करते हैं जो वह करने की आज्ञा देता है। यीशु के साथ मित्रता की शुरुआत

कौन करता है? वह करता है।वह दोस्ती की शुरुआत क्यों करता है? ताकि उसके दोस्त फल दे सकें। वह किस फल की बात कर रहा है? पवित्र आत्मा का फल (गलातियों 5:22-26) या परमेश्वर का स्वभाव और चरित्र (बेल और डालियां देखें)। फल कौन खाता है? तुम्हारे सिवा सब।यह फल कब तक चलना चाहिए? हमेशा के लिए।किसी के नाम पर पूछने का क्या मतलब है? यह वही है जो व्यक्ति ने अपने लिए मांगा होगा। यीशु का नाम क्या है? मैं मोक्ष हूं?मुक्ति या मुक्ति किससे? सब कुछ।आपस में किसके बारे में बात की जा रही है? यीशु के मित्र (अन्य शिष्य)। पाठ का बिंदु: इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि यीशु ने अंतिम भोज में पाठ पढ़ाया था जब वह अपने शिष्यों के साथ संवाद कर रहा था, हमें इस पर विचार करना चाहिए कि क्या हम वास्तव में उसके मित्र हैं। क्या हम वही कर रहे हैं जो उसने हमसे करने के लिए कहा था? 58 "एक दूसरे के" की इस सूची को अपने गृहकार्य के रूप में उनके संदर्भ में पढ़ें। "एक दूसरे के" एक दूसरे के साथ शांति से रहें (मरकुस 9:50) एक दूसरे के पैर धोएं (यूहन्ना 13:14) एक दूसरे से प्यार करें (यूहन्ना 13:34) 13:35)एक दूसरे से प्रेम करो (यूहन्ना 15:12)एक दूसरे से प्रेम करो (यूहन्ना 15:17)भाईचारे के प्रेम में एक दूसरे के प्रति समर्पित रहो (रोमियों 12:10) सम्मान में एक दूसरे को वरीयता दो (रोमियों 12:10) (रोमियों 12:16) एक दूसरे से प्रेम करो (रोमियों 13:8) हम एक दूसरे का न्याय न करें (रोमियों 14:13) एक दूसरे को स्वीकार करें, जैसे मसीह ने भी हमें स्वीकार किया (रोमियों 15:7) एक दूसरे को चेतावनी दें (रोमियों 15:14) एक दूसरे को पवित्र चुम्बन से नमस्कार करें (रोमियों 16:16) जब आप खाने के लिए एक साथ हों, तो एक दूसरे की प्रतीक्षा करें (1 कुरिन्थियों 11:33) 25) एक दूसरे को पवित्र चुम्बन से नमस्कार (1 कुरिन्थियों 16:20) पवित्र चुम्बन से एक दूसरे को नमस्कार करो (2 कुरिन्थियों 13:12) प्रेम के द्वारा एक दूसरे की सेवा करो (गलातियों 5:13) परन्तु यदि तुम एक दूसरे को काटते और खाते हो, तो सावधान रहना ऐसा न हो कि तुम एक दूसरे के द्वारा भस्म हो जाओ (गलातियों 5:15) हम घमण्ड न करें, एक दूसरे को चुनौती दें, और एक दूसरे से डाह करें (गलातियों 5:26) एक दूसरे का भार उठाएं (गलातियों 6:2) प्रेम में एक दूसरे को सहनशीलता दिखाना (इफिसियों 4:2) (इफिसियों 4:32) एक दूसरे को क्षमा करना (इफिसियों 4:32)एक दूसरे से भजनों और स्तुतियों और आत्मिक गीतों में बोलना (इफिसियों 5:19)मसीह के भय में एक दूसरे के अधीन रहना (इफिसियों 5:21) आप में से प्रत्येक एक दूसरे को अपने से अधिक महत्वपूर्ण समझें (फिलिप्पियों 2:3) एक दूसरे से झूठ न बोलें (कुलुस्सियों 3:9) एक दूसरे की सहनशीलता (कुलुस्सियों 3:13) एक दूसरे को क्षमा करना (कुलुस्सियों 3:13) एक दूसरे को स्तोत्र, और स्तुतिगानों और आत्मिक गीतों से (कुलुस्सियों 3:16) एक दूसरे को स्तोत्रों, और स्तोत्रों और आत्मिक गीतों से चितौनी दें (कुलुस्सियों 3:16) एक दूसरे के लिए प्रेम बढ़ाएँ और बढ़ाएँ (1 थिस्सलुनीकियों 3:12) परमेश्वर द्वारा सिखाए गए एक दूसरे से प्रेम रखना (1 थिस्सलुनीकियों 4:9) इन शब्दों से एक दूसरे को दिलासा देना (1 थिस्सलुनीकियों 4:18)एक दूसरे को प्रोत्साहित करना (1 थिस्सलुनीकियों) एनएस 5:11)एक दूसरे का निर्माण करें (1 थिस्सलुनीकियों 5:11)लेकिन दिन-ब-दिन एक दूसरे को प्रोत्साहित करें (इब्रानियों 3:13)विचार करें कि एक दूसरे को प्यार और अच्छे कामों के लिए कैसे प्रोत्साहित किया जाए (इब्रानियों 10:24)एक दूसरे को प्रोत्साहित करना (इब्रानियों 3:13) 10:25) एक दूसरे के खिलाफ मत बोलो (याकूब 4:11) एक दूसरे के खिलाफ शिकायत मत करो (याकूब 5:9) एक दूसरे के सामने अपने पापों को स्वीकार करो (याकूब 5:16) एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो (याकूब 5:16) एक-दूसरे को दिल से दिल से प्यार करो (1 पतरस 1:22) एक दूसरे के लिए अपने प्यार में उत्साही रहो (1 पतरस 4:8) एक दूसरे की सेवा करना (1पतरस 4:10) एक दूसरे के प्रति नम्रता के साथ अपने आप को पहिनना (1पतरस 5:5) प्रेम के चुम्बन से एक दूसरे को नमस्कार करना (1पतरस 5:14)एक दूसरे से प्रेम करना (1यूहन्ना 3:11)एक दूसरे से प्रेम करना

(1यूहन्ना 5:5) 3:23)आओ हम एक दूसरे से प्रेम करें (1यूहन्ना 4:7)हमें भी एक दूसरे से प्रेम करना चाहिए (1यूहन्ना 4:11)यदि हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं, तो ईश्वर हम में बना रहता है (1यूहन्ना 4:12)एक दूसरे से प्रेम करो (2यूहन्ना 5)

पाठ 53

पीसफुल हार्ट्ड आइसब्रेकर: जब वे भविष्य के बारे में चिंतित या चिंतित हों तो आप लोगों को कैसे दिलासा देंगे? _____

_____ परिचय: यहूदा के अंतिम भोज के जाने के कुछ ही समय बाद, यीशु और शिष्य भोजन के हिस्से में आए, जिसे मैगीड के रूप में जाना जाता है, फसह की कहानी कह रहा है। मैगीड की शुरुआत में उन्होंने दाखरस का दूसरा प्याला, न्याय का प्याला या निर्देश का हिस्सा लिया होगा। इसका इरादा उन लोगों को याद दिलाना था जिन्होंने भोजन में भाग लिया था कि कैसे भगवान ने अपने लोगों को बचाया था। "मैं अपनी भुजा बढ़ाकर और बड़े दण्ड देकर तुझे छुड़ा लूंगा।" (निर्गमन 6:6) फसह की कहानी सुनाना अभी भी उसी असामान्य तरीके से किया जाता है। भोजन में भाग लेने वाले बच्चे बड़ों से चार प्रश्न पूछते हैं जो उन्हें सवालों के जवाब देकर फसह की कहानी बताने के लिए कहते हैं। अंतिम भोज में, शिष्यों ने यीशु से चार प्रश्न पूछे, वे थे: साइमन पीटर - "भगवान, आप कहाँ जा रहे हैं?" थॉमस - "भगवान, हम नहीं जानते कि आप कहाँ जा रहे हैं, हम रास्ता कैसे जानते हैं?" फिलिप - "भगवान, हमें पिता दिखाओ, और यह हमारे लिए पर्याप्त है।" यहूदा (इस्करियोती नहीं) - "हे प्रभु, तब क्या हुआ कि तू अपने आप को हम पर प्रगट करने जा रहा है, न कि संसार पर?" पवित्रशास्त्र पढ़ना:(यूहन्ना 13:36 - 14:31) आज्ञाएँ: तुम्हारा दिल परेशान न हो। ईश्वर पर विश्वास करो। मुझ पर भी विश्वास करो। मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है। दिल परेशान हो, न ही उसे डरने दें। पाठ: यीशु ने टिप्पणियों की एक श्रृंखला के साथ मैगीड की शुरुआत की। "छोटे बच्चों, मैं थोड़ी देर और तुम्हारे साथ हूं। तुम मुझे ढूंढोगे; और जैसा कि मैंने यहूदियों से कहा था, अब मैं तुम से यह भी कहता हूं, 'जहां मैं जा रहा हूं, वहां तुम नहीं आ सकते।'" यह उसने अपनी आसन्न मृत्यु के बारे में कहा क्योंकि वह अच्छी तरह जानता था कि वह क्रूस पर अपनी बाहें फैलाकर अपने लोगों को छुड़ाएगा। चेलों यीशु ने भविष्यवाणी करना शुरू कर दिया। परमेश्वर ने हमेशा अपने लोगों को सांत्वना देने के लिए भविष्यवाणी का उपयोग किया है। यह उन्हें याद दिलाता है कि उनके वचन के माध्यम से उनके साथ उनका एक विशेष संबंध है। और यह कि वह स्वेच्छा से उन्हें यह आश्वासन देते हुए दिशा प्रदान करता है कि वह नियंत्रण में है। पवित्रशास्त्र कहता है, "जैसा मेरा वचन मेरे मुंह से निकलता है वैसा ही होगा; वह व्यर्थ और निष्फल मेरे पास फिर न लौटेगा जो मैं चाहता हूं, और जिस काम के लिये मैं ने उसे भेजा है उसमें सफल हुए बिना।" (यशायाह 55:11) बाद में प्रेरित पौलुस ने टिप्पणी की कि भविष्यवाणी सबसे अधिक चाहने वाला आध्यात्मिक उपहार होना चाहिए और यह कि "वह जो भविष्यवाणी करता है वह लोगों से उन्नति और प्रोत्साहन और सांत्वना के लिए बोलता है।" (1 कुरिन्थियों 14:3) यीशु ने उस रात भविष्यवाणी के दोनों पहलुओं: भविष्यवाणी (भविष्य के बारे में) और आगे-बताने (परमेश्वर की ओर से सत्य की घोषणा) का उपयोग करते हुए एक भविष्यद्वक्ता के रूप में बात की। उसने अल्पकालिक और दीर्घकालिक दोनों दिए- भविष्यवाणी की भविष्यवाणी शब्द। भविष्यद्वक्ता की सत्यता की जांच के लिए अल्पकालिक भविष्यवाणी का उपयोग किया गया था। यदि भविष्यवक्ता की अल्पकालिक भविष्यवाणी पारित नहीं हुई थी, तो भगवान के लोगों को भविष्यद्वक्ता, उसकी दीर्घकालिक भविष्यवाणियों और उसके द्वारा किए गए किसी भी आगे के बारे में बताने की उपेक्षा करनी थी। चूँकि पतरस ने यह प्रश्न पूछा था कि यीशु कहाँ जा रहा था, यीशु ने सबसे पहले उसे एक लंबी अवधि की भविष्यवाणी के साथ उत्तर दिया। "जहां मैं (क्रूस पर) जाता हूं, वहां तुम अब मेरे पीछे नहीं हो सकते; लेकिन बाद में तुम मेरे पीछे होओगे।" परंपरा के अनुसार, पीटर को 65 ईस्वी के आसपास रोम में उल्टा सूली पर चढ़ाया गया था। यीशु ने एक अल्पकालिक भविष्यवाणी के साथ उसका पालन किया। "सच में, सच में, मैं तुमसे कहता हूं, एक मुर्गा नहीं होगा, जब

तक तुम मुझे तीन बार इनकार नहीं करते।" यह यीशु के बोलने के आठ घंटे के भीतर हुआ। यीशु ने चेलों को भविष्यवाणी करने वाली बीस भविष्यवाणियों की एक श्रृंखला जारी की, जिसे उन्होंने इस आज्ञा के साथ पेश किया, "अपने दिल को परेशान न होने दें।" फिर मानो वह उनके चारों ओर एक कोष्ठक लगा रहा हो, यीशु ने इसी तरह की आज्ञा के साथ समाप्त किया, "तुम्हारा हृदय न घबराए, और न भयभीत हो।" और अच्छे उपाय के लिए उसने इसे इस कथन के साथ विरामित किया, "अब मैंने आपको ऐसा होने से पहले ही बता दिया है, कि जब ऐसा होता है, तो आप विश्वास कर सकते हैं।" आइए उन भविष्यवाणियों को देखें जो यीशु ने शिष्यों को प्रोत्साहित करने, मजबूत करने और सांत्वना देने के लिए उपयोग की थीं।मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूं। (LT) मैं फिर आऊंगा और तुम्हें अपने पास ले जाऊंगा, कि जहां मैं हूं, वहां तुम भी हो सकते हो। (LT) जो मुझ पर विश्वास करता है, जो काम मैं करता हूं, वह भी करेगा। (ST-55 दिन) और इससे भी बड़ा काम वह करेगा। (ST- 55 दिन) आप मेरे नाम से जो कुछ भी मांगेंगे, वह मैं करूंगा करो। (ST-55 दिन) यदि आप मुझसे मेरे नाम पर कुछ भी माँगते हैं, तो मैं करूँगा। (ST-55 दिन) वह आपको एक और सहायक देगा, कि वह हमेशा आपके साथ रहे। (ST-55 दिन) वह आपके साथ रहेगा और आप में रहेगा। (ST-55 दिन) मैं आपको अनाथ के रूप में नहीं छोड़ूंगा। (ST-55days) मैं आपके पास आऊंगा। (ST-4days) थोड़ी देर बाद दुनिया मुझे नहीं देखेगी , (ST-12 घंटे) लेकिन तुम मुझे देखोगे; (ST-4 दिन) क्योंकि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे। (LT) जो मुझे प्यार करता है वह मेरे पिता से प्यार करेगा। (ST-55 दिन) वह जो मुझे प्यार करता हूँ मैं उससे प्यार करूँगा। (ST-55 दिन) जो मुझसे प्यार करता है मैं उसे अपने आप को प्रकट करूँगा। (ST-55 दिन) हम उसके पास आएंगे और O बना देंगे आप उसके साथ रहते हैं। (ST-55 दिन) वह आपको सब कुछ सिखा देगा। (ST-55 दिन) वह सब कुछ जो मैंने तुमसे कहा था, वह तुम्हारे स्मरण में लाएगा। (ST-55days) शांति मैं तुम्हारे साथ छोड़ता हूं; मेरी शांति मैं तुम्हें देता हूँ। (ST-तुरंत) समूह चर्चा: क्या यीशु ने कभी आपको दिलासा दिया है जब आप भविष्य के बारे में चिंतित या चिंतित थे? यदि हां, तो उसने यह कैसे किया? _____ _____ सबक: जारी यीशु ने शिष्यों को केवल सांत्वना देने के अलावा और भी बहुत कुछ किया उसने उन्हें सच बताया (आगे बता रहा था)। आज हम पवित्रशास्त्र के इन अंशों का अध्ययन कर रहे हैं, जो कि यीशु ने अपने बारे में कहा है। मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूं; कोई पिता के पास नहीं आता, केवल मेरे द्वारा। बहुतों के लिए यह एक कठिन कथन है! वे यह कहना पसंद करते हैं कि पिता के पास कई रास्ते हैं। समूह चर्चा: "मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ" कथन का क्या अर्थ है? क्या आप विश्वास करते हैं कि यह कथन, "कोई पिता के पास नहीं आता, परन्तु मेरे द्वारा" सत्य है? _____ आप उन लोगों के लिए किस तरह का बयान देते हैं जो आपसे विवाद करते हैं कि पिता के पास आने के एक से अधिक तरीके हैं? यीशु का कथन, "मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ" सात "मैं हूँ" कथनों में से छठा कथन था जिसका उपयोग उसने यूहन्ना के सुसमाचार में किया था। अन्य थे: 1) मैं जीवन की रोटी हूँ (6:35), 2) मैं दुनिया की रोशनी हूँ (8:12), 3) मैं द्वार हूँ (10:7 और 9), 4) मैं अच्छा चरवाहा हूँ (10:11 और 14), 5) मैं पुनरुत्थान और जीवन हूँ (11:25) और 7) मैं ही सच्ची दाखलता हूँ (15:1 और 5)। हर बार जब यीशु ने "मैं हूँ" का प्रयोग किया तो वे परमेश्वर के स्मारक नाम का आह्वान कर रहे थे। क्योंकि लिखा है, कि मूसा ने परमेश्वर से कहा, सुन, मैं इस्राएलियोंके पास जाता हूं, और उन से कहूंगा, कि तुम्हारे पितरोंके परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। अब वे मुझ से कहें, 'उसका नाम क्या है?' मैं उनसे क्या कहूं? परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं वही हूं जो मैं हूं"; और उस ने कहा, इस्राएलियोंसे यों कहना, कि मैं हूं ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।" फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा,

"इस्राएलियोंसे इस प्रकार कहना, 'यहोवा, तेरे पितरों के परमेश्वर, इब्राहीम के परमेश्वर, इसहाक के परमेश्वर, और याकूब के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। यह मेरा नाम सदा के लिए है, और यह मेरा स्मारक-नाम सभी पीढ़ियों के लिए है। (निर्गमन 3:13-15) मूसा को परमेश्वर के लोगों को छुड़ाने और उनकी अगुवाई करने के लिए चुना गया था। उसने चमत्कार किए और परमेश्वर के नियम (शिक्षा या निर्देश) की घोषणा की। यीशु की तरह, मूसा ने मरने से पहले, परमेश्वर के लोगों के सामने आने वाले के बारे में भविष्यवाणी की थी। वह मूसा की तरह होगा, जो परमेश्वर के लोगों का उद्धार करेगा और उनकी अगुवाई करेगा, चमत्कार करेगा और परमेश्वर की व्यवस्था (शिक्षा और निर्देश) की घोषणा करेगा। सुनिए मूसा ने क्या कहा: "तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे लिये मेरे तुल्य भविष्यद्वक्ता को अपके देश के लोगोंमें से खड़ा करेगा, और तू उसकी सुन। जो कुछ तू ने होरेब में अपने परमेश्वर यहोवा से मण्डली के दिन यह कहकर मांगा, कि अपके परमेश्वर यहोवा का शब्द मैं फिर न सुनूं, मैं इस बड़ी आग को फिर कभी न देखूंगा, वा मैं मरो।' यहोवा ने मुझ से कहा, 'उन्होंने अच्छा कहा है। मैं उनके देशवासियों में से तेरे समान एक नबी को खड़ा करूंगा, और अपके वचन उसके मुंह में डालूंगा, और जो कुछ मैं उसको आज्ञा दूंगा, वह वह उन से कहेगा। ऐसा होगा कि जो कोई मेरी बातें नहीं सुनेगा, जो वह मेरे नाम से कहेगा, मैं आप ही उस से इसकी माँग करूँगा।" (व्यवस्थाविवरण 8:15-18) अपने लोगों को यह पहचानने में मदद करने के लिए कि आने वाला कौन होगा, परमेश्वर ने मूसा को यहोशू को भविष्यद्वक्ता के रूप में नियुक्त किया था जो उसके पीछे होगा। तब यहोवा ने मूसा से कहा, सुन, तेरे मरने का समय निकट है; यहोशू को बुलाकर मिलापवाले तम्बू में उपस्थित हो, कि मैं उसे आज्ञा दूं।" तब मूसा और यहोशू ने जाकर मिलापवाले तम्बू में उपस्थित हुए। तब उस ने नून के पुत्र यहोशू को आज्ञा देकर कहा, दृढ़ और हियाव बान्धकर, क्योंकि तू इस्राएलियोंको उस देश में ले आना, जिसकी मैं ने उन से शपय खाई या, और मैं तेरे संग रहूंगा। (व्यवस्थाविवरण 31:14 और 23) यहोशू (याह-शुआ) नाम का अर्थ है "मैं उद्धार हूँ। और ठीक यही हिब्रू में यीशु का नाम है, याह-शुआ। परमेश्वर के लोगों को वादा किए गए देश में ले जाना मूसा की जिम्मेदारी नहीं थी क्योंकि उसने पाप किया था। वादा किए गए देश में परमेश्वर के लोगों की अगुवाई करना यहोशू (याह-शुआ) की जिम्मेदारी थी और अब भी है। प्रेरितों के काम की पुस्तक के अध्याय 7 में, स्तिफनुस एक व्यक्ति जो पवित्र आत्मा से भरा हुआ था, यहूदियों की शासक परिषद, महासभा के खिलाफ, यीशु और उसके सामने परमेश्वर के सभी भविष्यवक्ताओं के साथ उनके व्यवहार के संबंध में एक रेलिंग गवाही लाया। उसके लिए, उसे पत्थर मारकर मार डाला गया, जिससे वह चर्च का पहला शहीद हो गया। इस्राएलियों ने परमेश्वर को बोलते हुए सुनने से इनकार कर दिया था, यहाँ तक कि जब उन्होंने लोगों के माध्यम से बात की थी, जैसा कि उन्होंने अनुरोध किया था। यीशु ने पहले ही महायाजकों और फरीसियों से परमेश्वर की वाणी को सुनने और पालन करने में उनकी विफलता के बारे में बात की थी और यहाँ तक कि जमींदार के दृष्टान्त का उपयोग भी इसी बात को करने के लिए किया था। चूँकि यीशु ही वह था जिसके बारे में मूसा ने भविष्यवाणी की थी, वह अपने शिष्यों को आज्ञा देता है, "तुम्हारा मन व्याकुल न हो; ईश्वर पर विश्वास करो, मुझ पर भी विश्वास करो।" फिर उसने अपनी पहचान के लिए दो सबूत पेश किए। पहला प्रमाण वे शब्द थे जो उसने उनसे बोले थे: उनके आगे बताए गए शब्दों को कानून में सत्यापित किया जा सकता था और भविष्यवक्ताओं और उनके पूर्वाभास के शब्द पूरे होंगे। दूसरा प्रमाण जो यीशु ने उन्हें दिया वह था वे चमत्कार जो उसने किए थे। "मेरा विश्वास करो कि मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है; अन्यथा कर्मों के कारण ही विश्वास करो।" (यूहन्ना 14:11) समूह चर्चा: पवित्रशास्त्र के आधार पर आप अपने बारे में क्या "मैं हूँ" कथन कर सकते हैं? पाठ का बिंदु: चूँकि यीशु मार्ग, और सत्य और जीवन है, उस पर विश्वास करना और वह सब कुछ जो वह हमें करने की आज्ञा देता है, उसका पालन करना कितना महत्वपूर्ण है?

पाठ 54

मसीह में बने रहना परिचय: जैसे ही अंतिम भोज समाप्त होने लगा यीशु ने अपने शिष्यों को उस पर विश्वास करने की आज्ञा दी जब उसने कहा, "मैं पिता में हूं और पिता मुझ में है।" शिष्यों के लिए यह एक गहन कथन था। यीशु का क्या मतलब था? यह कैसे संभव हुआ? हमारे समय में भी काफी हद तक यह कथन एक रहस्य बना हुआ है। फिर भी ईसाइयों के रूप में हम मानते हैं कि उनके कथन और हमारे अधिकांश धर्मशास्त्र इसके चारों ओर बने हैं आइसब्रेकर: यीशु पिता में और पिता उनमें कैसे हो सकते हैं? यूहन्ना का सुसमाचार इस परिचय के साथ शुरू होता है कि यीशु ही वचन है। इस प्रकार शब्द पिता में है और पिता शब्द में है। एक अवधारणा जिसे हम समझ सकते हैं, वह यह है कि केवल एक ही ईश्वर है, जो 1) निर्माता (पिता, मस्तिष्क, विचार या विचार प्रवर्तक), शब्द (पुत्र, पिता के विचारों की संतान - सब कुछ के अधीन लाया जाएगा) पिता क्या कहता है) और 3) आत्मा (शक्ति, एनिमेटर या वह जो उस कार्य को पूरा करता है जिसे वचन घोषित करता है)। इस पहलू में मनुष्य ईश्वर के समान हैं, उनके पास विचार हैं, वे अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए शब्द बोलते हैं और अपनी इच्छा या विचारों को पूरा करने के लिए अपने शरीर या दूसरों का उपयोग करते हैं। परिचय जारी रहा: आज के पाठ में आने से पहले आइए कुछ अन्य शास्त्रों पर विचार करें: ईश्वर के लिए झूठ बोलना असंभव है। (इब्रानियों 6:18) क्यों? क्योंकि वह एक है... उसके विचार, वचन और कार्य एकमत हैं। यदि वे असहमत होते तो एक नहीं होते। क्योंकि उसके सब मार्ग धर्मी हैं; वह विश्वासयोग्य और अन्याय रहित परमेश्वर है, वह धर्मी और सीधा है। (व्यवस्थाविवरण 32:4) यीशु * ने उससे कहा, “मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; कोई मेरे द्वारा पिता के पास नहीं आता। (विश्वास सुनने से और सुनने से मसीह के वचन से आता है) यदि आप मुझे जानते होते, तो आप मेरे पिता को भी जानते; अब से तुम उसे जानते हो, और उसे देखा है।” फिलिप्पुस ने उस से कहा, हे प्रभु, पिता को हमें दिखा, और यह हमारे लिए काफी है। यीशु ने *उससे कहा, "क्या मैं तुम्हारे साथ इतने लंबे समय से रहा हूँ, और तौभी तुम मुझे नहीं जानते, फिलिप्पुस? जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है; तुम कैसे कह सकते हो, 'हमें पिता दिखाओ'? क्या तुम विश्वास नहीं करते कि मैं पिता में हूं, और पिता मुझ में है? जो वचन मैं तुम से कहता हूं, वह मैं अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में बना रहता है, अपने काम करता है। (यूहन्ना 14:6-10) (यीशु पिता से बात कर रहा है) "उन्हें सच्चाई से पवित्र करो; आपकी बात सच है। (यूहन्ना 17:17) आत्मा ही गवाही देता है, क्योंकि आत्मा ही सत्य है। (1 यूहन्ना 5:6) (यीशु बोल रहे हैं) “तू शरीर के अनुसार न्याय करता है; मैं किसी को जज नहीं कर रहा हूं। परन्तु यदि मैं न्याय करूं, तो भी मेरा न्याय सत्य है; क्योंकि उस में मैं अकेला नहीं, परन्तु मैं और पिता हूं, जिस ने मुझे भेजा है।” (यूहन्ना 8:15-16) “यदि कोई मेरी बातें सुनकर उन पर न माने, तो मैं उसका न्याय नहीं करता; क्योंकि मैं जगत का न्याय करने नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने आया हूं। जो मुझे ठुकरा देता है, और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता, उसका न्याय करने वाला एक है; जो वचन (सच्चाई) मैं ने कहा वह अंतिम दिन में उसका न्याय करेगा। "क्योंकि मैं ने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा, परन्तु पिता ने जिस ने मुझे भेजा है, उसी ने मुझे आज्ञा दी है, कि क्या कहूं और क्या बोलूं। मैं जानता हूँ कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है; इसलिए जो बातें मैं कहता हूं, वह जैसा पिता ने मुझ से कहा है, वैसा ही बोलता हूं।” (यूहन्ना 12:47-50) परन्तु उसने उत्तर दिया और कहा, "लिखा है, 'मनुष्य केवल रोटी ही पर नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।" (मत्ती 4:4) पढ़ना पवित्रशास्त्र:(यूहन्ना 15:1-11) आज्ञाएँ: मुझ में बने रहो, और मैं तुम में। मेरे प्रेम में बने रहो। सबक: जैसे ही शिष्य यीशु के साथ अंतिम भोज की जगह छोड़ते हैं, वह ईश्वर के साथ एकता के विचार पर विस्तार करता है। केवल इस बार वह शिष्य की उसके साथ एकता की बात करता है। वह यह घोषणा करते हुए बातचीत शुरू करता है, "मैं ही सच्ची दाखलता हूँ।" एक अंगूर की उपमा

के माध्यम से यीशु इस एकता को अपने साथ शिष्यों को फल देने में सक्षम होने से जोड़ता है। समूह चर्चा: चूँकि यीशु स्वयं को "सच्ची लता" कहते हैं, क्या कोई असत्य लता है? हां। (यहेजकेल 17:1-10)। यीशु किस फल की बात कर रहा है? गलातियों 5:22-23 में वर्णित आत्मा का फल। हमारे फल देने का उद्देश्य क्या है? यह भगवान की महिमा करता है और दूसरों को आशीर्वाद देता है। जब हम फल नहीं देते तो भगवान क्या करते हैं? हमें ऊपर उठाता है (बनाम 2)। परमेश्वर की भलाई मनुष्य को पश्चाताप की ओर ले जाती है (रोमियों 2:4) हम कैसे फल उत्पन्न करने में सक्षम हैं? मसीह में होने के द्वारा (बनाम 4)। सो यदि कोई मसीह में है, तो वह नई सृष्टि है; पुरानी बातें चली गईं; देखो, नई बातें आ गई हैं। (2 कुरिन्थियों 5:17) हम और अधिक फल कैसे उत्पन्न कर सकते हैं? भगवान हमें छँटाई (बनाम 2)। अनुशासन के द्वारा (इब्रानियों 12:5-6) ध्यान की कमी से पत्ते निकलते हैं फल नहीं। अंगूर की बेल काटने का उद्देश्य क्या है और यह कैसे किया जाता है? इससे बेहतर गुणवत्ता वाले अंगूर का उत्पादन होगा। अंगूर केवल एक वर्ष पुरानी लताओं पर उगते हैं और केवल सबसे ऊपर की कलियाँ बची रहती हैं। हम अधिक फल कैसे उत्पन्न करते हैं? (vs.5) यह पहचान कर कि हम प्रभु के अलावा कुछ नहीं कर सकते हैं इसलिए हम उसके साथ निरंतर संगति में रहते हैं। हम कैसे जानते हैं कि हम मसीह में बने हुए हैं? हम रोटी और दाखरस का हिस्सा लेना जारी रखते हैं। जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है, वह मुझ में बना रहता है, और मैं उस में।" (यूहन्ना 6:53-56) यदि हम मसीह के साथ संगति में नहीं रहते हैं तो क्या होगा? (बनाम 6) हम सूख जाते हैं और सूख जाते हैं। तब हम इकट्ठे होकर आग में जलाने के लिथे डाले जाते हैं। क्या होगा यदि हम रोटी और दाखमधु को त्याग दें? हम वास्तव में कह रहे हैं कि हमारी मसीह के साथ कोई संगति नहीं है और जो उसने हमें करने की आज्ञा दी है उसका पालन नहीं कर रहे हैं। सबक जारी रहा: पाठ को जारी रखते हुए, यीशु ने टिप्पणी की कि यदि उनके शिष्य उनमें रहते हैं और उनके शब्द उनमें रहते हैं तो वे जो चाहें मांग सकते हैं और यह उनके लिए किया जाएगा। उस समय शिष्य शायद सोच रहे थे... कौन से शब्द? यीशु को उत्तर देने की जल्दी थी! उसने उन्हें एक और आज्ञा दी और फिर उन्हें बताया कि इसे कैसे रखना है। मेरे प्यार में रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे तो मेरे प्रेम में बने रहोगे। यह वैसा ही था जैसा पिता ने उसके साथ व्यवहार किया था। समूह चर्चा: चूँकि यीशु परमेश्वर का वचन है, उसके निर्देश हमारे लिए कितने महत्वपूर्ण हैं? _____

__ क्या ईसाइयों को उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं मिल रहा है क्योंकि वे यीशु से जो करने के लिए कहते हैं उसका पालन नहीं कर रहे हैं? _____ आपके लिए निम्नलिखित श्लोक का क्या अर्थ है? _____ इस से हम जानते हैं कि हम उसे जान गए हैं, यदि हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं। जो यह कहता है, कि मैं उसे जान गया हूं, और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है, और उस में सत्य नहीं है; परन्तु जो कोई उसके वचन पर चलता है, उस में परमेश्वर का प्रेम सचमुच सिद्ध हुआ है। इसके द्वारा हम जानते हैं कि हम उसमें हैं: जो कहता है कि वह उसमें रहता है, वह स्वयं भी उसी तरह चलना चाहिए जैसे वह चला। (1 यूहन्ना 2:3-6) पाठ का बिंदु: चूँकि हम परमेश्वर के आत्मा के द्वारा नया जन्म लिया है और परमेश्वर हम में वास करता है, तो हमारे वचन और कार्य परमेश्वर के वचन के अनुरूप होने चाहिए। आवेदन: दो अलग-अलग अंगूर के बागों के गाने पढ़ें। यशायाह 5:1-7 और 27:2-6

पाठ 55

मोहभंग हुआ आइसब्रेकर: क्या पहले कभी किसी बात को लेकर आपका मोहभंग हुआ है? यदि ऐसा है, तो क्या था? _____

_____

परिचय: अंतिम भोज के अंत के निकट यीशु ने अपने शिष्यों से विभिन्न संबंधों के बारे में बात करना शुरू किया जिसमें वे शामिल होंगे। पहले उन्होंने उनके साथ अपने संबंधों के बारे में बात की। "आप मुझे बर्दाश्त करें और मैं आपको।" फिर उसने एक दूसरे के साथ उनके संबंधों पर चर्चा की। "मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।" और अंत में उसने उनसे दुनिया के साथ उनके संबंधों के बारे में बात की। "यदि संसार (ब्रह्मांड) तुमसे घृणा करता है, तो तुम जानते हो कि उसने तुमसे पहले मुझसे घृणा की है। यदि आप दुनिया (कॉसमॉस) के होते, तो दुनिया (कॉसमॉस) अपने आप से प्यार करती; परन्तु इसलिये कि तुम संसार के नहीं हो, परन्तु मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है, इस कारण संसार तुम से बैर रखता है।" जब यीशु ने "संसार" शब्द का प्रयोग किया, तो वह पृथ्वी के बारे में उसके भू-भागों, महासागरों, झीलों, नदियों, पहाड़ों और घाटियों के साथ बात नहीं कर रहा था। इसके बजाय शास्त्रों में यूनानी शब्द कॉसमॉस (दुनिया) का इस्तेमाल किया गया है। कोस्मोस शब्द का अनुवाद "अलंकरण" के रूप में किया गया है। जिस तरह से चीजें दिखाई देती हैं या जिस तरह से चीजें यहां पृथ्वी पर काम करती हैं। एक ही मूल शब्द पवित्रशास्त्र के दो परिचित अंशों में प्रयोग किया गया है कि कैसे ईसाई महिलाओं को प्रकट होना चाहिए। आपका अलंकरण (मूल शब्द - कॉसमॉस) केवल बाहरी नहीं होना चाहिए - बालों को गूंथना, और सोने के गहने पहनना, या कपड़े पहनना; परन्तु वह हृदय का छिपा हुआ मनुष्य हो, जिसमें नम्र और शान्त आत्मा का अविनाशी गुण हो, जो परमेश्वर की दृष्टि में अनमोल है। (1 पतरस 3:3-4) इसी तरह, मैं चाहता हूँ कि स्त्रियाँ (मूल शब्द - कॉसमॉस) खुद को उचित कपड़ों से सजाएँ, शालीनता और सावधानी से, लट वाले बालों और सोने या मोतियों या महंगे कपड़ों से नहीं, बल्कि अच्छे कामों से। , जैसा कि ईश्वरत्व का दावा करने वाली महिलाओं के लिए उचित है। (1 तीमुथियुस 2:9-10) जब हम एक स्त्री को फैंसी कपड़े और गहनों में सजे हुए देखते हैं, तो वह वास्तव में आकर्षक लगती है, हालाँकि यह हमें स्वयं उस स्त्री के बारे में कुछ नहीं बताती है। वह जिस तरह से दिखाई देती है वह बस यही है। यह एक भ्रम है! और वैसे ही दुनिया (कॉसमॉस) है... यह एक भ्रम है। इस दुनिया की चीजें आकर्षक लगती हैं लेकिन जैसी दिखती हैं वैसी नहीं हैं। शास्त्र हमें बताते हैं कि शैतान, झूठ का पिता, इस दुनिया (ब्रह्मांड) के सभी राज्यों पर शासन करता है। इसलिए, इसमें सब कुछ एक भ्रामक मुखौटा पहने हुए है ... यह एक भ्रम है। वास्तव में आप भ्रम शब्द को दुनिया (कॉसमॉस) शब्द से बदल सकते हैं। उदाहरण के लिए, हम याकूब की पुस्तक से एक परिचित पद को पढ़ सकते हैं, "हे व्यभिचारिणियों, क्या तुम नहीं जानती कि संसार से मित्रता (भ्रम) परमेश्वर के प्रति शत्रुता है? इसलिए जो संसार का मित्र (भ्रम) बनना चाहता है, वह अपने आप को ईश्वर का शत्रु बना लेता है। शब्दकोश के अनुसार भ्रम एक गलत विचार या अवधारणा है। यह विश्वास या राय है जो तथ्यों के अनुरूप नहीं है ... एक असत्य, भ्रामक, या भ्रामक उपस्थिति या छवि। बहुत से लोग मोहभंग शब्द का प्रयोग नकारात्मक अर्थों में करते हैं, हालांकि मोहभंग होना वास्तव में काफी अच्छा है। मोहभंग शब्द का सीधा सा अर्थ है भ्रम या झूठे विचारों से मुक्त होना। स्क्रिप्चर पढ़ना:(यूहन्ना 15:18 - 16:33) समूह चर्चा: कुछ ऐसे भ्रमों के नाम बताइए जिनके तहत लोग रहते हैं? लोगों का मोहभंग कैसे हो जाता है? सच्चाई जानने से। "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले हो; और तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।" (यूहन्ना 8:31-32) आज्ञाएँ: उस वचन को स्मरण रखो जो मैं ने तुम से कहा था, "दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता।" मांगो तो

पाओगे, कि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए। परन्तु हिम्मत रखो। सबक: यीशु ने चेलों को यह कहकर सबक शुरू किया कि दुनिया उनसे नफरत करेगी। यह काफी समझ में आता है क्योंकि दुनिया और इसकी व्यवस्था झूठ पर आधारित हैं, जबकि यीशु, उनके शिष्य और परमेश्वर का राज्य सभी सत्य पर आधारित हैं। इसलिए संघर्ष अपरिहार्य है। यीशु ने आगे कहा, “यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रेम रखता; परन्तु इस कारण कि तुम संसार के नहीं हो, परन्तु मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है, इस कारण संसार तुम से बैर रखता है। यीशु इस सच्चाई के बारे में इतना अडिग है कि वह इसे एक आदेश के साथ पुष्ट करता है, "वह वचन याद रखना जो मैंने तुमसे कहा था, 'एक दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता'। यदि उन्होंने मुझे सताया, तो वे भी तुम्हें सताएंगे।” दुनिया के झूठ का मुकाबला करने के लिए, प्रभु ने शिष्यों से वादा किया था कि वह उन्हें पवित्र आत्मा भेजेंगे। और जब पवित्र आत्मा आया तो वह उनके साथ इस बात की गवाही देता कि यीशु ही मार्ग, सत्य और जीवन है और उसके बिना कोई पिता के पास नहीं आ सकता। इसके अलावा पवित्र आत्मा दुनिया को पाप, धार्मिकता और न्याय के लिए दोषी ठहराएगा। आत्मा ही गवाही देता है, क्योंकि आत्मा ही सत्य है। (1 यूहन्ना 5:6) पवित्र आत्मा का आना इस बात का चिन्ह होगा कि परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर आ गया है। यह वह राज्य था जिसकी भविष्यवाणी दानिय्येल ने की थी "बिना हाथों के चट्टान में से काटा गया पत्थर" जो इस दुनिया के सभी राज्यों (कॉस्मोस) को कुचल देगा। इस राज्य के प्रत्येक सदस्य को स्वर्गीय कवच पहनाया जाएगा और प्रत्येक के पास आत्मा की तलवार होगी, जो कि परमेश्वर का वचन है। और जिस तरह से तलवार मुड़ी वह दुनिया के झूठ और भ्रम को नष्ट कर देगी। यीशु ने चेलों से कहा, कि उसके नाम से मांगो और पाओ कि उनका आनन्द मेरा पूरा हो जाए। हम में से प्रत्येक जो यीशु मसीह को प्रभु के रूप में नामित करता है, उसे हमें शासकों, शक्तियों, इस अंधकार की विश्व शक्तियों और स्वर्गीय स्थानों में दुष्टता की आध्यात्मिक शक्तियों के खिलाफ आत्मा की तलवार का उपयोग करने में प्रभावी बनाने के लिए कहना चाहिए। फिर भी हमें मांस और खून के खिलाफ नहीं लड़ना है, भले ही हमारे दुश्मन झूठ और भ्रम के माध्यम से लोगों को नियंत्रित कर सकते हैं। ये वे लोग हैं जो सच्चाई को नहीं जानते हुए हमें सताते हैं। और यीशु की तरह वे हमारा उपहास, यातना या हत्या कर सकते हैं। लेकिन हमें यह अच्छी तरह से जानते हुए भी खुश होना चाहिए कि हमारी आशा इस दुनिया में नहीं है। जब यीशु ने इस पाठ को समाप्त किया तो उसने कहा, “ये बातें मैं ने तुम से इसलिये कही हैं, कि तुम को मुझ में शान्ति मिले। दुनिया में (कोस्मोस) आपको क्लेश है, लेकिन हिम्मत रखो; मैंने दुनिया (ब्रह्मांड) को जीत लिया है।" समूह चर्चा: कई ईसाई मानते हैं कि उनके जीवन में सब कुछ अद्भुत होगा। इस बारे में सच्चाई क्या है? वे उस शास्त्र को भूल जाते हैं जो कहता है कि इस दुनिया में आपको क्लेश होगा। कई ईसाई मानते हैं कि चर्च में हर कोई अच्छा, समझदार और क्षमाशील है। इस बारे में सच्चाई क्या है? चर्च में हर कोई ईसाई नहीं है, वास्तव में उन्हें आपके दुश्मन द्वारा काम को नष्ट करने के लिए भेजा जा सकता है। साथ ही ईसाई भी मसीह की छवि के अनुरूप हैं और हो सकता है कि वे परिपक्वता पर नहीं पहुंचे हों। कई ईसाई मानते हैं कि जब वे शादी करेंगे, तो उनका जीवन पूरी तरह से पूरा हो जाएगा। इस बारे में सच्चाई क्या है? स्वयं के लिए मरना और अपने साथी के प्रति अधीनता में कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। कई ईसाई मानते हैं कि आपको एक दूसरे पर भरोसा करना चाहिए। इस बारे में सच्चाई क्या है? कहाँ लिखा है कि हमें किसी भी आदमी पर भरोसा करना चाहिए? शास्त्रों के अनुसार हमें केवल ईश्वर पर भरोसा करना चाहिए। (भज 20:7, भज 56:4, पीआर 3:5 और यूहन्ना 14:1) अनेक मसीही विश्वासी मानते हैं कि आत्मिक विकास बस होता है। इस बारे में सच्चाई क्या है? आध्यात्मिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें विश्वासी परमेश्वर के वचन को सुनकर और उसका पालन करके मसीह की छवि के अनुरूप होता है। अपने जीवन के विभिन्न बिंदुओं पर उनका परीक्षण किया जाएगा। कई ईसाई मानते हैं कि सरकार उनकी समस्याओं का समाधान कर सकती

है। इस बारे में सच्चाई क्या है? _____ पाठ का बिंदु: सत्य का स्वागत करके मोहभंग का स्वागत करें। आनन्दित हों जब आपको सच्चाई के लिए सताया जाता है क्योंकि यह आपके परिवर्तन को मसीह की छवि में बदलने की पुष्टि करता है। आवेदन: निकट भविष्य में घटने वाली एक घटना को लिखिए जिसमें आपको सच बोलने के लिए सताया गया था और इसके बारे में टूर ग्रुप को बताएं।

पाठ 56

उसकी प्रतीक्षा क्यों? और उद्देश्य क्या है? शिष्यता निर्माण प्रक्रिया के मेरे जीवन श्रृंखला पाठ 56 में। जैसे ही अंतिम भोज समाप्त होने वाला था, यीशु ने अपने शिष्यों के लिए प्रार्थना की और फिर चौथे कप दाखरस को आशीर्वाद दिया। दाखरस का यह चौथा प्याला, एलिय्याह का प्याला, फसह के भोजन की परिणति है और प्रत्येक इस्राएली भविष्य में परमेश्वर की सभी प्रतिज्ञाओं की पूर्ति की ओर इशारा करता है। इसे स्तुति या आशा का प्याला भी कहा जाता है और यह विशेष रूप से निर्गमन 6:8 को संदर्भित करता है। पंद्रह सदियों से इस्राएली इस अनुष्ठान का पालन कर रहे थे और अब प्रभु का फसह सचमुच शिष्य की आंखों के सामने पूरा हो रहा था। जैसे ही पुरुषों ने प्याला पिया, उन्होंने हालेल (भजन 113-118) गाकर समाप्त किया। उन्हें इस बात का अंदाजा नहीं था कि वे जो गा रहे थे वह कुछ ही घंटों में हो जाएगा (भजन 118:14-29 के अंतिम पंद्रह पद पढ़ें)। जब उन्होंने भजन गाना समाप्त किया तो वे रात में बाहर चले गए। यीशु और चेले पास के एसेन गेट से शहर से बाहर निकले। वे खड़ी ढलान से नीचे बेन हिन्नोम की घाटी में उतरे। छोटी यात्रा जैतून के पेड़ों के एक ग्रोव पर समाप्त हुई जिसे ... गेथसेमेन, "तेल प्रेस" के नाम से जाना जाता है। पढ़ें: मत्ती 26:36-46, मरकुस 14:32-42, लूका 22:39-46 यहीं पर, गतसमनी में, यीशु ने अपने आठ शिष्यों को प्रार्थना करने तक रहने के लिए कहा था। शिष्यों के साथ उनकी बातचीत से हम अपने प्रभु के कुछ करने की प्रतीक्षा करने के बारे में कुछ सबक सीख सकते हैं। कभी-कभी उसका इंतजार करना उबाऊ होता है। हम मंत्रालय में रिहा होना चाहते हैं लेकिन ऐसा नहीं होता है। हम किसी चीज के लिए प्रार्थना करते हैं और ऐसा लगता है कि वह उत्तर नहीं देता। हम उनके निर्देश की प्रतीक्षा करते हैं लेकिन वह नहीं आता है। हमें इंतजार क्यों करना पड़ता है? घंटे लुढ़कते हैं। बात कहां रुक रही है?" चेले हमसे अलग नहीं थे, इसलिए यीशु ने उन्हें कुछ निर्देश दिए कि जब वे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे तो उन्हें क्या करना चाहिए। उन्होंने शिष्यों को बैठने के लिए कहकर प्रारंभ किया। "जब तक मैं प्रार्थना न कर लूं, तब तक यहीं बैठो।" बैठना एक शांत अवस्था को दर्शाता है। यह काम नहीं कर रहा है और यह सो नहीं रहा है। यह एक और क्रिया के लिए तत्परता की स्थिति है। हम, ईसाइयों के रूप में यह याद रखना अच्छा होगा कि प्रभु हमारे सामने रास्ता बनाने के लिए जा रहे हैं। इब्रानियों की पुस्तक हमें बताती है कि यीशु, हमारा महायाजक, "हमारे लिए विनती करने के लिए जीवित है" (इब्रानियों 7:25)। और हम में से जो यहोवा की बाट जोहते हैं, उनके लिए परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है कि वे "नई शक्ति प्राप्त करेंगे; वे उकाबों की नाईं उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और न थकेंगे, वे चलेंगे और थकेंगे नहीं" (यशायाह 40:31)। पतरस, याकूब और यूहन्ना के साथ यीशु ने दक्षिण की ओर पेड़ों के उपवन में थोड़ी दूरी चलकर स्वयं को बड़े समूह से अलग कर लिया। उपवन में प्रवेश करने के बाद उसने उन तीन शिष्यों से कहा कि वे वहीं रहें और जागते रहें। दूसरा निर्देश जिसका हमें पालन करना चाहिए, वह है उसकी प्रतीक्षा करते हुए सतर्क रहना। हमारे जीवन में आत्मसंतुष्ट होने की प्रवृत्ति है, यीशु के किसी महत्वपूर्ण रूप में प्रकट होने की अपेक्षा नहीं करना। फिर भी वह करेगा! इब्रानियों का लेखक इसे इस प्रकार कहता है: "और हम चाहते हैं, कि तुम में से हर एक ऐसा ही परिश्रम करे, कि अन्त तक आशा की पूरी निश्चयता को प्राप्त करे, कि तुम आलसी न हो जाओ, परन्तु उन की सी चाल चलो जो विश्वास से चलते हैं और धीरज प्रतिज्ञाओं का अधिकारी होता है" (इब्रानियों 6:11-12)। जब यीशु लौटा तो उसने पतरस, याकूब और यूहन्ना को सोते हुए पाया और इसके लिए उन्हें डांटा। तीसरी चीज जो हमें करनी है वह है हमारे देखने में प्रार्थना को जोड़ना। यीशु ने कहा, “जागते रहो और प्रार्थना करते रहो।” उस रात बगीचे में, यीशु ने अपने पिता की इच्छा मांगी। और इसी प्रकार की प्रार्थना हमें करनी चाहिए। कुछ लोग इसे "आत्मा में प्रार्थना" कहते हैं। प्रेरित पौलुस ने रोमियों को लिखी अपनी पत्री में इसका संकेत दिया (रोमियों 8:26-27)। कई बार, हम ईसाई के रूप में प्रार्थना में

संलग्न होते हैं, लेकिन वास्तव में ईश्वर से प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं करते हैं, इसलिए हम बस आगे बढ़ते हैं और वही करते हैं जो हम पहले से करने की योजना बना रहे थे। यीशु ने चेलों को देखने और प्रार्थना करने की सलाह दी ताकि वे परीक्षा में न पड़ें। हमें जागते और सतर्क रहने का कारण यह देखना है कि प्रभु का उत्तर क्या होगा। यीशु ने भी इसी मुद्दे के संबंध में पिता से तीन (पाठ 41) बार प्रार्थना की। . . क्या वह जिस चीज़ से गुज़रने की तैयारी कर रहा था उसे दूसरे तरीके से किया जा सकता था? यीशु विश्वास के व्यक्ति थे। उसे अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर देने की आदत थी। उसे विश्वास था कि वह जो मांगेगा वह उसे प्राप्त होगा। प्रार्थना के संबंध में, ईसाइयों को यह याद रखना चाहिए कि जब हम ईश्वर से कुछ माँगते हैं तो हमें विश्वास करना चाहिए कि हमें हमारा अनुरोध प्राप्त हो गया है (मरकुस 11:24)। यीशु फिर लौटा और तीन चेलों को सोता हुआ पाया, इसलिए उसने उन्हें एक और निर्देश दिया। "उठो और प्रार्थना करो।" चौथी बात जो हम प्रभु की प्रतीक्षा करने के बारे में सीख सकते हैं, वह यह है कि जब हम थके हुए होते हैं तो हमें प्रार्थना करते समय अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए या खड़ा होना चाहिए। यह जो कुछ भी करने के लिए प्रभु कहता है उस पर कार्य करने के लिए हमारी तैयारियों को प्रदर्शित करता है। जैसे ही चेलों ने उठने की तैयारी की, यीशु ने अपना अंतिम निर्देश जारी किया, "उठो, हम चलें"। प्रभु की प्रतीक्षा करने के बारे में हम जो आखिरी चीज सीखते हैं, वह यह है कि एक बार जब वह हमें निर्देश देता है कि क्या करना है या किस दिशा में जाना है, तो ईसाई होने के नाते हमें तुरंत वह करना चाहिए जो वह कहता है। पाठ का सार यह है कि प्रभु के कार्य करने की प्रतीक्षा में सक्रिय भागीदारी शामिल है: इसके लिए हमें आराम करने की आवश्यकता है, व्यस्त नहीं और नींद नहीं। इसके लिए हमें सतर्क रहने की आवश्यकता है। इसके लिए हमें प्रार्थना करने की आवश्यकता है, भगवान की इच्छा की तलाश करना। हमें कार्य करने के लिए तैयार रहने के लिए। इसके लिए हमें तुरंत उसे जवाब देना होगा। इसके साथ, मुझे अगले पाठ तक थोड़ा होमवर्क असाइनमेंट के साथ विचार करने के लिए इस प्रश्न के साथ छोड़ दें: दस कुंवारी का दृष्टांत कैसे होता है (मत्ती 25:1-13) उस रात गतसमनी की वाटिका में यीशु ने अपने शिष्यों को जो शिक्षा दी उससे तुलना करें? और होमवर्क असाइनमेंट: अगली बार जब आप प्रभु के कुछ करने की प्रतीक्षा कर रहे हों तो इस रूपरेखा का उपयोग करें।

पाठ 57

पवित्र आत्मा प्राप्त करें परिचय: पिछले पाठ में, हमने देखा कि जब यीशु गतसमनी के वाटिका में प्रार्थना करने गए, तो उन्होंने शिष्यों को उनकी प्रतीक्षा करना सिखाया। इसमें उनकी ओर से सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता थी। उन्हें होना था:आराम से, व्यस्त या सो नहीं।सतर्क।प्रार्थनापूर्वक भगवान की इच्छा की तलाश में।कार्य करने के लिए तैयार।उसकी आज्ञाओं का तुरंत जवाब देना। जैसे ही यीशु ने प्रार्थना करना समाप्त किया, उसे गिरफ्तार कर लिया गया, कोशिश की गई, निंदा की गई, क्रूस पर चढ़ाया गया और दफनाया गया। तीन दिन और तीन रात कब्र में रहने के बाद वह मृतकों में से जी उठा। वह उस सुबह मैरी मैग्डलीन और अपने चाचा, क्लियोपास और साइमन नाम के एक अन्य शिष्य को दिखाई दिया, जब वे उस दोपहर एम्मॉस के लिए सड़क पर चल रहे थे। क्लियोपास और शमौन पतरस और अन्य शिष्यों को यह बताने के लिए यरूशलेम वापस गए कि उन्होंने यीशु को जीवित देखा है! जब वे दोनों शिष्यों को अपनी कहानी सुना रहे थे, यीशु अचानक उन सभी के सामने प्रकट हुए। समूह चर्चा: क्या आपको लगता है कि शिष्य यीशु के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे जैसा कि उसने उन्हें सिखाया था? क्यों या क्यों नहीं? _____

_____ यदि आप शिष्यों के साथ होते जब यीशु उनके बीच प्रकट हुए, तो आपकी प्रतिक्रिया क्या होती? _____

_____ पवित्रशास्त्र पढ़ना:(मरकुस 16:13-14, लूका 24:33-49, और यूहन्ना 20:19-29) आज्ञाएँ: शांति तुम्हारे साथ हो। तुम्हारे साथ शांति हो; जैसा पिता ने मुझे भेजा है, मैं भी तुम्हें भेजता हूं। सबक: कमरे में यीशु के अचानक प्रकट होने से चेले चौंक गए, इसलिए उन्होंने तुरंत उन्हें शांति से रहने की आज्ञा दी। अभी पाँच दिन पहले, अन्तिम भोज के समय यीशु ने उनसे कहा था, “थोड़ी देर और तुम मुझे फिर न देखोगे; और फिर थोड़ी देर, और तुम मुझे देखोगे?” फिर भी वे उसे देखकर चकित रह गए। तब यीशु ने उनके अविश्वास और मन की कठोरता के कारण उनकी निन्दा की, क्योंकि उन्होंने उन की भी प्रतीति नहीं की, जिन्होंने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था। पहले तो शिष्यों को लगा कि वे भूत देख रहे हैं। लेकिन यीशु ने उन्हें आश्वस्त किया। पहले उन्हें अपने कील छिदे हाथ-पैर दिखाकर। और दूसरी बात, उसने उन्हें उसे छूने के लिए आमंत्रित किया और उनसे कहा कि एक आत्मा के पास मांस और हड्डियां नहीं होती हैं जैसा कि उसके पास था। सबूत के तौर पर भौतिक सबूतों के साथ चेले आनन्दित होने लगे क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि यह वास्तव में यीशु ही थे जो उनके बीच खड़े थे। अन्तिम भोज में, यीशु ने शिष्य के महान आनन्द के बारे में भी पूर्वबताया था। "परन्तु मैं तुझ से फिर मिलूंगा, और तेरा मन आनन्दित होगा, और कोई तेरा आनन्द तुझ से दूर न करेगा।" भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा खाने के बाद जो चेलों ने उसे दिया था, यीशु ने उनसे कहा, “तुम्हें शान्ति मिले; जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं।” और यह कहकर उस ने उन पर फूंक मारी, और कहा, “पवित्र आत्मा ले लो। यदि तुम किसी के पाप क्षमा करते हो, तो उनके पाप क्षमा हुए; यदि तुम किसी के पापों को बनाए रखते हो, तो वे रखे गए हैं।” समूह चर्चा: पिता ने यीशु को क्या करने के लिए भेजा था? (लूका 4:18 देखें) इसके अलावा शिष्य बनाने के लिए, आत्मा के उपहारों का उपयोग करें, पिता की आज्ञा मानें, दूसरों से प्रेम करें, लोगों के पापों को क्षमा करें, आदि। यीशु अपने शिष्य से क्या चाहते हैं? वही बात।चूंकि यीशु ने अंतिम भोज में दो अलग-अलग मौकों पर शिष्यों से कहा था कि वह उन्हें पवित्र आत्मा भेजेंगे, आपको क्यों लगता है कि उन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिए उन्हें आज्ञा देनी पड़ी? क्योंकि पवित्र आत्मा एक उपहार है और एक उपहार अवश्य प्राप्त किया जाना चाहिए। (उदाहरण के लिए: परमेश्वर

ने अपना वचन, अपने भविष्यवक्ताओं, अपने पुत्र और अपने उद्धार को भेजा ... ये सभी उपहार हैं और लाभकारी होने के लिए इसे प्राप्त किया जाना चाहिए। आप कैसे मानते हैं कि ऊपर यीशु का अंतिम कथन आप पर लागू होता है? चेलों पर सांस ली? पवित्र आत्मा के लिए शब्द रुवाच कोदेश है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "ईश्वर की सांस। यीशु ने अपने शिष्यों पर सांस लेते हुए उन्हें याद दिलाया होगा कि वे क्या जानते थे ... "हवा जहां चाहती है वहां चलती है और आप इसकी आवाज सुनते हैं, लेकिन n पता नहीं यह कहाँ से आता है और कहाँ जा रहा है; हर कोई जो आत्मा से उत्पन्न हुआ है, ऐसा ही है" और जो आने वाला था उसका पूर्वाभास किया ... और अचानक स्वर्ग से एक तेज हवा की तरह एक शोर आया, और इसने पूरे घर को भर दिया जहां वे बैठे थे। एक और विचार यह है कि यीशु यह प्रदर्शित कर रहा था कि पवित्र आत्मा कैसे कार्य करता है; पहले आपको हवा की सांस लेनी चाहिए और फिर उसे बाहर निकालना चाहिए। दूसरे शब्दों में, एक उपहार की तरह, आपको इसे देने से पहले इसे पहले प्राप्त करना चाहिए। कुछ लोगों का मानना है कि यह "नया जन्म" होने का संकेत था, क्योंकि भगवान ने आदम को जीवन देने के लिए सांस ली थी। दूसरों का मानना है कि यीशु ने वास्तव में उस समय पवित्र आत्मा प्रदान की थी और इस बात के प्रमाण के रूप में कार्य करता है कि उसके सभी अनुयायियों को बचाने के लिए पवित्र आत्मा को प्राप्त करना चाहिए। फिर, बाद के समय में, वे प्रभावशाली गवाह बनने के लिए शक्ति (आध्यात्मिक उपहारों से सुसज्जित) के साथ पवित्र आत्मा के साथ एक बपतिस्मा (विसर्जन या भारी) प्राप्त करेंगे। बाइबल के विद्वान दो अलग-अलग शास्त्रों की ओर इशारा करते हैं जो इस विचार के समर्थन में जीवन देने वाले जल (पवित्र आत्मा) की बात करते हैं। पहला पवित्रशास्त्र, जॉन 4:13-14 यीशु को पवित्र आत्मा प्रदान करने का उल्लेख करता है ताकि एक व्यक्ति को अनन्त जीवन मिल सके। मार्ग में, यीशु सामरिया के कुएँ पर स्त्री से बात कर रहे हैं। वह उस से कहता है, कि जो कोई इस जल को पीएगा, वह फिर प्यासा होगा; परन्तु जो कोई उस जल में से जो मैं उसे दूंगा, पीएगा, वह कभी प्यासा न होगा; परन्तु जो जल मैं उसे दूंगा वह उस में अनन्त जीवन के लिये बहने वाला जल का कुआं बन जाएगा।" यह मार्ग इस विचार को जोड़ता है कि जो कोई भी उस पानी को पीता है जो यीशु उसे (पवित्र आत्मा) देता है, उसकी अनन्त जीवन तक पहुंच है। इस मामले में, पानी एक कंटेनर ... कुएं में बंद है। यह भी ध्यान दें कि पानी व्यक्ति के भीतर समाहित है। यह इस विचार का समर्थन करता है कि व्यक्तिगत आस्तिक के पास जीवन के इस स्रोत तक पहुंच है या वह इसे किसी को भी दे सकता है जो उससे इसे पीने के लिए कहता है। अधिकांश भाग के लिए पानी छिपा रहता है। दूसरा पवित्रशास्त्र, यूहन्ना 7:37-39, यीशु को पवित्र आत्मा के साथ एक व्यक्ति को बपतिस्मा देने (विसर्जन या भारी) करने के लिए संदर्भित करता है ताकि शिष्यों को शक्ति (आध्यात्मिक उपहार) के साथ कपड़े पहनाया जा सके ताकि वे कर सकें प्रभावी गवाह बनें। अब अंतिम दिन, पर्व के महान दिन, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, "यदि कोई प्यासा हो, तो मेरे पास आए और पीए। "वह जो मुझ पर विश्वास करता है, जैसा कि पवित्रशास्त्र में कहा गया है, 'उसके अंतरतम में से जीवन के जल की नदियाँ बहेंगी।'" लेकिन यह उस आत्मा के बारे में बोला, जिसे उस पर विश्वास करने वालों को प्राप्त करना था; क्योंकि आत्मा अब तक न दिया गया था, क्योंकि यीशु की अब तक महिमा नहीं हुई थी। यह मार्ग उन विश्वासियों से बात करता है जो जीवन देने वाले जल (पवित्र आत्मा) को दे रहे हैं दूसरे शब्दों में ... गवाह। ऐसे में यह पानी का एक कुआं नहीं बल्कि कई धाराएं हैं। और यह सिर्फ एक झरना नहीं है, बल्कि बड़ी मात्रा में पानी है ... बहने वाली नदियाँ। पानी की नदियाँ सभी के देखने के लिए खुली हैं और कोई भी उनमें से स्वतंत्र रूप से पी सकता है। जब यीशु ने शिष्यों को पवित्र आत्मा प्राप्त करने के लिए कहा, तो उन्होंने निस्संदेह उन बातों को याद किया होगा जो उसने अंतिम भोज में पवित्र आत्मा के बारे में उनसे कही थीं। ये कथन पवित्र आत्मा के सिद्धांत पर हमारी समझ का मूल हैं। यीशु ने जो कहा उसके विषय में आपके मन में क्या विचार आते हैं। पिता पवित्र आत्मा का

दाता है। (यूहन्ना 14:16) पवित्र आत्मा यीशु के चेलों के साथ सदा बना रहेगा। (यूहन्ना 14:16) शिष्यों को पवित्र आत्मा का घनिष्ठ ज्ञान होगा। (यूहन्ना 14:17) पवित्र आत्मा चेलों के साथ रहेगा। (यूहन्ना 14:17) पवित्र आत्मा चेलों के अंदर होगा। (यूहन्ना 14:17) पिता परमेश्वर पवित्र आत्मा को यीशु के नाम से भेजेगा। (यूहन्ना 14:26) पवित्र आत्मा चेलों को सब कुछ सिखाएगा। (यूहन्ना 14:26) पवित्र आत्मा वह सब कुछ स्मरण कराएगा जो यीशु ने अपने चेलों से कहा था। (यूहन्ना 14:26)यीशु, स्वयं पवित्र आत्मा भेजता है। (यूहन्ना 15:26) यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने भी इसकी गवाही दी, जब उसने कहा, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।" पवित्र आत्मा सत्य है। (यूहन्ना 15:26) पवित्र आत्मा यीशु की गवाही देगा। (यूहन्ना 15:26) पवित्र आत्मा संसार को पाप के विषय में दोषी ठहराएगा क्योंकि वे यीशु पर विश्वास नहीं करते। (यूहन्ना 16:8 और 9) पवित्र आत्मा संसार को धार्मिकता के विषय में दोषी ठहराएगा क्योंकि यीशु को मरे हुओं में से जिलाया गया है। (यूहन्ना 16:8 और 10) पवित्र आत्मा संसार को न्याय के विषय में दोषी ठहराएगा क्योंकि शैतान, इस संसार के शासक (कॉस्मोस-अलंकरण/भ्रम) का न्याय किया गया है। (यूहन्ना 16:8 और 11) पवित्र आत्मा शिष्यों को सभी सत्य में मार्गदर्शन करेगा। (यूहन्ना 16:13) पवित्र आत्मा अपनी पहल पर नहीं बोलेगा। (यूहन्ना 16:13) पवित्र आत्मा केवल वही बोलेगा जो वह सुनता है। (यूहन्ना 16:13) पवित्र आत्मा बोलेगा। (यूहन्ना 16:13) पवित्र आत्मा आपको भविष्य के बारे में बताएगा। (यूहन्ना 16:13) पवित्र आत्मा यीशु की महिमा करेगा। (यूहन्ना 16:14) पवित्र आत्मा चेलों को वह सब कुछ समझ देगा जो यीशु के पास है। (यूहन्ना 16:14) यीशु ने पवित्र आत्मा के बारे में शिष्यों को अन्य कथन भी दिए, आपके मन में क्या विचार आते हैं? स्वर्गीय पिता पवित्र आत्मा का उपहार उन लोगों को देता है जो उससे पूछते हैं। (लूका 11:13) कोई भी आत्मा से पैदा हुए बिना परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता (यूहन्ना 3:5) जब कोई व्यक्ति आत्मा के द्वारा नया जन्म लेता है तो वह हवा के समान होता है। आप नहीं जानते कि हवा कहां से आई या कहां जा रही है क्योंकि यह जहां चाहती है वहां जाती है ... आप बस इसकी आवाज सुनते हैं। (यूहन्ना 3:8) पवित्र आत्मा चेलों को ऊपर से शक्ति देगा। (लूका 24:49) चेलों के साथ यीशु की प्रारंभिक मुलाकात के आठ दिन बाद जब वे गलील में थे तब वह उन्हें फिर से दिखाई दिया। इस बार थॉमस उनके साथ था। उनका अभिवादन करने के बाद, यीशु ने थोमा को अपनी पहचान साबित की और फिर उन्हें संदेह न करते हुए विश्वास करने की आज्ञा दी। फिर वह उन सब पर भविष्यसूचक आशीष देने लगा जो चेलों की नाईं उसे नहीं देखना चाहते, परन्तु उस पर किसी भी रीति से विश्वास करना चाहते थे। समूह चर्चा: आपको क्यों लगता है कि यीशु ने उन लोगों को आशीर्वाद दिया जो उस पर विश्वास करेंगे, जबकि उन्होंने उसे कभी नहीं देखा था? वे विश्वास के लोग थे और इनाम के योग्य थे क्योंकि विश्वास परमेश्वर के वचन से सुनने और सुनने से आता है। कई बुलाए जाते हैं लेकिन कुछ चुने जाते हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक के अनुसार एक प्रेरित द्वारा हाथ रखने के द्वारा यीशु के नाम में बपतिस्मा लेने के बाद व्यक्तियों को पवित्र आत्मा दिया जा सकता है। (प्रेरितों 8:18) क्या यह आयत आज भी लागू होती है? क्यों या क्यों नहीं? _____

_____

सबक का बिंदु: सुनिश्चित करें कि आप पवित्र आत्मा प्राप्त करते हैं। आवेदन: पवित्रशास्त्र के निम्नलिखित अंश पढ़ें: प्रेरितों के काम 2:1-4 "शक्ति के साथ कपड़े" प्रेरितों के काम 2:33 "सुनें और देखें" प्रेरितों के काम 2:38-39 "प्राप्त करेंगे" प्रेरितों के काम 2:43 "प्रेरितों के पास शक्ति है" अधिनियमों 3:22-23 "यीशु तुम्हारे पास भेजा गया है ... आज्ञा मानो या नाश हो" प्रेरितों के काम 4:29-31 "चिन्हों और चमत्कारों के लिए प्रार्थना और एक साहसिक गवाही" प्रेरितों के काम 6:5-8 "स्टीफन हाथ रखने को प्राप्त करता है और संकेत करता है और चमत्कार" प्रेरितों के काम 8:5-19 "फिलिप

शोमरोन को जाता है और लोग सामरिया पहिने जाते हैं" प्रेरितों के काम 9:17-18 "पौलुस पवित्र आत्मा प्राप्त करता है और बपतिस्मा लेता है" प्रेरितों के काम 10:43-48 "कुरनेलियुस और उसका घराना पवित्र आत्मा" प्रेरितों के काम 19:1-6 "यूहन्ना का बपतिस्मा बनाम पवित्र आत्मा का बपतिस्मा"

पाठ 58

महान आज्ञा बर्फ तोड़ने वाला: आपके जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा क्या है? परिचय: यीशु को मरे हुओं में से जी उठे चालीस दिन बीत चुके थे। उस समय के दौरान उन्होंने शिष्यों को परमेश्वर के राज्य के बारे में बहुत सी बातें बताईं और शास्त्रों को समझने के लिए उनके दिमाग को खोल दिया। उसने उन्हें समझाया कि यह लिखा है कि मसीह तीसरे दिन मरे हुओं में से फिर से जी उठेगा और पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप उसके नाम से यरूशलेम से शुरू होने वाली सभी जातियों में घोषित किया जाएगा। और उस ने उन से कहा, कि वे उन बातोंके साक्षी हों। चालीसवें दिन यीशु ने चेलों को इकट्ठा किया और उन्हें यरूशलेम से बेथानी के पास जैतून के पहाड़ पर एक स्थान पर ले गए। जब वे पहुंचे तो उसने उन्हें आज्ञा दी कि जब तक वह उन्हें कुछ दिनों के बाद पवित्र आत्मा से बपतिस्मा न दे, तब तक वे यरूशलेम को न छोड़ें। कुछ हद तक हैरान होकर उन्होंने उससे पूछा कि क्या वह उस समय इस्राएल को राज्य बहाल करने जा रहा था। उसने उत्तर दिया कि यह उनके लिए नहीं है कि वे पिता द्वारा स्थापित समय या युगों को जानें, बल्कि यह कि जब पवित्र आत्मा उन पर आएगा तो वे सामर्थ प्राप्त करेंगे। फिर उन्होंने अपना अंतिम आदेश जारी किया, जिसे आज "महान आयोग" के रूप में जाना जाता है। उसके बाद उसने चेलों को आशीर्वाद दिया और वे देखते हुए स्वर्ग में चढ़ गए। वे अवाक थे! जैसे ही यीशु ऊपर उठ रहा था, एक बादल ने उन्हें उनकी आंखों से ओझल कर लिया। तब दो स्वर्गदूत प्रकट हुए और उनसे कहा कि वह एक दिन पृथ्वी पर उसी प्रकार लौटेगा जैसे उन्होंने उसे जाते हुए देखा था। समूह चर्चा: यदि आप उस दिन शिष्यों के साथ होते, तो आपके मन में कौन से प्रश्न चल रहे होते? पवित्रशास्त्र पढ़ना:(मत्ती 28:18-20) (मरकुस 16:15-20) (लूका 24:44-53) (प्रेरितों 1:3-12) आज्ञाएँ: सारे संसार में जाएँ और सभी को सुसमाचार का प्रचार करें सृष्टि।परन्तु जब तक तुम ऊपर से सामर्थ न पाओगे, तब तक नगर में रहना।जाओ चेलों को पिता, और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। जो कुछ मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, उन सब का पालन करना सिखाओ। पाठ: यीशु के पास अपनी बातों को यादगार बनाने का एक तरीका था और वे निश्चित रूप से सूक्ष्म नहीं थे। जब उसने चेलों को अपनी अंतिम आज्ञाएँ जारी कीं तो उसने इसे स्वर्ग में अपने उदगम के साथ जोड़ दिया। जोर के बारे में बात करो! हम में से अधिकांश "करने के लिए" सूची में पहली और आखिरी वस्तुओं को आसानी से याद करने में सक्षम हैं क्योंकि हमें इस तरह से दिमाग से तार दिया जाता है। लेकिन यीशु ने सुनिश्चित किया कि चेले उन पहली और आखिरी बातों को न भूलें जो उसने उन्हें बताई थीं। चेलों को यीशु की पहली आज्ञा के बारे में सोचें। यह "फॉलो मी" था। और यीशु ने इसे एक चमत्कारी मछली पकड़ने की यात्रा के साथ जारी किया। वह उनसे जो बात कह रहा था, वह यह थी, "मैं चाहता हूं कि तुम मेरी बात सुनो और मेरी बात मानो और जब तुम वही करोगे जो मैंने तुमसे कहा है, तो चमत्कारी चीजें होंगी जो आशीर्वाद लाती हैं।" "मेरे पीछे हो लो" की आज्ञा के साथ यीशु ने चेलों से यह भी वादा किया कि वह तब मनुष्यों के मछुआरे बनाएगा। और अब, साढ़े तीन साल बाद यीशु उन्हें वही काम करने के लिए नियुक्त कर रहा था। तीन संक्षिप्त सुसमाचार वृत्तांतों को मिलाकर हमें एक स्पष्ट तस्वीर मिलती है कि वास्तव में महान आज्ञा क्या है और यीशु ने चेलों को क्या करने की आज्ञा दी थी। उस ने उन से कहा, यों लिखा है, कि मसीह दुख उठाए, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठे; और यह कि पापों की क्षमा के लिये मन फिराव का प्रचार उसके नाम से यरूशलेम से लेकर सब जातियों में किया जाए। आप इन बातों के साक्षी हैं। सारे संसार में जाओ और सारी सृष्टि को सुसमाचार का प्रचार करो। और देखो, मैं अपके पिता की प्रतिज्ञा को तुम पर भेजता हूं; परन्तु जब तक ऊंचे से सामर्थ न पहिनाओ तब तक तुम नगर में रहना। मुझे स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार दिया गया है। इसलिए जाकर सब जातियों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और जो कुछ मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है उन सब को मानना सिखाओ; और देखो,

मैं युग के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूं। जिसने विश्वास किया है और बपतिस्मा लिया है वह बच जाएगा; परन्तु जिसने इनकार किया है वह दोषी ठहराया जाएगा। और विश्वास करनेवालों के साथ ये चिन्ह होंगे: वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, वे नई-नई भाषा बोलेंगे; वे सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे कोई घातक विष पीएं, तो उस से उनकी हानि न होगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे।" सो जब प्रभु यीशु ने उन से बातें की, तब वह स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर की दहिनी ओर बैठ गया। आनन्द, और लगातार मंदिर में, भगवान की स्तुति करते थे। और वे बाहर जाकर हर जगह प्रचार करते थे, जबकि भगवान उनके साथ काम करते थे, और उनके बाद के संकेतों से वचन की पुष्टि करते थे। महान आज्ञा के दिल में शिष्य बनाने की अनिवार्यता है . यह यीशु का पूर्णकालिक पेशा था जिस दिन से उसने अपने बपतिस्मे में सेवकाई में प्रवेश किया जब तक कि वह स्वर्ग में नहीं चढ़ गया। अपनी साढ़े तीन वर्षों की सेवकाई के दौरान, यीशु ने शिष्य बनाने की प्रक्रिया को प्रतिरूपित किया और फिर उन सभी को आज्ञा दी जो उसका अनुसरण करते थे। शिष्यत्व की प्रक्रिया में पाँच चरण शामिल हैं। वे हैं: जब तक आप ऊपर से शक्ति के साथ शहर में न रहें। पूरी दुनिया में जाएं। यीशु के नाम पर पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप का प्रचार करें। जो संदेश पर विश्वास करते हैं उन्हें बपतिस्मा दें ... में यीशु का नाम। चाय ch जो यीशु की आज्ञा का पालन करने के लिए बपतिस्मा ले चुके हैं। चेलों ने यीशु के निर्देशों का पूरी तरह से पालन किया और प्रारंभिक परिणाम प्रेरितों के काम की पुस्तक के पन्नों में सामने आए। ठहरें - प्रेरितों के काम 1:12-14 फिर वे ओलिवेट नामक पर्वत से यरूशलेम लौट आए, जो यरूशलेम के पास है, एक सब्त के दिन की यात्रा दूर। जब वे नगर में प्रवेश कर गए, तो ऊपर की कोठरी में, जहां वे ठहरे थे, चढ़ गए; अर्थात् पतरस और यूहन्ना और याकूब और अन्द्रियास, फिलिप्पुस और थोमा, बर्थोलोमेव और मत्ती, हलफई का पुत्र याकूब, और शमौन जोशीला, और याकूब का पुत्र यहूदा। ये सब एक मन से और स्त्रियों और यीशु की माता मरियम और उसके भाइयों समेत प्रार्थना में लगे रहते थे। जाओ - प्रेरितों के काम 2:1-6 जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक ही स्थान पर इकट्ठे थे। और एकाएक आकाश से प्रचण्ड आँधी की नाईं ऐसा शब्द हुआ, जिस से सारा घर जहां वे बैठे थे, भर गया। और उन्हें ऐसी भाषाएं दिखाई दीं, जैसे आग फैल रही हो, और वे उन में से एक एक पर टिके रहे। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा उन्हें बोलने की शक्ति देता था, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे। अब यरूशलेम में यहूदी रहते थे, और स्वर्ग के नीचे की हर जाति के भक्त पुरुष थे। और जब यह शब्द हुआ, तो भीड़ इकट्ठी हो गई, और घबरा गई, क्योंकि उन में से हर एक उन्हें अपनी ही भाषा में बोलते हुए सुन रहा था। प्रचार - प्रेरितों के काम 2:22-36 "इस्राएल के लोगों, इन शब्दों को सुनो: यीशु नासरी, एक व्यक्ति जो ईश्वर द्वारा आपको चमत्कार और चमत्कार और चिन्हों के साथ प्रमाणित करता है, जो भगवान ने आपके बीच में उसके माध्यम से किए, जैसा कि आप स्वयं जानते हैं- इस मनुष्य को, जो परमेश्वर की पूर्वनिर्धारित योजना और पूर्वज्ञान से छुड़ाया गया है, तुमने ईश्वरविहीन लोगों के हाथों क्रूस पर कीलों से ठोंक दी और उसे मार डाला। परन्तु परमेश्वर ने मृत्यु की पीड़ा को समाप्त करते हुए, उसे फिर से जिलाया, क्योंकि उसके लिए अपनी शक्ति में रहना असंभव था। क्योंकि दाऊद उसके विषय में कहता है, कि मैं ने यहोवा को सदा अपके साम्हने देखा; क्योंकि वह मेरे दाहिनी ओर है, कि मैं न डगमगाऊँ। इसलिथे मेरा मन प्रसन्न हुआ, और मेरी जीभ फूल गई; इसके अलावा मेरा शरीर भी आशा में जीवित रहेगा; क्योंकि आप मेरी आत्मा को अधोलोक में नहीं छोड़ेंगे, और न ही अपने पवित्र आत्मा को क्षय होने देंगे। आपने मुझे जीवन के तरीके बताए हैं; तू अपनी उपस्थिति से मुझे आनन्द से भर देगा।' हे भाइयो, मैं कुलपिता दाऊद के विषय में तुम से विश्वास के साथ कह सकता हूं कि वह दोनों मरे और गाड़े गए, और उसकी कब्र आज तक हमारे पास है। और इसलिए, क्योंकि वह एक भविष्यद्वक्ता था और जानता था कि परमेश्वर ने उसे अपने वंशजों में से एक को उसके सिंहासन पर बिठाने की शपथ दिलाई थी, उसने आगे देखा और

मसीह के पुनरुत्थान की बात कही, कि उसे न तो अधोलोक में छोड़ दिया गया था, न ही क्या उसका मांस सड़ गया। इस यीशु परमेश्वर को फिर से जिलाया गया, जिसके हम सब गवाह हैं। इसलिए परमेश्वर के दाहिने हाथ पर ऊंचा किया गया, और पिता से पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा प्राप्त की, उसने इसे उंडेला है जिसे तुम दोनों देखते और सुनते हो। क्योंकि दाऊद स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, परन्तु वह आप ही कहता है, कि यहोवा ने मेरे यहोवा से कहा, मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पांवों की चौकी न कर दूं। निश्चय है कि परमेश्वर ने उसे प्रभु और मसीह दोनों बनाया है—यही यीशु जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया था।" बपतिस्मा - प्रेरितों के काम 2:37-41 जब उन्होंने यह सुना, तो उनके मन में छेद किए गए, और वे पतरस और और प्रेरितों से कहने लगे, "हे भाइयो, हम क्या करें?" पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; और तुम पवित्र आत्मा का वरदान पाओगे। क्योंकि प्रतिज्ञा तुम्हारे और तुम्हारे बच्चों और उन सब के लिये है जो दूर हैं, जितने हमारे परमेश्वर यहोवा अपने पास बुलाएंगे।" और और भी बहुत सी बातों के द्वारा उस ने गम्भीरता से गवाही दी, और यह कहकर उन्हें समझाता रहा, कि इस विकृत पीढ़ी से बचो। सो जिन लोगों ने उसका वचन ग्रहण किया था, उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उस दिन लगभग तीन हजार आत्माएं जुड़ गईं। सिखाना - प्रेरितों के काम 2:42 वे लगातार अपने आप को प्रेरितों की शिक्षा और संगति, रोटी तोड़ने और प्रार्थना करने में लगा रहे थे। समूह चर्चा: शिष्य क्या है? शिक्षा प्राप्त करने वाला, शिक्षार्थी या शिष्य। शिष्य बनाने की प्रक्रिया उस प्राकृतिक प्रक्रिया से काफी मिलती-जुलती है जिससे पुरुष और महिलाएं बच्चे पैदा करने और पालने के लिए जाते हैं। आइए तुलना पर एक नजर डालते हैं। 1. जाओ (पिता और माता को छोड़ दो)2. उपदेश (एक बीज बोना)3. बपतिस्मा (जीवित जन्म के समय धोना)4. पढ़ाना (बच्चे को सुसज्जित करना ताकि वह सफल हो सके और अपने बच्चों की परवरिश कर सके) a। बच्चा एक शिष्य है क्योंकि वह वही है जो निर्देश प्राप्त करता है। बी। इस परिपक्व अवस्था में तीन अवस्थाएँ होती हैं: 1. बचपन 2. जवान आदमी किशोरावस्था3. पिता वयस्कता सबक का बिंदु: भगवान ने हमें दिया है: हम क्या बनना चाहते हैं, उनके पुत्र, यीशु की तरह। जिस मिशन को हमें पूरा करना है ... शिष्य बनाने के लिए। जिस रणनीति का हमें उपयोग करना है ... सभी में जाओ दुनिया। यीशु के नाम में पापों की क्षमा के संदेश का प्रचार करें, उन लोगों को बपतिस्मा दें जिन्होंने संदेश पर विश्वास किया है। उन्हें वह सब कुछ पालन करना सिखाएं जो यीशु ने करने की आज्ञा दी थी। और जो मंत्रालय हमें करना है ... सुलह का मंत्रालय। इस कार्य को करने के लिए उसने हमें भी दिया है: उसका अधिकार ... मिशन और मंत्रालय को पूरा करने के लिए। उसकी शक्ति ... पवित्र आत्मा। उसके उपकरण ... पवित्र आत्मा के उपहार। उसकी महिमा ... पवित्र आत्मा का फल। उसका लैस करने वाले ... प्रेरित, भविष्यवक्ता, इंजीलवादी, पादरी और शिक्षक। आवेदन: जो बातें तू ने बहुत गवाहों के साम्हने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासयोग्य लोगों को सौंप दे, जो औरों को भी सिखाने में समर्थ हों। (2 तीमुथियुस 2:2)